रसाइले अ़त्त़ारिय्या ह़िस्सए अव्वल

(ह़-नफ़ी)

नमाज़ के अह़काम

Namaz Ke Ahkaam (Hindi)

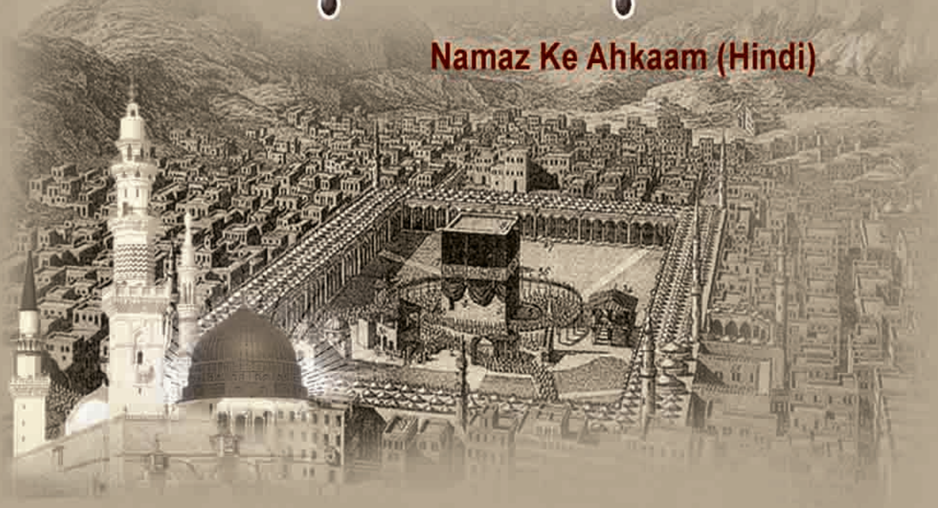

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

वुज़ू का त़रीक़ा 1
वुज़ू और साइन्स 59
ग़ुस्ल का त़रीक़ा 83
फ़ैज़ाने अज़ान 111
नमाज़ का त़रीक़ा 141
मुसाफ़िर की नमाज़ 221
क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा 239
नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा 265
फ़ैज़ाने जुमुआ 285
नमाज़े ईद का त़रीक़ा 311
म-दनी वसिय्यत नामा 321
फ़ातिहा का त़रीक़ा 337

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُستطرَف ج۱ص۴۰دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) ।

(تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब (**नमाज़ के अह़काम**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये "**ह़ुरूफ़ की पहचान**" नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت،اِسْتِعْمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = ای / ئی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO.9374031409 ´E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

नमाज़ के अह़काम

(ह़-नफ़ी)

(रसाइले अ़त्तारिय्या ह़िस्सए अव्वल)

अगर आप अज़ अव्वल ता आख़िर मुकम्मल पढ़ लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप की बे शुमार ग़-लतियां ख़ुद ब ख़ुद आप के सामने आ जाएंगी । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ । इस मज्मूए़ में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के दर्जे ज़ैल (12) रसाइल हैं ।

1	वुज़ू का त़रीक़ा	सफ़ह़ा 1
2	वुज़ू और साइन्स	सफ़ह़ा 59
3	ग़ुस्ल का त़रीक़ा	सफ़ह़ा 83
4	फ़ैज़ाने अज़ान	सफ़ह़ा 111
5	नमाज़ का त़रीक़ा	सफ़ह़ा 141
6	मुसाफ़िर की नमाज़	सफ़ह़ा 221
7	क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा	सफ़ह़ा 239
8	नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा	सफ़ह़ा 255
9	फ़ैज़ाने जुमुआ़	सफ़ह़ा 285
10	नमाज़े ईद का त़रीक़ा	सफ़ह़ा 311
11	म-दनी वसिय्यत नामा	सफ़ह़ा 321
12	फ़ातिह़ा का त़रीक़ा	सफ़ह़ा 337

www.dawateislami.net

नाम किताब : **नमाज़ के अह़काम** (ह़-नफ़ी)

मुसन्निफ़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

सिने त़बाअ़त : स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437 सि.हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C/0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपुर फ़ोन : 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : 0145- 2629385

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली – 580024. फ़ोन : 08363244860

ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040 24572786

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
वुज़ू का त़रीक़ा	1	वुज़ू के 16 मक्रूहात	17
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	धूप के गर्म पानी की वज़ाह़त	18
उ़स्माने ग़नी का इ़श्क़े रसूल	2	मुस्ता'मल पानी का अहम मस्अला	18
गुनाह झड़ने की ह़िकायत	4	मिट्टी मिले पानी से वुज़ू होगा या नहीं	19
वुज़ू का सवाब नहीं मिलेगा	5	पान खाने वाले मु-तवज्जेह हों	19
सारा बदन पाक हो गया	5	तसव्वुफ़ का अज़ीम म-दनी नुस्ख़ा	21
बा वुज़ू सोने की फ़ज़ीलत	6	ज़ख़्म वग़ैरा से ख़ून निकलने के 5 अह़काम	22
बा वुज़ू मरने वाला शहीद है	6	सर्दी से आ'ज़ा फट जाएं तो.....	23
मुसीबतों से ह़िफ़ाज़त का नुस्ख़ा	6	वुज़ू में मेहंदी और सुरमे का मस्अला	23
हर वक़्त बा वुज़ू रहने के सात फ़ज़ाइल	6	इन्जेक्शन से वुज़ू टूटेगा या नहीं ?	24
दुगना सवाब	7	दुखती आंख के आंसू	24
सर्दी में वुज़ू करने की ह़िकायत	7	पाक और नापाक रत़ूबत	25
वुज़ू का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)	8	छाला और फुड़िया	25
वुज़ू के बचे हुए पानी में 70 बीमारियों से शिफ़ा	11	"क़ै" से कब वुज़ू टूटता है	25
जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं	12	हंसने के अह़काम	26
नज़र कभी कमज़ोर न हो	12	क्या सत्र देखने से वुज़ू टूट जाता है ?	26
वुज़ू के बा'द तीन बार सूरए क़द्र पढ़ने के फ़ज़ाइल	12	ग़ुस्ल का वुज़ू काफ़ी है	27
वुज़ू के बा'द पढ़ने की दुआ़	12	थूक में ख़ून	27
वुज़ू के बा'द येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये	13	वुज़ू में शक आने के 5 अह़काम	28
वुज़ू के चार फ़राइज़	13	सोने से वुज़ू टूटने न टूटने का बयान	28
धोने की ता'रीफ़	13	वुज़ूए अम्बियाए किराम और नींद मुबारक	30
वुज़ू की 14 सुन्नतें	14	मसाजिद के वुज़ूख़ाने	31
वुज़ू के 29 मुस्तह़ब्बात	14	घर में वुज़ूख़ाना बनवाइये	31

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
वुज़ूख़ाना बनवाने का त़रीक़ा	32	**वुज़ू और साइन्स**	59
वुज़ूख़ाने के 9 म-दनी फूल	33	दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	60
जिन का वुज़ू न रहता हो उन के लिये 6 अह़काम	34	वुज़ू की ह़िक्मतें सुनने के सबब क़बूले इस्लाम	60
सात मु-तफ़र्रिक़ात	37	मग़रिबी जर्मनी का सेमीनार	61
आयत लिखे हुए कागज़ के पिछले हिस्से के छूने का अहम मस्अला	38	वुज़ू और हाई ब्लड प्रेशर	62
		वुज़ू और फ़ालिज	62
बे वुज़ू कुरआने मजीद को नहीं छू सकता	38	मिस्वाक का क़द्रदान	63
वुज़ू में पानी का इसराफ़	39	कुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये	64
जारी नह्र पर भी इसराफ़	39	मिस्वाक के बारे में दो अह़ादीसे मुबा-रका	64
आ'ला ह़ज़रत का फ़तवा	40	मुंह के छाले का इ़लाज	65
मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान की तफ़्सीर	40	टूथ ब्रश के नुक़्सानात	65
इसराफ़ न कर	41	क्या आप को मिस्वाक करना आता है ?	66
इसराफ़ शैत़ानी काम है	41	मिस्वाक के 20 म-दनी फूल	66
जन्नत का सफ़ेद मह़ल मांगना कैसा ?	41	हाथ धोने की ह़िक्मतें	69
बुरा किया, ज़ुल्म किया	42	कुल्ली करने की ह़िक्मतें	69
इसराफ़ सिर्फ़ दो सूरतों में ही गुनाह है	42	नाक में पानी डालने की ह़िक्मतें	70
अ़-मली त़ौर पर वुज़ू सीखिये	43	चेहरा धोने की ह़िक्मतें	71
मस्जिद और मद्रसे के पानी का इसराफ़	44	अन्धा पन से तह़फ़्फ़ुज़	72
इसराफ़ से बचने की 7 तदाबीर	45	कोहनियां धोने की ह़िक्मतें	73
इसराफ़ से बचने के लिये 14 म-दनी फूल	47	मस्ह़ की ह़िक्मतें	73
40 म-दनी फूलों का र-ज़वी गुलदस्ता	50	पागलों का डॉक्टर	74
विलादत में आसानी का नुस्ख़ा	56	पाउं धोने की ह़िक्मतें	75
बिग़ैर ऑपरेशन के विलादत हो गई ?	56	वुज़ू का बचा हुवा पानी	75
वुज़ू ख़ानए अ़त्तार	58	इन्सान चांद पर	76

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
नूर का खिलोना	77	कब कब ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है ?	96
मो'जिज़ए शक़्क़ुल क़मर	78	एक ग़ुस्ल में मुख़्तलिफ़ निय्यतें	96
सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये	79	बारिश में ग़ुस्ल	97
तसव्वुफ़ का अज़ीम म-दनी नुस्ख़ा	80	तंग लिबास वाले की त़रफ़ नज़र	
सुन्नत साइन्सी तह़क़ीक़ की मोह़ताज नहीं	81	करना कैसा ?	97
ग़ुस्ल का त़रीक़ा	83	नंगे नहाते वक़्त ख़ूब एह़तियात़	97
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	84	ग़ुस्ल से नज़्ला बढ़ जाता हो तो ?	97
अनोखी सज़ा	84	बाल्टी से नहाते वक़्त एह़तियात़	98
ग़ुस्ल का त़रीक़ा	86	बाल की गिरह	98
ग़ुस्ल के तीन फ़राइज़	87	क़ुरआने पाक पढ़ने या छूने के 10 मसाइल	98
कुल्ली करना	87	बे वुज़ू दीनी किताबें छूना	100
नाक में पानी चढ़ाना	88	नापाकी की ह़ालत में दुरूद शरीफ़ पढ़ना	100
तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना	88	उंगली में सियाही की तह जमी हुई हो तो ?	101
ग़ुस्ल की 21 एह़तियातें	88	बच्चा कब बालिग़ होता है	101
मस्तूरात के लिये 6 एह़तियातें	89	किताबें रखने की तरतीब	102
ज़ख़्म की पट्टी	90	अवराक़ में पुड़िया बांधना	102
ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के 5 अस्बाब	91	मुसल्ले पर का'बतुल्लाह शरीफ़ की तस्वीर	103
निफ़ास की ज़रूरी वज़ाह़त	91	वस्वसों का एक सबब	103
5 ज़रूरी अह़काम	92	तयम्मुम का बयान	103
मुश्त ज़नी का अ़ज़ाब	93	तयम्मुम के फ़राइज़	103
बहते पानी में ग़ुस्ल का त़रीक़ा	94	तयम्मुम की 10 सुन्नतें	103
फ़व्वारा जारी पानी के हुक्म में है	94	तयम्मुम का त़रीक़ा	104
फ़व्वारे की एह़तियातें	95	तयम्मुम के 25 म-दनी फूल	105
W.C का रुख़ दुरुस्त कीजिये	95	**फ़ैज़ाने अज़ान**	111
कब कब ग़ुस्ल करना सुन्नत है ?	95	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	112

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
सरकार ने एक बार अज़ान दी	112	حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ का मज़ाक उड़ाना	132
आज़ान है या अज़ान ?	113	अज़ान के मु-तअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या	
अज़ान के फ़ज़ाइल	113	कलिमात की मिसालें	134
क़ब्र में कीड़े नहीं पड़ेंगे	113	अज़ान	135
मोती के गुम्बद	113	अज़ान की दुआ़-शफ़ाअत की बिशारत	136
गुज़श्ता गुनाह मुआ़फ़	113	ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुज्मल	137
शैत़ान 36 मील दूर भाग जाता है	114	शश कलिमे	137
अज़ान कबूलिय्यते दुआ़ का सबब है	114	**नमाज़ का त़रीक़ा**	141
मुअज़्ज़िन के लिये इस्तिग़्फ़ार	114	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	142
अज़ान वाले दिन अज़ाब से अम्न	114	क़ियामत का सब से पहला सुवाल	143
घबराहट का इ़लाज	114	नमाज़ी के लिये नूर	143
ग़म दूर करने का नुस्ख़ा	115	किस का किस के साथ ह़श्र होगा !	144
मछलियां भी इस्तिग़्फ़ार करती हैं	115	शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में नमाज़	145
अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत	115	नमाज़ पर नूर या तारीकी के अस्बाब	145
3 करोड़ 24 लाख नेकियां रोज़ाना कमाइये	116	बुरे ख़ातिमे का एक सबब	146
अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया	117	नमाज़ का चोर	146
अज़ान व इक़ामत के जवाब का त़रीक़ा	118	चोर की दो क़िस्में	147
अज़ान के 14 म-दनी फूल	120	**नमाज़ का त़रीक़ा** (ह़-नफ़ी)	148
जवाबे अज़ान के 9 म-दनी फूल	123	इस्लामी बहनों की नमाज़ में चन्द	
इक़ामत के 7 म-दनी फूल	125	जगह फ़र्क़ है	154
अज़ान देने के 11 मुस्तह़ब मवाक़ेअ़	126	दोनों मु-तवज्जेह हों !	155
मस्जिद में अज़ान देना ख़िलाफ़े सुन्नत है	126	नमाज़ की 6 शराइत़	155
सो शहीदों का सवाब कमाइये	127	दौराने नमाज़ मक्रूह वक़्त दाख़िल हो जाए तो	158
अज़ान से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़िये	128	नमाज़ के 7 फ़राइज़	160
अज़ान की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	132	ह़ुरूफ़ की सह़ीह़ अदाएगी ज़रूरी है	165

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार !	166	दौराने नमाज़ देख कर पढ़ना	186
मद्र-सतुल मदीना	167	अ़-मले कसीर की ता'रीफ़	186
कारपेट के नुक़्सानात	169	दौराने नमाज़ लिबास पहनना	187
नापाक कारपेट पाक करने का त़रीक़ा	170	नमाज़ में कुछ निगलना	187
नमाज़ के तक़रीबन 30 वाजिबात	171	दौराने नमाज़ क़िब्ले से इन्ह़िराफ़	188
नमाज़ की तक़रीबन 95 सुन्नतें	173	नमाज़ में सांप मारना	188
तक्बीरे तह़रीमा की सुन्नतें	173	नमाज़ में खुजाना	188
क़ियाम की सुन्नतें	174	اَللّٰہُ اَکْبَر कहने में ग़-लत़ियां	189
रुकूअ़ की सुन्नतें	175	नमाज़ के 32 मक्रूहाते तह़रीमा	189
क़ौमा की सुन्नतें	176	कन्धों पर चादर लटकाना	189
सज्दे की सुन्नतें	176	त़ब्ई ह़ाजत की शिद्दत	190
जल्से की सुन्नतें	177	नमाज़ में कंकरियां हटाना	190
दूसरी रक्अ़त के लिये उठने की सुन्नतें	177	उंग्लियां चटख़ाना	191
क़ा'दा की सुन्नतें	177	कमर पर हाथ रखना	192
सलाम फैरने की सुन्नतें	178	आस्मान की त़रफ़ देखना	192
सलाम फैरने के बा'द की सुन्नतें	179	नमाज़ी की त़रफ़ देखना	193
सुन्नते बा'दिय्या की सुन्नतें	180	गधे जैसा मुंह	195
सुन्नतों का एक अहम मस्अला	180	नमाज़ और तसावीर	196
इस्लामी बहनों के लिये 10 सुन्नतें	181	नमाज़ के 33 मक्रूहाते तन्ज़ीहा	197
नमाज़ के तक़रीबन 14 मुस्तह़ब्बात	182	हाफ़ आस्तीन में नमाज़ पढ़ना कैसा ?	200
उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ का अ़मल	183	ज़ोह्र के आख़िरी दो	
गर्द आलूद पेशानी की फ़ज़ीलत	183	नफ़्ल के भी क्या कहने	200
नमाज़ तोड़ने वाली 29 बातें	184	इमामत का बयान	201
नमाज़ में रोना	185	इक़्तिदा की 13 शराइत़	202
नमाज़ में खांसना	185	इक़ामत के बा'द इमाम साह़िब ए'लान करें	202

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
जमाअ़त का बयान	203	फ़िनाए शह्र की ता'रीफ़	224
तर्के जमाअ़त के 20 आ'ज़ार	203	मुसाफ़िर बनने के लिये शर्त़	224
कुफ़्र पर ख़ातिमे का ख़ौफ़	204	वत़न की क़िस्में	225
नमाज़े वित्र के 13 म-दनी फूल	205	वत़ने इक़ामत बात़िल होने की सूरतें	226
दुआ़ए कुनूत	206	सफ़र के दो रास्ते	226
सज्दए सह्व का बयान	207	मुसाफ़िर कब तक मुसाफ़िर है	226
निहायत अहम मस्अला	209	सफ़र ना जाइज़ हो तो ?	226
ह़िकायत	210	सेठ और नोकर का इकठ्ठा सफ़र	227
सज्दए सह्व का त़रीक़ा	210	काम हो गया तो चला जाऊंगा !	227
सज्दए सह्व करना भूल जाए तो...	211	औ़रत के सफ़र का मस्अला	228
सज्दए तिलावत और शैत़ान की शामत	211	औ़रत का सुसराल व मयका	228
اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हर मुराद पूरी हो	211	अ़रब मुमालिक में वीज़ा पर रहने	
सज्दए तिलावत के 8 म-दनी फूल	212	वालों का मस्अला	228
दौराने नमाज़ दूसरे से आयते सज्दा सुन ली तो..	213	ज़ाइरे मदीना के लिये ज़रूरी मस्अला	230
सज्दए तिलावत का त़रीक़ा	213	उ़म्रह के वीज़े पर ह़ज के लिये रुकना कैसा ?	230
सज्दए शुक्र का बयान	214	क़स्र वाजिब है	232
नमाज़ी के आगे से गुज़रना सख़्त गुनाह है	214	क़स्र के बदले चार की निय्यत बांध ली तो...?	232
नमाज़ी के आगे से गुज़रने के बारे में 15 अह़काम	215	मुसाफ़िर इमाम और मुक़ीम मुक़्तदी	233
साह़िबे मज़ार की इन्फ़िरादी कोशिश !	218	मुक़ीम मुक़्तदी और बक़िय्या दो रक्अ़तें	233
मां चारपाई से उठ खड़ी हुई !	219	क्या मुसाफ़िर को सुन्नतें मुआ़फ़ हैं ?	234
मुसाफ़िर की नमाज़	221	चलती गाड़ी में नफ़्ल पढ़ने के 4 म-दनी फूल	234
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	222	मुसाफ़िर तीसरी रक्अ़त के लिये खड़ा	
शर-ई सफ़र की मसाफ़त	224	हो जाए तो...?	235
मुसाफ़िर कब होगा ?	224	सफ़र में क़ज़ा नमाज़ें	236
आबादी ख़त्म होने का मत़लब	224	ह़िफ़्ज़ भुला देने का अ़ज़ाब	237

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा	239	ज़मानए इरतिदाद की नमाज़ें	252
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	240	बच्चे की पैदाइश के वक़्त नमाज़	252
जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादी	241	मरीज़ को नमाज़ कब मुआ़फ़ है ?	253
पहाड़ गरमी से पिघल जाएं	241	उ़म्र भर की नमाज़ें दोबारा पढ़ना	253
सर कुचलने की सज़ा	241	क़ज़ा का लफ़्ज़ कहना भूल गया तो ?	253
हज़ारों बरस के अ़ज़ाब का ह़क़दार	242	क़ज़ा नमाज़ें नवाफ़िल की अदाएगी से बेहतर	253
क़ब्र में आग के शो'ले	243	फ़ज्र व अ़स्र के बा'द नवाफ़िल नहीं पढ़ सकते	254
अगर नमाज़ पढ़ना भूल जाए तो...?	243	ज़ोहर की चार सुन्नतें रह जाएं तो क्या करे ?	254
इत्तिफ़ाक़न आंख न खुली तो....?	244	फ़ज्र की सुन्नतें रह जाएं तो क्या करे ?	255
मजबूरी में अदा का सवाब मिलेगा या नहीं ?	244	क्या मग़रिब का वक़्त थोड़ा सा होता है ?	255
रात के आख़िरी ह़िस्से में सोना कैसा ?	245	तरावीह़ की क़ज़ा का क्या हुक्म है ?	256
रात देर तक जागना	245	नमाज़ का फ़िदया	256
अदा, क़ज़ा और वाजिबुल इआ़दा की ता'रीफ़	246	मर्ह़ूमा के फ़िदये का एक मस्अला	258
तौबा के तीन रुक्न हैं	247	सादाते किराम को नमाज़ का फ़िदया नहीं दे सकते	259
सोते को नमाज़ के लिये जगाना वाजिब है	247		
फ़ज्र का वक़्त हो गया उठ्ठो !	247	100 कोड़ों का ह़ीला	259
ह़िकायत	248	कान छेदने का रवाज कब से हुवा ?	260
हुक़ूक़े आ़म्मा के एह़सास की ह़िकायत	249	गाय के गोश्त का तोह़फ़ा	261
जल्द से जल्द क़ज़ा पढ़ लीजिये	250	ज़कात का शर-ई ह़ीला	262
छुप कर क़ज़ा पढ़िये	250	फ़क़ीर की ता'रीफ़	263
जुमुअ़तुल वदाअ़ में क़ज़ाए उ़म्री	250	मिस्कीन की ता'रीफ़	263
उ़म्र भर की क़ज़ा का ह़िसाब	250	**नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा**	265
क़ज़ा पढ़ने में तरतीब	251	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	266
क़ज़ाए उ़म्री का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)	251	वली के जनाज़े में शिर्कत की ब-र-कत	266
नमाज़े क़स्र की क़ज़ा	252	अ़क़ीदत मन्दों की भी मग़्फ़िरत	267

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
कफ़न चोर	268	जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा	278
तमाम शु-रकाए जनाज़ा की बख़्शिश	269	बच्चे का जनाज़ा उठाने का त़रीक़ा	278
क़ब्र में पहला तोह़फ़ा	269	नमाज़े जनाज़ा के बा'द वापसी के मसाइल	278
जन्नती का जनाज़ा	270	क्या शोहर बीवी के जनाज़े को कन्धा दे सकता है ?	279
जनाज़े का साथ देने का सवाब	270		
उहुद पहाड़ जितना सवाब	270	मुरतद की नमाज़े जनाज़ा का हुक्मे शर-ई	279
नमाज़े जनाज़ा बाइसे इ़ब्रत है	271	जनाज़े के मु-तअ़ल्लिक़ 5 म-दनी फूल	281
मय्यित को नहलाने वग़ैरा की फ़ज़ीलत	271	"फ़ुलां मेरी नमाज़ पढ़ाए" ऐसी वसिय्यत का हुक्म	281
जनाज़ा देख कर पढ़ने का विर्द	271		
सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब से पहला जनाज़ा किस का पढ़ा ?	272	इमाम मय्यित के सीने की सीध में खड़ा हो	282
		नमाज़े जनाज़ा पढ़े बिग़ैर दफ़्ना दिया तो ?	282
नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है	272	मकान में दबे हुए की नमाज़े जनाज़ा	282
नमाज़े जनाज़ा में दो रुक्न और तीन सुन्नतें हैं	273	नमाज़े जनाज़ा में ता'दाद बढ़ाने के लिये ताख़ीर	283
नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)	273	बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये	283
बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ़	274		
ना बालिग़ लड़के के जनाज़े की दुआ़	274	**फ़ैज़ाने जुमुआ़**	285
ना बालिग़ा लड़की के जनाज़े की दुआ़	275	जुमुआ़ को दुरूद शरीफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत	286
जूते पर खड़े हो कर जनाज़ा पढ़ना	275	आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहला जुमुआ़ कब अदा फ़रमाया ?	287
ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा नहीं हो सकती	276		
चन्द जनाज़ों की इकट्ठी नमाज़ का त़रीक़ा	276	जुमुआ़ के मा'ना	288
जनाज़े में कितनी सफ़ें हों ?	276	सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुल कितने जुमुए़ अदा फ़रमाए ?	288
जनाज़े की पूरी जमाअ़त न मिले तो ?	276		
पागल या ख़ुदकुशी वाले का जनाज़ा	277	दिल पर मोहर	289
मुर्दा बच्चे के अह़काम	277	जुमुआ़ के इ़मामे की फ़ज़ीलत	289
जनाज़े को कन्धा देने का सवाब	277	शिफ़ा दाख़िल होती है	289

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
दस दिन तक बलाओं से हि़फ़ाज़त	290	दस हज़ार बरस के रोज़ों का सवाब	299
रिज़्क़ में तंगी का एक सबब	290	जुमुआ़ का रोज़ा कब मक्रूह है ?	299
फ़िरिश्ते खु़श नसीबों के नाम लिखते हैं	290	जुमुआ़ को मां बाप की क़ब्र पर	
पहली सदी में जुमुआ़ का जज़्बा	291	हा़ज़िरी का सवाब	300
ग़रीबों का ह़ज	292	क़ब्रे वालिदैन पर ''यासीन'' पढ़ने	
जुमुआ़ के लिये जल्दी निकलना ह़ज है	292	की फ़ज़ीलत	300
ह़ज व उ़म्रह का सवाब	293	तीन हज़ार मग़्फ़िरतें	301
सब दिनों का सरदार	293	जुमुआ़ को यासीन पढ़ने वाले	
जानवरों का ख़ौफ़े क़ियामत	294	की मग़्फ़िरत होगी	301
दुआ़ क़बूल होती है	294	रूहें जम्अ़ होती हैं	301
अ़स्र व मग़रिब के दरमियान ढूंडो	294	''सू-रतुल कह्फ़'' की फ़ज़ीलत	302
साहि़बे बहारे शरीअ़त का इर्शाद	295	दोनों जुमुआ़ के दरमियान नूर	302
क़बूलिय्यत की घड़ी कौन सी ?	295	का'बे तक नूर	302
हि़कायत	295	''सूरए حٰمٓ الدُّخَان'' की फ़ज़ीलत	303
हर जुमुआ़ को 1 करोड़ 44 लाख		सत्तर हज़ार फ़िरिश्तों का इस्तिग़्फ़ार	303
जहन्नम से आज़ाद	296	सारे गुनाह मुआ़फ़	303
अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़	296	नमाज़े जुमुआ़ के बा'द	304
जुमुआ़ ता जुमुआ़ गुनाहों की मुआ़फ़ी	297	मजलिसे इ़ल्म में शिर्कत	304
200 साल की इ़बादत का सवाब	297	जुमुआ़ फ़र्ज़ होने की 11 शराइत़	305
मर्ह़ूम वालिदैन को हर जुमुआ़		जुमुआ़ की सुन्नतें	305
आ'माल पेश होते हैं	298	ग़ुस्ले जुमुआ़ का वक़्त	306
जुमुआ़ के पांच खु़सूसी आ'माल	298	ग़ुस्ले जुमुआ़ सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा है	306
जन्नत वाजिब हो गई	298	खु़त़्बे में क़रीब रहने की फ़ज़ीलत	306
सिर्फ़ जुमुआ़ का रोज़ा न रखिये	299	तो जुमुआ़ का सवाब नहीं मिलेगा	307

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
चुपचाप खु़त्बा सुनना फ़र्ज़ है	307	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	322
खु़त्बा सुनने वाला दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ सकता	307	कफ़न दफ़्न का त़रीक़ा	332
		मर्द का मस्नून कफ़न	332
खु़त्बए निकाह़ सुनना वाजिब है	308	औ़रत का मस्नून कफ़न	332
पहली अज़ान होते ही कारोबार भी ना जाइज़	308	कफ़न की तफ़्सील	332
		ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा	333
खु़त्बे के 7 म-दनी फूल	308	मर्द को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा	334
जुमुआ़ की इमामत का अहम मस्अला	310	औ़रत को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा	334
नमाज़े ईद का त़रीक़ा	311	बा'द नमाज़े जनाज़ा तदफ़ीन	335
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	312	**फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा**	337
दिल ज़िन्दा रहेगा	312	मर्हूम रिश्तेदार को ख़्वाब में देखने का त़रीक़ा	338
जन्नत वाजिब हो जाती है	312		
नमाज़े ईद के लिये जाने से क़ब्ल की सुन्नत	313	मक्बूल ह़ज का सवाब	340
नमाज़े ईद के लिये आने जाने की सुन्नत	313	दस ह़ज का सवाब	341
नमाज़े ईद का त़रीक़ा	314	वालिदैन की त़रफ़ से ख़ैरात	341
नमाज़े ईद किस पर वाजिब है ?	315	रोज़ी में बे ब-र-कती की वज्ह	341
ईद का खु़त्बा सुन्नत है	315	जुमुआ़ को ज़ियारते क़ब्र की फ़ज़ीलत	342
नमाज़े ईद का वक़्त	315	कफ़न फट गए !	342
ईद की अधूरी जमाअ़त मिली तो ?	315	ईसाले सावब के फ़ज़ाइल	343
ईद की जमाअ़त न मिली तो क्या करे ?	316	दुआ़ओं की ब-र-कत	343
ईद के खु़त्बे के अह़काम	317	ईसाले सवाब का इन्तिज़ार !	343
ईद के 20 आदाब	317	रूहें घरों पर आ कर ईसाले सवाब का मुत़ा-लबा करती हैं	344
बक़र ईद का एक मुस्तह़ब	319		
तक्बीरे तशरीक़ के 8 म-दनी फूल	319	दूसरों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करने की फ़ज़ीलत	345
म-दनी वसिय्यत नामा	321		

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा मिल गया !	345	ग़ौसे पाक का बकरा कहना कैसा ?	348
		ईसाले सवाब के 19 म-दनी फूल	349
नूरानी लिबास	346	ईसाले सवाब का त़रीक़ा	355
नूरानी त़बाक़	346	ईसाले सवाब का मुरव्वजा त़रीक़ा	356
मुर्दों की ता'दाद के बराबर अज्र	347	आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ का फ़ातिह़ा का त़रीक़ा	360
सब क़ब्र वालों को सिफ़ारिशी बनाने का अ़मल	347		
		ईसाले सवाब के लिये दुआ़ का त़रीक़ा	361
सूरए इख़्लास के ईसाले सवाब की ह़िकायत	347	खाने की दा'वत की अहम एह़तियात़	363
उम्मे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا के लिये कूंआं	348	मज़ार पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा	363

बोल में हलके तोल में भारी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : दो कलिमे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को प्यारे, ज़बान पर हलके और मीज़ाने अ़मल में भारी हैं, वोह येह हैं :

سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ،

(بُخاری حدیث، ۷۵۶۳)

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفل مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ

بقیع

वुज़ू का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

इस रिसाले में......

गुनाह झड़ने की ह़िकायत

नज़र कभी कमज़ोर न हो

इन्जेक्शन लगाने से वुज़ू टूटेगा या नहीं ?

मुसीबतों से ह़िफ़ाज़त का नुस्ख़ा

पान खाने वाले मु-तवज्जेह हों

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

वुज़ू का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

येह रिसाला अव्वल ता आख़िर पूरा पढ़िये, क़वी इम्कान है कि आप की कई ग़-लतियां आप के सामने आ जाएं।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।" (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرانی ج۱۸ ص۳۶۲ حدیث۹۲۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इ़श्क़े रसूल

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक बार एक मक़ाम पर पहुंच कर पानी मंगवाया और वुज़ू किया फिर यकायक मुस्कुराने और रु-फ़क़ा से फ़रमाने लगे : जानते हो मैं क्यूं मुस्कुराया ?

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

फिर ख़ुद ही इस सुवाल का जवाब देते हुए फ़रमाया : मैं ने देखा **सरकारे नामदार** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमाया था और बा'दे फ़राग़त मुस्कुराए थे और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया था : जानते हो मैं क्यूं मुस्कुराया ? फिर मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद ही फ़रमाया : "जब आदमी वुज़ू करता है तो चेहरा धोने से चेहरे के और हाथ धोने से हाथों के और सर का मस्ह़ करने से सर के और पाउं धोने से पाउं के गुनाह झड़ जाते हैं।" **(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۱ ص۱۳۰ حدیث۴۱۵)**

वुज़ू कर के ख़न्दां हुए शाहे उ़स्मां कहा : क्यूं तबस्सुम भला कर रहा हूं ?
जवाबे सुवाले मुख़ात़ब दिया फिर किसी की अदा को अदा कर रहा हूं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان सरकारे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर हर अदा और हर हर सुन्नत को दीवाना वार अपनाते थे। नीज़ इस रिवायत से **गुनाह धोने का नुस्ख़ा** भी मा'लूम हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **वुज़ू** में कुल्ली करने से मुंह के, नाक में पानी डाल कर साफ़ करने से नाक के, चेहरा धोने से पलकों समेत सारे चेहरे के, हाथ धोने से हाथ के साथ साथ नाख़ुनों के नीचे के, सर (और कानों) का मस्ह़ करने से सर के साथ साथ कानों के और पाउं धोने से पाउं के साथ साथ पाउं के नाख़ुनों के नीचे के गुनाह भी झड़ जाते हैं।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

गुनाह झड़ने की ह़िकायत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वुज़ू करने वाले के गुनाह झड़ते हैं, इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत नक़्ल करते हुए **ह़ज़रते** अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : एक मर्तबा सय्यिदुना **इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ जामेअ़ मस्जिद कूफ़ा के वुज़ूख़ाने में तशरीफ़ ले गए तो एक नौ जवान को **वुज़ू** बनाते हुए देखा, उस से वुज़ू (में इस्ति'माल शुदा पानी) के क़त़रे टपक रहे थे । आप ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ बेटे ! **मां बाप की ना फ़रमानी** से तौबा कर ले । उस ने फ़ौरन अ़र्ज़ की : मैं ने तौबा की । एक और शख़्स के वुज़ू (में इस्ति'माल होने वाले पानी) के क़त़रे टपक्ते देखे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे भाई ! तू **ज़िना** से तौबा कर ले । उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने तौबा की । एक और शख़्स के वुज़ू के क़त़रात टपक्ते देखे तो उसे फ़रमाया : **शराब नोशी और गाने बाजे सुनने** से तौबा कर ले । उस ने अ़र्ज़ की : मैं ने तौबा की । सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ पर कश्फ़ के बाइ़स चूंकि लोगों के उ़यूब ज़ाहिर हो जाते थे लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस कश्फ़ के ख़त्म हो जाने की दुआ़ मांगी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुआ़ क़बूल फ़रमा ली जिस से आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को वुज़ू करने वालों के गुनाह झड़ते नज़र आना बन्द हो गए । **(اَلْمِیزانُ الْکُبریٰ ج۱ ص۱۳۰)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

वुज़ू का सवाब नहीं मिलेगा

आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है : अगर किसी अ़मल में अच्छी निय्यत न हो तो उस का सवाब नहीं मिलता। येही ह़ाल वुज़ू का भी है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त** मुख़र्रजा जिल्द अव्वल" सफ़ह़ा 292 पर है : वुज़ू पर सवाब पाने के लिये हुक्मे इलाही बजा लाने की निय्यत से वुज़ू करना ज़रूर है वरना वुज़ू हो जाएगा सवाब न पाएगा। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : वुज़ू में निय्यत न करने की आ़दत से गुनहगार होगा, इस में निय्यत **सुन्नते मुअक्कदा** है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 616)

सारा बदन पाक हो गया !

दो ह़दीसों का ख़ुलासा है : जिस ने بِسْمِ الله कह कर वुज़ू किया उस का सर से पाउं तक सारा जिस्म पाक हो गया और जिस ने बिग़ैर بِسْمِ الله कहे वुज़ू किया उस का उतना ही बदन पाक होगा जितने पर पानी गुज़रा। (سُنَنِ دارقُطنی ج۱ص۱۰۸،۱۰۹حدیث۲۲۸،۲۲۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) जब तुम वुज़ू करो तो بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه कह लिया करो जब तक तुम्हारा वुज़ू बाक़ी रहेगा उस वक़्त तक तुम्हारे फ़िरिश्ते (या'नी किरामन कातिबीन) तुम्हारे लिये नेकियां लिखते रहेंगे।" (اَلْمُعْجَمُ الصَّغِير لِلطَّبَرَانِی ج۱ص۷۳حدیث ۱۸۶)

www.dawateislami.net

बा वुज़ू सोने की फ़ज़ीलत

ह़दीसे पाक में है **:** बा वुज़ू सोने वाला रोज़ा रख कर इ़बादत करने वाले की त़रह़ है। **(کَنْزُ الْعُمّال ج۹ص۱۲۳حدیث۲۵۹۹۴)**

बा वुज़ू मरने वाला शहीद है

मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया **: बेटा !** अगर तुम हमेशा बा वुज़ू रहने की इस्तित़ाअ़त रखो तो ऐसा ही करो क्यूं कि म-लकुल मौत जिस बन्दे की रूह़ ह़ालते वुज़ू में क़ब्ज़ करता है उस के लिये **शहादत** लिख दी जाती है। **(شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ ص ۲۹ حدیث ۲۷۸۳)** **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **:** हमेशा बा वुज़ू रहना मुस्तह़ब है।

मुसीबतों से ह़िफ़ाज़त का नुस्ख़ा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने **ह़ज़रते** सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया **: "ऐ मूसा !** अगर बे वुज़ू होने की सूरत में तुझे कोई मुसीबत पहुंचे तो ख़ुद अपने आप को मलामत करना।" **(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۲۹رقم۲۷۸۲)** "फ़तावा र-ज़विय्या" में है **:** हमेशा बा वुज़ू रहना इस्लाम की सुन्नत है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 702)

"अह़मद रज़ा" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से हर वक़्त बा वुज़ू रहने के सात फ़ज़ाइल

मेरे आक़ा इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **:** बा'ज़ आ़रिफ़ीन (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِین) ने फ़रमाया **:** जो हमेशा बा

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

वुज़ू रहे **अल्लाह तआ़ला** उस को सात फ़ज़ीलतों से मुशर्रफ़ फ़रमाए : ﴾1﴿ मलाएका उस की सोह़बत में रग़बत करें ﴾2﴿ क़लम उस की नेकियां लिखता रहे ﴾3﴿ उस के आ'ज़ा तस्बीह़ करें ﴾4﴿ उस से तक्बीरे ऊला फ़ौत न हो ﴾5﴿ जब सोए **अल्लाह तआ़ला** कुछ फ़िरिश्ते भेजे कि जिन्नो इन्स के शर से उस की ह़िफ़ाज़त करें ﴾6﴿ सकराते मौत उस पर आसान हो ﴾7﴿ जब तक बा वुज़ू हो अमाने इलाही में रहे। (ऐज़न, स. 702, 703)

दुगना सवाब

यक़ीनन सर्दी, थकन या नज़्ला, ज़ुकाम, दर्दे सर और बीमारी में वुज़ू करना दुश्वार होता है मगर फिर भी कोई ऐसे वक़्त वुज़ू करे जब कि वुज़ू करना दुश्वार हो तो उस को ब हुक्मे ह़दीस दुगना सवाब मिलेगा। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرَانِی ج٤ ص١٠٦ حديث ٥٣٦٦)

सर्दी में वुज़ू करने की ह़िकायत

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने ग़ुलाम, हुमरान से वुज़ू के लिये पानी मांगा और सर्दी की रात में बाहर जाना चाहते थे हुमरान कहते हैं : मैं पानी लाया, उन्हों ने मुंह हाथ धोए तो मैं ने कहा : **अल्लाह** आप को किफ़ायत करे **रात तो बहुत ठन्डी** है। इस पर फ़रमाया कि : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है कि "जो बन्दा वुज़ूए कामिल करता है **अल्लाह तआ़ला** उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श देता है।" (مسندِ بزار ج٢ ص٧٥ حديث٤٢٢, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 285)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

वुज़ू का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

का'बतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के ऊंची जगह बैठना मुस्तह़ब है। वुज़ू के लिये **निय्यत** करना सुन्नत है, निय्यत न हो तब भी वुज़ू हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा। निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, दिल में निय्यत होते हुए ज़बान से भी कह लेना अफ़्ज़ल है लिहाज़ा ज़बान से इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं **हुक्मे इलाही** عَزَّوَجَلَّ **बजा लाने और पाकी ह़ासिल करने के लिये वुज़ू कर रहा हूं।** بِسْمِ الله कह लीजिये कि येह भी सुन्नत है। बल्कि بِسْمِ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه कह लीजिये कि जब तक बा वुज़ू रहेंगे फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे।[1] अब **दोनों हाथ** तीन तीन बार पहुंचों तक धोइये, (नल बन्द कर के) दोनों हाथों की उंग्लियों का ख़िलाल भी कीजिये। कम अज़ कम तीन तीन बार दाएं बाएं ऊपर नीचे के दांतों में **मिस्वाक** कीजिये और हर बार मिस्वाक को धो लीजिये। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "मिस्वाक करते वक़्त नमाज़ में कुरआने मजीद की क़िराअत और **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुंह पाक करने की निय्यत करनी चाहिये।"[2] अब सीधे हाथ के तीन चुल्लू पानी से (हर बार नल बन्द कर के) इस त़रह़ **तीन कुल्लियां** कीजिये कि हर बार मुंह के हर पुर्ज़े पर (ह़ल्क़ के कनारे तक) पानी बह जाए, अगर रोज़ा न हो तो **ग़र-ग़रा** भी कर लीजिये। फिर सीधे ही हाथ के तीन चुल्लू (अब हर बार आधा चुल्लू पानी काफ़ी

[1] اَلْمُعْجَمُ الصَّغیر لِلطَّبَرَانِی ج۱ص۷۳حدیث ۱۸۶ [2] اِحیاءُ الْعُلوم ج۱ص۱۸۲

www.dawateislami.net

है) से (हर बार नल बन्द कर के) **तीन बार नाक** में नर्म गोश्त तक पानी चढ़ाइये और अगर रोज़ा न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाइये, अब (नल बन्द कर के) उलटे हाथ से नाक साफ़ कर लीजिये और छोटी उंगली नाक के सूराख़ों में डालिये। **तीन बार सारा चेहरा** इस त़रह़ धोइये कि जहां से आ़दतन सर के बाल उगना शुरूअ़ होते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर जगह पानी बह जाए। अगर **दाढ़ी** है और एह़राम बांधे हुए नहीं हैं तो (नल बन्द करने के बा'द) इस त़रह़ **ख़िलाल** कीजिये कि उंग्लियों को गले की त़रफ़ से दाख़िल कर के सामने की त़रफ़ निकालिये फिर पहले सीधा हाथ उंग्लियों के सिरे से धोना शुरूअ़ कर के कोहनियों समेत तीन बार धोइये। इसी त़रह़ फिर **उलटा हाथ** धो लीजिये। दोनों हाथ आधे बाज़ू तक धोना मुस्तह़ब है। **अक्सर लोग चुल्लू में पानी ले कर पहुंचे से तीन बार छोड़ देते हैं कि कोहनी तक बहता चला जाता है इस त़रह़ करने से कोहनी और कलाई की करवटों पर पानी न पहुंचने का अन्देशा है लिहाज़ा बयान कर्दा त़रीक़े पर हाथ धोइये। अब चुल्लू भर कर कोहनी तक पानी बहाने की ह़ाजत नहीं बल्कि** (बिग़ैर इजाज़ते सह़ीह़ा ऐसा करना) **येह पानी का इसराफ़ है।** अब (नल बन्द कर के) **सर का मस्ह़** इस त़रह़ कीजिये कि दोनों अंगूठों और कलिमे की उंग्लियों को छोड़ कर दोनों हाथ की तीन तीन उंग्लियों के सिरे एक दूसरे से मिला लीजिये और पेशानी के बाल या खाल पर रख कर खींचते हुए गुद्दी तक इस त़रह़ ले जाइये कि

हथेलियां सर से जुदा रहें, फिर गुद्दी से हथेलियां खींचते हुए पेशानी तक ले आइये,[1] कलिमे की उंग्लियां और अंगूठे इस दौरान सर पर बिल्कुल मस नहीं होने चाहिएं, फिर कलिमे की उंग्लियों से कानों की अन्दरूनी सत़्ह़ का और अंगूठों से कानों की बाहरी सत़्ह़ का मस्ह़ कीजिये और छुंग्लियां (या'नी छोटी उंग्लियां) कानों के सूराख़ों में दाख़िल कीजिये और उंग्लियों की पुश्त से गरदन के पिछले ह़िस्से का मस्ह़ कीजिये। बा'ज़ लोग गले का और धुले हुए हाथों की कोहनियों और कलाइयों का मस्ह़ करते हैं येह सुन्नत नहीं है। **सर का मस्ह़ करने से क़ब्ल टोंटी अच्छी त़रह़ बन्द करने की आ़दत बना लीजिये** बिला वज्ह नल खुला छोड़ देना या अधूरा बन्द करना कि पानी टपक कर ज़ाएअ़ होता रहे इसराफ़ व गुनाह है। **पहले सीधा फिर उलटा पाउं** हर बार उंग्लियों से शुरूअ़ कर के **टख़्नों** के ऊपर तक बल्कि मुस्तह़ब है कि आधी पिंडली तक तीन तीन बार धो लीजिये। दोनों पाउं की उंग्लियों का ख़िलाल करना सुन्नत है। (ख़िलाल के दौरान नल बन्द रखिये) इस का मुस्तह़ब त़रीक़ा येह है कि उलटे हाथ की छुंग्लिया से सीधे पाउं की छुंग्लिया का ख़िलाल शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म कीजिये और उलटे ही हाथ की छुंग्लिया से उलटे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंग्लिया पर ख़त्म कर लीजिये।

(आ़म्मए कुतुब)

مدینہ

1 : सर पर मस्ह़ का एक त़रीक़ा येह भी तह़रीर है इस में बिल ख़ुसूस इस्लामी बहनों के लिये ज़ियादा आसानी है चुनान्चे लिखा है : मस्ह़े सर में अदाए सुन्नत को येह भी काफ़ी है कि उंग्लियां सर के अगले ह़िस्से पर रखे और हथेलियां सर की करवटों पर और हाथ जमा कर गुद्दी तक खींचता ले जाए। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 621)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابويعلى)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : हर उ़ज़्व धोते वक़्त येह उम्मीद करता रहे कि मेरे इस उ़ज़्व के गुनाह निकल रहे हैं।

(اِحياءُ العُلوم ج ١ ص ١٨٣ مُلَخَّصاً)

वुज़ू के बचे हुए पानी में 70 बीमारियों से शिफ़ा

लोटे वग़ैरा से वुज़ू करने के बा'द बचा हुवा पानी खड़े हो कर पीने में **शिफ़ा** है चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "फ़तावा र-ज़विय्या" मुख़र्रजा जिल्द 4 सफ़ह़ा 575 ता 576 पर फ़रमाते हैं : **बक़िय्यए वुज़ू** (या'नी वुज़ू के बचे हुए पानी) के लिये शरअ़न अ़-ज़-मतो एह़तिराम है और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित कि हु़ज़ूर ने वुज़ू फ़रमा कर बक़िय्या आब (या'नी बचे हुए पानी) को खड़े हो कर नोश फ़रमाया और एक ह़दीस में रिवायत किया गया कि **इस का पीना सत्तर मरज़ से शिफ़ा है।** तो वोह इन उमूर में आबे ज़मज़म से मुशा-बहत रखता है ऐसे पानी से इस्तिन्जा मुनासिब नहीं। "तन्वीर" के आदाबे वुज़ू में है : "वुज़ू के बा'द वुज़ू का पसमान्दा (या'नी बचा हुवा पानी) क़िब्ला रुख़ खड़े हो कर पिये।" अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने तजरिबा किया है कि जब मैं बीमार होता हूं तो वुज़ू के बक़िय्या पानी से **शिफ़ा** ह़ासिल हो जाती है। नबिय्ये सादिक़ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस सह़ीह़ तिब्बे न-बवी में पाए जाने

www.dawateislami.net

वाले इर्शादे गिरामी पर ए'तिमाद करते हुए मैं ने येह त़रीक़ा इख़्तियार किया है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं

ह़दीसे पाक में है : जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया और फिर आस्मान की त़रफ़ निगाह उठाई और कलिमए शहादत पढ़ा उस के लिये **जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं** जिस से चाहे अन्दर दाख़िल हो। (سُنَنِ دارمی ج ۱ ص ۱۹۶ حدیث ۷۱۶)

नज़र कभी कमज़ोर न हो

जो वुज़ू के बा'द आस्मान की त़रफ़ देख कर **सूरए** اِنَّآ اَنْزَلْنٰہُ पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की नज़र कभी कमज़ोर न होगी।

(मसाइलुल कुरआन, स. 291)

वुज़ू के बा'द तीन बार सूरए क़द्र पढ़ने के फ़ज़ाइल

ह़दीसे मुबारक में है : जो वुज़ू के बा'द **एक मर्तबा सू-रतुल क़द्र** पढ़े तो वोह सिद्दीक़ीन में से है और जो **दो मर्तबा** पढ़े तो शु-हदा में शुमार किया जाए और जो **तीन मर्तबा** पढ़ेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैदाने मह़शर में उसे अपने अम्बिया के साथ रखेगा।

(کَنْزُالْعُمّال ج۹ص۱۳۲رقم۲۶۰۸۵، اَلحاوی لِلفتاوٰی للسُّیوطی ج۱ص۴۰۲)

वुज़ू के बा'द पढ़ने की दुआ़ (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

जो वुज़ू करने के बा'द येह कलिमात पढ़े :

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ، اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ۔

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! तू पाक है और तेरे लिये ही तमाम ख़ूबियां हैं मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं।

तो उस पर मोह्र लगा कर अ़र्श के नीचे रख दिया जाएगा और क़ियामत के दिन उस पढ़ने वाले को दे दिया जाएगा। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۲۱ رقم ۲۷۵٤)

वुज़ू के बा'द येह दुआ भी पढ़ लीजिये (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَھِّرِیْنَ۔

(ترمذی ج۱ ص۱۲۱ حدیث۵۵)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे पाकीज़ा रहने वालों में शामिल कर दे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लफ़्ज़ "अल्लाह" के चार हुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू के चार फ़राइज़

۞ चेहरा धोना ۞ कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना ۞ चौथाई सर का मस्ह़ करना ۞ टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना।

(عالمگیری ج۱ ص۵،٤،۳, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 288)

धोने की ता'रीफ़

किसी उ़ज़्व धोने के येह मा'ना हैं कि उस उ़ज़्व के हर ह़िस्से पर कम अज़ कम दो क़त़रे पानी बह जाए। सिर्फ़ भीग जाने या पानी को तेल की त़रह़ चुपड़ लेने या एक क़त़रा बह जाने को धोना नहीं कहेंगे न इस त़रह़ वुज़ू या ग़ुस्ल अदा होगा।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 218, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 288)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

"करम या रब्बल आ़-लमीन" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू की 14 सुन्नतें

"**वुज़ू** का त़रीक़ा" (ह़-नफ़ी) में बा'ज़ सुन्नतों और मुस्तह़ब्बात का बयान हो चुका है इस की मज़ीद वज़ाह़त मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ۞ निय्यत करना ۞ بِسْمِ اللّٰه पढ़ना । अगर वुज़ू से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه कह लें तो जब तक बा वुज़ू रहेंगे फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे ۞ दोनों हाथ पहुंचों तक तीन बार धोना ۞ तीन बार मिस्वाक करना ۞ तीन चुल्लू से तीन बार कुल्ली करना ۞ रोज़ा न हो तो ग़र-ग़रा करना ۞ तीन चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाना ۞ दाढ़ी हो तो (एह़राम में न होने की सूरत में) उस का ख़िलाल करना ۞ हाथ और ۞ पाउं की उंग्लियों का ख़िलाल करना ۞ पूरे सर का एक ही बार मस्ह़ करना ۞ कानों का मस्ह़ करना ۞ फ़राइज़ में तरतीब क़ाइम रखना (या'नी फ़र्ज़ आ'ज़ा में पहले मुंह फिर हाथ कोहनियों समेत धोना, फिर सर का मस्ह़ करना और फिर पाउं धोना) और ۞ पै दर पै वुज़ू करना या'नी एक उ़ज़्व सूखने न पाए कि दूसरा उ़ज़्व धो लेना ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 293, 294 मुलख़्ख़सन)

"या रसूलल्लाह तेरे दर की फ़ज़ाओं को सलाम" के उन्तीस हुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू के 29 मुस्तह़ब्बात

۞ क़िब्ला रू ۞ ऊंची जगह ۞ बैठना ۞ पानी बहाते वक़्त आ'ज़ा पर हाथ फैरना ۞ इत़्मीनान से वुज़ू करना ۞ आ'ज़ाए वुज़ू पर

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

पहले पानी चुपड़ लेना ख़ुसूसन सर्दियों में ۞ वुज़ू करने में बिग़ैर ज़रूरत किसी से मदद न लेना ۞ सीधे हाथ से कुल्ली करना ۞ सीधे हाथ से नाक में पानी चढ़ाना ۞ उलटे हाथ से नाक साफ़ करना ۞ उलटे हाथ की छुंग्लिया नाक में डालना ۞ उंग्लियों की पुश्त से गरदन की पुश्त का मस्ह़ करना ۞ कानों का मस्ह़ करते वक़्त भीगी हुई छुंग्लिया (या'नी छोटी उंग्लियां) कानों के सूराख़ों में दाख़िल करना ۞ अंगूठी को ह़-र-कत देना जब कि ढीली हो और येह यक़ीन हो कि इस के नीचे पानी बह गया है, अगर सख़्त हो तो ह़-र-कत दे कर अंगूठी के नीचे पानी बहाना **फ़र्ज़** है ۞ मा'ज़ूरे शर-ई (इस के तफ़्सीली अह़काम इसी रिसाले के सफ़ह़ा 34 ता 37 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये) न हो तो नमाज़ का वक़्त शुरूअ़ होने से पहले ही वुज़ू कर लेना ۞ जो कामिल त़ौर पर वुज़ू करता है या'नी जिस की कोई जगह पानी बहने से न रह जाती हो उस का कूओं (या'नी नाक की त़रफ़ आंखों के दोनों कोने) टख़्नों, एड़ियों, तल्वों, कूंचों (या'नी एड़ियों के ऊपर मोटे पट्ठे) घाइयों (या'नी उंग्लियों के दरमियान वाली जगहों) और कोहनियों का ख़ुसूसिय्यत के साथ ख़याल रखना और बे ख़याली करने वालों के लिये तो **फ़र्ज़** है कि इन जगहों का ख़ास ख़याल रखें कि अक्सर देखा गया है कि येह जगहें ख़ुश्क रह जाती हैं और येह बे ख़याली ही का नतीजा है ऐसी बे ख़याली **ह़राम** है और ख़याल रखना **फ़र्ज़** ۞ वुज़ू का लोटा उलटी त़रफ़ रखिये अगर त़श्त या पतीली वग़ैरा से वुज़ू करें तो सीधी जानिब रखिये ۞ चेहरा धोते वक़्त पेशानी पर इस

www.dawateislami.net

त़रह़ फैला कर पानी डालना कि ऊपर का कुछ ह़िस्सा भी धुल जाए ۞ चेहरे और ۞ हाथ पाउं की रोशनी वसीअ़ करना या'नी जितनी जगह पानी बहाना फ़र्ज़ है उस के अत़राफ़ में कुछ बढ़ाना म-सलन हाथ कोहनी से ऊपर आधे बाज़ू तक और पाउं टख़्नों से ऊपर आधी पिंडली तक धोना ۞ दोनों हाथों से मुंह धोना ۞ हाथ पाउं धोने में उंग्लियों से शुरूअ़ करना ۞ हर उ़ज़्व धोने के बा'द उस पर हाथ फैर कर बूंदें टपका देना ताकि बदन या कपड़े पर न टपकें ख़ुसूसन जब कि मस्जिद में जाना हो कि फ़र्शे मस्जिद पर वुज़ू के पानी के क़त़रे गिराना मक्रूहे तह़रीमी है ۞ हर उ़ज़्व के धोते वक़्त और मस्ह़ करते वक़्त निय्यते वुज़ू का ह़ाज़िर रहना ۞ इब्तिदा में بِسْمِ اللّٰه के साथ साथ दुरूद शरीफ़ और कलिमए शहादत पढ़ लेना ۞ आ'ज़ाए वुज़ू बिला ज़रूरत न पोंछिये अगर पोंछना हो तब भी बिला ज़रूरत बिल्कुल ख़ुश्क न कीजिये कुछ तरी बाक़ी रखिये कि बरोज़े क़ियामत नेकियों के पलड़े में रखी जाएगी ۞ वुज़ू के बा'द हाथ न झटकें कि शैत़ान का पंखा है ۞ बा'दे वुज़ू मियानी (या'नी पाजामे का वोह ह़िस्सा जो पेशाब गाह के क़रीब होता है) पर पानी छिड़क्ना। (पानी छिड़क्ते वक़्त मियानी को कुरते के दामन में छुपाए रखना मुनासिब है नीज़ वुज़ू करते वक़्त भी बल्कि हर वक़्त पर्दे में पर्दा करते हुए मियानी को कुरते के दामन या चादर वग़ैरा के ज़रीए छुपाए रखना ह़या के क़रीब है) ۞ अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना जिसे **तह़िय्यतुल वुज़ू** कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 293, 300)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

''काश ! कामिल वुज़ू नसीब हो'' के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू के 16 मक्रूहात

۞ वुज़ू के लिये नापाक जगह पर बैठना ۞ नापाक जगह वुज़ू का पानी गिराना ۞ आ'ज़ाए वुज़ू से लोटे वग़ैरा में क़त़रे टपकाना (मुंह धोते वक़्त भरे हुए चुल्लू में उ़मूमन चेहरे से पानी के क़त़रे गिरते हैं इस का ख़याल रखिये) ۞ क़िब्ले की त़रफ़ थूक या बल्ग़म डालना या कुल्ली करना ۞ बे ज़रूरत दुन्या की बात करना ۞ ज़ियादा पानी ख़र्च करना (**सदरुश्शरीअ़ह** मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त मुख़र्रजा जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 302 ता 303 पर फ़रमाते हैं : नाक में पानी डालते वक़्त आधा चुल्लू काफ़ी है तो अब पूरा चुल्लू लेना इसराफ़ है) ۞ इतना कम पानी ख़र्च करना कि सुन्नत अदा न हो (टोंटी न इतनी ज़ियादा खोलें कि पानी ह़ाजत से ज़ियादा गिरे न इतनी कम खोलें कि सुन्नत भी अदा न हो बल्कि मु-तवस्सित़ हो) ۞ मुंह पर पानी मारना ۞ मुंह पर पानी डालते वक़्त फूंकना ۞ एक हाथ से मुंह धोना कि रिफ़ाज़ व हुनूद का शिआ़र है ۞ गले का मस्ह़ करना ۞ उलटे हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी चढ़ाना ۞ सीधे हाथ से नाक साफ़ करना ۞ तीन जदीद पानियों से तीन बार सर का मस्ह़ करना ۞ धूप के गर्म पानी से वुज़ू करना ۞ होंट या आंखें ज़ोर से बन्द करना और अगर कुछ सूखा रह गया तो वुज़ू ही न होगा। **वुज़ू की हर सुन्नत का तर्क मक्रूह है इसी त़रह़ हर मक्रूह का तर्क सुन्नत।** (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 300, 301)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ़) करते रहेंगे। (طبرانی)

धूप के गर्म पानी की वज़ाह़त

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त मुख़र्रजा जिल्द अव्वल** सफ़ह़ा 301 के ह़ाशिये पर लिखते हैं **:** "जो पानी धूप से गर्म हो गया उस से वुज़ू करना मुत़्लक़न मक्रूह नहीं बल्कि इस में चन्द क़ुयूद हैं, जिन का ज़िक्र पानी के बाब में आएगा और इस से वुज़ू की कराहत तन्ज़ीही है तह़रीमी नहीं।" पानी के बाब में सफ़ह़ा 334 पर लिखते हैं **:** "जो पानी गर्म मुल्क में गर्म मौसिम में सोने चांदी के सिवा किसी और धात के बरतन में धूप में गर्म हो गया, तो जब तक गर्म है उस से वुज़ू और ग़ुस्ल न चाहिये, न उस को पीना चाहिये बल्कि बदन को किसी त़रह़ पहुंचना न चाहिये, यहां तक कि अगर उस से कपड़ा भीग जाए तो जब तक ठन्डा न हो ले उस के पहनने से बचें कि उस पानी के इस्ति'माल में अन्देशए बरस (या'नी बदन पर सफ़ेद दाग़ का अन्देशा) है, फिर भी अगर वुज़ू या ग़ुस्ल कर लिया तो हो जाएगा।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 301, 334)

मुस्ता'मल पानी का अहम मस्अला

अगर बे वुज़ू शख़्स का हाथ या उंगली का पोरा या नाख़ुन या बदन का कोई टुकड़ा जो वुज़ू में धोया जाता हो जान बूझ कर या भूल कर दह दर दह (10x10) से कम पानी (म-सलन पानी से भरी हुई बालटी या लोटे वग़ैरा) में पड़ जाए तो पानी मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) हो गया और अब वुज़ू और ग़ुस्ल के लाइक़ न रहा। इसी त़रह़ जिस पर

www.dawateislami.net

गुस्ल फ़र्ज़ हो उस के जिस्म का कोई बे धुला हुवा ह़िस्सा पानी से छू जाए तो वोह पानी वुज़ू और गुस्ल के काम का न रहा। हां अगर धुला हाथ या धुले हुए बदन का कोई ह़िस्सा पड़ जाए तो ह़रज नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 333) (मुस्ता'मल पानी और वुज़ू व गुस्ल के तफ़्सीली अह़काम सीखने के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 2 का मुत़ा–लआ़ फ़रमाइये)

मिट्टी मिले पानी से वुज़ू होगा या नहीं

۞ **पानी** में रैत कीचड़ मिल जाए तो जब तक रक़ीक़ (या'नी पानी पतला) रहे उस से वुज़ू जाइज़ है। **अक़्ूल** (आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं कहता हूं") मगर बिला ज़रूरत कीचड़ मिले हुए (पानी) से वुज़ू करना मन्अ़ है कि **मुस्ला** या'नी सूरत बिगाड़ना है और येह शर–अ़न **ह़राम** है (फ़तावा र–ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 650) (मा'लूम हुवा मुंह पर इस त़रह़ मिट्टी मलना कि सूरत बिगड़ जाए या मुंह काला करना जैसा कि बा'ज़ अवक़ात चोर का कोएले वग़ैरा से मुंह काला कर देते हैं येह ह़राम है क़स्दन काफ़िर का भी मुस्ला करना या'नी चेहरा बिगाड़ना जाइज़ नहीं) ۞ जिस पानी में कोई बदबूदार चीज़ मिल जाए उस से वुज़ू मकरूह है खुसूसन अगर उस की बदबू नमाज़ में बाक़ी रहे कि (इस से नमाज़) मकरूहे तह़रीमी होगी। (ऐज़न, स. 650)

पान खाने वाले मु–तवज्जेह हों

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब–र–कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त,

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : पानों के कसरत से आ़दी ख़ुसूसन जब कि दांतों में फ़ज़ा (गेप) हो तजरिबे से जानते हैं छालिया के बारीक रेज़े और पान के बहुत छोटे छोटे टुकड़े इस त़रह़ मुंह के अत़राफ़ व अक्नाफ़ में जा गीर होते हैं (या'नी मुंह के कोनों और दांतों के खांचों में घुस जाते हैं) कि तीन बल्कि कभी दस बारह कुल्लियां भी उन के तस्फ़िय़ए ताम (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) को काफ़ी नहीं होतीं, न ख़िलाल उन्हें निकाल सकता है न मिस्वाक, सिवा कुल्लियों के कि पानी मनाफ़िज़ (या'नी सूराख़ों) में दाख़िल होता और जुम्बिशें देने (या'नी हिलाने) से जमे हुए बारीक ज़र्रों को ब तदरीज छुड़ा छुड़ा कर लाता है, इस की भी कोई तह्दीद (ह़द बन्दी) नहीं हो सकती और येह कामिल तस्फ़िया (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) भी बहुत मुअक्कद (या'नी इस की सख़्त ताकीद) है मु-तअ़द्दद अह़ादीस में इर्शाद हुवा है कि : "जब बन्दा नमाज़ को खड़ा होता है फ़िरिश्ता उस के मुंह पर अपना मुंह रखता है येह जो पढ़ता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शै उस के दांतों में होती है मलाएका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शै से नहीं होती।"

ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई रात को नमाज़ के लिये खड़ा हो तो चाहिये कि मिस्वाक कर ले क्यूं कि जब वोह अपनी नमाज़ में क़िराअत करता है तो फ़िरिश्ता अपना मुंह इस के मुंह पर रख लेता है और

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

जो चीज़ इस के मुंह से निकलती है वोह फ़िरिश्ते के मुंह में दाख़िल हो जाती है।[1] और "त़-बरानी ने कबीर" में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत की है कि दोनों फ़िरिश्तों पर इस से ज़ियादा कोई चीज़ गिरां नहीं कि वोह अपने साथी को नमाज़ पढ़ता देखें और उस के दांतों में खाने के रेज़े फंसे हों।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیرج٤ص١٧٧حدیث٤٠٦١, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 624, 625)

तसव्वुफ़ का अ़ज़ीम म-दनी नुस्ख़ा

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं : वुज़ू से फ़राग़त के बा'द जब आप नमाज़ की त़रफ़ मु-तवज्जेह हों उस वक़्त येह तसव्वुर कीजिये कि जिन ज़ाहिरी आ'ज़ा पर लोगों की नज़र पड़ती है वोह तो ब ज़ाहिर त़ाहिर (या'नी पाक) हो चुके मगर दिल को पाक किये बिग़ैर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मुनाजात करना ह़या के ख़िलाफ़ है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दिलों को भी देखने वाला है। मज़ीद फ़रमाते हैं : ज़ाहिरी वुज़ू कर लेने वाले को येह बात याद रखनी चाहिये कि दिल की त़हारत (या'नी सफ़ाई) तौबा करने और गुनाहों को छोड़ने और उ़म्दा अख़्लाक़ अपनाने से होती है। जो शख़्स दिल को गुनाहों की आलू-दगियों से पाक नहीं करता फ़क़त़ ज़ाहिरी त़हारत (या'नी सफ़ाई) और ज़ैबो ज़ीनत पर इक्तिफ़ा करता है उस की मिसाल उस शख़्स की

مدینہ

[1] شُعَبُ الْاِیمان ج٢ص٣٨١رقم٢١١٧

www.dawateislami.net

सी है जो बादशाह को मदऊ़ करता है और अपने घर को बाहर से ख़ूब चमकाता है और रंगो रोग़न करता है मगर मकान के अन्दरूनी ह़िस्से की सफ़ाई पर कोई तवज्जोह नहीं देता। अब ऐसी सूरत में जब बादशाह उस के मकान के अन्दर आ कर गन्दगियां देखेगा तो वोह नाराज़ होगा या राज़ी येह हर ज़ी शुऊ़र ख़ुद समझ सकता है। (اِحیاءُ العُلوم ج۱ص۱۸۵ مُلَخَّصاً)

"सब्र कर" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से ज़ख़्म वग़ैरा से ख़ून निकलने के 5 अह़काम

۞ ख़ून, पीप या ज़र्द पानी कहीं से निकल कर बहा और उस के बहने में ऐसी जगह पहुंचने की सलाह़िय्यत थी जिस जगह का वुज़ू या ग़ुस्ल में धोना फ़र्ज़ है तो **वुज़ू** जाता रहा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 304) ۞ ख़ून अगर चमका या उभरा और बहा नहीं जैसे सूई की नोक या चाक़ू का कनारा लग जाता है और ख़ून उभर या चमक जाता है या ख़िलाल किया या मिस्वाक की या उंगली से दांत मांझे या दांत से कोई चीज़ म-सलन सेब वग़ैरा काटा उस पर ख़ून का असर ज़ाहिर हुवा या नाक में उंगली डाली इस पर ख़ून की सुर्ख़ी आ गई मगर वोह ख़ून बहने के क़ाबिल न था **वुज़ू** नहीं टूटा। (ऐज़न) ۞ अगर बहा मगर बह कर ऐसी जगह नहीं आया जिस का ग़ुस्ल या वुज़ू में धोना फ़र्ज़ हो म-सलन आंख में दाना था और टूट कर अन्दर ही फैल गया बाहर नहीं निकला या पीप या ख़ून कान के सूराख़ों के अन्दर ही रहा बाहर न निकला तो इन सूरतों में **वुज़ू** न टूटा (ऐज़न, स. 27) ۞ ज़ख़्म बेशक बड़ा है रत़ूबत चमक रही

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

है मगर जब तक बहेगी नहीं **वुज़ू** नहीं टूटेगा। (ऐज़न) ۞ ज़ख़्म का ख़ून बार बार पोंछते रहे कि बहने की नौबत न आई तो ग़ौर कर लीजिये कि अगर इतना ख़ून पोंछ लिया है कि अगर न पोंछते तो बह जाता तो **वुज़ू** टूट गया, नहीं तो नहीं। (ऐज़न)

सर्दी से आ'ज़ा फट जाएं तो......

सर्दी वग़ैरा से आ'ज़ा फट गए धो सके धोए, ठन्डा पानी नुक़्सान करे तो गर्म पानी अगर कर सकता हो करना वाजिब, अगर गर्म से भी नुक़्सान हो तो मस्ह़ करे, अगर मस्ह़ भी नुक़्सान दे तो उस पर जो पट्टी बंधी या दवा का ज़िमाद (या'नी लेप) है उस पर पानी बहाए, येह भी ज़रर (या'नी नुक़्सान) दे तो उस पट्टी या ज़िमाद (या'नी लेप, PESTE) पूरे पर मस्ह़ करे इस से (भी) नुक़्सान हो तो छोड़ दे, मुआ़फ़ है।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 620)

वुज़ू में मेहंदी और सुरमे का मस्अला

۞ **औ़रत** के हाथ पाउं पर **मेहंदी का जिर्म** लगा रह गया और ख़बर न हुई तो वुज़ू व ग़ुस्ल हो जाएगा। हां जब इत्तिलाअ़ हो छुड़ा कर वहां पानी बहा दे। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 613)

۞ सुरमा आंख के कूए (या'नी आंख के कोने) या पलक में रह गया और इत्तिलाअ़ न हुई ज़ाहिरन ह़रज नहीं और बा'दे नमाज़ कूए (आंख के कोने) में मह़सूस हुवा तो अस्लन बाक (या'नी बिल्कुल अन्देशा) नहीं। (मत़लब येह कि नमाज़ हो गई) (ऐज़न)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

इन्जेक्शन लगाने से वुज़ू टूटेगा या नहीं ?

۞ गोश्त में इन्जेक्शन लगाने में सिर्फ़ इसी सूरत में वुज़ू टूटेगा जब कि बहने की मिक़्दार में ख़ून निकले ۞ जब कि नस का इन्जेक्शन लगा कर पहले ख़ून ऊपर की त़रफ़ खींचते हैं जो कि बहने की मिक़्दार में होता है लिहाज़ा वुज़ू टूट जाता है ۞ इसी त़रह़ ग्लूकोज़ वग़ैरा की ड्रिप नस में लगवाने से वुज़ू टूट जाएगा क्यूं कि बहने की मिक़्दार में ख़ून निकल कर नलकी में आ जाता है। हां बहने की मिक़्दार में ख़ून नलकी में न आए तो वुज़ू नहीं टूटेगा ۞ सिरिंज के ज़रीए़ टेस्ट करने के लिये ख़ून निकालने से वुज़ू टूट जाता है क्यूं कि येह बहने की मिक़्दार में होता है इसी लिये येह ख़ून पेशाब की त़रह़ नापाक भी होता है, ख़ून से भरी हुई शीशी जेब में रख कर नमाज़ पढ़ी, न हुई नीज़ ख़ून या पेशाब की शीशी अगर्चे अच्छी त़रह़ बन्द हो मस्जिद के अन्दर भी नहीं ला सकते, लाएंगे तो गुनहगार होंगे।

दुखती आंख के आंसू

۞ आंख की बीमारी के सबब जो आंसू बहा वोह नापाक है और वुज़ू भी तोड़ देगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 310) अफ़्सोस ! अक्सर लोग इस मस्अले से ना वाक़िफ़ होते हैं और **दुखती आंख** से ब वज्हे मरज़ बहने वाले आंसू को और आंसूओं की मानिन्द समझ कर आस्तीन या कुरते के दामन वग़ैरा से पोंछ कर कपड़े नापाक कर डालते हैं ۞ नाबीना की आंख से जो रत़ूबत ब वज्हे मरज़ निकलती है वोह नापाक है और इस से वुज़ू भी टूट जाता है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 306)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

पाक और नापाक रत़ूबत

❁ **जो** रत़ूबत इन्सानी बदन से निकले और वुज़ू न तोड़े वोह नापाक नहीं। म-सलन ख़ून या पीप बह कर न निकले या थोड़ी क़ै कि मुंह भर न हो पाक है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 309)

छाला और फुड़िया

❁ छाला नोच डाला अगर उस का पानी बह गया तो वुज़ू टूट गया वरना नहीं। (ऐज़न, स. 305) ❁ फुड़िया बिल्कुल अच्छी हो गई उस की मुर्दा खाल बाक़ी है जिस में ऊपर मुंह और अन्दर ख़ला है अगर उस में पानी भर गया और दबा कर निकाला तो न वुज़ू जाए न वोह पानी नापाक। हां अगर उस के अन्दर कुछ तरी ख़ून वग़ैरा की बाक़ी है तो वुज़ू भी जाता रहेगा और वोह पानी भी नापाक है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 355, 356) ❁ ख़ारिश या फुड़ियों में अगर बहने वाली रत़ूबत न हो सिर्फ़ चिपक हो और कपड़ा उस से बार बार छू कर चाहे कितना ही सन जाए पाक है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 310) ❁ नाक साफ़ की उस में से जमा हुवा ख़ून निकला वुज़ू न टूटा, अन्सब (या'नी ज़ियादा मुनासिब) येह है कि वुज़ू करे। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 281)

क़ै से वुज़ू कब टूटता है ?

❁ **मुंह** भर क़ै खाने, पानी या सफ़रा (या'नी पीले रंग का कड़वा पानी) की वुज़ू तोड़ देती है। जो क़ै तकल्लुफ़ के बिग़ैर न रोकी जा सके उसे मुंह भर कहते हैं। मुंह भर क़ै पेशाब की त़रह़ नापाक होती है इस के

www.dawateislami.net

छींटों से अपने कपड़े और बदन को बचाना ज़रूरी है ।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 306, 390 वग़ैरा)

हंसने के अह़काम

﴾1﴿ रुकूअ़ व सुजूद वाली नमाज़ में बालिग़ ने क़ह्क़हा लगा दिया या'नी इतनी आवाज़ से हंसा कि आस पास वालों ने सुना तो वुज़ू भी गया और नमाज़ भी गई, अगर इतनी आवाज़ से हंसा कि सिर्फ़ ख़ुद सुना तो नमाज़ गई वुज़ू बाक़ी है, मुस्कुराने से न नमाज़ जाएगी न वुज़ू । मुस्कुराने में आवाज़ बिलकुल नहीं होती सिर्फ़ दांत ज़ाहिर होते हैं (مَراقِی الْفَلاح ص ٦٤) ﴾2﴿ बालिग़ ने नमाज़े जनाज़ा में क़ह्क़हा लगाया तो नमाज़ टूट गई वुज़ू बाक़ी है । (اَیضاً) ﴾3﴿ नमाज़ के इ़लावा क़ह्क़हा लगाने से वुज़ू नहीं जाता मगर दोबारा कर लेना मुस्तह़ब है । (مَراقِی الْفَلاح ص ٦٠) हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी भी क़ह्क़हा नहीं लगाया लिहाज़ा हमें भी कोशिश करनी चाहिये कि येह सुन्नत भी ज़िन्दा हो और हम ज़ोर ज़ोर से न हंसें । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : **اَلْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطٰنِ وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى** या'नी क़ह्क़हा शैत़ान की त़रफ़ से है और मुस्कुराना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है । (اَلْمُعْجَمُ الصَّغِیر لِلطَّبَرَانِیّ ج٢ص١٠٤)

क्या सत्र देखने से वुज़ू टूट जाता है ?

अ़वाम में मशहूर है कि घुटना या सत्र खुलने या अपना या पराया सत्र देखने से वुज़ू टूट जाता है येह बिल्कुल ग़लत़ है । हां वुज़ू के आदाब से है कि नाफ़ से ले कर दोनों घुटनों समेत सब सत्र छुपा हो

www.dawateislami.net

बल्कि इस्तिन्जा के बा'द फ़ौरन ही छुपा लेना चाहिये कि बिग़ैर ज़रूरत सत्र खुला रखना मन्अ़ और दूसरों के सामने सत्र खोलना ह़राम है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 309)

ग़ुस्ल का वुज़ू काफ़ी है

ग़ुस्ल के लिये जो वुज़ू किया था वोही काफ़ी है ख़्वाह बरह्ना नहाएं। अब ग़ुस्ल के बा'द दोबारा वुज़ू करना ज़रूरी नहीं बल्कि अगर वुज़ू न भी किया हो तो ग़ुस्ल कर लेने से आ'ज़ाए वुज़ू पर भी पानी बह जाता है लिहाज़ा वुज़ू भी हो गया, कपड़े तब्दील करने से भी वुज़ू नहीं जाता।

थूक में ख़ून

《1》 मुंह से ख़ून निकला अगर थूक पर ग़ालिब है तो वुज़ू टूट जाएगा वरना नहीं, ग़-लबे की शनाख़्त येह है कि अगर थूक का रंग सुर्ख़ हो जाए तो ख़ून ग़ालिब समझा जाएगा और वुज़ू टूट जाएगा येह सुर्ख़ थूक नापाक भी है। अगर थूक ज़र्द (या'नी पीला) हो तो ख़ून पर थूक ग़ालिब माना जाएगा लिहाज़ा न वुज़ू टूटेगा न येह ज़र्द थूक नापाक।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 305)

《2》 मुंह से इतना ख़ून निकला कि थूक सुर्ख़ हो गया और लोटे या गिलास से मुंह लगा कर कुल्ली के लिये पानी लिया तो लोटा गिलास और कुल पानी नजिस हो गया लिहाज़ा ऐसे मौक़अ़ पर चुल्लू में पानी ले कर एह़तियात़ से कुल्ली कीजिये और येह भी एह़तियात़ फ़रमाइये कि छींटे उड़ कर आप के कपड़ों वग़ैरा पर न पड़ें।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

वुज़ू में शक आने के 5 अह़काम

۞ अगर दौराने वुज़ू किसी उ़ज़्व के धोने में शक वाक़ेअ़ हो और अगर येह ज़िन्दगी का पहला वाक़िआ़ है तो इस को धो लीजिये और अगर अक्सर शक पड़ा करता है तो इस की त़रफ़ तवज्जोह न दीजिये । इसी त़रह़ अगर बा'दे वुज़ू भी शक पड़े तो इस का कुछ ख़याल मत कीजिये । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 310) ۞ आप बा वुज़ू थे अब शक आने लगा कि पता नहीं वुज़ू है या नहीं, ऐसी सूरत में आप बा वुज़ू हैं क्यूं कि सिर्फ़ शक से वुज़ू नहीं टूटता । (ऐज़न, स. 311) ۞ वस्वसे की सूरत में एह़तियात़न वुज़ू करना एह़तियात़ नहीं इत्तिबाए़ शैत़ान है (ऐज़न) ۞ यक़ीनन आप उस वक़्त तक बा वुज़ू हैं जब तक वुज़ू टूटने का ऐसा यक़ीन न हो जाए कि क़सम खा सकें ۞ कोई उ़ज़्व धोने से रह गया है मगर येह याद नहीं कौन सा उ़ज़्व था तो बायां (या'नी उलटा) पाउं धो लीजिये । (دُرِّمُختار ج ۱ ص ۳۱۰)

सोने से वुज़ू टूटने न टूटने का बयान

नींद से वुज़ू टूटने की दो शर्तें हैं : ﴾1﴿ दोनों सुरीन अच्छी त़रह़ जमे हुए न हों ﴾2﴿ ऐसी ह़ालत पर सोया जो ग़ाफ़िल हो कर सोने में रुकावट न हो । जब दोनों शर्तें जम्अ़ हों या'नी सुरीन भी अच्छी त़रह़ जमे हुए न हों नीज़ ऐसी ह़ालत में सोया हो जो ग़ाफ़िल हो कर सोने में रुकावट न हो तो ऐसी नींद से वुज़ू टूट जाता है । अगर एक शर्त़ पाई जाए और दूसरी न पाई जाए तो वुज़ू नहीं टूटेगा ।

www.dawateislami.net

सोने के वोह दस अन्दाज़ जिन से वुज़ू नहीं टूटता : ﴾1﴿ इस त़रह़ बैठना कि दोनों सुरीन ज़मीन पर हों और दोनों पाउं एक त़रफ़ फैलाए हों । (कुरसी, रेल और बस की सीट पर बैठने का भी येही हुक्म है) ﴾2﴿ इस त़रह़ बैठना कि दोनों सुरीन ज़मीन पर हों और पिंडलियों को दोनों हाथों के ह़ल्के़ में ले ले ख़्वाह हाथ ज़मीन वग़ैरा पर या सर घुटनों पर रख ले ﴾3﴿ चार ज़ानू या'नी पालती (चोकड़ी) मार कर बैठे ख़्वाह ज़मीन या तख़्त या चारपाई वग़ैरा पर हो ﴾4﴿ दो ज़ानू सीधा बैठा हो ﴾5﴿ घोड़े या ख़च्चर वग़ैरा पर ज़ीन रख कर सुवार हो ﴾6﴿ नंगी पीठ पर सुवार हो मगर जानवर चढ़ाई पर चढ़ रहा हो या रास्ता हमवार हो ﴾7﴿ तक्ये से टेक लगा कर इस त़रह़ बैठा हो कि सुरीन जमे हुए हों अगर्चे तक्या हटाने से येह गिर पड़े ﴾8﴿ खड़ा हो ﴾9﴿ रुकूअ़ की ह़ालत में हो ﴾10﴿ सुन्नत के मुत़ाबिक़ जिस त़रह़ मर्द सज्दा करता है इस त़रह़ सज्दा करे कि पेट रानों और बाज़ू पहलूओं से जुदा हों मज़्कूरा सूरतें नमाज़ में वाके़अ़ हों या इलावा नमाज़, वुज़ू नहीं टूटेगा और नमाज़ भी फ़ासिद न होगी अगर्चे क़स्दन सोए, अलबत्ता जो रुक्न बिल्कुल सोते हुए अदा किया उस का इआ़दा (या'नी दोबारा अदा करना) ज़रूरी है और जागते हुए शुरूअ़ किया फिर नींद आ गई तो जो ह़िस्सा जागते अदा किया वोह अदा हो गया बक़िय्या अदा करना होगा ।

सोने के वोह दस अन्दाज़ जिन से वुज़ू टूट जाता है : ﴾1﴿ उक्डूं या'नी पाउं के तल्वों के बल इस त़रह़ बैठा हो कि दोनों घुटने खड़े रहें ﴾2﴿ चित या'नी पीठ के बल लैटा हो ﴾3﴿ पट या'नी पेट के

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

बल लैटा हो ﴾4﴿ दाईं या बाईं करवट लैटा हो ﴾5﴿ एक कोहनी पर टेक लगा कर सो जाए ﴾6﴿ बैठ कर इस त़रह़ सोया कि एक करवट झुका हो जिस की वज्ह से एक या दोनों सुरीन उठे हुए हों ﴾7﴿ नंगी पीठ पर सुवार हो और जानवर पस्ती (या'नी निचान) की जानिब उतर रहा हो ﴾8﴿ पेट रानों पर रख कर दो ज़ानू इस त़रह़ बैठे सोया कि दोनों सुरीन जमे न रहें ﴾9﴿ चार ज़ानू या'नी चोकड़ी मार कर इस त़रह़ बैठे कि सर रानों या पिंडलियों पर रखा हो ﴾10﴿ जिस त़रह़ औ़रत सज्दा करती है इस त़रह़ सज्दे के अन्दाज़ पर सोया कि पेट रानों और बाज़ू पहलूओं से मिले हुए हों या कलाइयां बिछी हुई हों। मज़्कूरा सूरतें नमाज़ में वाक़ेअ़ हों या नमाज़ के इ़लावा वुज़ू टूट जाएगा। फिर अगर इन सूरतों में क़स्दन सोया तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और बिला क़स्द सोया तो वुज़ू टूट जाएगा मगर नमाज़ बाक़ी है। बा'दे वुज़ू (मख़्सूस शराइत़ के साथ) बक़िय्या नमाज़ उसी जगह से पढ़ सकता है जहां नींद आई थी। शराइत़ न मा'लूम हों तो नए सिरे से पढ़ ले। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 365 ता 367)

वुज़ूए अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और नींद मुबारक

अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का वुज़ू सोने से नहीं जाता। **फ़ाएदा :** अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आंखें सोती हैं दिल कभी नहीं सोता ۞ बा'ज़ नवाक़िज़े वुज़ू (या'नी बा'ज़ वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें) अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये यूं नाक़िज़े वुज़ू (वुज़ू टूटने का सबब) नहीं कि इन का वुक़ूअ़ (या'नी वाक़ेअ़ होना) ही उन से मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) है जैसे जुनून (या'नी पागल पन) या नमाज़ में क़ह्क़हा ۞ ग़शी (या'नी

www.dawateislami.net

बेहोशी) भी अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मे ज़ाहिर पर त़ारी हो सकती है, दिल मुबारक इस ह़ालत में भी बेदार व ख़बरदार रहता।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 740)

मसाजिद के वुज़ूख़ाने

मिस्वाक करने से बा'ज़ अवक़ात दांतों में ख़ून आ जाता है और थूक भी सुर्ख़ होने की वज्ह से नापाक हो जाता है मगर अफ़्सोस कि एह़तियात़ नहीं की जाती। मसाजिद के वुज़ूख़ाने भी अक्सर कम गहरे होते हैं जिस की वज्ह से सुर्ख़ थूक वाली कुल्ली के छींटे कपड़ों या बदन पर पड़ते हैं, नीज़ घर के ह़म्माम के पुख़्ता फ़र्श पर वुज़ू करते वक़्त इस से भी ज़ियादा छींटे पड़ते हैं।

घर में वुज़ूख़ाना बनवाइये

आज कल बेसीन (हाथ धोने की कूंडी) पर खड़े खड़े वुज़ू करने का रवाज है जो कि ख़िलाफ़े मुस्तह़ब है। **अफ़्सोस !** लोग असाइशों भरी बड़ी बड़ी कोठियां तो बनाते हैं मगर इस में **वुज़ूख़ाना** नहीं बनवाते ! सुन्नतों का दर्द रखने वाले इस्लामी भाइयों की ख़िदमतों में म-दनी इल्तिजा है कि हो सके तो अपने मकान में कम अज़ कम एक टोंटी का वुज़ूख़ाना ज़रूर बनवाइये। इस में येह एह़तियात़ ज़रूर रखिये कि टोंटी की धार बराहे रास्त फ़र्श पर गिरने के बजाए ढलवान पर गिरे वरना दांतों में ख़ून वग़ैरा आने की सूरत में बदन या लिबास पर छींटे उड़ने का मस्अला रहेगा अगर आप मोह़तात़ वुज़ूख़ाना बनवाना चाहते हैं तो इसी रिसाले के पीछे दिये हुए नक़्शे से रहनुमाई ह़ासिल कीजिये।

www.dawateislami.net

डब्ल्यूसी (W.C.) में पानी से इस्तिन्जा करने की सूरत में उ़मूमन दोनों पाउं के टख़्नों की त़रफ़ छींटे आते हैं लिहाज़ा फ़राग़त के बा'द एह़तियात़न पाउं के येह ह़िस्से धो लेने चाहिएं।

वुज़ूख़ाना बनवाने का त़रीक़ा

एक नल के घरेलू **वुज़ूख़ाने** की कुल मसाह़त या'नी लम्बाई साढ़े बियालीस इन्च और चौड़ाई पौने उन्चास इन्च, ऊंचाई ज़मीन से पौने चौदह इन्च, इस के ऊपर मज़ीद साढ़े सात इन्च ऊंची निशस्त गाह (SEAT) जिस का अ़र्ज़ (या'नी चौड़ाई) साढ़े बत्तीस इन्च और लम्बाई एक सिरे से दूसरे सिरे तक या'नी ज़ीने की मानिन्द, इस निशस्त गाह और सामने की दीवार का दरमियानी फ़ासिला 25 इन्च, आगे की त़रफ़ इस त़रह़ ढलवान (slope) बनवाइये कि नाली साढ़े सात इन्च से ज़ियादा न हो, पाउं रखने की जगह क़दम की लम्बाई से मा'मूली सी ज़ियादा म-सलन कुल सवा ग्यारह इन्च हो, और इस सारी जगह का अगला ह़िस्सा साढ़े चार इन्च खुर-दरा रखिये ताकि रगड़ कर पाउं का मैल (खुसूसन सर्दियों में) छुड़ाया जा सके। **L** (एल) या **u** (यू) साख़्त का ''मिक्सचर नल'' नाली की ज़मीन से 32 इन्च ऊपर हो, नल की तरकीब इस त़रह़ रखिये कि पानी की धार ढलवान (slope) पर गिरे और आप के लिये दांतों के ख़ून वग़ैरा नजासत से बचना आसान हो। ह़स्बे ज़रूरत तरमीम कर के मसाजिद में भी इसी तरकीब से वुज़ूख़ाना बनवाया जा सकता है।

नोट : अगर टाइल्ज़ लगवानी हों तो कम अज़ कम ढलवान में सफ़ेद रंग

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

की लगवाइये ताकि मिस्वाक करने में अगर दांतों से ख़ून आता हो तो थूक वग़ैरा में नज़र आ जाए।

"या रसूले खुदा" के नव हुरूफ़ की निस्बत से वुज़ूख़ाने के 9 म-दनी फूल

﴾1﴿ **मुम्किन** हो तो इसी रिसाले के पीछे दिये हुए नक़्शे से रहनुमाई ह़ासिल कर के अपने घर में वुज़ूख़ाना बनवाइये।

﴾2﴿ (मि'मार के दलाइल सुने बिग़ैर) दिये हुए नक़्शे के मुत़ाबिक़ बने हुए घरेलू वुज़ूख़ाने के बालाई (या'नी पाउं रखने वाले) फ़र्श की ढलवान (slope) दो इन्च रखिये।

﴾3﴿ **अगर** एक से ज़ियादा नल लगवाने हों तो दो नलों के दरमियान 25 इन्च का फ़ासिला रखिये।

﴾4﴿ **वुज़ूख़ाने** की टोंटी में ह़स्बे ज़रूरत कपड़ा या प्लास्टिक की निपल लगा लीजिये।

﴾5﴿ **अगर** पाइप दीवार के बाहर से लगवाएं तो निशस्त गाह ज़रूरतन एक या दो इन्च मज़ीद दूर कर लीजिये।

﴾6﴿ **बेहतर** येह है कि कच्चा काम करवा कर एकआध बार उस पर बैठ कर या वुज़ू कर के अच्छी त़रह़ देख लेने के बा'द पुख़्ता करवाइये।

﴾7﴿ **वुज़ूख़ाने** या ह़म्माम वग़ैरा के फ़र्श पर टाइल्ज़ लगवाने हों तो खुर-दरे (Slip Resistance Tiles) लगवाइये ताकि फिसल्ने का ख़त़रा कम हो जाए।

﴾8﴿ पाउं रखने की जगह का सिरा (या'नी कनारा) और इस की ढलान

www.dawateislami.net

के कम अज़ कम दो दो इन्च ह़िस्से पर टाइल्ज़ न हो बल्कि वोह ह़िस्सा सीमेन्ट से खुर-दरा और गोल बनवाइये ताकि ज़रूरतन पाउं रगड़ कर मैल छुड़ाया जा सके।

﴾9﴿ **बावर्ची** ख़ाना, ग़ुस्ल ख़ाना, बैतुल ख़ला का फ़र्श, खुला सेह़्न, छत, मस्जिद का वुज़ूख़ाना और जहां जहां पानी बहाने की ज़रूरत पड़ती है उन मक़ामात के फ़र्श की ढलवान (slope) मि'मार जो बताए उस से बिला झिजक डेढ़ गुना (म-सलन वोह दो इन्च कहे तो आप तीन इन्च) रखवाइये। मि'मार तो येही कहेगा कि आप फ़िक्र मत कीजिये एक क़त़रा भी पानी नहीं रुकेगा अगर आप उस की बातों में आ गए तो हो सकता है ढलवान बराबर न बने लिहाज़ा उस की बात पर ए'तिमाद नहीं करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस का फ़ाएदा आप ख़ुद ही देख लेंगे क्यूं कि मुशा-हदा येही है कि अक्सर फ़र्श वग़ैरा पर जगह जगह पानी खड़ा रह जाता है।

जिन का वुज़ू न रहता हो उन के लिये 6 अह़काम

﴾1﴿ **क़त़रा** आने, पीछे से रीह़ ख़ारिज होने, ज़ख़्म बहने, दुखती आंख से ब वज्हे मरज़ आंसू बहने, कान, नाफ़, पिस्तान से पानी निकलने, फोड़े या नासूर से रत़ूबत बहने और दस्त आने से वुज़ू टूट जाता है। अगर किसी को इस त़रह़ का मरज़ मुसल्सल जारी रहे और शुरूअ़ से आख़िर तक पूरा एक वक़्त गुज़र गया कि वुज़ू के साथ नमाज़े फ़र्ज़ अदा न कर सका वोह शर-अ़न **मा'ज़ूर** है, एक वुज़ू से उस वक़्त में जितनी नमाज़ें चाहे पढ़े। इस का वुज़ू उस मरज़ से नहीं टूटेगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स.

www.dawateislami.net

385, ٥٥٣ دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج١ص) इस मस्अले को मज़ीद आसान लफ़्ज़ों में समझाने की कोशिश करता हूं। इस क़िस्म के मरीज़ और मरीज़ा अपने मा'ज़ूरे शर-ई होने न होने की जांच इस त़रह़ करें कि कोई सी भी दो फ़र्ज़ नमाज़ों के दरमियानी वक़्त में कोशिश करें कि वुज़ू कर के त़हारत के साथ कम अज़ कम फ़र्ज़ रक्अ़तें अदा की जा सकें। पूरे वक़्त के दौरान बार बार कोशिश के बा वुजूद अगर इतनी मोहलत नहीं मिल पाती, वोह इस त़रह़ कि कभी तो दौराने वुज़ू ही उ़ज़्र लाह़िक़ हो जाता है और कभी वुज़ू मुकम्मल कर लेने के बा'द नमाज़ अदा करते हुए, ह़त्ता कि आख़िरी वक़्त आ गया तो अब उन्हें इजाज़त है कि वुज़ू कर के नमाज़ अदा करें नमाज़ हो जाएगी, अब चाहे दौराने अदाइगिये नमाज़, बीमारी के बाइ़स नजासत बदन से ख़ारिज ही क्यूं न हो रही हो। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : किसी शख़्स की नक्सीर फूट गई या उस का ज़ख़्म बह निकला तो वोह आख़िरी वक़्त का इन्तिज़ार करे अगर ख़ून मुन्क़त़अ़ न हो (बल्कि मुसल्सल या वक़्फ़े वक़्फ़े से जारी रहे) तो वक़्त निकलने से पहले वुज़ू कर के नमाज़ अदा करे। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج١ص٣٧٣-٣٧٤)

﴾2﴿ **फ़र्ज़** नमाज़ का वक़्त जाने से मा'ज़ूर का वुज़ू टूट जाता है जैसे किसी ने अ़स्र के वक़्त वुज़ू किया था तो सूरज ग़ुरूब होते ही वुज़ू जाता रहा और अगर किसी ने आफ़्ताब निकलने के बा'द वुज़ू किया तो जब तक ज़ोहर का वक़्त ख़त्म न हो वुज़ू न जाएगा कि अभी तक किसी फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त नहीं गया। **फ़र्ज़** नमाज़ का वक़्त जाते ही मा'ज़ूर का वुज़ू जाता रहता है और येह हुक्म उस सूरत में होगा जब मा'ज़ूर का उ़ज़्र दौराने

www.dawateislami.net

वुज़ू या बा'दे वुज़ू ज़ाहिर हो, अगर ऐसा न हो और दूसरा कोई ह़दस (या'नी वुज़ू तोड़ने वाला मुआ़-मला) भी लाह़िक़ न हो तो फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त जाने से वुज़ू नहीं टूटेगा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 386, دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج١ص٥٥٥)

《3》 **जब** उ़ज़्र साबित हो गया तो जब तक नमाज़ के एक पूरे वक़्त में एक बार भी वोह चीज़ पाई जाए मा'ज़ूर ही रहेगा। म-सलन किसी को सारा वक़्त क़त़रा आता रहा और इतनी मोहलत ही न मिली कि वुज़ू कर के फ़र्ज़ अदा कर ले तो मा'ज़ूर हो गया। अब दूसरे अवक़ात में इतना मौक़अ़ मिल जाता है कि वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ ले मगर एकआध दफ़्आ़ क़त़रा आ जाता है तो अब भी मा'ज़ूर है। हां अगर पूरा एक वक़्त ऐसा गुज़र गया कि एक बार भी क़त़रा न आया तो मा'ज़ूर न रहा फिर जब कभी पहली ह़ालत आई (या'नी सारा वक़्त मुसल्सल मरज़ हुवा) तो फिर मा'ज़ूर हो गया। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 385)

《4》 **मा'ज़ूर** का वुज़ू उस चीज़ से नहीं जाता जिस के सबब मा'ज़ूर है हां अगर दूसरी कोई चीज़ वुज़ू तोड़ने वाली पाई गई तो वुज़ू जाता रहा म-सलन जिस को रीह़ ख़ारिज होने का मरज़ है क़त़रा निकलने से उस का वुज़ू टूट जाएगा। और जिस को क़त़रे का मरज़ है उस का रीह़ ख़ारिज होने से वुज़ू जाता रहेगा। (ऐज़न, स. 586)

《5》 **मा'ज़ूर** ने किसी ह़दस (या'नी वुज़ू तोड़ने वाले अ़मल) के बा'द वुज़ू किया और वुज़ू करते वक़्त वोह चीज़ नहीं है जिस के सबब मा'ज़ूर है फिर वुज़ू के बा'द वोह उ़ज़्र वाली चीज़ पाई गई तो वुज़ू टूट गया (येह

www.dawateislami.net

हुक्म इस सूरत में होगा जब मा'ज़ूर ने अपने उ़ज़्र के बजाए किसी दूसरे सबब की वज्ह से वुज़ू किया हो अगर अपने उ़ज़्र की वज्ह से वुज़ू किया तो बा'दे वुज़ू उ़ज़्र पाए जाने की सूरत में वुज़ू न टूटेगा) म-सलन जिस को क़त़रा आता था उस की रीह़ ख़ारिज हुई और उस ने वुज़ू किया और वुज़ू करते वक़्त क़त़रा बन्द था और वुज़ू करने के बा'द क़त़रा आया तो वुज़ू टूट गया। हां अगर वुज़ू के दरमियान क़त़रा जारी था तो न गया।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 387, دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج١ص٥٥٧)

﴾6﴿ **मा'ज़ूर** को ऐसा उ़ज़्र हो कि जिस के सबब कपड़े नापाक हो जाते हैं तो अगर एक दिरहम से ज़ियादा नापाक हो गए और जानता है कि इतना मौक़अ़ है कि इसे धो कर पाक कपड़ों से नमाज़ पढ़ लूंगा तो पाक कर के नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है और अगर जानता है कि नमाज़ पढ़ते पढ़ते फिर उतना ही नापाक हो जाएगा तो अब धोना ज़रूरी नहीं। इसी से पढ़े अगर्चे मुसल्ला भी आलूदा हो जाए तब भी उस की नमाज़ हो जाएगी। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 387)

(मा'ज़ूर के वुज़ू के तफ़्सीली मसाइल फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 4 सफ़ह़ा 367 ता 375, बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़ह़ा 385 ता 387 से मा'लूम कर लीजिये)

सात मु-तफ़र्रिक़ात

﴾1﴿ पेशाब, पाख़ाना, मनी, कीड़ा या पथरी मर्द या औ़रत के आगे या पीछे से निकलें तो वुज़ू जाता रहेगा। (عالمگیری ج١ص٩) ﴾2﴿ मर्द या औ़रत के पीछे से मा'मूली सी हवा भी ख़ारिज हुई वुज़ू टूट गया। मर्द या औ़रत के आगे से हवा ख़ारिज हुई वुज़ू नहीं टूटेगा। (ایضاً, बहारे शरीअ़त,

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

जि. 1, स. 304) ﴾3﴿ बेहोश हो जाने से वुज़ू टूट जाता है। (عالمگیری ج ۱ ص۱۲) ﴾4﴿ बा'ज़ लोग कहते हैं कि ख़िन्ज़ीर का नाम लेने से वुज़ू टूट जाता है येह ग़लत़ है ﴾5﴿ दौराने वुज़ू अगर रीह़ ख़ारिज हो या किसी सबब से वुज़ू टूट जाए तो नए सिरे से वुज़ू कर लीजिये पहले धुले हुए आ'ज़ा बे धुले हो गए। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 255) ﴾6﴿ क़ुरआने पाक या उस की किसी आयत को या किसी भी ज़बान में क़ुरआने पाक का तरजमा हो उस को बे वुज़ू छूना ह़राम है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 326, 327 वग़ैरा) ﴾7﴿ आयत को बे छूए देख कर या ज़बानी बे वुज़ू पढ़ने में ह़रज नहीं।

आयत लिखे हुए काग़ज़ के पिछले ह़िस्से के छूने का अहम मस्अला

किताब या अख़्बार में जिस जगह आयत लिखी है ख़ास उस जगह को बिला वुज़ू हाथ लगाना जाइज़ नहीं उसी त़रफ़ हाथ लगाया जिस त़रफ़ आयत लिखी है ख़्वाह उस की पुश्त पर (या'नी लिखी हुई आयत के ऐन पीछे) दोनों **ना जाइज़** हैं (आयत या उस के ऐन पिछले ह़िस्से के इलावा), बाक़ी वरक़ के छूने में ह़रज नहीं, पढ़ना बे वुज़ू जाइज़ है। नहाने की ह़ाजत हो तो (पढ़ना भी) ह़राम है। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 366)

बे वुज़ू क़ुरआने मजीद को कहीं से भी नहीं छू सकता

बे वुज़ू आयत को छूना तो ख़ुद ही ह़राम है अगर्चे आयत किसी और किताब में लिखी हो मगर क़ुरआने मजीद के सादा ह़ाशिया बल्कि

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

पुठ्ठें बल्कि चोली (या'नी जो कपड़ा या चमड़ा गत्ते के साथ चिपका या सिला हो उस) का भी छूना ह़राम है हां "जुज़दान" में हो तो जुज़दान को हाथ लगा सकता है। बे वुज़ू अपने सीने से भी मुस्ह़फ़ शरीफ़ को मस नहीं कर (या'नी छू नहीं) सकता। बे वुज़ू की गरदन पर लम्बी चादर का एक कोना पड़ा हुवा है और वोह उस के दूसरे कोने को हाथ पर रख कर मुस्ह़फ़ शरीफ़ छूना चाहे अगर चादर इतनी लम्बी है कि उस शख़्स के उठने बैठने से दूसरे गोशे (या'नी कोने) तक ह़-र-कत न पहुंचेगी तो जाइज़ है वरना नहीं। (फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा, जि. 4, स. 724, 725)

वुज़ू में पानी का इसराफ़

आज कल अक्सर लोग वुज़ू में तेज़ नल खोल कर बे तह़ाशा पानी बहाते हैं, ह़त्ता कि बा'ज़ तो वुज़ूख़ाने पर आते ही नल खोल देते हैं, इस के बा'द आस्तीन चढ़ाते हैं, उतनी देर तक مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ पानी ज़ाएअ़ होता रहता है, इसी त़रह़ मस्ह़ के दौरान अक्सरिय्यत नल खुला छोड़ देती है ! हम सब को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर कर **इसराफ़** से बचना चाहिये, क़ियामत के रोज़ ज़र्रे ज़र्रे और क़त़रे क़त़रे का ह़िसाब होगा। इसराफ़ की मज़म्मत में चार अह़ादीसे मुबा-रका सुनिये और ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज़िये :

﴾1﴿ जारी नह्र पर भी इसराफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर गुज़रे तो वोह वुज़ू कर रहे थे। इर्शाद

फ़रमाया : **येह इसराफ़ कैसा ?** अ़र्ज़ की : क्या वुज़ू में भी इसराफ़ है ? फ़रमाया : **"हां अगर्चे तुम जारी नह्‌र पर हो ।"**

(سُنَنِ اِبن ماجہ ج ١ ص ٢٥٤ حدیث ٤٢٥)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ का फ़तवा

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ह़दीस ने नहरे जारी में भी इसराफ़ साबित फ़रमाया और इसराफ़ शर-अ़ में मज़्मूम ही हो कर आया है। आयए करीमा :

وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّہٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿۱۴۱﴾ (پ ٨،الانعام:١٤١)

(**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक बे जा ख़र्च्‌ने वाले उसे पसन्द नहीं।)

मुत़्लक़ है तो येह इसराफ़ भी मज़्मूम व मम्नूअ़ ही होगा **बल्कि ख़ुद इसराफ़ फ़िल वुज़ू में भी सीग़ए नह्‌य वारिद और नह्‌य ह़क़ीक़तन मुफ़ीदे तह़रीम ।** (या'नी वुज़ू में इसराफ़ की नह्‌य (मुमा-न-अ़त) का हुक्म आया है और ह़क़ीक़त में मुमा-न-अ़त का हुक्म ह़राम होने का फ़ाएदा देता है) (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 731)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان की तफ़्सीर

मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ के फ़तवा में पेश कर्दा **सू-रतुल अन्आ़म** की आयते करीमा नम्बर 141 के तह़्त **बे जा ख़र्च** (या'नी इसराफ़) की तफ़्सील बयान करते हुए रक़म त़राज़ हैं : "ना जाइज़ जगह पर ख़र्च करना भी बे जा ख़र्च है और सारा माल ख़ैरात कर के बाल बच्चों को

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وَسلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

फ़क़ीर बना देना भी बे जा ख़र्च है, ज़रूरत से ज़ियादा ख़र्च भी बे जा ख़र्च है इसी लिये आ'ज़ाए वुज़ू को (बिला इजाज़ते शर-ई) चार बार धोना इसराफ़ माना गया है।" (नूरुल इ़रफ़ान, स. 232)

﴾2﴿ इसराफ़ न कर

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہِ واٰلہٖ وسلَّم ने एक शख़्स को वुज़ू करते देखा, फ़रमाया : **इसराफ़ न कर इसराफ़ न कर।** (سُنَنِ ابن ماجہ ج۱ص۲۵٤حدیث ٤۲٤)

﴾3﴿ इसराफ़ शैत़ानी काम है

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत है : वुज़ू में बहुत सा पानी बहाने में कुछ ख़ैर (भलाई) नहीं और वोह काम शैत़ान की त़रफ़ से है। (کَنْزُ الْعُمّال ج۹ص۱٤٤حدیث۲٦۲۵۵)

﴾4﴿ जन्नत का सफ़ेद मह़ल मांगना कैसा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे को इस त़रह़ दुआ़ मांगते सुना कि इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से जन्नत का दाह्नी (या'नी सीधी) त़रफ़ वाला सफ़ेद मह़ल मांगता हूं। तो फ़रमाया कि ऐ मेरे बच्चे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जन्नत मांगो और दोज़ख़ से उस की पनाह मांगो। मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہِ واٰلہٖ وسلَّم को फ़रमाते सुना कि इस उम्मत में वोह क़ौम होगी जो **वुज़ू** और **दुआ़** में ह़द से तजावुज़ किया करेगी। (سُنَنِ ابوداؤد ج۱ص٦۸حدیث۹٦)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार

www.dawateislami.net

ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : दुआ़ में तजावुज़ (या'नी ह़द से बढ़ना) तो येह है कि ऐसी बात का तअ़य्युन किया जाए जिस की ज़रूरत नहीं जैसे उन के साह़िब ज़ादे ने किया। **फ़िरदौस** (जो कि सब से आ'ला जन्नत है उस का) मांगना बहुत बेहतर है कि इस में शख़्सी तअ़य्युन (या'नी अपनी त़रफ़ मुक़र्रर करना) नहीं नौई तक़र्रुर (नौअ़ या'नी क़िस्म मुक़र्रर करना) है इस का हुक्म दिया गया है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 293)

बुरा किया, ज़ुल्म किया

एक आ'राबी ने ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर **वुज़ू** के बारे में पूछा : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें वुज़ू कर के दिखाया जिस में हर उ़ज़्व तीन तीन बार धोया फिर फ़रमाया : वुज़ू इस त़रह़ है, तो जो इस से ज़ाइद करे या कम करे उस ने बुरा किया और ज़ुल्म किया। (سُنَنِ نَسائی ص۳۱ حدیث۱٤٠)

इसराफ़ सिर्फ़ दो सूरतों में ही गुनाह है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रते इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : येह वईद इस सूरत में है कि जब येह ए'तिक़ाद रखते हुए ज़ियादा करे कि ज़ियादा करना ही सुन्नत है। और अगर तस्लीस (या'नी तीन बार धोने) को सुन्नत माना और वुज़ू पर वुज़ू के इरादे या शक के वक़्त इत़्मीनाने क़ल्ब के लिये या तबरीद (या'नी ठन्डक के ह़ुसूल) या तन्ज़ीफ़ (या'नी सफ़ाई) के लिये ज़ियादा किया या किसी ह़ाजत की वज्ह से कमी की तो कोई ह़रज नहीं। **सिर्फ़ दो सूरतों में इसराफ़ ना जाइज़**

www.dawateislami.net

व गुनाह होता है एक येह कि किसी गुनाह में सर्फ़ व इस्ति'माल करें, दूसरे बेकार मह़्ज़ माल ज़ाएअ़ करें। वुज़ू व ग़ुस्ल में तीन बार से ज़ाइद पानी डालना जब कि ग़-रज़े सह़ीह़ (या'नी जाइज़ मक़्सद) से हो हरगिज़ इसराफ़ नहीं कि जाइज़ ग़रज़ में ख़र्च करना न ख़ुद मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) है न बेकार इज़ाअ़त (या'नी ज़ाएअ़ करना)।

(फ़तावा र-ज़विय्या जि. 1, जुज़ : ب, स. 940 ता 942)

अ़-मली त़ौर पर वुज़ू सीखिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि सिखाने के लिये ख़ुद अ़-मली त़ौर पर वुज़ू कर के दूसरे को दिखाना सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है। मुबल्लिग़ीन को चाहिये कि इस ह़दीसे पाक पर अ़मल करते हुए बिग़ैर इसराफ़ के सिर्फ़ ह़स्बे ज़रूरत पानी बहा कर तीन तीन बार आ'ज़ा धो कर वुज़ू कर के इस्लामी भाइयों को दिखाएं। बिला ज़रूरते शर-ई कोई उ़ज़्व चार बार न धुले इस का ख़याल रखा जाए, फिर जो ब ख़ुशी अपनी इस्लाह़ करवाना चाहे वोह भी वुज़ू कर के मुबल्लिग़ को दिखाए और अपनी ग़-लतियां दूर करवाए। दा'वते इस्लामी के **सुन्नतों की तरबिय्यत** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में येह म-दनी काम अह़सन त़रीक़े पर हो सकता है। दुरुस्त वुज़ू करना ज़रूर ज़रूर ज़रूर सीख लीजिये। सिर्फ़ एकआध बार **वुज़ू का त़रीक़ा** पढ़ लेने से सह़ीह़ मा'नों में वुज़ू करना आ जाए येह बहुत मुश्किल है, बार बार मश्क़ करनी होगी। वुज़ू सीखने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ़) करते रहेंगे। (طبرانی)

मक-त-बतुल मदीना की जारी कर्दा V.C.D बनाम **:** "वुज़ू का त़रीक़ा" देखना इन्तिहाई मुफ़ीद है।

मस्जिद और मद्रसे के पानी का इसराफ़

मस्जिद व मद्रसे वग़ैरा के वुज़ूख़ाने का पानी "वक़्फ़" के हुक्म में होता है। इस पानी और अपने घर के पानी के अह़काम में फ़र्क़ होता है। जो लोग मस्जिद के वुज़ूख़ाने पर बे दर्दी के साथ पानी बहाते हैं बल्कि वुज़ू में बिला ज़रूरत फ़क़त़ ग़फ़्लत या जहालत के सबब तीन से ज़ाइद मर्तबा आ'ज़ा धोते हैं वोह इस मुबारक फ़तवे पर ख़ूब ग़ौर फ़रमाएं, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ें और तौबा करें। चुनान्चे **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **: अगर वक़्फ़ पानी से वुज़ू किया तो ज़ियादा ख़र्च करना बिल इत्तिफ़ाक़ ह़राम है क्यूं कि इस में ज़ियादा ख़र्च करने की इजाज़त नहीं दी गई और मदारिस का पानी इसी क़िस्म का होता है जो कि सिर्फ़ उन ही लोगों के लिये वक़्फ़ होता है जो शर-ई वुज़ू करते हैं।** (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 658)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो अपने आप को इसराफ़ से नहीं बचा पाता उसे चाहिये कि मम्लूका (या'नी अपनी मिल्किय्यत के)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा–फ़ह़ा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشكوال)

म–सलन अपने घर के पानी से वुज़ू करे। مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस का येह मत़लब नहीं कि ज़ाती पानी के इसराफ़ की खुली छूट है बल्कि घर में ख़ूब मश्क़ कर के शर–ई वुज़ू सीख ले ताकि मस्जिद के पानी का इसराफ़ कर के ह़राम का मुर–तकिब न हो।

"अह़मद रज़ा" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से आ'ला ह़ज़रत की त़रफ़ से इसराफ़ से बचने की 7 तदाबीर

《1》 **बा'ज़** लोग चुल्लू लेने में पानी ऐसा डालते हैं कि **उबल** जाता है ह़ालां कि जो गिरा बेकार गया इस से एह़तियात़ चाहिये।

《2》 **हर** चुल्लू भरा होना ज़रूरी नहीं बल्कि जिस काम के लिये लें उस का अन्दाज़ा रखें म–सलन **नाक में** नर्म बांसे (या'नी नर्म हड्डी) तक पानी चढ़ाने को पूरा चुल्लू क्या ज़रूर निस्फ़ (या'नी आधा) भी काफ़ी है बल्कि भरा चुल्लू **कुल्ली** के लिये भी दरकार नहीं।

《3》 **लोटे** की टोंटी मु–तवस्सित़ मो'तदिल (या'नी दरमियानी) चाहिये कि न ऐसी तंग कि पानी ब–देर (या'नी देर में) दे न फ़राख़ (या'नी कुशादा) कि ह़ाजत से ज़ियादा गिराए, इस का फ़र्क़ यूं मा'लूम हो सकता है कि कटोरों में पानी ले कर वुज़ू कीजिये तो बहुत ख़र्च होगा यूंही फ़राख़ (या'नी कुशादा) टोंटी से बहाना ज़ियादा ख़र्च का बाइ़स है। अगर लोटा ऐसा (या'नी कुशादा टोंटी वाला) हो तो एह़तियात़ करे पूरी धार न गिराए बल्कि बारीक। (नल खोलने में भी इन्हीं बातों का ख़याल रखिये)

《4》 **आ'ज़ा** धोने से पहले उन पर भीगा हाथ फैर ले कि पानी जल्द दौड़ता है और थोड़ा (पानी), बहुत (से पानी) का काम देता है, ख़ुसूसन

www.dawateislami.net

मौसिमे सरमा (या'नी सर्दियों) में इस की ज़ियादा ह़ाजत है कि आ'ज़ा में ख़ुश्की होती है और बहती धार बीच में जगह ख़ाली छोड़ देती है जैसा कि मुशा–हदा (या'नी देखी भाली बात) है।

《5》 **कलाइयों** पर बाल हों तो तरश्वा (या'नी कटवा) दें कि उन का होना पानी ज़ियादा चाहता है और मूंडने से बाल सख़्त हो जाते हैं और तराश्ना मशीन से बेहतर कि ख़ूब साफ़ कर देती है और सब से अह़्सन व अफ़्ज़ल नूरा (एक त़रह़ का बाल सफ़ा पाउडर) है कि इन आ'ज़ा में येही सुन्नत से साबित। चुनान्चे

उम्मुल मुअमिनीन सय्यि–दतुना उम्मे स–लमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब नूरा का इस्ति'माल फ़रमाते तो सत्रे मुक़द्दस पर अपने दस्ते मुबारक से लगाते और बाक़ी ब–दने मुनव्वर पर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ लगा देतीं।

(اِبن ماجه ج٤ ص٢٢٦ حديث ٣٧٥١)

और ऐसा न करें तो धोने से पहले पानी से ख़ूब भिगो लें कि सब बाल बिछ जाएं वरना खड़े बाल की जड़ में पानी गुज़र गया और नोक से न बहा तो वुज़ू न होगा।

《6》 **दस्त व पा** (हाथ व पाउं) पर अगर लोटे से धार डालें तो नाख़ुनों से कोहनियों या (पाउं के) गट्टों के ऊपर (या'नी टख़्नों) तक अ़लल इत्तिसाल (या'नी मुसल्सल) उतारें कि एक बार में हर जगह पर एक ही बार गिरे, पानी जब कि गिर रहा है और हाथ की रवानी (हिलजुल) में देर होगी तो एक जगह पर मुकर्रर (या'नी बार बार) गिरेगा। (और इस त़रह़ इसराफ़ की सूरत पैदा हो सकती है)

www.dawateislami.net

﴾7﴿ **बा'ज़** लोग यूं करते हैं कि नाख़ुन से कोहनी तक या (पाउं के) गट्टे तक बहाते लाए फिर दोबारा सेहबारा के लिये जो नाख़ुन की त़रफ़ ले गए तो हाथ न रोका बल्कि धार जारी रखी ऐसा न करें कि तस्लीस के इवज़ (या'नी तीन बार के बजाए) पांच बार हो जाएगा बल्कि हर बार कोहनी या (पाउं के) गट्टे तक ला कर धार रोक लें और रुका हुवा हाथ नाख़ुनों तक ले जा कर वहां से फिर इजरा (पानी जारी) करें कि सुन्नत येही है कि नाख़ुन से कोहनियों या गट्टों (टख़्नों) तक पानी बहे न इस का अ़क्स। (या'नी उलट। मत़लब येह कि कोहनी या गट्टे से नाख़ुनों की त़रफ़ पानी बहाते हुए ले जाना सुन्नत नहीं)

क़ौले जामेअ़ येह है कि सलीक़े से काम लें। इमामे शाफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने क्या ख़ूब फ़रमाया **:** "सलीक़े से उठाओ तो थोड़ा भी काफ़ी हो जाता है और बद सलीक़गी पर तो बहुत (सा) भी किफ़ायत नहीं करता।" (अज़ इफ़ादाते फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 765, 770)

"या रब इसराफ़ से बचा" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इसराफ़ से बचने के लिये 14 म-दनी फूल

﴾1﴿ **आज** तक जितना भी ना जाइज़ इसराफ़ किया है, उस से तौबा कर के आयिन्दा बचने की भरपूर कोशिश शुरूअ़ कीजिये।

﴾2﴿ **ग़ौरो फ़िक्र** कीजिये कि ऐसी सूरत मु-तअ़य्यन (या'नी मुक़र्रर) हो जाए कि वुज़ू और ग़ुस्ल भी सुन्नत के मुत़ाबिक़ हो और पानी भी कम से कम ख़र्च हो। अपने आप को डराइये कि क़ियामत में एक एक ज़र्रे और क़त़रे क़त़रे का ह़िसाब होना है। **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

पारह 30 **सू-रतुज़्ज़िलज़ाल** आयत नम्बर 7 और 8 में इर्शाद फ़रमाता है :

فَمَنۡ یَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّۃٍ خَیۡرًا یَّرَہٗ ؕ﴿۷﴾ وَ مَنۡ یَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّۃٍ شَرًّا یَّرَہٗ ﴿۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

﴾3﴿ **वुज़ू** करते वक़्त नल एह़तियात़ से खोलिये, दौराने वुज़ू मुम्किना सूरत में एक हाथ नल के दस्ते पर रखिये और ज़रूरत पूरी होने पर बार बार नल बन्द करते रहिये।

﴾4﴿ **नल** के मुक़ाबले में लोटे से वुज़ू करने में पानी कम ख़र्च होता है जिस से मुम्किन हो वोह लोटे से वुज़ू करे, अगर नल के बिग़ैर गुज़ारा नहीं तो मुम्किना सूरत में येह भी किया जा सकता है कि जिन जिन आ'ज़ा में आसानी हो वोह लोटे से धो ले। नल से वुज़ू करना जाइज़ है, बस किसी त़रह़ भी **इसराफ़** से बचने की सूरत निकालनी चाहिये।

﴾5﴿ **मिस्वाक,** कुल्ली, ग़र-ग़रा, नाक की सफ़ाई, दाढ़ी और हाथ पाउं की उंग्लियों का ख़िलाल और मस्ह़ करते वक़्त एक भी क़त़रा न टपक्ता हो यूं अच्छी त़रह़ नल बन्द करने की आ़दत बनाइये।

﴾6﴿ **बिल ख़ुसूस** सर्दियों में वुज़ू या ग़ुस्ल करने नीज़ बरतन और कपड़े वग़ैरा धोने के लिये गर्म पानी के ह़ुसूल की ख़ात़िर नल खोल कर पाइप में जम्अ़ शुदा ठन्डा पानी यूं ही बहा देने के बजाए किसी बरतन में पहले निकाल लेने की तरकीब बनाइये।

﴾7﴿ **हाथ** या मुंह धोने के लिये साबुन का झाग बनाने में भी पानी एह़तियात़ से ख़र्च कीजिये। म-सलन हाथ धोने के लिये चुल्लू में पानी

के थोड़े क़त़्रे डाल कर साबुन ले कर झाग बनाया जा सकता है अगर पहले से साबुन हाथ में ले कर पानी डालेंगे तो पानी ज़ियादा ख़र्च हो सकता है।

《8》 **इस्ति'माल** के बा'द ऐसी साबुन दानी में साबुन रखिये जिस में पानी बिल्कुल न हो, पानी में रख देने से साबुन घुल कर ज़ाएअ़ होगा। हाथ धोने के बेसीन के कनारों पर भी साबुन न रखा जाए कि पानी की वज्ह से जल्दी घुल जाता है।

《9》 **पी** चुकने के बा'द गिलास में बचा हुवा पानी फेंक देने के बजाए दूसरे को पिला दीजिये या किसी और इस्ति'माल में लीजिये।

《10》 **फल,** कपड़े, बरतन और फ़र्श बल्कि चाय का कप या एक चम्मच भी धोते वक़्त नीज़ नल खोल कर इस क़दर ज़ियादा ग़ैर ज़रूरी पानी बहाने का आज कल रवाज है कि ह़स्सास और दिल जले आदमी से देखा नहीं जाता !!! ऐ काश !

शायद कि उतर जाए तेरे दिल में मेरी बात

《11》 **अक्सर** मस्जिदों, घरों, दफ़्तरों, दुकानों वग़ैरा में ख़्वाह म ख़्वाह दिन रात बत्तियां जलती A.C. और पंखे चलते रहते हैं, ज़रूरत पूरी हो जाने के बा'द बत्तियां, पंखे और A.C. और कम्पयूटर वग़ैरा बन्द कर देने की आ़दत बनाइये, हम सभी को ह़िसाबे आख़िरत से डरना और हर मुआ़-मले में इसराफ़ से बचते रहना चाहिये।

《12》 **इस्तिन्जा ख़ाने** में लोटा इस्ति'माल कीजिये कि फ़व्वारे से त़हारत करने में पानी भी ज़ियादा ख़र्च होता है और पाउं भी अक्सर

www.dawateislami.net

आलूदा हो जाते हैं। हर एक को चाहिये कि हर बार पेशाब करने के बा'द एक लोटा पानी ले कर W.C. के कनारों पर थोड़ा सा बहाए फिर क़दरे ऊपर से (मगर छींटों से बचते हुए) बड़े सूराख़ में डाल दिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बदबू और जरासीम की अफ़्ज़ाइश में कमी होगी। "फ़्लश टेंक" से सफ़ाई में पानी बहुत ज़ियादा सर्फ़ होता है।

﴾13﴿ **नल** से क़त़रे टपक्ते रहते हों तो फ़ौरन इस का ह़ल निकालिये वरना पानी ज़ाएअ़ होता रहेगा। बसा अवक़ात मसाजिद व मदारिस के नल टपक्ते रहते हैं मगर कोई पूछने वाला नहीं होता ! इन्तिज़ामिया को अपनी ज़िम्मादारी समझते हुए अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये फ़ौरन कोई तरकीब करनी चाहिये।

﴾14﴿ **खाना** खाने, चाय या कोई मश्रूब पीने, फल काटने वग़ैरा मुआ़-मलात में ख़ूब एह़तियात़ फ़रमाइये ताकि हर दाना, हर ग़िज़ाई ज़र्रा और हर क़त़रा इस्ति'माल हो जाए।

40 म-दनी फूलों का र-ज़वी गुलदस्ता

(तमाम म-दनी फूल फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 4 के आख़िर में दिये हुए "फ़वाइदे जलीला" सफ़ह़ा 613 ता 746 से लिये गए हैं)

۞ **वुज़ू** में आंखें ज़ोर से न बन्द करे मगर वुज़ू हो जाएगा ۞ अगर लब (या'नी होंट) ख़ूब ज़ोर से बन्द कर के **वुज़ू** किया और कुल्ली न की वुज़ू न होगा ۞ वुज़ू का पानी रोज़े क़ियामत **नेकियों के पल्ले** में रखा जाएगा। (मगर याद रहे ! ज़रूरत से ज़ियादा पानी गिराना इसराफ़ है) ۞ मिस्वाक मौजूद हो तो उंगली से दांत मांजना अदाए

www.dawateislami.net

सुन्नत व हुसूले सवाब के लिये काफ़ी नहीं, हां मिस्वाक न हो तो उंगली या खर-खरा (या'नी खुर-दरा) कपड़ा अदाए **सुन्नत** कर देगा और औ़रतों के लिये मिस्वाक मौजूद हो जब भी **मिस्सी** काफ़ी है ۞ अंगूठी ढीली हो तो **वुज़ू** में उसे फिरा कर पानी डालना **सुन्नत** है और तंग हो कि बे जुम्बिश दिये पानी न पहुंचे तो **फ़र्ज़।** येही हुक्म बाली (या'नी कान के ज़ेवर) वग़ैरा का है ۞ आ'ज़ा का मल मल कर धोना **वुज़ू** और **ग़ुस्ल** दोनों में **सुन्नत** है ۞ आ'ज़ाए वुज़ू धोने में ह़द्दे शर-ई से इतनी ख़फ़ीफ़ तह़रीर (या'नी हर त़रफ़ से मा'मूली सा) बढ़ाना जिस से ह़द्दे शर-ई तक इस्तीआ़ब (या'नी मुकम्मल होने) में शुबा न रहे **वाजिब** है ۞ वुज़ू में कुल्ली या नाक में पानी डालने का तर्क मक्रूह है और इस की आ़दत डाले तो गुनहगार होगा। येह मस्अला वोह लोग ख़ूब याद रखें जो कुल्लियां ऐसी नहीं करते कि ह़ल्क़ तक हर चीज़ को धोएं और वोह कि पानी जिन की नाक को (फ़क़त़) छू जाता है सूंघ कर ऊपर नहीं चढ़ाते येह सब लोग **गुनहगार** हैं और **ग़ुस्ल** में तो ऐसा न हो तो सिरे से न ग़ुस्ल होगा न **नमाज़** ۞ वुज़ू में हर उ़ज़्व का पूरा तीन बार धोना सुन्नते मुअक्कदा है, तर्क की आ़दत से गुनहगार होगा ۞ **वुज़ू** में जल्दी न चाहिये बल्कि दरंग (या'नी इत़्मीनान) व एह़तियात़ के साथ करे। अ़वाम में जो मश्हूर है कि "वुज़ू जवानों का सा, नमाज़ बूढ़ों की सी" येह वुज़ू के बारे में ग़लत़ है ۞ मुंह धोने में न गालों पर डाले न नाक पर न ज़ोर से पेशानी पर, येह सब अफ़्आ़ल जुह्हाल (या'नी जाहिलों) के हैं बल्कि बा आहिस्तगी बालाए **पेशानी** (या'नी पेशानी के ऊपर) से डाले कि

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

ठोड़ी से नीचे तक बहता आए ۞ वुज़ू में मुंह से गिरता हुवा पानी म-सलन कलाई पर लिया और (कलाई पर) बहा लिया (या'नी मुंह धोने में मुंह से गिरने वाले पानी से हाथ की कलाई नहीं धो सकते कि) इस से **वुज़ू** न होगा और **ग़ुस्ल** में (मुआ़-मला जुदा है) म-सलन सर का पानी पाउं तक जहां जहां गुज़रेगा पाक करता जाएगा वहां नए पानी की ज़रूरत नहीं ۞ आदमी वुज़ू करने बैठा फिर किसी मानेअ़ (या'नी रुकावट) के सबब तमाम (या'नी मुकम्मल) न कर सका तो जितने अफ़्आ़ल किये उन पर सवाब पाएगा अगर्चे वुज़ू न हुवा ۞ जिस ने ख़ुद ही क़स्द (या'नी इरादा) किया कि आधा वुज़ू करेगा वोह इन अफ़्आ़ल पर सवाब न पाएगा, यूंही जो वुज़ू करने बैठा और बिला उ़ज़्र नाक़िस (या'नी अधूरा) छोड़ दिया वोह भी जितने अफ़्आ़ल बजा लाया उन पर मुस्तह़िक़े सवाब न होना चाहिये ۞ अगर सर पर मींह (या'नी बारिश) की बूंदें इतनी गिरीं की चहारुम (या'नी चौथाई) सर भीग गया मस्ह़ हो गया अगर्चे इस शख़्स ने हाथ लगाया न क़स्द (या'नी न निय्यत व इरादा) किया ۞ ओस (या'नी शबनम) में सर बरह्ना (या'नी नंगे सर) बैठा और उस से चहारुम सर के क़दर भीग गया मस्ह़ हो गया ۞ इतने गर्म या इतने सर्द पानी से **वुज़ू** मक्रूह है जो बदन पर अच्छी त़रह़ न डाला जाए, तक्मीले सुन्नत न करने दे, और अगर कोई **फ़र्ज़** पूरा करने से मानेअ़ (या'नी रुकावट) हुवा तो वुज़ू ही न होगा ۞ पानी बेकार सर्फ़ (या'नी ख़र्च) करना या फेंक देना **ह़राम** है। (अपने या दूसरे के पीने के बा'द गिलास या जग का बचा हुवा पानी ख़्वाह म ख़्वाह फेंक देने वाले तौबा करें और आयिन्दा इस से बचें) ۞

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढे़गा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

नाफ़ से ज़र्द पानी बह कर निकले वुज़ू जाता रहे ۞ ख़ून या पीप आंख में बहा मगर आंख से बाहर न गया तो वुज़ू न जाएगा उसे कपडे़ से पोंछ कर पानी में डाल दें तो (पानी) नापाक न होगा ۞ ज़ख़्म पर पट्टी बंधी है उस में ख़ून वग़ैरा लग गया अगर इस क़ाबिल था कि बन्दिश न होती तो बह जाता तो वुज़ू गया वरना नहीं, न पट्टी नापाक ۞ क़त़रा उतर आया या ख़ून वग़ैरा ज़कर (या'नी उ़ज़्वे तनासुल) के अन्दर बहा जब तक उस के सूराख़ से बाहर न आए वुज़ू न जाएगा और पेशाब का सिर्फ़ सूराख़ के मुंह पर चमक्ना (वुज़ू तोड़ने के लिये) काफ़ी है ۞ ना बालिग़ न कभी बे वुज़ू हो न जुनुब (या'नी बे ग़ुस्ला)। इन्हें (या'नी ना बालिग़ान को) वुज़ू व ग़ुस्ल का हुक्म आ़दत डालने और आदाब सिखाने के लिये है वरना किसी ह़दस (या'नी वुज़ू तोड़ने वाले अ़मल) से इन का वुज़ू नहीं जाता न जिमाअ़ से इन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो ۞ बा वुज़ू ने मां बाप के कपडे़ या उन के खाने के लिये फल या मस्जिद का फ़र्श सवाब के लिये धोया पानी मुस्ता'मल न होगा अगर्चे येह अफ़्आ़ल क़ुरबत (या'नी रिज़ाए इलाही) के हैं ۞ ना बालिग़ का पाक हाथ या बदन का कोई जुज़ अगर्चे बे वुज़ू हो पानी में डालने से क़ाबिले वुज़ू रहेगा ۞ बदन सुथरा रखना, मैल दूर करना, शर-अ़ में मत़लूब है कि इस्लाम की बिना (या'नी बुन्याद) सुथराई (या'नी पाकीज़गी व सफ़ाई) पर है। इस निय्यत से बा वुज़ू ने बदन धोया तो क़ुरबत (या'नी कारे सवाब) बेशक है मगर पानी मुस्ता'मल न हुवा ۞ मुस्ता'मल पानी पाक है इस से कपड़ा धो सकते हैं मगर इस से वुज़ू नहीं हो सकता और इस का पीना या इस से आटा गूंधना मक्रूहे (तन्ज़ीही) है ۞ पराया पानी बे इजाज़त ले गया अगर्चे

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

ज़बर दस्ती या चुरा कर उस से वुज़ू हो जाएगा मगर ह़राम है। अलबत्ता किसी के मम्लूक (या'नी मिल्किय्यत के) कूंएं से उस की मुमा-न-अ़त पर भी पानी भर लिया उस का इस्ति'माल जाइज़ है ۞ जिस पानी में माए मुस्ता'मल की धार पहुंची या वाज़ेह़ क़त़रे गिरे उस से वुज़ू न करना बेहतर ۞ जाड़े में वुज़ू करने से सर्दी बहुत मा'लूम होगी इस की तक्लीफ़ होगी मगर किसी मरज़ का अन्देशा नहीं तो तयम्मुम की इजाज़त नहीं ۞ शैत़ान के थूक और फूंक से नमाज़ में क़त़रे और रीह़ का शुबा हो जाता है, हुक्म है कि जब तक ऐसा यक़ीन न हो जिस पर क़सम खा सके इस (वस्वसे) पर लिह़ाज़ न करे, शैत़ान कहे कि तेरा वुज़ू जाता रहा तो दिल में जवाब दे ले कि ख़बीस तू झूटा है और अपनी नमाज़ में मशग़ूल रहे ۞ मस्जिद को हर घिन की चीज़ से बचाना वाजिब है अगर्चे पाक हो जैसे लुआ़बे दहन (मुंह की राल, थूक, बल्ग़म) आबे बीनी (म-सलन रींठ या नाक से नज़्ले का बहने वाला पानी) आबे वुज़ू ۞ **तम्बीह :** बा'ज़ लोग कि वुज़ू के बा'द अपने मुंह और हाथों से पानी पोंछ कर मस्जिद में हाथ झाड़ते हैं (येह) मह़्ज़ **ह़राम** और ना जाइज़ है। ۞ पानी में पेशाब करना मुत़्लक़न मक्रूह है अगर्चे दरिया में हो ۞ जहां कोई नजासत पड़ी हो तिलावत मक्रूह है ۞ पानी ज़ाएअ़ करना ह़राम है ۞ माल ज़ाएअ़ करना ह़राम है ۞ ज़मज़म शरीफ़ से ग़ुस्ल व वुज़ू बिला कराहत जाइज़ है (और पेशाब वग़ैरा कर के) ढेले (से ख़ुश्क कर लेने) के बा'द (आबे ज़मज़म से) इस्तिन्जा मक्रूह और नजासत धोना (म-सलन पेशाब के बा'द टिशू पेपर वग़ैरा से सुखाए बिग़ैर) गुनाह ۞ (वोह) इसराफ़ कि (जो) ना जाइज़ व गुनाह है (वोह) सिर्फ़ (इन) दो सूरतों में होता है, एक

www.dawateislami.net

येह कि किसी गुनाह में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) व इस्ति'माल करें, दूसरे बेकार मह़ज़ माल ज़ाएअ़ करें ۞ ग़ुस्ले मय्यित सिखाने के लिये मुर्दे को नहलाया और उसे ग़ुस्ल देने की निय्यत न की वोह भी पाक हो गया और ज़िन्दों पर से भी फ़र्ज़ उतर गया कि फ़े'ल बिल क़स्द काफ़ी है, हां बे निय्यत सवाब न मिलेगा ।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّ وَجَلَّ **!** हमें इसराफ़ से बचते हुए शर-ई वुज़ू के साथ हर वक़्त बा वुज़ू रहना नसीब फ़रमा ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

बा वुज़ू मरने वाला शहीद है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर तुम हमेशा बा वुज़ू रहने की इस्तित़ाअ़त रखो तो ऐसा ही करो क्यूं कि म-लकुल मौत जिस बन्दे की रूह़ ह़ालते वुज़ू में क़ब्ज़ करता है उस के लिये **शहादत** लिख दी जाती है ।

(شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ ص ۲۹ حدیث ۲۷۸۳)

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

15 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1435 सि.हि.
01-10-2014

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाअ़ात, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

विलादत में आसानी का नुस्ख़ा (मरयम बीबी का फूल)

मरयम बीबी का फूल[1] दर्दे ज़ेह (बच्चे की विलादत का दर्द) शुरूअ़ होने पर किसी खुले बरतन या डिब्बे में पानी में डाल दिया जाए तो जैसे जैसे तर होता जाएगा येह खिलता जाएगा और **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की इ़नायत से मरयम बीबी के फूल की ब-र-कत से बच्चे की विलादत में आसानी होती है।

बिग़ैर ऑपरेशन विलादत हो गई (मरयम बीबी के फूल का फ़ाएदा)

दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना के एक मुदर्रिस म-दनी इस्लामी भाई का बयान है कि मेरे दूसरे बच्चे की विलादत का दिन था, मेरे बच्चों की अम्मी अस्पताल के मख़्सूस कमरे (लेबर रूम) में जा चुकी थीं, कुछ ही देर बा'द मुझे म-दनी मुन्ने की विलादत की ख़ुश ख़बरी मिली। अस्पताल की इन्तिज़ार गाह में एक शख़्स से मुलाक़ात हुई तो उस ने बातों बातों में **मरयम बीबी के फूल** का ज़िक्र किया तो मेरे दरयाफ़्त करने पर उस ने बताया कि अगर दर्दे ज़ेह (बच्चे की विलादत का दर्द) शुरूअ़ होने पर इस सूखे फूल को किसी खुले बरतन या डिब्बे में पानी में डाल दिया जाए तो जैसे जैसे तर होता जाएगा येह खिलता जाएगा और इस का फ़ाएदा येह होता है कि बच्चे की विलादत में आसानी होती है। फिर कमोबेश दो साल के बा'द जब तीसरे बच्चे की विलादत का मरह़ला आया तो लेडी डॉक्टर ने मेरे बच्चों की अम्मी को ज़ेहनी त़ौर पर ऑपरेशन के ज़रीए़ विलादत के

مدینہ

1 : इसे "मरयम बूटी" और "मरयम का पन्जा" भी कहते हैं, पन्जे की शक्ल ख़ुश्क ह़ालत में होती है। पन्सारी (देसी दवाओं) की दुकान से मिलना मुम्किन है मक्के मदीने में मक़ामी औ़रतें और बच्चे ज़मीन पर रख कर चीज़ें बेचते हैं और उन के पास भी मिल सकता है, इस की ख़ासिय्यत और ब-र-कत से वाक़िफ़ आ़शिक़ाने रसूल वहां से तबर्रुकन वत़न लाते और दूसरों को तोह़फ़तन पेश करते हैं। जिस को दें उस को इस्ति'माल का त़रीक़ा समझाना ज़रूरी है। कम पुराना हो तो ज़ियादा बेहतर है।

www.dawateislami.net

लिये तय्यार रहने का कहा, मुझे **मरयम बीबी के फूल** का ख़याल आया तो मैं ने पन्सारी (देसी दवाओं) की दुकान से **मरयम बूटी** ह़ासिल कर ली और जब वक़्ते विलादत क़रीब आया तो उसे पानी में डाल दिया, **अल्लाह तआ़ला** के करम से बिग़ैर ऑपरेशन म-दनी मुन्नी की विलादत हो गई । एक अ़र्से बा'द चौथे बच्चे पर भी डॉक्टर ने ऑपरेशन कन्फ़र्म कर दिया लेकिन मैं ने दीगर अवरादो वज़ाइफ़ (जो मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "घरेलू इ़लाज" में मौजूद हैं) के साथ साथ **मरयम बूटी** का भी इस्ति'माल किया, यूं एक बार फिर बिग़ैर ऑपरेशन म-दनी मुन्नी की विलादत हो गई । इस के कमोबेश दो साल बा'द जब पांचवें बच्चे की विलादत मु-तवक़्क़अ़ थी तो हम ने अपने घर के क़रीबी अस्पताल में रुजूअ़ किया, वहां भी डॉक्टर ने मेडीकल रिपोर्ट्स और अपने तजरिबे की रोशनी में ऑपरेशन का ही कहा, मैं ने कोशिश कर के रक़म का भी इन्तिज़ाम रखा और अवरादो वज़ाइफ़ के साथ साथ वक़्ते विलादत क़रीब होने पर **मरयम बूटी** भी खुले मुंह वाले डिब्बे में पानी में डाल दी, डॉक्टर ने बिग़ैर ऑपरेशन विलादत के लिये काफ़ी कोशिश के बा'द ऑपरेशन के लिये रक़म जम्अ़ करवाने का बोला कि अब ऑपरेशन के इ़लावा चारा नहीं और ऑपरेशन का इन्तिज़ाम शुरूअ़ कर दिया, रक़म बेंक में थी मैं अस्पताल के क़रीबी एटीएम मशीन से रक़म निकाल लाया और काउन्टर पर जम्अ़ करवा दी, लेकिन ऑपरेशन से पहले ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से तन्दुरुस्त व तुवाना म-दनी मुन्ना पैदा होने की ख़ुश ख़बरी मिल गई । **मरयम बूटी** के इस्ति'माल का मैं ने चार या पांच इस्लामी भाइयों को मश्वरा दिया उन में से कई एक को डॉक्टर ने ऑपरेशन का बोल रखा था, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन के यहां भी बिग़ैर ऑपरेशन विलादतें हो गईं ।

www.dawateislami.net

वुज़ूख़ानए अ़त्तार (دامت برکاتہم العالیہ)

ऊपर से वुज़ूख़ाने का नक़्शा

सीधी त़रफ़ से वुज़ूख़ाने का नक़्शा

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفلِ مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ

بقیع

वुज़ू और साइन्स

इस रिसाले में मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये .....

- वुज़ू और हाई ब्लड प्रेशर
- कुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये
- मुंह के छाले
- टूथ ब्रश के नुक़्सानात
- अन्धा पन से तह़फ़्फ़ुज़
- बात़िनी वुज़ू

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

वुज़ू और साइन्स[1]

सिर्फ़ 23 सफ़ह़ात पर मब्नी येह बयान मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप वुज़ू के बारे में ह़ैरत अंगेज़ मा'लूमात से मालामाल होंगे ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़–ज़मत निशान है : **"अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में **मह़ब्बत** रखने वाले जब बाहम (या'नी आपस में) मिलें और **मुसा–फ़ह़ा** करें (या'नी हाथ मिलाएं) और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ें तो उन के जुदा होने से पहले पहले दोनों[2] के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं ।"

(مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج۳ص۹۵حدیث۲۹۵۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वुज़ू की ह़िक्मतें सुनने के सबब क़बूले इस्लाम

एक साह़िब का बयान है : मैं ने **बेल्जियम** में यूनीवर्सिटी के एक ग़ैर मुस्लिम Student (त़ालिबे इ़ल्म) को इस्लाम की दा'वत दी ।

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के त़–लबा के दो[2] रोज़ा इज्तिमाअ़ (मुह़र्रमुल ह़राम 1421 सि.हि./06-04-2000) नवाब शाह पाकिस्तान में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है । **मजलिसे मक–त–बतुल मदीना**

www.dawateislami.net

उस ने सुवाल किया, वुज़ू में क्या क्या साइन्सी ह़िक्मतें हैं ? मैं ला जवाब हो गया । उस को एक आ़लिम के पास ले गया लेकिन उन को भी इस की मा'लूमात न थीं । यहां तक कि साइन्सी मा'लूमात रखने वाले एक शख़्स ने उस को वुज़ू की काफ़ी ख़ूबियां बताईं मगर गरदन के मस्ह़ की ह़िक्मत बताने से वोह भी क़ासिर रहा । वोह गै़र मुस्लिम नौ जवान चला गया । कुछ अ़र्से के बा'द आया और कहने लगा : हमारे प्रोफ़ेसर ने दौराने लेक्चर बताया : **"अगर गरदन की पुश्त और अत़राफ़ पर रोज़ाना पानी के चन्द क़त़रे लगा दिये जाएं तो रीढ़ की हड्डी और ह़राम मग़्ज़ की ख़राबी से पैदा होने वाले अमराज़ से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल हो जाता है ।"** येह सुन कर वुज़ू में गरदन के मस्ह़ की ह़िक्मत मेरी समझ में आ गई लिहाज़ा मैं मुसल्मान होना चाहता हूं और वोह मुसल्मान हो गया ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

मग़रिबी जर्मनी का सेमीनार

मग़रिबी ममालिक में मायूसी (या'नी Depression) का मरज़ तरक़्क़ी पर है, दिमाग़ फ़ेल हो रहे हैं, पागल ख़ानों की ता'दाद में इज़ाफ़ा होता जा रहा है । नफ़्सियाती अमराज़ के माहिरीन के यहां मरीज़ों का तांता बंधा रहता है । मग़रिबी जर्मनी के डिप्लोमा होल्डर एक पाकिस्तानी फ़िज़ियो थेरापिस्ट का कहना है : मग़रिबी जर्मनी में एक सेमीनार हुवा जिस का मौज़ूअ़ था : "मायूसी (Depression) का इ़लाज अदवियात के इ़लावा और किन किन त़रीक़ों से मुम्किन है " एक डॉक्टर ने अपने

www.dawateislami.net

मक़ाले में येह ह़ैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ किया कि मैं ने डिप्रेशन के चन्द मरीज़ों के रोज़ाना पांच[5] बार मुंह धुलाए कुछ अ़र्से बा'द उन की बीमारी कम हो गई। फिर ऐसे ही मरीज़ों के दूसरे ग्रूप के रोज़ाना पांच[5] बार हाथ, मुंह और पाउं धुलवाए तो मरज़ में बहुत इफ़ाक़ा हो गया (या'नी कमी आ गई)। येही डॉक्टर अपने मक़ाले के आख़िर में ए'तिराफ़ करता है : **मुसल्मानों में मायूसी का मरज़ कम पाया जाता है क्यूं कि वोह दिन में कई मर्तबा हाथ, मुंह और पाउं धोते (या'नी वुज़ू करते) हैं।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वुज़ू और हाई ब्लड प्रेशर

एक हार्ट स्पेश्यालिस्ट का बड़े वुसूक़ (या'नी ए'तिमाद) के साथ कहना है : **हाई ब्लड प्रेशर** के मरीज़ को वुज़ू करवाओ फिर उस का ब्लड प्रेशर चेक करो लाज़िमन कम होगा। एक मुसल्मान माहिरे नफ़्सियात का क़ौल है : **"नफ़्सियाती अमराज़ का बेहतरीन इलाज वुज़ू है।"** मग़रिबी माहिरीन नफ़्सियाती मरीज़ों को वुज़ू की त़रह़ रोज़ाना कई बार बदन पर पानी लगवाते हैं।

वुज़ू और फ़ालिज

वुज़ू में जो तरतीब वार आ'ज़ा धोए जाते हैं येह भी ह़िक्मत से ख़ाली नहीं। पहले हाथ पानी में डालने से जिस्म का आ'साबी निज़ाम मुत्तलअ़ हो जाता है और फिर आहिस्ता आहिस्ता चेहरे और दिमाग़ की रगों की त़रफ़ इस के अ-सरात पहुंचते हैं। वुज़ू में पहले हाथ धोने फिर

www.dawateislami.net

कुल्ली करने फिर नाक में पानी डालने फिर चेहरा और दीगर आ'ज़ा धोने की तरतीब **फ़ालिज** की रोकथाम के लिये मुफ़ीद है। अगर चेहरा धोने और मस्ह़ करने से आग़ाज़ किया जाए तो बदन कई बीमारियों में मुब्तला हो सकता है !

मिस्वाक का क़द्रदान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वुज़ू में मु-तअ़द्दद सुन्नतें हैं और हर सुन्नत मख़्ज़ने ह़िक्मत है। मिस्वाक ही को ले लीजिये ! बच्चा बच्चा जानता है कि वुज़ू में मिस्वाक करना सुन्नत है और इस सुन्नत की ब-र-कतों का क्या कहना ! एक ब्योपारी का कहना है : स्वीज़र लेन्ड में एक नौ मुस्लिम से मेरी मुलाक़ात हुई, उस को मैं ने तोह़्फ़तन मिस्वाक पेश की, उस ने ख़ुश हो कर उसे लिया और चूम कर आंखों से लगाया और एक दम उस की आंखों से आंसू छलक पड़े, उस ने जेब से एक रुमाल निकाला उस की तह खोली तो उस में से तक़रीबन दो[2] इन्च का छोटा सा **मिस्वाक** का टुकड़ा बरआमद हुवा। कहने लगा : मेरी इस्लाम आ-वरी के वक़्त मुसल्मानों ने मुझे येह तोह़फ़ा दिया था। मैं बहुत संभाल संभाल कर इस को इस्ति'माल कर रहा था येह ख़त्म होने को था लिहाज़ा मुझे तश्वीश थी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने करम फ़रमाया और आप ने मुझे मिस्वाक इनायत फ़रमा दी। फिर उस ने बताया कि एक अ़र्से से मैं दांतों और मसूढ़ों की तक्लीफ़ से दो चार था। हमारे यहां के **डेन्टिस्ट** से इन का इ़लाज बन नहीं पड़ रहा था। मैं ने इस **मिस्वाक** का इस्ति'माल

www.dawateislami.net

शुरूअ़ किया थोड़े ही दिनों में मुझे इफ़ाक़ा (फ़ाएदा) हो गया। मैं डॉक्टर के पास गया तो वोह ह़ैरान रह गया और पूछने लगा, मेरी दवा से इतनी जल्दी तुम्हारा मरज़ दूर नहीं हो सकता, सोचो कोई और वज्ह होगी। मैं ने जब ज़ेह्न पर ज़ोर दिया तो ख़याल आया कि मैं मुसल्मान हो चुका हूं और येह सारी ब–र–कत **मिस्वाक** ही की है। जब मैं ने डॉक्टर को **मिस्वाक** दिखाई तो वोह ह़ैरत से देखता ही रह गया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मिस्वाक में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं। इस में मु–तअ़द्दद कीमियावी अज्ज़ा हैं जो दांतों को हर त़रह़ की बीमारी से बचाते हैं। ह़ाशिया त़ह़त़ावी में है : **"मिस्वाक से क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा बढ़ती, दर्दे सर दूर होता और सर की रगों को सुकून मिलता है, इस से बल्ग़म दूर, नज़र तेज़, मे'दा दुरुस्त और खाना हज़्म होता है, अ़क़्ल बढ़ती, बच्चों की पैदाइश में इज़ाफ़ा होता, बुढ़ापा देर में आता और पीठ मज़्बूत़ होती है।"**

(حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح ص۶۹)

मिस्वाक के बारे में दो अह़ादीसे मुबा–रका

﴾1﴿ जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मुबारक घर में दाख़िल होते तो सब से पहले मिस्वाक करते (مسلم ص۱۵۲ حدیث۲۵۳) ﴾2﴿ जब सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नींद से बेदार होते तो मिस्वाक करते।

(ابوداوٗد ج۱ ص۵۴ حدیث۵۷)

www.dawateislami.net

मुंह के छाले का इलाज

अत़िब्बा (या'नी डॉक्टरों) का कहना है : "बा'ज़ अवक़ात गरमी और मे'दे की तेज़ाबिय्यत से मुंह में छाले पड़ जाते हैं और इस मरज़ से ख़ास क़िस्म के जरासीम मुंह में फैल जाते हैं, इस के इलाज के लिये मुंह में ताज़ा मिस्वाक मलें और इस का लुआ़ब कुछ देर तक मुंह के अन्दर फिराते रहें । इस त़रह़ कई मरीज़ ठीक हो चुके हैं ।"

टूथ ब्रश के नुक़्सानात

माहिरीन की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ "80 फ़ीसद अमराज़ मे'दे (पेट) और दांतों की ख़राबी से पैदा होते हैं ।" उ़मूमन दांतों की सफ़ाई का ख़याल न रखने की वज्ह से मसूढ़ों में त़रह़ त़रह़ के जरासीम परवरिश पाते फिर मे'दे में जाते और त़रह़ त़रह़ के अमराज़ का सबब बनते हैं । याद रहे ! "टूथ ब्रश" मिस्वाक का ने'मल बदल नहीं । बल्कि माहिरीन ने ए'तिराफ़ किया है : ﴾1﴿ जब ब्रश एक बार इस्ति'माल कर लिया जाता है तो उस में जरासीम की तह जम जाती है पानी से धुलने पर भी वोह जरासीम नहीं जाते बल्कि वहीं नश्वो नमा पाते रहते हैं ﴾2﴿ ब्रश के बाइ़स दांतों की ऊपरी क़ुदरती चमकीली तह उतर जाती है ﴾3﴿ ब्रश के इस्ति'माल से मसूढ़े आहिस्ता आहिस्ता अपनी जगह छोड़ते जाते हैं जिस से दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) पैदा हो जाता है और उस में ग़िज़ा के ज़र्रात फंसते, सड़ते और जरासीम अपना घर बनाते हैं इस से दीगर बीमारियों के इ़लावा आंखों के त़रह़ त़रह़ के अमराज़ भी जनम लेते हैं, इस से नज़र कमज़ोर हो जाती है बल्कि बा'ज़ अवक़ात आदमी **अन्धा** हो जाता है ।

www.dawateislami.net

क्या आप को मिस्वाक करना आता है ?

हो सकता है आप के दिल में येह ख़याल आए कि मैं तो बरसों से मिस्वाक इस्ति'माल करता हूं मगर मेरे तो दांत और पेट दोनों ही ख़राब हैं ! मेरे भोले भाले इस्लामी भाई ! इस में मिस्वाक का नहीं आप का अपना कुसूर है। मैं (सगे मदीना عُفِیَ عَنۂ) इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि आज शायद लाखों में से कोई एकआध ही ऐसा हो जो सह़ीह़ उसूलों के मुत़ाबिक़ मिस्वाक इस्ति'माल करता हो, हम लोग अक्सर जल्दी जल्दी दांतों पर मिस्वाक मल कर वुज़ू कर के चल पड़ते हैं या'नी यूं कहिये कि हम मिस्वाक नहीं बल्कि "रस्मे मिस्वाक" अदा करते हैं !

"मिस्वाक करना सुन्नते मुबा-रका है" के बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के 20 म-दनी फूल

❁ **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : दो[2] रक्अ़त मिस्वाक कर के पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج۱ ص۱۰۲ حديث۱۸) ❁ मिस्वाक का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूं कि येह मुंह की सफ़ाई और रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है (مُسند اِمام احمد بن حنبل ج۲ ص۴۳۸ حديث ۵۸۶۹) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **मिस्वाक** में दस ख़ूबियां हैं : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़्बूत़ बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बल्ग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मे'दा दुरुस्त करती है (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطى ج۵ ص۲۴۹ حديث ۱۴۸۶۷) ❁ सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई

www.dawateislami.net

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : चार4 चीज़ें अ़क़्ल बढ़ाती हैं : फ़ुज़ूल बातों से परहेज़, **मिस्वाक** का इस्ति'माल, सु-लह़ा या'नी नेक लोगों की सोह़बत और अपने इ़ल्म पर अ़मल करना **(حیاۃ الحیوان للدمیری ج ۲ ص۱۶۶)**

❁ **ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی नक़्ल करते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिब्ली** बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی को वुज़ू के वक़्त **मिस्वाक** की ज़रूरत हुई, तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक सोने की अशरफ़ी) में **मिस्वाक** ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई । बा'ज़ लोगों ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा ख़र्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी **मिस्वाक** ली जाती है ? फ़रमाया : बेशक येह दुन्या और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मच्छर के पर बराबर भी ह़ैसिय्यत नहीं रखतीं, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से येह पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा कि : "तूने मेरे प्यारे ह़बीब की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? मैं ने तुझे जो मालो दौलत दिया था उस की ह़क़ीक़त तो (मेरे नज़्दीक) मच्छर के पर बराबर भी नहीं थी, तो आख़िर ऐसी ह़क़ीर दौलत इतनी अ़ज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) ह़ासिल करने पर क्यूं ख़र्च नहीं की ?" **(مُلَخَّص ازلواقح الانوار ص ۳۸)** ❁ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 288 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह**, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं, मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं : जो शख़्स **मिस्वाक** का आ़दी हो मरते वक़्त

www.dawateislami.net

उसे **कलिमा** पढ़ना नसीब होगा और जो **अफ़्यून** खाता हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** नसीब न होगा ❁ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो ❁ मिस्वाक की मोटाई छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ❁ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैत़ान बैठता है ❁ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (Gap) का बाइ़स बनते हैं ❁ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना इस का एक सिरा कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ❁ मुनासिब है कि इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कारआमद रहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे ❁ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ❁ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ❁ हर बार धो लीजिये ❁ मिस्वाक सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली उस के नीचे और बीच की तीन उंग्लियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ❁ पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ❁ मुठ्ठी बांध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ❁ मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता **सुन्नते मुअक्कदा** उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 623) ❁ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या

www.dawateislami.net

पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिये। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 294 ता 295 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये)

हाथ धोने की ह़िक्मतें

वुज़ू में सब से पहले हाथ धोए जाते हैं इस की ह़िक्मतें मुला-ह़ज़ा हों : मुख़्तलिफ़ चीज़ों में हाथ डालते रहने से हाथों में मुख़्तलिफ़ कीमियावी अज्ज़ा और जरासीम लग जाते हैं अगर सारा दिन न धोए जाएं तो जल्द ही हाथ इन जिल्दी अमराज़ में मुब्तला हो सकते हैं : ﴾1﴿ हाथों के गरमी दाने ﴾2﴿ जिल्दी सोज़िश या'नी खाल की सूजन ﴾3﴿ एग्ज़ीमा ﴾4﴿ **फफूंदी**[1] की बीमारियां ﴾5﴿ जिल्द की रंगत तब्दील हो जाना वग़ैरा। जब हम हाथ धोते हैं तो उंग्लियों के पोरों से शुआ़एं (Rays) निकल कर एक ऐसा ह़ल्क़ा बनाती हैं जिस से हमारा अन्दरूनी बर्क़ी निज़ाम **मु-तह़र्रिक** हो जाता है और एक ह़द तक बर्क़ी रौ हमारे हाथों में सिमट आती है जिस से हमारे हाथों में ह़ुस्न पैदा हो जाता है।

कुल्ली करने की ह़िक्मतें

पहले हाथ धो लिये जाते हैं जिस से वोह जरासीम से पाक हो जाते हैं वरना येह कुल्ली के ज़रीए़ मुंह में और फिर पेट में जा कर मु-तअ़द्दद अमराज़ का बाइ़स बन सकते हैं। हवा के ज़रीए़ ला ता'दाद मोहलिक जरासीम नीज़ ग़िज़ा के अज्ज़ा हमारे मुंह और दांतों में लुआ़ब के साथ चिपक जाते हैं। चुनान्चे वुज़ू में मिस्वाक और कुल्लियों के

मदीना

1 : वोह जरासीम जो किसी चीज़ पर काई की त़रह़ जम जाते हैं।

www.dawateislami.net

ज़रीए मुंह की बेहतरीन सफ़ाई हो जाती है। अगर मुंह को साफ़ न किया जाए तो इन अमराज़ का ख़त़रा पैदा हो जाता है : ﴾1﴿ एड्ज़ (Aids) कि इस की इब्तिदाई अ़लामात में मुंह का पकना भी शामिल है। **एड्ज़** का ता ह़ाल डॉक्टर इलाज दरयाफ़्त नहीं कर पाए इस मरज़ में बदन का मुदा-फ़-अ़ती निज़ाम नाकारा हो जाता है, इस में अमराज़ का मुक़ाबला करने की कुव्वत नहीं रहती और मरीज़ घुल घुल कर मर जाता है ﴾2﴿ मुंह के कनारों का फटना ﴾3﴿ मुंह और होंटों की दादकूबा (Moniliasis) ﴾4﴿ मुंह में **फफूंदी** की बीमारियां और छाले वग़ैरा। नीज़ रोज़ा न हो तो कुल्ली के साथ ग़र-ग़रा करना भी सुन्नत है। **और पाबन्दी के साथ ग़र-ग़रे करने वाला कव्वे (Tonsil) बढ़ने और गले के बहुत सारे अमराज़ ह़त्ता कि गले के केन्सर से मह़फ़ूज़ रहता है।**

नाक में पानी डालने की ह़िक्मतें

फेफड़ों को ऐसी हवा दरकार होती है जो जरासीम, धूएं और गर्दो ग़ुबार से पाक हो और उस में 80 फ़ीसद रत़ूबत (या'नी तरी) हो ऐसी हवा फ़राहम करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें नाक की ने'मत से नवाज़ा है। हवा को मरत़ूब या'नी नम बनाने के लिये नाक रोज़ाना तक़रीबन चौथाई गेलन नमी पैदा करती है। सफ़ाई और दीगर सख़्त काम नथनों के बाल सर अन्जाम देते हैं। नाक के अन्दर एक ख़ुर्द बीनी (Microscopic) झाड़ू है। इस झाड़ू में ग़ैर म-र-ई या'नी नज़र न आने वाले रूएं होते हैं जो हवा के ज़रीए दाख़िल होने वाले जरासीम को हलाक कर देते हैं। नीज़ इन ग़ैर म-र-ई रूओं के ज़िम्मे एक और दिफ़ाई निज़ाम

www.dawateislami.net

भी है जिसे इंग्रेज़ी में lysozyme (**लैसोज़ाइम**) कहते हैं, नाक इस के ज़रीए़ से आंखों को Infection (या'नी जरासीम) से मह़फ़ूज़ रखती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! वुज़ू करने वाला नाक में पानी चढ़ाता है जिस से जिस्म के इस अहम तरीन आले नाक की सफ़ाई हो जाती है और पानी के अन्दर काम करने वाली बर्क़ी रौ से नाक के अन्दरूनी ग़ैर म–र–ई रूओं की कारकर्दगी को तक़्वियत मिलती है और मुसल्मान वुज़ू की ब–र–कत से नाक के बे शुमार पेचीदा अमराज़ से मह़फ़ूज़ हो जाता है। **दाइमी नज़्ला और नाक के ज़ख़्म के मरीज़ों के लिये नाक का ग़ुस्ल** (या'नी वुज़ू की त़रह़ नाक में पानी चढ़ाना) **बेह़द मुफ़ीद है।**

चेहरा धोने की ह़िक्मतें

आज कल फ़ज़ाओं में धूएं वग़ैरा की आलू–दगियां बढ़ती जा रही हैं, मुख़्तलिफ़ कीमियावी माद्दे सीसा वग़ैरा मैल कुचैल की शक्ल में आंखों और चेहरे वग़ैरा पर जमता रहता है, अगर चेहरा न धोया जाए तो चेहरे और आंखें कई अमराज़ से दो चार हो जाएं। एक यूरोपियन डॉक्टर ने एक मक़ाला लिखा जिस का नाम था। : **आंख, पानी, सिह़्ह़त** (Eye, Water, Health) इस में उस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि "अपनी आंखों को दिन में कई बार धोते रहो वरना तुम्हें ख़त़रनाक बीमारियों से दो चार होना पड़ेगा।" चेहरा धोने से मुंह पर **कील** नहीं निकलते या कम निकलते हैं। माहिरीने हुस्न व सिह़्ह़त इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हर त़रह़ के Cream और Lotion वग़ैरा चेहरे पर दाग़ छोड़ते हैं, चेहरे को ख़ूब सूरत बनाने के लिये चेहरे को कई बार धोना

www.dawateislami.net

लाज़िमी है। "अमेरीकन काउन्सिल फ़ोर ब्यूटी" की सरकर्दा मिम्बर "**बेचर**" ने क्या ख़ूब इन्किशाफ़ किया है कहती है : "**मुसल्मानों को किसी क़िस्म के कीमियावी लोशन की ह़ाजत नहीं वुज़ू से इन का चेहरा धुल कर कई बीमारियों से मह़फ़ूज़ हो जाता है।**" मह़्कमए माह़ोलियात के माहिरीन का कहना है : "चेहरे की एलर्जी से बचने के लिये इस को बार बार धोना चाहिये।" اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ऐसा सिर्फ़ वुज़ू के ज़रीए ही मुम्किन है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! वुज़ू में चेहरा धोने से एलर्जी से चेहरे की ह़िफ़ाज़त होती, इस का मसाज हो जाता, ख़ून का दौरान चेहरे की त़रफ़ रवां हो जाता, मैल कुचैल भी उतर जाता और चेहरे का ह़ुस्न दो बाला हो जाता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अन्धा पन से तह़फ़्फ़ुज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आंखों की एक बीमारी है जिस में इस की रत़ूबते अस्लिय्या या'नी अस्ली तरी कम या ख़त्म हो जाती और मरीज़ आहिस्ता आहिस्ता **अन्धा** हो जाता है। तिब्बी उसूल के मुत़ाबिक़ अगर भंवों को वक़्तन फ़ वक़्तन तर किया जाता रहे तो इस ख़ौफ़नाक मरज़ से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल हो सकता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! वुज़ू करने वाला मुंह धोता है और इस त़रह़ उस की भंवें तर होती रहती हैं। आ़शिक़ाने रसूल की दाढ़ी भी वुज़ू में धुलती है और इस में भी ख़ूब ह़िक्मतें हैं, डॉक्टर प्रोफ़ेसर ज्योर्ज एल कहता है : "मुंह धोने से दाढ़ी में उलझे हुए जरासीम बह जाते हैं, जड़ तक पानी पहुंचने से बालों की जड़ें

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

मज़्बूत़ होती हैं, दाढ़ी के ख़िलाल से जूओं का ख़त़रा दूर होता है, **दाढ़ी में पानी की तरी के ठहराव से गरदन के पठ्ठों, थाईराईड ग्लेंड और गले के अमराज़ से ह़िफ़ाज़त होती है।"**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कोहनियां धोने की ह़िक्मतें

कोहनी पर तीन3 बड़ी रगें हैं जिन का तअ़ल्लुक़ दिल, जिगर और दिमाग़ से है और जिस्म का येह ह़िस्सा उ़मूमन ढका रहता है अगर इस को पानी और हवा न लगे तो मु-तअ़द्दद दिमाग़ी और आ'साबी अमराज़ पैदा हो सकते हैं। **वुज़ू में कोहनियों समेत हाथ धोने से दिल, जिगर और दिमाग़ को तक़्वियत पहुंचती है** और इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह इन के अमराज़ से मह़फ़ूज़ रहेंगे। मज़ीद येह कि कोहनियों समेत हाथ धोने से सीने के अन्दर ज़ख़ीरा शुदा रोशनियों से बराहे रास्त इन्सान का तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो जाता है और रोशनियों का हुजूम एक बहाव की शक्ल इख़्तियार कर लेता है, इस अ़मल से हाथों के अ़-ज़लात या'नी कलपुर्ज़े मज़ीद त़ाक़त वर हो जाते हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मस्ह़ की ह़िक्मतें

सर और गरदन के दरमियान "ह़ब्लुल वरीद" या'नी शहरग वाक़ेअ़ है इस का तअ़ल्लुक़ रीढ़ की हड्डी और ह़राम मग़ज़ और जिस्म के तमाम तर जोड़ों से है। जब वुज़ू करने वाला गरदन का मस्ह़ करता है तो हाथों के ज़रीए बर्क़ी रौ निकल कर शहरग में ज़ख़ीरा हो जाती है

www.dawateislami.net

और रीढ़ की हड्डी से होती हुई जिस्म के तमाम आ'साबी निज़ाम में फैल जाती है और इस से आ'साबी निज़ाम को तुवानाई ह़ासिल होती है।

पागलों का डॉक्टर

एक साहिब का बयान है : मैं फ़्रान्स में एक जगह वुज़ू कर रहा था, एक शख़्स खड़ा बड़े ग़ौर से मुझे देखता रहा ! जब मैं फ़ारिग़ हुवा तो उस ने मुझ से पूछा : आप कौन और कहां के वत़नी हैं ? मैं ने जवाब दिया : मैं पाकिस्तानी मुसल्मान हूं। पूछा : पाकिस्तान में कितने पागल ख़ाने हैं ? इस अ़जीबो ग़रीब सुवाल पर मैं चौंका मगर मैं ने कह दिया : दो चार होंगे। पूछा : अभी तुम ने क्या किया ? मैं ने कहा : **वुज़ू**। कहने लगा : क्या रोज़ाना करते हो ? मैं ने कहा : हां, बल्कि पांच वक़्त। वोह बड़ा ह़ैरान हुवा और बोला : मैं Mental Hospital में सर्जन हूं और पागल पन के अस्बाब की तह़क़ीक़ मेरा मश्ग़ला है, मेरी तह़क़ीक़ येह है कि दिमाग़ से सारे बदन में सिग्नल जाते हैं और आ'ज़ा काम करते हैं, हमारा दिमाग़ हर वक़्त Fluid (माएअ़) के अन्दर Float[1] कर रहा है। इस लिये हम भागदौड़ करते हैं और दिमाग़ को कुछ नहीं होता अगर वोह कोई Rigid (सख़्त) शै होती तो अब तक टूट चुकी होती। दिमाग़ से चन्द बारीक रगें (Conductor) (मूसिल या'नी पहुंचाने वाली) बन कर हमारी गरदन की पुश्त से सारे जिस्म को जाती हैं। अगर बाल बहुत बढ़ा दिये जाएं और गरदन की पुश्त को ख़ुश्क रखा जाए तो इन रगों या'नी (Conductor) में ख़ुश्की पैदा हो जाने का ख़त़रा खड़ा हो जाता

مدينه

1 : या'नी तैरना।

www.dawateislami.net

है और बारहा ऐसा भी होता है कि इन्सान का दिमाग़ काम करना छोड़ देता है और वोह **पागल** हो जाता है लिहाज़ा मैं ने सोचा कि गरदन की पुश्त को दिन में दो चार बार ज़रूर तर किया जाए। अभी मैं ने देखा कि हाथ मुंह धोने के साथ साथ गरदन के पीछे भी आप ने कुछ किया है, वाक़ेई आप लोग पागल नहीं हो सकते। मज़ीद येह कि **मस्ह़ करने से लू लगने और गरदन तोड़ बुख़ार से भी बचत होती है।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

पाउं धोने की ह़िक्मतें

पाउं सब से ज़ियादा धूल आलूद होते हैं। पहले पहल infection (या'नी जरासीम) पाउं की उंग्लियों के दरमियानी ह़िस्से से शुरूअ़ होता है। वुज़ू में पाउं धोने से गर्दो ग़ुबार और जरासीम बह जाते हैं और बचे खुचे जरासीम पाउं की उंग्लियों के ख़िलाल से निकल जाते हैं। **लिहाज़ा वुज़ू में सुन्नत के मुत़ाबिक़ पाउं धोने से नींद की कमी, दिमाग़ी ख़ुश्की, घबराहट और मायूसी** (Depression) **जैसे परेशान कुन अमराज़ दूर होते हैं।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

वुज़ू का बचा हुवा पानी

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमा कर बचा हुवा पानी खड़े हो कर नोश फ़रमाया और एक ह़दीस में रिवायत किया गया कि **इस का पानी 70 मरज़ से शिफ़ा है** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 4, स. 575) फ़ु-क़हाए किराम

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام फ़रमाते हैं : "किसी बरतन या लोटे से वुज़ू किया हो तो उस का बचा हुवा पानी क़िब्ला रू खड़े हो कर पीना मुस्तह़ब है।" (تبیین الحقائق ج۱ص۴۴) वुज़ू का बचा हुवा पानी पीने के बारे में एक मुसल्मान डॉक्टर का कहना है : ﴾1﴿ इस का पहला असर मसाने पर पड़ता, पेशाब की रुकावट दूर होती और ख़ूब खुल कर पेशाब आता है ﴾2﴿ इस से ना जाइज़ शह्वत से ख़लासी ह़ासिल होती है ﴾3﴿ जिगर, मे'दा और मसाने की गरमी दूर होती है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इन्सान चांद पर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वुज़ू और साइन्स का मौज़ूअ़ चल रहा था, आज कल साइन्सी तह़क़ीक़ात की त़रफ़ बा'ज़ लोगों का ज़ियादा रुज्ह़ान होता है बल्कि कई ऐसे भी अफ़राद इस मुआ़-शरे में पाए जाते हैं जो इंग्रेज़ **मुह़क़्क़िक़ीन** और साइन्स दानों से काफ़ी मरऊ़ब होते हैं, ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि बहुत सारे ह़क़ाइक़ ऐसे हैं जिन की तलाश में साइन्स दान आज सर टकरा रहे हैं और मेरे मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन को पहले ही बयान फ़रमा चुके हैं। देखिये ! अपने दा'वे के मुत़ाबिक़ साइन्स दान अब चांद पर पहुंचे हैं मगर मेरे प्यारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह अल्फ़ाज़ लिखते वक़्त (या'नी **मुह़र्रमुल ह़राम** 1434 हि.) तक़्रीबन **1434** साल पहले सफ़रे मे'राज में चांद से भी वराउल वरा (या'नी दूर से दूर) तशरीफ़ ले जा चुके हैं। मेरे आक़ा आ'ला

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (فردوس الاخبار)

ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के उ़र्स शरीफ़ के मौक़अ़ पर दारुल उ़लूम अम्जदिय्या आ़लमगीर रोड बाबुल मदीना कराची में मुन्अ़क़िद होने वाले एक मुशाइ़रे में शिर्कत का मौक़अ़ मिला जिस में ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़ से येह "मिस्रए त़रह़" रखा गया था :

सर वोही सर जो तेरे क़दमों पे क़ुरबान गया

ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़त, बदरुत्त़रीक़त, मुसन्निफे़ बहारे शरीअ़त, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी साहि़ब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के शहज़ादे मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अज़्हरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने उस मुशाइ़रे में अपना जो कलाम पेश किया था उस का एक शे'र मुला-ह़ज़ा हो :

कहते हैं सत़ह़ पे चांद की इन्सान गया   अ़र्शे आ'ज़म से वरा त़यबा का सुल्त़ान गया

या'नी कहा जा रहा है कि अब इन्सान चांद पर पहुंच गया है ! सच पूछो तो चांद बहुत ही क़रीब है, मेरे मीठे मदीने के अ़-ज़मत वाले सुल्त़ान, शहन्शाहे ज़मीनो आस्मान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो[2] जहान صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मे'राज की रात चांद को पीछे छोड़ते हुए अ़र्शे आ'ज़म से भी बहुत ऊपर तशरीफ़ ले गए ।

अ़र्श की अ़क़्ल दंग है चर्ख़ में आस्मान है   जाने मुराद अब किधर हाए तेरा मकान है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

नूर का खिलोना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रहा चांद, जिस पर साइन्स दान अब पहुंचने का दा'वा कर रहा है वोह चांद तो मेरे प्यारे आक़ा

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ताबेए फ़रमान है। चुनान्चे "**दलाइलुन्नुबुव्वह**" में है : सुल्त़ाने दो[2] जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाजान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन **अ़ब्दुल मुत्त़लिब** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने आप (के बचपन शरीफ़ में आप) में ऐसी बात देखी जो आप की नुबुव्वत पर दलालत करती थी और मेरे ईमान लाने के अस्बाब में से येह भी एक सबब था। चुनान्चे मैं ने देखा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गहवारे (या'नी पिंघोड़े) में लैटे हुए चांद से बातें कर रहे थे और जिस त़रफ़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उंगली से इशारा फ़रमाते चांद उसी त़रफ़ हो जाता था। सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं उस से बातें करता था और वोह मुझ से बातें करता था और मुझे रोने से बहलाता था और मैं उस के गिरने की आवाज़ सुनता था जब कि वोह अ़र्शे इलाही عَزَّوَجَلَّ के नीचे सज्दे में गिरता था।" **(دلائلُ النّبوة للبيهقي ج ٢ ص ٤١)**

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

चांद झुक जाता जिधर उंगली उठाते मह्द में — क्या ही चलता था इशारों पर खिलोना नूर का

एक **मह़ब्बत** वाले ने कहा है :

खेलते थे चांद से बचपन में आक़ा इस लिये — येह सरापा नूर थे वोह था खिलोना नूर का

मो'जिज़ए शक़्क़ुल क़मर

"बुख़ारी शरीफ़" में है : कुफ़्फ़ारे मक्का ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में मो'जिज़ा दिखाने का मुत़ा-लबा किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें चांद के दो[2]

www.dawateislami.net

टुकड़े कर के दिखा दिये। (بخاری ج ۲ ص ۵۷۹ حدیث ۳۸۶۸) **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** पारह 27, **सू-रतुल क़मर** की पहली और दूसरी[2] आयत में इर्शाद फ़रमाता है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝۱ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝۲

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़मत वाला। पास आई क़ियामत और शक़ हो गया चांद और अगर देखें कोई निशानी तो मुंह फेरते और कहते हैं येह तो जादू है चला आता।

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़िस्सए आयत وَانْشَقَّ الْقَمَرُ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और शक़ हो गया चांद) के तह़त फ़रमाते हैं : इस आयत में हु़ज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के एक बड़े **मो'जिज़ए शक़्क़ुल क़मर** (या'नी चांद के दो[2] टुकड़े हो जाने) का ज़िक्र है। (नूरुल इरफ़ान, स. 843)

इशारे से चांद चीर दिया, छुपे हुए ख़ुर को फेर लिया
गए हुए दिन को अ़स्र किया, येह ताबो तुवां तुम्हारे लिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वुज़ू के त़िब्बी फ़वाइद सुन कर आप ख़ुश तो हो गए होंगे मगर अ़र्ज़ करता चलूं कि सारे का सारा फ़न्ने त़िब ज़न्नियात पर मब्नी है। साइन्सी तह़क़ीक़ात भी ह़त्मी

www.dawateislami.net

(या'नी फ़ाइनल) नहीं होतीं, बदलती रहती हैं। हां **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के अह़कामात अटल हैं वोह नहीं बदलेंगे। हमें सुन्नतों पर अ़मल तिब्बी फ़वाइद पाने के लिये नहीं सिर्फ़ व सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर करना चाहिये, लिहाज़ा इस लिये वुज़ू करना कि मेरा ब्लड प्रेशर नॉर्मल हो जाए या मैं ताज़ा दम हो जाऊंगा या डाएटिंग के लिये रोज़ा रखना ताकि भूक के फ़वाइद ह़ासिल हों। सफ़रे मदीना इस लिये करना कि आबो हवा भी तब्दील हो जाएगी और घर और कारोबारी **झन्झट** से भी कुछ दिन सुकून मिलेगा। या दीनी मुत़ा-लआ़ इस लिये करना कि मेरा टाइम पास हो जाएगा। इस त़रह़ की निय्यतों से आ'माल बजा लाने वालों को सवाब नहीं मिलेगा। अगर हम अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़ुश करने के लिये करेंगे तो सवाब भी मिलेगा और ज़िम्नन इस के फ़वाइद भी ह़ासिल हो जाएंगे। लिहाज़ा ज़ाहिरी और बात़िनी आदाब को मल्ह़ूज़ रखते हुए **वुज़ू भी हमें अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा ही के लिये करना चाहिये।**

तसव्वुफ़ का अ़ज़ीम म-दनी नुस्ख़ा

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : वुज़ू से फ़राग़त के बा'द जब आप नमाज़ की त़रफ़ मु-तवज्जेह हों उस वक़्त येह तसव्वुर कीजिये कि जिन ज़ाहिरी आ'ज़ा पर लोगों की नज़र पड़ती है वोह तो ब ज़ाहिर त़ाहिर (या'नी पाक) हो चुके मगर दिल को पाक किये बिग़ैर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मुनाजात करना ह़या के ख़िलाफ़ है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

दिलों को भी देखने वाला है। मज़ीद फ़रमाते हैं : ज़ाहिरी वुज़ू कर लेने वाले को येह बात याद रखनी चाहिये कि दिल की त़हारत (या'नी सफ़ाई) तौबा करने और गुनाह को छोड़ने और उ़म्दा अख़्लाक़ अपनाने से होती है। जो शख़्स दिल को गुनाहों की आलू-दगियों से पाक नहीं करता फ़क़त ज़ाहिरी त़हारत (या'नी सफ़ाई) और ज़ैबो ज़ीनत पर इक्तिफ़ा करता है उस की मिसाल उस शख़्स की सी है जो बादशाह को मदऊ़ करता है और अपने घर को बाहर से ख़ूब चमकाता है और रंगो रोग़न करता है मगर मकान के अन्दरूनी ह़िस्से की सफ़ाई पर कोई तवज्जोह नहीं देता, अब ऐसी सूरत में जब बादशाह उस के मकान के अन्दर आ कर गन्दगियां देखेगा तो वोह नाराज़ होगा या राज़ी येह हर ज़ी शुऊ़र ख़ुद समझ सकता है। (اِحیاءُ العُلوم ج ۱ ص ۱۸۵ مُلَخَّصاً)

सुन्नत साइन्सी तह़क़ीक़ की मोह़ताज नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत साइन्सी तह़क़ीक़ की मोह़ताज नहीं और हमारा मक़्सूद इत्तिबाए़ साइन्स नहीं **इत्तिबाए़ सुन्नत** है, मुझे कहने दीजिये कि जब यूरोपियन माहिरीन बरसहा बरस की अ़रक़ रेज़ी के बा'द नतीजे का दरीचा खोलते हैं तो उन्हें सामने मुस्कुराती नूर बरसाती सुन्नते मुस-त़-फ़वी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही नज़र आती है ! दुन्या में लाख सैरो सियाह़त कीजिये, जितना चाहे ऐ़शो इ़शरत कीजिये, मगर आप के दिल को ह़क़ीक़ी राह़त मुयस्सर नहीं आएगी, सुकूने क़ल्ब सिर्फ़ो

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

सिर्फ़ यादे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मिलेगा। दिल का चैन इ़श्क़े सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही में ह़ासिल होगा। दुन्या व आख़िरत की राह़तें साइन्सी आलात T.V., VCR और internet के रू बरू नहीं इत्तिबाए सुन्नत में ही नसीब होंगी। **अगर आप वाक़ेई दोनों[2] जहां की भलाइयां चाहते हैं तो नमाज़ों और सुन्नतों को मज़्बूत़ी से थाम लीजिये और इन्हें सीखने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र अपना मा'मूल बना लीजिये।** हर इस्लामी भाई निय्यत करे कि मैं ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार यक मुश्त 12 माह, हर 12 माह में 30 दिन और हर माह 3 दिन सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया करूंगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ।

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह़ जब निकल कर चले तू गले लगाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

21 मुह़र्रमुल ह़राम 1434 सि.हि.
6-12-2012

एक चुप सो सुख[100]

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفل مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ

بقیع

ग़ुस्ल का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

इस रिसाले में ....

मुसल्ले पर का'बतुल्लाह की तस्वीर

अनोखी सज़ा

तयम्मुम का त़रीक़ा

बारिश में ग़ुस्ल

मुश्त ज़नी का अ़ज़ाब

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

ग़ुस्ल का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

येह रिसाला (27 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये, क़वी इम्कान है कि कई ग़-लत़ियां आप के सामने आ जाएं ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है, “मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है ।” (مُسْنَد اَبِی یَعْلٰی ج۵ص۴۵۸حدیث۶۳۸۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

अनोखी सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : इब्नुल कुरैबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی कहते हैं : एक बार मुझे एह़तिलाम हो गया । मैं ने इरादा किया इसी वक़्त ग़ुस्ल कर लूं । चूंकि सख़्त सर्दी की रात थी नफ़्स ने सुस्ती की और मश्वरा दिया : “अभी काफ़ी रात बाक़ी है इतनी जल्दी भी क्या है ! सुब्ह़ इत़्मीनान से ग़ुस्ल कर लेना ।” मैं ने फ़ौरन नफ़्स को **अनोखी सज़ा** देने के लिये क़सम खाई कि इसी वक़्त कपड़ों समेत नहाऊंगा और नहाने के बा’द कपड़े निचोड़ूंगा भी नहीं और

www.dawateislami.net

इन को अपने बदन ही पर ख़ुश्क करूंगा। चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया, वाक़ेई जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के काम में ढील करे ऐसे सरकश नफ़्स की येही सज़ा है। (کیمیائے سعادت ج۲ص۸۹۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

निहंगो [1] अज़्दहा मारा अगर्चे शेरे नर मारा
बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام अपने नफ़्स की चालों को नाकाम बनाने के लिये कैसी कैसी मशक़्क़तें झेलते थे। इस से वोह इस्लामी भाई दर्स ह़ासिल करें जो रात को एह़तिलाम हो जाने की सूरत में आख़िरत की ख़ौफ़नाक शर्म को भुला कर मह़ज़ घर वालों से शरमा कर या ग़ुस्ल के मुआ-मले में सुस्ती कर के, नमाज़े फ़ज्र की जमाअ़त ज़ाएअ़ बल्कि مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ तक क़ज़ा कर डालते हैं ! जब कभी ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाए तो नमाज़ का वक़्त आ जाने पर फ़ौरन ग़ुस्ल कर लेना चाहिये। ह़दीसे पाक में आता है : फ़िरिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस में तस्वीर और कुत्ता और जुनुब (या'नी जिस पर जिमाअ़ या एह़तिलाम या शह्वत के साथ मनी ख़ारिज होने की वज्ह से ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया) हो। (ابوداؤد ج۱ ص۱۰۹ حدیث ۲۲۷)

1 : मगर मच्छ

www.dawateislami.net

ग़ुस्ल का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

बिग़ैर ज़बान हिलाए दिल में इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं पाकी ह़ासिल करने के लिये ग़ुस्ल करता हूं। पहले दोनों[2] हाथ पहुंचों तक तीन[3] तीन[3] बार धोइये, फिर इस्तिन्जे की जगह धोइये ख़्वाह नजासत हो या न हो, फिर जिस्म पर अगर कहीं नजासत हो तो उस को दूर कीजिये फिर नमाज़ का सा वुज़ू कीजिये मगर पाउं न धोइये, **हां** अगर चौकी वग़ैरा पर ग़ुस्ल कर रहे हैं तो पाउं भी धो लीजिये, फिर बदन पर तेल की त़रह़ पानी चुपड़ लीजिये, ख़ुसूसन सर्दियों में (इस दौरान साबुन भी लगा सकते हैं) फिर तीन[3] बार सीधे कन्धे पर पानी बहाइये, फिर तीन[3] बार उल्टे कन्धे पर, फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन[3] बार, फिर ग़ुस्ल की जगह से अलग हो जाइये, अगर वुज़ू करने में पाउं नहीं धोए थे तो अब धो लीजिये। नहाने में क़िब्ला रुख़ न हों, तमाम बदन पर हाथ फैर कर मल कर नहाइये। ऐसी जगह नहाना चाहिये जहां किसी की नज़र न पड़े अगर येह मुम्किन न हो तो मर्द अपना सित्र (नाफ़ से ले कर दोनों[2] घुटनों समेत) किसी मोटे कपड़े से छुपा ले, मोटा कपड़ा न हो तो ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन कपड़े लपेट ले क्यूं कि बारीक कपड़ा होगा तो पानी से बदन पर चिपक जाएगा और مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ घुटनों या रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर होगी। औ़रत को तो और भी ज़ियादा एह़तियात़ की ह़ाजत है। दौराने ग़ुस्ल किसी क़िस्म की गुफ़्त-गू मत कीजिये, कोई दुआ़ भी न पढ़िये, नहाने के बा'द तोलिये वग़ैरा से बदन पोंछने में ह़रज नहीं। नहाने के बा'द फ़ौरन कपड़े पहन लीजिये। अगर मक्रूह वक़्त न हो तो

www.dawateislami.net

दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना **मुस्तह़ब** है।

(عالمگیری ج ۱ص ۱٤, माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 319 वग़ैरा)

ग़ुस्ल के तीन फ़राइज़

﴾1﴿ कुल्ली करना ﴾2﴿ नाक में पानी चढ़ाना ﴾3﴿ तमाम ज़ाहिर बदन पर पानी बहाना। (فتاوٰی عالمگیری ج ۱ ص ۱۳)

﴾1﴿ कुल्ली करना

मुंह में थोड़ा सा पानी ले कर पच कर के डाल देने का नाम कुल्ली नहीं बल्कि मुंह के हर पुर्ज़े, गोशे, होंट से ह़ल्क़ की जड़ तक हर जगह पानी बह जाए। **इसी** त़रह़ दाढ़ों के पीछे गालों की तह में, दांतों की खिड़कियों और जड़ों और ज़बान की हर करवट पर बल्कि ह़ल्क़ के कनारे तक पानी बहे। रोज़ा न हो तो ग़र-ग़रा भी कर लीजिये कि सुन्नत है। दांतों में छालिया के दाने या बोटी के रेशे वग़ैरा हों तो उन को छुड़ाना ज़रूरी है। हां अगर छुड़ाने में ज़रर (या'नी नुक़्सान) का अन्देशा हो तो मुआ़फ़ है। ग़ुस्ल से क़ब्ल दांतों में रेशे वग़ैरा मह़सूस न हुए और रह गए नमाज़ भी पढ़ ली बा'द को मा'लूम होने पर छुड़ा कर पानी बहाना फ़र्ज़ है, पहले जो नमाज़ पढ़ी थी वोह हो गई। जो हिलता दांत मसाले से जमाया गया या तार से बांधा गया और तार या मसाले के नीचे पानी न पहुंचता हो तो मुआ़फ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 316, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 439, 440) जिस त़रह़ की एक कुल्ली ग़ुस्ल के लिये फ़र्ज़ है इसी त़रह़ की तीन[3] कुल्लियां वुज़ू के लिये सुन्नत हैं।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

﴾2﴿ नाक में पानी चढ़ाना

जल्दी जल्दी नाक की नोक पर पानी लगा लेने से काम नहीं चलेगा बल्कि जहां तक नर्म जगह है या'नी सख़्त हड्डी के शुरूअ़ तक धुलना लाज़िमी है। और येह यूं हो सकेगा कि पानी को सूंघ कर ऊपर खींचिये। येह ख़याल रखिये कि बाल बराबर भी जगह धुलने से न रह जाए वरना ग़ुस्ल न होगा। नाक के अन्दर अगर रींठ सूख गई है तो उस का छुड़ाना फ़र्ज़ है, नीज़ नाक के बालों का धोना भी फ़र्ज़ है।

(ऐज़न, ऐज़न, स. 442, 443)

﴾3﴿ तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना

सर के बालों से ले कर पाउं के तल्वों तक जिस्म के हर पुर्ज़े और हर हर रोंगटे पर पानी बह जाना ज़रूरी है, जिस्म की बा'ज़ जगहें ऐसी हैं कि अगर एह़तियात़ न की तो वोह सूखी रह जाएंगी और ग़ुस्ल न होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 317)

"صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ" के इक्कीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से मर्द व औ़रत दोनों के लिये ग़ुस्ल की 21 एह़तियातें

❁ अगर मर्द के सर के बाल गुंधे हुए हों तो उन्हें खोल कर जड़ से नोक तक पानी बहाना फ़र्ज़ है और ❁ औ़रत पर सिर्फ़ जड़ तर कर लेना ज़रूरी है खोलना ज़रूरी नहीं। हां अगर चोटी इतनी सख़्त गुंधी हुई हो कि बे खोले जड़ें तर न होंगी तो खोलना ज़रूरी है ❁ अगर कानों में बाली या नाक में नथ का छेद (सूराख़) हो और वोह बन्द न हो तो उस में पानी बहाना फ़र्ज़ है। वुज़ू में सिर्फ़ नाक के नथ के छेद में और ग़ुस्ल

www.dawateislami.net

में अगर कान और नाक दोनों में छेद हों तो दोनों में पानी बहाएं ❁ भवों, मूंछों और दाढ़ी के हर बाल का जड़ से नोक तक और उन के नीचे की खाल का धोना ज़रूरी है ❁ कान का हर पुर्ज़ा और उस के सूराख़ का मुंह धोएं ❁ कानों के पीछे के बाल हटा कर पानी बहाएं ❁ ठोड़ी और गले का जोड़ कि मुंह उठाए बिग़ैर न धुलेगा ❁ हाथों को अच्छी त़रह़ उठा कर बग़लें धोएं ❁ बाज़ू का हर पहलू धोएं ❁ पीठ का हर ज़र्रा धोएं ❁ पेट की बल्टें उठा कर धोएं ❁ नाफ़ में भी पानी डालें अगर पानी बहने में शक हो तो नाफ़ में उंगली डाल कर धोएं ❁ जिस्म का हर रोंगटा जड़ से नोक तक धोएं ❁ रान और पेडू (नाफ़ से नीचे के ह़िस्से) का जोड़ धोएं ❁ जब बैठ कर नहाएं तो रान और पिंडली के जोड़ पर भी पानी बहाना याद रखें ❁ दोनों सुरीन के मिलने की जगह का ख़याल रखें, ख़ुसूसन जब खड़े हो कर नहाएं ❁ रानों की गोलाई और ❁ पिंडलियों की करवटों पर पानी बहाएं ❁ ज़कर व उन्स-ययैन (या'नी फ़ोत़ों) की निचली सत़ह़ जोड़ तक और ❁ उन्स-ययैन के नीचे की जगह जड़ तक धोएं ❁ जिस का ख़तना न हुवा, वोह अगर खाल चढ़ सकती हो तो चढ़ा कर धोए और खाल के अन्दर पानी चढ़ाए।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 317, 318)

मस्तूरात के लिये 6 एह़तियातें

﴾1﴿ ढल्की हुई पिस्तान को उठा कर पानी बहाएं ﴾2﴿ पिस्तान और पेट के जोड़ की लकीर धोएं ﴾3﴿ फ़र्जे ख़ारिज (या'नी औ़रत की

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइ़स है। (ابویعلی)

शर्मगाह के बाहर के ह़िस्से) का हर गोशा हर टुक्ड़ा ऊपर नीचे ख़ूब एह़तियात़ से धोएं ﴾4﴿ फ़र्जे दाख़िल (या'नी शर्मगाह के अन्दरूनी ह़िस्से) में उंगली डाल कर धोना फ़र्ज़ नहीं **मुस्तह़ब** है ﴾5﴿ अगर ह़ैज़ या निफ़ास से फ़ारिग़ हो कर ग़ुस्ल करें तो किसी पुराने कपड़े से फ़र्जे दाख़िल के अन्दर से ख़ून का असर साफ़ कर लेना **मुस्तह़ब** है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 318) ﴾6﴿ अगर नेल पॉलिश **नाख़ुनों** पर लगी हुई है तो उस का भी छुड़ाना फ़र्ज़ है वरना ग़ुस्ल नहीं होगा, हां मेहंदी के रंग में ह़रज नहीं।

ज़ख़्म की पट्टी

ज़ख़्म पर पट्टी वग़ैरा बंधी हो और उसे खोलने में नुक़्सान या ह़रज हो तो पट्टी पर ही मस्ह़ कर लेना काफ़ी है नीज़ किसी जगह मरज़ या दर्द की वज्ह से पानी बहाना नुक़्सान देह हो तो उस पूरे उ़ज़्व पर मस्ह़ कर लीजिये। पट्टी ज़रूरत से ज़ियादा जगह को घेरे हुए नहीं होनी चाहिये वरना मस्ह़ काफ़ी न होगा। अगर ज़रूरत से ज़ियादा जगह घेरे बिग़ैर पट्टी बांधना मुम्किन न हो म-सलन बाज़ू पर ज़ख़्म है मगर पट्टी बाज़ूओं की गोलाई में बांधी है जिस के सबब बाज़ू का अच्छा ह़िस्सा भी पट्टी के अन्दर छुपा हुवा है, तो अगर खोलना मुम्किन हो तो खोल कर उस ह़िस्से को धोना फ़र्ज़ है। अगर ना मुम्किन है या खोलना तो मुम्किन है मगर फिर वैसी न बांध सकेगा और यूं ज़ख़्म वग़ैरा को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा है तो सारी पट्टी पर मस्ह़ कर लेना काफ़ी है, बदन का वोह अच्छा ह़िस्सा भी धोने से मुआ़फ़ हो जाएगा। (ऐज़न, स. 318)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के 5 अस्बाब

﴾1﴿ मनी का अपनी जगह से शह्वत के साथ जुदा हो कर उ़ज़्व से निकलना ﴾2﴿ एह़तिलाम या'नी सोते में मनी का निकल जाना ﴾3﴿ शर्मगाह में ह़श्फ़ा (सुपारी) दाख़िल हो जाना ख़्वाह शह्वत हो या न हो, इन्ज़ाल हो या न हो, दोनों पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ है ﴾4﴿ है़ज़ से फ़ारिग़ होना ﴾5﴿ निफ़ास (या'नी बच्चा जनने पर जो ख़ून आता है उस) से फ़ारिग़ होना। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 321 ता 324)

निफ़ास की ज़रूरी वज़ाह़त

अक्सर औ़रतों में येह मश्हूर है कि बच्चा जनने के बा'द औ़रत चालीस दिन तक लाज़िमी तौ़र पर नापाक रहती है येह बात बिल्कुल ग़लत़ है। **निफ़ास** की तफ़्सील मुला-ह़ज़ा हो। **बच्चा** पैदा होने के बा'द जो ख़ून आता है उस को **निफ़ास** कहते हैं इस की ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत चालीस दिन है या'नी अगर चालीस दिन के बा'द भी बन्द न हो तो मरज़ है। लिहाज़ा चालीस दिन पूरे होते ही ग़ुस्ल कर ले और चालीस दिन से पहले बन्द हो जाए ख़्वाह बच्चे की विलादत के बा'द एक मिनट ही में बन्द हो जाए तो जिस वक़्त भी बन्द हो ग़ुस्ल कर ले और नमाज़ व रोज़ा शुरूअ़ हो गए। अगर चालीस दिन के अन्दर अन्दर दोबारा ख़ून आ गया तो शुरूए़ विलादत से **ख़त्मे** ख़ून तक सब दिन निफ़ास ही के शुमार होंगे। म-सलन विलादत के बा'द दो मिनट तक ख़ून आ कर बन्द हो गया और औ़रत ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा वग़ैरा करती रही, चालीस

www.dawateislami.net

दिन पूरे होने में फ़क़त दो मिनट बाक़ी थे कि फिर ख़ून आ गया तो सारा चिल्ला या'नी मुकम्मल चालीस दिन निफ़ास के ठहरेंगे। जो भी नमाज़ें पढ़ीं या रोज़े रखे सब बेकार गए, यहां तक कि अगर इस दौरान फ़र्ज़ व वाजिब नमाज़ें या रोज़े क़ज़ा किये थे तो वोह भी फिर से अदा करे।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 354 ता 356)

5 ज़रूरी अह़काम

﴾1﴿ मनी शह्वत के साथ अपनी जगह से जुदा न हुई बल्कि बोझ उठाने या बुलन्दी से गिरने या फ़ुज़्ला ख़ारिज करने के लिये ज़ोर लगाने की सूरत में ख़ारिज हुई तो ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं। वुज़ू बहर ह़ाल टूट जाएगा ﴾2﴿अगर मनी पतली पड़ गई और पेशाब के वक़्त या वैसे ही बिला शह्वत इस के क़त़रे निकल आए ग़ुस्ल फ़र्ज़ न हुवा वुज़ू टूट जाएगा ﴾3﴿अगर एह़तिलाम होना याद है मगर इस का कोई असर कपड़े वग़ैरा पर नहीं तो ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं ﴾4﴿ नमाज़ में शह्वत थी और मनी उतरती हुई मा'लूम हुई मगर बाहर निकलने से क़ब्ल ही नमाज़ पूरी कर ली अब ख़ारिज हुई तो नमाज़ हो गई मगर अब ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 321 ता 322) ﴾5﴿ अपने हाथों से माद्दा ख़ारिज करने से ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है। येह गुनाह का काम है। ह़दीसे पाक में ऐसा करने वाले को मल्ऊ़न कहा गया है। (اَمالی ابن بشران ج۲ ص۵ رقم ۴۷۷ ، حاشِيَةُ الطَّحطاوى على مَراقى الفَلاح ۹۶) ऐसा करने से मर्दाना कमज़ोरी पैदा होती है और बारहा देखा गया है कि बिल आख़िर आदमी शादी के लाइक़ नहीं रहता।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

मुश्त ज़नी का अ़ज़ाब

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : एक शख़्स **मज्लूक़** (या'नी मुश्त ज़नी करने वाला) है वोह इस फ़े'ल से नहीं मानता है, हर चन्द उस को समझाया है, आप तह़रीर फ़रमाएं, उस का क्या ह़श्र होगा और उस को क्या दुआ़ पढ़ना चाहिये जिस से उस की आ़दत छूट जाए ?

इर्शादे आ'ला ह़ज़रत : वोह गुनहगार है[1], आ़सी है, इसरार के सबब मुर-तकिबे कबीरा है, फ़ासिक़ है, ह़श्र में ऐसों की (या'नी मुश्त ज़नी करने वालों की) हथेलियां गाभन (या'नी ह़ामिला) उठेंगी जिस से मज्मए़ आ'ज़म में उन की रुस्वाई होगी अगर तौबा न करें, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ फ़रमाता है जिसे चाहे और अ़ज़ाब फ़रमाता है जिसे चाहे। उसे चाहिये कि **लाह़ौल शरीफ़** की कसरत करे और जब शैत़ान इस ह़-र-कत की त़रफ़ बुलाए तो फ़ौरन दिल से मु-तवज्जेह ब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ हो कर **लाह़ौल** पढ़े। नमाज़े पन्जगाना की पाबन्दी करे। नमाज़े सुब्ह़ के बा'द बिला नाग़ा **सू-रतुल इख़्लास शरीफ़** का विर्द रखे। وَاللہُ تَعَالٰی اَعْلَم

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 244)

(श-ज-रए अ़त्त़ारिय्या सफ़ह़ा 16 पर है : हर सुब्ह़ **सू-रतुल इख़्लास** ग्यारह बार पढ़े अगर शैत़ान मअ़ लश्कर के कोशिश करे कि इस से गुनाह कराए, न करा सके जब तक कि येह ख़ुद न करे)

1 : जलक़ के होशरुबा नुक़्सानात की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ का रिसाला **''क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां''** पढ़ लीजिये।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

बहते पानी में ग़ुस्ल का त़रीक़ा

अगर बहते पानी म-सलन दरिया, या नह्र में नहाया तो थोड़ी देर उस में रुकने से तीन बार धोने, तरतीब और वुज़ू येह सब सुन्नतें अदा हो गईं। इस की भी ज़रूरत नहीं कि आ'ज़ा को तीन बार ह़-र-कत दे। अगर तालाब वग़ैरा ठहरे पानी में नहाया तो आ'ज़ा को तीन बार ह़-र-कत देने या जगह बदलने से **तस्लीस** या'नी तीन[3] बार धोने की सुन्नत अदा हो जाएगी। बरसात में (या नल या फ़व्वारे के नीचे) खड़ा होना बहते पानी में खड़े होने के हुक्म में है। बहते पानी में वुज़ू किया तो वोही थोड़ी देर उस में उ़ज़्व को रहने देना और ठहरे पानी में ह़-र-कत देना तीन बार धोने के क़ाइम मक़ाम है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 320) वुज़ू और ग़ुस्ल की इन तमाम सूरतों में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना होगा।

फ़व्वारा जारी पानी के हुक्म में है

फ़तावा अहले सुन्नत (ग़ैर मत़बूआ़) में है : फ़व्वारे (या नल) के नीचे ग़ुस्ल करना जारी पानी में ग़ुस्ल करने के हुक्म में है लिहाज़ा इस के नीचे ग़ुस्ल करते हुए वुज़ू और ग़ुस्ल करते वक़्त की मुद्दत तक ठहरा तो **तस्लीस** की सुन्नत अदा हो जाएगी। चुनान्चे "**दुर्रे मुख़्तार**" में है : "अगर जारी पानी या बड़े हौज़ या बारिश में वुज़ू और ग़ुस्ल करने के वक़्त की मुद्दत तक ठहरा तो उस ने पूरी सुन्नत अदा की।" (دُرِّمُختار ج۱ ص۳۲۰) याद रहे ! ग़ुस्ल या वुज़ू में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना है।

www.dawateislami.net

फ़व्वारे की एह़तियातें

अगर आप के ह़म्माम में फ़व्वारा (SHOWER) हो तो उसे अच्छी त़रह़ देख लीजिये कि उस की त़रफ़ मुंह कर के नंगे नहाने में मुंह या पीठ क़िब्ले शरीफ़ की त़रफ़ तो नहीं हो रही । इस्तिन्जा ख़ाने में भी इसी त़रह़ एह़तियात़ फ़रमाइये । क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ होने का मा'ना येह है कि 45 द-रजे के ज़ाविये के अन्दर अन्दर हो । लिहाज़ा येह एह़तियात़ भी ज़रूरी है कि 45 डिग्री के ज़ाविये (एंगल ANGLE) के बाहर हो । इस मस्अले से अक्सर लोग ना वाक़िफ़ हैं ।

W.C. का रुख़ दुरुस्त कीजिये

मेहरबानी फ़रमा कर अपने घर वग़ैरा के डब्लयू.सी (W.C.) और फ़व्वारे का रुख़ अगर ग़लत़ हो तो उस की इस्लाह़ फ़रमा लीजिये । **ज़ियादा** एह़तियात़ इस में है कि W.C. क़िब्ले से 90 के द-रजे पर या'नी नमाज़ पढ़ने में सलाम फैरने के रुख़ कर दीजिये । मि'मार उ़मूमन ता'मीराती सहूलत और ख़ूब सूरती का लिह़ाज़ करते हैं आदाबे क़िब्ला की परवाह नहीं करते । मुसल्मानों को मकान की ग़ैर वाजिबी बेहतरी के बजाए आख़िरत की ह़क़ीक़ी बेहतरी पर नज़र रखनी चाहिये ।

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
भाई नहीं भरोसा है कोई ज़िन्दगी का

कब कब ग़ुस्ल करना सुन्नत है

जुमुअ़ा, ईदुल फ़ित्र, बक़र ईद, अ़-रफ़े के दिन (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) और एह़राम बांधते वक़्त नहाना सुन्नत है ।

(فتاوٰی عالمگیری ج۱ ص۱۶)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

कब कब ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है

﴾1﴿ वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात ﴾2﴿ वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा ﴾3﴿ ह़ाज़िरिये ह़रम ﴾4﴿ ह़ाज़िरिये सरकारे आ'ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ﴾5﴿ त़वाफ़ ﴾6﴿ दुख़ूले मिना ﴾7﴿ जम्रों पर कंकरियां मारने के लिये तीनों[3] दिन ﴾8﴿ शबे बराअत ﴾9﴿ शबे क़द्र ﴾10﴿ अ़-रफ़े की रात ﴾11﴿ मजलिसे मीलाद शरीफ़ ﴾12﴿ दीगर मजालिसे ख़ैर के लिये ﴾13﴿ मुर्दा नहलाने के बा'द ﴾14﴿ मजनून (या'नी पागल) को जुनून (पागल पन) जाने के बा'द ﴾15﴿ ग़शी से इफ़ाक़े के बा'द ﴾16﴿ नशा जाते रहने के बा'द ﴾17﴿ गुनाह से तौबा करने ﴾18﴿ नए कपड़े पहनने के लिये ﴾19﴿ सफ़र से आने वाले के लिये ﴾20﴿ इस्तिह़ाज़ा का ख़ून बन्द होने के बा'द ﴾21﴿ नमाज़े कुसूफ़ व ख़ुसूफ़ ﴾22﴿ नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिये ﴾23﴿ ख़ौफ़ व तारीकी और सख़्त आंधी के लिये ﴾24﴿ बदन पर नजासत लगी और येह मा'लूम न हुवा कि किस जगह लगी है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 324 ता 325, دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج۱ ص۳۴۱-۳۴۳)

एक ग़ुस्ल में मुख़्तलिफ़ निय्यतें

जिस पर चन्द ग़ुस्ल हों सब की निय्यत से एक ग़ुस्ल कर लिया, सब अदा हो गए सब का सवाब मिलेगा। जुनुब ने जुमुआ़ या ई़द के दिन ग़ुस्ले जनाबत किया और जुमुआ़ और ई़द वग़ैरा की निय्यत भी कर ली सब अदा हो गए, अगर उसी ग़ुस्ल से जुमुआ़ और ई़द की नमाज़ अदा कर ले। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 325)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

बारिश में ग़ुस्ल

लोगों के सामने सित्र खोल कर नहाना ह़राम है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 3, स. 306) बारिश वग़ैरा में भी नहाएं तो पाजामा या शलवार के ऊपर मज़ीद रंगीन मोटी चादर लपेट लीजिये ताकि पाजामा पानी से चिपक भी जाए तो रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर न हो।

तंग लिबास वाले की त़रफ़ नज़र करना कैसा ?

लिबास तंग हो या ज़ोर से हवा चली या बारिश या साह़िले समुन्दर या नह्‌र वग़ैरा में अगर्चे मोटे कपड़े में नहाए और कपड़ा इस त़रह़ चिपक जाए कि सित्र के किसी कामिल उ़ज़्व म-सलन रान की मुकम्मल गोलाई की हैअत (उभार) ज़ाहिर हो जाए ऐसी सूरत में उस (मख़्सूस) उ़ज़्व की त़रफ़ दूसरे को नज़र करने की इजाज़त नहीं। येही हुक्म तंग लिबास वाले के सित्र के उभरे हुए उ़ज़्वे कामिल की त़रफ़ नज़र करने का है।

नंगे नहाते वक़्त ख़ूब एह़तियात़

ह़म्माम में तन्हा नंगे नहाएं या ऐसा पाजामा पहन कर नहाएं कि उस के चिपक जाने से रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर हो सकती है तो ऐसी सूरत में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ मत कीजिये।

ग़ुस्ल से नज़्ला बढ़ जाता हो तो ?

ज़ुकाम या आशोबे चश्म वग़ैरा हो और येह गुमाने सह़ीह़ हो कि सर से नहाने में मरज़ बढ़ जाएगा या दीगर अमराज़ पैदा हो जाएंगे तो

www.dawateislami.net

कुल्ली कीजिये, नाक में पानी चढ़ाइये और गरदन से नहाइये । और सर के हर ह़िस्से पर भीगा हुवा हाथ फैर लीजिये ग़ुस्ल हो जाएगा । बा'दे सिह़ह़त सर धो डालिये पूरा ग़ुस्ल नए सिरे से करना ज़रूरी नहीं ।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 318)

बाल्टी से नहाते वक़्त एह़तियात़

अगर बाल्टी के ज़रीए़ ग़ुस्ल करें तो एह़तियात़न उसे तिपाई (STOOL) वग़ैरा पर रख लीजिये ताकि बाल्टी में छींटें न आएं । नीज़ ग़ुस्ल में इस्ति'माल करने का मग भी फ़र्श पर न रखिये ।

बाल की गिरह

बाल में गिरह पड़ जाए तो ग़ुस्ल में उसे खोल कर पानी बहाना ज़रूरी नहीं । (ऐज़न)

"क़ुरआन मुक़द्दस है" के दस ह़ुरूफ़ की निस्बत से नापाकी की ह़ालत में क़ुरआने पाक पढ़ने या छूने के 10 मसाइल

《1》 **जिस** पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उस को मस्जिद में जाना, त़वाफ़ करना, क़ुरआने पाक छूना, बे छूए ज़बानी पढ़ना, किसी आयत का लिखना, आयत का ता'वीज़ लिखना (लिखना उस सूरत में ह़राम है **जिस में काग़ज़ का छूना पाया जाए, अगर काग़ज़ को न छूए तो लिखना जाइज़ है)** (ग़ैर मत़्बूआ़ फ़तावा अहले सुन्नत) ऐसा ता'वीज़ छूना, ऐसी अंगूठी छूना या पहनना जिस पर आयत या ह़ुरूफ़े मुक़त्तआ़त लिखे हों

www.dawateislami.net

ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 326) (मोमजामे वाले या प्लास्टिक में लपेट कर कपड़े या चमड़े वग़ैरा में सिले हुए ता'वीज़ को पहनने या छूने में मुज़ा-यक़ा नहीं।)

《2》 **अगर** क़ुरआने पाक जुज़्दान में हो तो बे वुज़ू या बे ग़ुस्ल जुज़्दान पर हाथ लगाने में ह़रज नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 326)

《3》 **इसी** त़रह़ किसी ऐसे कपड़े या रुमाल वग़ैरा से क़ुरआने पाक पकड़ना जाइज़ है जो न अपने ताबेअ़ हो न क़ुरआने पाक के। (ऐज़न)

《4》 **कुर्ते** की आस्तीन, दुपट्टे के आंचल से यहां तक कि चादर का एक कोना इस के कन्धे पर है तो चादर के दूसरे कोने से क़ुरआने पाक को छूना ह़राम है कि येह सब चीज़ें इस छूने वाले के ताबेअ़ हैं। (ऐज़न)

《5》 **क़ुरआने** पाक की आयत दुआ़ की निय्यत से या तबर्रुक के लिये म-सलन بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ या अदाए शुक्र के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ या किसी मुसल्मान की मौत या किसी क़िस्म के नुक़्सान की ख़बर पर اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ या सना की निय्यत से पूरी **सू-रतुल फ़ातिह़ा** या **आ-यतुल कुरसी** या **सू-रतुल ह़श्र** की आख़िरी तीन आयात पढ़ें और इन सब सूरतों में क़ुरआन पढ़ने की निय्यत न हो तो कोई ह़रज नहीं। (ऐज़न)

《6》 **तीनों क़ुल** बिला लफ़्ज़े **क़ुल** ब निय्यते सना पढ़ सकते हैं। लफ़्ज़े **क़ुल** के साथ सना की निय्यत से भी नहीं पढ़ सकते क्यूं कि इस सूरत में इन का क़ुरआन होना मु-तअ़य्यन है, निय्यत को कुछ दख़्ल नहीं। (ऐज़न)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है । (ترمذی)

《7》 **बे वुज़ू** को क़ुरआन शरीफ़ या किसी आयत का छूना ह़राम है । बिग़ैर छूए ज़बानी या देख कर पढ़ने में मुज़ा-यक़ा नहीं ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 326)

《8》 **जिस** बरतन या कटोरे पर सूरत या आयते क़ुरआनी लिखी हो बे वुज़ू और बे ग़ुस्ल को इस का छूना ह़राम है । (ऐज़न, स. 327)

《9》 **इस** का इस्ति'माल सब के लिये मकरूह है । हां ख़ास ब निय्यते शिफ़ा इस में पानी वग़ैरा डाल कर पीने में ह़रज नहीं ।

《10》 **क़ुरआने** पाक का तरजमा फ़ारसी या उर्दू या किसी दूसरी ज़बान में हो उस को भी पढ़ने या छूने में क़ुरआने पाक ही का सा हुक्म है । (ऐज़न)

बे वुज़ू दीनी किताबें छूना

बे वुज़ू या वोह जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उन को फ़िक़्ह, तफ़्सीर व ह़दीस की किताबों का छूना मकरूह है । और अगर इन को किसी कपड़े से छुवा अगर्चे इस को पहने या ओढ़े हुए हो तो मुज़ा-यक़ा नहीं । मगर आयते क़ुरआनी या इस के तरजमे पर इन किताबों में भी हाथ रखना ह़राम है । (ऐज़न)

बे वुज़ू इस्लामी किताबें पढ़ने वाले बल्कि अख़्बारात व रसाइल छूने वाले भी एह़तियात़ फ़रमाया करें कि ड़मूमन इन में आयात व तरजमे शामिल होते हैं ।

नापाकी की ह़ालत में दुरूद शरीफ़ पढ़ना

जिन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उन को दुरूद शरीफ़ और दुआ़एं पढ़ने में ह़रज नहीं । मगर बेहतर येह है कि वुज़ू या कुल्ली कर के

www.dawateislami.net

पढ़ें। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 327) **अज़ान** का जवाब देना उन को जाइज़ है। (عالمگیری ج۱ص۳۸)

उंगली में सियाही (INK) की तह जमी हुई हो तो ?

पकाने वाले के नाख़ुन में आटा, लिखने वाले के नाख़ुन वग़ैरा पर सियाही (INK) का जिर्म, आ़म लोगों के लिये मक्खी, मच्छर की बीट लगी हुई रह गई और तवज्जोह न रही तो ग़ुस्ल हो जाएगा। हां मा'लूम हो जाने के बा'द जुदा करना और उस जगह का धोना ज़रूरी है पहले जो नमाज़ पढ़ी वोह हो गई। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 319)

बच्चा कब बालिग़ होता है ?

लड़का बारह12 साल और लड़की नव9 बरस से कम उ़म्र तक हरगिज़ **बालिग़ व बालिग़ा** न होंगे और लड़का लड़की दोनों (हिजरी सिन के ए'तिबार से) 15 बरस की कामिल उ़म्र में ज़रूर शरअ़न बालिग़ व बालिग़ा हैं, अगर्चे **आसारे बुलूग़** (या'नी बालिग़ होने की अ़लामतें) ज़ाहिर न हों। इन उ़म्रों के अन्दर अगर आसार पाए जाएं, या'नी ख़्वाह लड़के ख़्वाह लड़की को सोते ख़्वाह जागते में **इन्ज़ाल** हो (या'नी मनी निकले)... या... लड़की को हैज़ आए... या... जिमाअ़ से लड़का (किसी लड़की को) **ह़ामिला** कर दे... या... (जिमाअ़ की वज्ह से) लड़की को **ह़म्ल** रह जाए तो यक़ीनन बालिग़ व बालिग़ा हैं। और अगर **आसार** न हों, मगर वोह ख़ुद कहें कि हम बालिग़ व बालिग़ा हैं और ज़ाहिर ह़ाल उन के क़ौल की तक्ज़ीब न करता (या'नी झुटलाता न) हो तो

www.dawateislami.net

भी बालिग़ व बालिग़ा समझे जाएंगे और तमाम अह़काम बुलूग़ के निफ़ाज़ पाएंगे और (लड़के के) दाढ़ी मूंछ निकलना या लड़की के पिस्तान (या'नी छाती) में उभार पैदा होना कुछ **मो'तबर** नहीं।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 19, स. 630)

किताबें रखने की तरतीब

﴾1﴿ **क़ुरआने** पाक सब किताबों के ऊपर रखिये फिर तफ़्सीर फिर ह़दीस फिर फ़िक़्ह फिर दीगर इस्लामी किताबें।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 327)

﴾2﴿ **किताब** पर कोई दूसरी चीज़ यहां तक कि क़लम भी मत रखिये बल्कि जिस सन्दूक़ में किताब हो उस पर भी कोई चीज़ न रखिये।

(ऐज़न, स. 328)

अवराक़ में पुड़िया बांधना

﴾1﴿ **मसाइल** या दीनियात के अवराक़ में पुड़िया बांधना, जिस दस्तर ख़्वान या बिछोने पर अश्आ़र वग़ैरा कुछ तह़रीर हों उन का इस्ति'माल मन्अ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 328)

﴾2﴿ **हर** ज़बान के ह़ुरूफ़े तहज्जी का अदब करना चाहिये। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब "फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह" सफ़ह़ा 113 से सफ़ह़ा 123 तक मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये)

﴾3﴿ **मुसल्ले** के कोने में उ़मूमन कम्पनी के नाम की चिट सिलाई की हुई होती है उस को निकाल दिया करें।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

मुसल्ले पर का'बतुल्लाह शरीफ़ की तस्वीर

ऐसे मुसल्ले जिन पर **का'बतुल्लाह** शरीफ़ या गुम्बदे ख़ज़रा बना हुवा हो उन को नमाज़ में इस्ति'माल करने से मुक़द्दस शबीह पर पाउं या घुटना पड़ने का इम्कान रहता है लिहाज़ा नमाज़ में ऐसे मुसल्ले का इस्ति'माल करना मुनासिब नहीं। (फ़तावा अहले सुन्नत)

वस्वसों का एक सबब

ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब करने से वस्वसे पैदा होते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इस से मन्अ़ फ़रमाया कि कोई शख़्स ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब करे और फ़रमाया, "बेशक उ़मूमन इस से वस्वसे पैदा होते हैं।" (سُنَنِ ابوداؤد ج ۱ ص ٤٤ حديث ۲۷)

तयम्मुम का बयान

तयम्मुम के फ़राइज़

तयम्मुम में तीन फ़र्ज़ हैं ﴾1﴿ निय्यत ﴾2﴿ सारे मुंह पर हाथ फैरना ﴾3﴿ कोहनियों समेत दोनों हाथों का मस्ह़ करना।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 353-355)

"तयम्मुम सीख लो" के दस ह़ुरूफ़ की निस्बत से तयम्मुम की 10 सुन्नतें

﴾1﴿ **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ कहना ﴾2﴿ हाथों को ज़मीन पर मारना ﴾3﴿ ज़मीन पर हाथ मार कर लौट देना (या'नी आगे बढ़ाना और

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

पीछे लाना) 《4》 उंग्लियां खुली हुई रखना 《5》 हाथों को झाड़ लेना या'नी एक हाथ के अंगूठे की जड़ को दूसरे हाथ के अंगूठे की जड़ पर मारना मगर येह एह़तियात़ रहे कि ताली की आवाज़ पैदा न हो 《6》 पहले मुंह फिर हाथों का मस्ह़ करना 《7》 दोनों[2] का मस्ह़ पै दर पै होना 《8》 पहले सीधे फिर उल्टे हाथ का मस्ह़ करना 《9》 दाढ़ी का ख़िलाल करना 《10》 उंग्लियों का ख़िलाल करना जब कि ग़ुबार पहुंच गया हो। अगर ग़ुबार न पहुंचा हो म-सलन पथ्थर वग़ैरा किसी ऐसी चीज़ पर हाथ मारा जिस पर ग़ुबार न हो तो ख़िलाल फ़र्ज़ है ख़िलाल के लिये दोबारा ज़मीन पर हाथ मारना ज़रूरी नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 356)

तयम्मुम का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

तयम्मुम की निय्यत कीजिये (निय्यत दिल के इरादे का नाम है, ज़बान से भी कह लें तो बेहतर है। म-सलन यूं कहिये : बे वुज़ूई या बे ग़ुस्ली या दोनों से पाकी ह़ासिल करने और नमाज़ जाइज़ होने के लिये तयम्मुम करता हूं) **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर दोनों हाथों की उंग्लियां कुशादा कर के किसी ऐसी पाक चीज़ पर जो ज़मीन की क़िस्म (म-सलन पथ्थर, चूना, ईंट, दीवार, मिट्टी वग़ैरा) से हो मार कर लौट लीजिये (या'नी आगे बढ़ाइये और पीछे लाइये)। और अगर ज़ियादा गर्द लग जाए तो झाड़ लीजिये और उस से सारे मुंह का इस त़रह़ मस्ह़ कीजिये कि कोई ह़िस्सा रह न जाए अगर बाल बराबर भी कोई जगह रह गई तो **तयम्मुम** न होगा। फिर दूसरी बार इसी त़रह़ हाथ ज़मीन पर मार कर दोनों हाथों का नाख़ुनों से

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلیٰ)

ले कर कोहनियों समेत मस्ह़ कीजिये, इस का बेहतर त़रीक़ा येह है कि उल्टे हाथ के अंगूठे के इ़लावा चार4 उंग्लियों का पेट सीधे हाथ की पुश्त पर रखिये और उंग्लियों के सिरों से कोहनियों तक ले जाइये और फिर वहां से उल्टे ही हाथ की हथेली से सीधे हाथ के पेट को मस करते हुए गिट्टे तक लाइये और उल्टे अंगूठे के पेट से सीधे अंगूठे की पुश्त का मस्ह़ कीजिये । इसी त़रह़ सीधे हाथ से उल्टे हाथ का मस्ह़ कीजिये । **और** अगर एक दम पूरी हथेली और उंग्लियों से मस्ह़ कर लिया तब भी **तयम्मुम** हो गया चाहे कोहनी से उंग्लियों की त़रफ़ लाए या उंग्लियों से कोहनी की त़रफ़ ले गए मगर सुन्नत के ख़िलाफ़ हुवा । **तयम्मुम** में सर और पाउं का मस्ह़ नहीं है ।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 353,354,356 वग़ैरा)

"मेरे आ'ला ह़ज़रत की पच्चीसवीं शरीफ़" के पच्चीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से तयम्मुम के 25 म-दनी फूल

❁ **जो** चीज़ आग से जल कर राख होती है न पिघलती है न नर्म होती है वोह ज़मीन की जिन्स (या'नी क़िस्म) से है उस से **तयम्मुम** जाइज़ है । रैता, चूना, सुरमा, गन्धक, पथ्थर (मार्बल), ज़बर जद, फ़ीरोज़ा, अ़क़ीक़, वग़ैरा जवाहिर से **तयम्मुम** जाइज़ है चाहे इन पर गुबार हो या न हो । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 357, البحرُ الرَّائق ج١ص٢٠٧)

❁ **पक्की** ईंट, चीनी या मिट्टी के बरतन से **तयम्मुम** जाइज़ है । हां अगर इन पर किसी ऐसी चीज़ का जिर्म (या'नी जिस्म या तह) हो जो जिन्से

www.dawateislami.net

ज़मीन से नहीं म-सलन कांच का जिर्म हो तो **तयम्मुम** जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 358) उ़मूमन चीनी के बरतन पर कांच की तह चढ़ी होती है इस से **तयम्मुम** नहीं हो सकता।

❁ **जिस** मिट्टी, पथ्थर वग़ैरा से **तयम्मुम** किया जाए उस का पाक होना ज़रूरी है या'नी न उस पर किसी नजासत का असर हो न येह हो कि सिर्फ़ ख़ुश्क होने से नजासत का असर जाता रहा हो। (ऐज़न स. 357) ज़मीन, दीवार और वोह गर्द जो ज़मीन पर पड़ी रहती है अगर नापाक हो जाए फिर धूप या हवा से सूख जाए और नजासत का असर ख़त्म हो जाए तो पाक है और उस पर नमाज़ जाइज़ है मगर उस से **तयम्मुम** नहीं हो सकता।

❁ **येह** वह्म कि कभी नजिस हुई होगी फ़ुज़ूल है इस का ए'तिबार नहीं। (ऐज़न, स. 357)

❁ **अगर** किसी लकड़ी, कपड़े या दरी वग़ैरा पर इतनी गर्द है कि हाथ मारने से उंग्लियों का निशान बन जाए तो उस से **तयम्मुम** जाइज़ है। (ऐज़न, स. 359)

❁ **चूना**, मिट्टी या ईंटों की दीवार ख़्वाह घर की हो या मस्जिद की इस से **तयम्मुम** जाइज़ है। मगर उस पर ऑइल पेइन्ट, प्लास्टिक पेइन्ट और मैट फ़िनिश या वॉल पेपर वग़ैरा कोई ऐसी चीज़ नहीं होनी चाहिये जो जिन्से ज़मीन के इ़लावा हो, दीवार पर मार्बल हो तो कोई ह़रज नहीं।

❁ **जिस** का वुज़ू न हो या नहाने की ह़ाजत हो और पानी पर क़ुदरत न

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

हो वोह वुज़ू और ग़ुस्ल की जगह **तयम्मुम** करे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 346)

❁ **ऐसी** बीमारी कि वुज़ू या ग़ुस्ल से इस के बढ़ जाने या देर में अच्छा होने का सह़ीह़ अन्देशा हो या ख़ुद अपना तजरिबा हो कि जब भी वुज़ू या ग़ुस्ल किया बीमारी बढ़ गई या यूं कि कोई मुसल्मान अच्छा क़ाबिल त़बीब जो ज़ाहिरी त़ौर पर फ़ासिक़ न हो वोह कह दे कि पानी नुक़्सान करेगा। तो इन सूरतों में **तयम्मुम** कर सकते हैं।

(دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج۱ص۴۴۱،۴۴۲ ,ऐज़न)

❁ **अगर** सर से नहाने में पानी नुक़्सान करता हो तो गले से नहाएं और पूरे सर का मस्ह़ करें। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 347)

❁ **जहां** चारों त़रफ़ एक एक मील तक पानी का पता न हो वहां भी **तयम्मुम** कर सकते हैं। (ऐज़न)

❁ **अगर** इतना आबे ज़मज़म शरीफ़ पास है जो वुज़ू के लिये काफ़ी है तो तयम्मुम जाइज़ नहीं। (ऐज़न)

❁ **इतनी** सर्दी हो कि नहाने से मर जाने या बीमार हो जाने का क़वी अन्देशा है और नहाने के बा'द सर्दी से बचने का कोई सामान भी न हो तो **तयम्मुम** जाइज़ है। (ऐज़न, स. 348)

❁ **क़ैदी** को क़ैदख़ाने वाले वुज़ू न करने दें तो **तयम्मुम** कर के नमाज़ पढ़ ले बा'द में इआ़दा करे और अगर वोह दुश्मन या क़ैदख़ाने वाले नमाज़ भी न पढ़ने दें तो इशारे से पढ़े और बा'द में इआ़दा करे।

(ऐज़न, स. 349)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

अगर येह गुमान है कि पानी तलाश करने में क़ाफ़िला नज़रों से ग़ाइब हो जाएगा तो **तयम्मुम** जाइज़ है । (ऐज़न, स. 350)

मस्जिद में सो रहा था कि ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया तो जहां था वहीं फ़ौरन **तयम्मुम** कर ले येही अह़्वत़ (या'नी एह़तियात़ के ज़ियादा क़रीब) है । (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 3, स. 479) फिर बाहर निकल आए ताख़ीर करना ह़राम है । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 352)

वक़्त इतना तंग हो गया कि वुज़ू या ग़ुस्ल करेगा तो नमाज़ क़ज़ा हो जाएगी तो **तयम्मुम** कर के नमाज़ पढ़ ले फिर वुज़ू या ग़ुस्ल कर के नमाज़ का इआ़दा करना लाज़िम है ।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 3, स. 307)

औ़रत ह़ैज़ व निफ़ास से पाक हो गई और पानी पर क़ादिर नहीं तो **तयम्मुम** करे । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 352)

अगर कोई ऐसी जगह है जहां न पानी मिलता है न ही **तयम्मुम** के लिये पाक मिट्टी तो उसे चाहिये कि वक़्ते नमाज़ में नमाज़ की सी सूरत बनाए या'नी तमाम ह़-रकाते नमाज़ बिला निय्यते नमाज़ बजा लाए । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 353) मगर पाक पानी या मिट्टी पर क़ादिर होने पर वुज़ू या **तयम्मुम** कर के नमाज़ पढ़नी होगी ।

वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों के तयम्मुम का एक ही त़रीक़ा है । (جوہرہ ص۲۸)

जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ है उस के लिये येह ज़रूरी नहीं कि वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों² के लिये दो² **तयम्मुम** करे बल्कि एक ही में दोनों² की

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

निय्यत कर ले दोनों[2] हो जाएंगे और अगर सिर्फ़ ग़ुस्ल या वुज़ू की निय्यत की जब भी काफ़ी है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 354)

❁ **जिन** चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है या ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है उन से **तयम्मुम** भी टूट जाता है और पानी पर क़ादिर होने से भी **तयम्मुम** टूट जाता है। (ऐज़न, स. 360)

❁ **औ़रत** ने अगर नाक में फूल वग़ैरा पहने हों तो निकाल ले वरना फूल की जगह मस्ह़ नहीं हो सकेगा। (ऐज़न, स. 355)

❁ **होंटों** का वोह ह़िस्सा जो आ़दतन मुंह बन्द होने की ह़ालत में दिखाई देता है इस पर मस्ह़ होना ज़रूरी है अगर मुंह पर हाथ फैरते वक़्त किसी ने होंटों को ज़ोर से दबा लिया कि कुछ ह़िस्सा मस्ह़ होने से रह गया तो **तयम्मुम** नहीं होगा। इसी त़रह़ ज़ोर से आंखें बन्द कर लीं जब भी न होगा। (ऐज़न)

❁ **अंगूठी**, घड़ी वग़ैरा पहने हों तो उतार कर इन के नीचे हाथ फैरना फ़र्ज़ है। इस्लामी बहनें भी चूड़ियां वग़ैरा हटा कर उन के नीचे मस्ह़ करें। **तयम्मुम** की एह़तियातें वुज़ू से बढ़ कर हैं। (ऐज़न)

❁ **बीमार** या बे दस्तो पा ख़ुद **तयम्मुम** नहीं कर सकता तो कोई दूसरा करवा दे इस में **तयम्मुम** करवाने वाले की निय्यत का ए'तिबार नहीं, जिस को **तयम्मुम** करवाया जा रहा है उस को निय्यत करनी होगी।

(ऐज़न, स. 354, عالمگیری ج ۱ ص ۲۶)

म-दनी मश्वरा : वुज़ू के अह़काम सीखने के लिये **मक-त-बतुल**

www.dawateislami.net

मदीना का मत़्बूआ़ "**वुज़ू का त़रीक़ा**" और नमाज़ सीखने के लिये रिसाला"**नमाज़ का त़रीक़ा**" का मुत़ा-लआ़ मुफ़ीद है।

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमें बार बार ग़ुस्ल के मसाइल पढ़ने, समझने और दूसरों को समझाने और सुन्नत के मुत़ाबिक़ ग़ुस्ल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

4 रबीउ़ल आख़िर 1432 सि.हि.

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفلِ مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ

بقیع

फ़ैज़ाने अज़ान

इस रिसाले में......

क़ब्र में कीड़े नहीं पड़ेंगे

अज़ान का जवाब देने का त़रीक़ा

सो शहीदों का सवाब कमाइये

ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुजमल, छ कलिमे

मछलियां इस्तिग़फ़ार करती हैं

3 करोड़ 24 लाख नेकियां कमाइये

अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने अज़ान

(मअ़ 3 करोड़ 24 लाख नेकियां रोज़ाना कमाइये)

येह रिसाला (29 सफ़ह़ात) अव्वल ता आख़िर पूरा पढ़िये, क़वी इम्कान है कि आप की कई ग़-लतियां सामने आ जाएं ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : जिस ने कुरआने पाक पढ़ा, रब तआ़ला की ह़म्द की और नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा नीज़ अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब की तो उस ने भलाई को अपनी जगह से तलाश कर लिया । (شُعَبُ الْاِیمان ج۲ ص۳۷۳ حدیث۲۰۸۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार अज़ान दी

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सफ़र में एक बार अज़ान दी थी और कलिमाते शहादत यूं कहे : اَشْهَدُ اَنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰه (मैं गवाही देता हूं कि मैं **अल्लाह** का रसूल हूं) ।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 375, تُحفۃُ المُحتاج، ج۱ ص۲۰۹)

www.dawateislami.net

आज़ान है या अज़ान ?

बा'ज़ लोग "आज़ान" कहते हैं येह ग़लत़ तलफ़्फ़ुज़ है । आज़ान जम्अ़ है "उज़ुन" की और उज़ुन के मा'ना हैं : कान । दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ अज़ान है । अज़ान के लुग़वी मा'ना हैं : ख़बरदार करना ।

"**फ़ैज़ाने अज़ान**" के नव हुरूफ़ की निस्बत से अज़ान के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 9 अहादीसे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ क़ब्र में कीड़े नहीं पड़ेंगे

सवाब की ख़ात़िर अज़ान देने वाला उस शहीद की मानिन्द है जो ख़ून में लिथड़ा हुवा है और जब मरेगा क़ब्र में उस के जिस्म में कीड़े नहीं पड़ेंगे । (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج۱۲ص۳۲۲حديث ۱۳۵۵٤)

﴾2﴿ मोती के गुम्बद

मैं जन्नत में गया, उस में **मोती के गुम्बद** देखे उस की ख़ाक मुश्क की है । पूछा : ऐ जिब्राईल ! येह किस के वासित़े हैं ? अ़र्ज़ की : आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के **मुअज़्ज़िनों** और इमामों के लिये ।

(اَلْجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطی ص۲۵۵حديث ٤١٧٩)

﴾3﴿ गुज़श्ता गुनाह मुआ़फ़

जिस ने पांचों नमाज़ों की अज़ान ईमान की बिना पर ब निय्यते सवाब कही उस के जो गुनाह पहले हुए हैं मुआ़फ़ हो जाएंगे और जो ईमान की बिना पर सवाब के लिये अपने साथियों की पांच नमाज़ों में इमामत करे

www.dawateislami.net

उस के गुनाह जो पहले हुए हैं मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।

(اَلسّنَنُ الکُبریٰ لِلْبَیْہَقِی ج۱ص۶۳۶ حدیث ۲۰۳۹)

﴾4﴿ शैत़ान 36 मील दूर भाग जाता है

"शैत़ान जब नमाज़ के लिये अज़ान सुनता है भागता हुवा रौह़ा पहुंच जाता है।" रावी फ़रमाते हैं : रौह़ा मदीनए मुनव्वरह से 36 मील दूर है। **(مُسلِم ص۲۰۴ حدیث ۳۸۸ مُلَخّصاً)**

﴾5﴿ अज़ान क़बूलिय्यते दुआ़ का सबब है

जब अज़ान देने वाला अज़ान देता है आस्मान के दरवाजे़ खोल दिये जाते हैं और दुआ़ क़बूल होती है। **(اَلْمُستَدرَك لِلْحاکِم ج۲ ص۲۴۳ حدیث۲۰۴۸)**

﴾6﴿ मुअज़्ज़िन के लिये इस्तिग़्फ़ार

मुअज़्ज़िन की आवाज़ जहां तक पहुंचती है, उस के लिये मग़्फ़िरत कर दी जाती है और हर तर व ख़ुश्क जिस ने उस की आवाज़ सुनी उस के लिये **इस्तिग़्फ़ार** करती है। **(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج ۲ ص ۵۰۰ حدیث ۶۲۱۰)**

﴾7﴿ अज़ान वाले दिन अ़ज़ाब से अम्न

जिस बस्ती में अज़ान दी जाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने अ़ज़ाब से उस दिन उसे अम्न देता है। **(اَلْمُعجَمُ الْکَبِیر لِلطّبَرانی ج۱ ص۲۵۷ حدیث ۷۴۶)**

﴾8﴿ घबराहट का इलाज

जब आदम (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) जन्नत से हिन्दूस्तान में उतरे उन्हें घबराहट हुई तो जिब्रईल (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) ने उतर कर अज़ान दी।

(حِلْیَۃُ الْاَولیاء ج۵ ص ۱۲۳ حدیث ۶۵۶۶)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

﴾9﴿ ग़म दूर करने का नुस्ख़ा

ऐ अ़ली ! मैं तुझे ग़मगीन पाता हूं अपने किसी घर वाले से कह कि तेरे कान में अज़ान कहे, अज़ान ग़म व परेशानी की दाफ़ेअ़ है। (جامع الحدیث لِلسُّیُوطی ج۱۵ ص ۳۳۹ حدیث ۶۰۱۷) येह रिवायत नक़्ल करने के बा'द आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه "फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़" जिल्द 5 सफ़ह़ा 668 पर फ़रमाते हैं : मौला अ़ली (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) और मौला अ़ली तक जिस क़दर इस ह़दीस के रावी हैं सब ने फ़रमाया : فَجَرَّبْتُهٗ فَوَجَدْتُهٗ كَذٰلِكَ (हम ने इसे तजरिबा किया तो ऐसा ही पाया)।

(مِرْقاۃُ الْمَفاتِیح ج۲ ص۳۳۱،جامِعُ الحدیث ج۱۵ ص ۳۳۹ حدیث ۶۰۱۷)

मछलियां भी इस्तिग़्फ़ार करती हैं

मन्क़ूल है : अज़ान देने वालों के लिये हर चीज़ मग़्फ़िरत की दुआ़ करती है यहां तक कि दरिया में मछलियां भी। **मुअज़्ज़िन** जिस वक़्त अज़ान कहता है फ़िरिश्ते भी दोहराते जाते हैं और जब फ़ारिग़ हो जाता है तो फ़िरिश्ते क़ियामत तक उस के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करते हैं। जो **मुअज़्ज़िनी** की ह़ालत में मर जाता है उसे अ़ज़ाबे क़ब्र नहीं होता और **मुअज़्ज़िन** नज़्अ़ की सख़्तियों से बच जाता है। क़ब्र की सख़्ती और तंगी से भी मामून (या'नी मह़फ़ूज़) रहता है।

(मुलख़्ख़स अज़ तफ़्सीरे सूरए यूसुफ़ (मुतर्जम), स. 21)

अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत

मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार फ़रमाया : ऐ औ़रतो ! जब तुम बिलाल को **अज़ान व इक़ामत** कहते सुनो तो जिस

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلٰی)

त़रह़ वोह कहता है तुम भी कहो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये हर कलिमे के बदले **एक लाख** नेकियां लिखेगा और **एक हज़ार** द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और **एक हज़ार** गुनाह मिटाएगा। ख़्वातीन ने येह सुन कर अ़र्ज़ की : येह तो औ़रतों के लिये है मर्दों के लिये क्या है ? फ़रमाया : मर्दों के लिये दुगना। **(تاریخ دِمشق لابنِ عَساکِر ج٥٥ص٧٥)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

3 करोड़ 24 लाख नेकियां रोज़ाना कमाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर क़ुरबान ! उस ने हमारे लिये नेकियां कमाना, अपने द-रजात बढ़वाना और गुनाह बख़्शवाना किस क़दर आसान फ़रमा दिया है मगर अफ़्सोस ! इतनी आसानियों के बा वुजूद भी हम ग़फ़्लत का शिकार रहते हैं। पेश कर्दा ह़दीसे मुबारक में **जवाबे अज़ान व इक़ामत** की जो फ़ज़ीलत बयान हुई है उस की तफ़्सील मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

"اَللّٰهُ اَكْبَر اَللّٰهُ اَكْبَر" येह दो कलिमात हैं, इस त़रह़ पूरी अज़ान में कुल **15 कलिमात** हैं। अगर कोई इस्लामी बहन एक **अज़ान** का जवाब दे या'नी **मुअज़्ज़िन** साह़िब जो कहते जाएं इस्लामी बहन भी दोहराती जाए तो उस को **15 लाख** नेकियां मिलेंगी, **15 हज़ार** द-रजात बुलन्द होंगे और **15 हज़ार** गुनाह मुआ़फ़ होंगे और इस्लामी भाइयों के लिये येह सब दुगना है। **फ़ज्र** की अज़ान में दो मर्तबा اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْم भी है तो यूं **फ़ज्र** की अज़ान में **17 कलिमात** हो गए और इस त़रह़ **फ़ज्र**

www.dawateislami.net

की अज़ान के जवाब में **17 लाख** नेकियां, 17 हज़ार द-रजात की बुलन्दी और 17 हज़ार गुनाहों की मुआ़फ़ी मिली और इस्लामी भाइयों के लिये दुगना। **इक़ामत** में दो मर्तबा قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃ भी है यूं इक़ामत में भी 17 कलिमात हुए तो इक़ामत के जवाब का सवाब भी फ़ज्र की अज़ान के जवाब जितना हुवा। **अल ह़ासिल अगर कोई इस्लामी बहन एहतिमाम के साथ रोज़ाना पांचों नमाज़ों की अज़ानों और पांचों इक़ामतों का जवाब देने में काम्याब हो जाए तो उसे रोज़ाना एक करोड़ बासठ लाख नेकियां मिलेंगी, एक लाख बासठ हज़ार द-रजात बुलन्द होंगे और एक लाख बासठ हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे और इस्लामी भाई को दुगना या'नी 3 करोड़ 24 लाख नेकियां मिलेंगी, 3 लाख 24 हज़ार द-रजात बुलन्द होंगे और 3 लाख 24 हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे।**

अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक साह़िब जिन का ब ज़ाहिर कोई बहुत बड़ा नेक अ़मल न था, वोह फ़ौत हो गए तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मौजू-दगी में (ग़ैब की ख़बर देते हुए इर्शाद) फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि **अल्लाह तआ़ला** ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है। इस पर लोग मु-तअ़ज्जिब हुए क्यूं कि ब ज़ाहिर उन का कोई बड़ा अ़मल न था। चुनान्चे एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ उन के घर गए और उन की

www.dawateislami.net

बेवा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि उन का कोई ख़ास अ़मल हमें बताइये, तो उन्हों ने जवाब दिया : और तो कोई ख़ास बड़ा अ़मल मुझे मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि दिन हो या रात, जब भी वोह **अज़ान** सुनते तो जवाब ज़रूर देते थे। **(تاریخ دِمشق لابن عَساکِر ج ٤٠ ص ٤١٢،٤١٣ مُلَخّصاً)** **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

गु-नहे गदा का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे लाख से हैं सिवा
मगर ऐ अ़फ़ुव्व तेरे अ़फ़्व का तो ह़िसाब है न शुमार है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अज़ान व इक़ामत के जवाब का त़रीक़ा

मुअज़्ज़िन साह़िब को चाहिये कि अज़ान के कलिमात ठहर ठहर कर कहें। اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر (यूं दो कलिमात हैं मगर) दोनों मिल कर (बिग़ैर सक्ता किये एक साथ पढ़ने के ए'तिबार से) एक कलिमा हैं, दोनों के बा'द सक्ता करे (या'नी चुप हो जाए) और सक्ते की मिक़्दार येह है कि जवाब देने वाला जवाब दे ले, सक्ते का तर्क मकरूह है और ऐसी अज़ान का इआ़दा (या'नी लौटाना) मुस्तह़ब है। **(دُرِّمُختار وردُّالمُحتار ج٢ص٦٦)** जवाब देने वाले को चाहिये कि जब **मुअज़्ज़िन** साह़िब اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर सक्ता करें या'नी ख़ामोश हों उस वक़्त اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر कहे। इसी त़रह़ दीगर कलिमात

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

का जवाब दे। जब **मुअज़्ज़िन** पहली बार اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहे येह कहे :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه (तरजमा : आप पर दुरूद हो **या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم))

जब दोबारा कहे, येह कहे :

قُرَّةُ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه (**या रसूलल्लाह !** आप से मेरी आंखों की ठन्डक है)

और हर बार अंगूठों के नाखुन आंखों से लगा ले, आख़िर में कहे :

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी सुनने और देखने की कुव्वत से मुझे नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमा) **(رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸٤)**

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوة और حَيَّ عَلَى الْفَلَاح के जवाब में (चारों बार) لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه कहे और बेहतर येह है कि दोनों कहे (या'नी **मुअज़्ज़िन** ने जो कहा वोह भी कहे और **लाह़ौल** भी) बल्कि मज़ीद येह भी मिला ले :

مَاشَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَالَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ (तरजमा : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा हुवा, जो नहीं चाहा न हुवा) **(دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸۲، عالمگیری ج۱ ص۵۷)**

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْم के जवाब में कहे :

صَدَقْتَ وَبَرِرْتَ وَبِالْحَقِّ نَطَقْتَ (तरजमा : तू सच्चा और नेकूकार है और तूने ह़क़ कहा है) **(دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸۳)**

इक़ामत का जवाब मुस्तह़ब है। इस का जवाब भी इसी त़रह़

www.dawateislami.net

है फ़र्क़ इतना है कि قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃ के जवाब में कहे :

اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْض

(तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस को क़ाइम रखे जब तक आस्मान और ज़मीन हैं) **(عالمگیری ج۱ ص ۵۷)**

"सदक़े या रसूलल्लाह" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से अज़ान के 14 म-दनी फूल

۞ **पांचों** फ़र्ज़ नमाज़ें इन में जुमुआ़ भी शामिल है जब जमाअ़ते ऊला के साथ मस्जिद में वक़्त पर अदा की जाएं तो उन के लिये अज़ान **सुन्नते मुअक्कदा** है और इस का हुक्म मिस्ले वाजिब है कि अगर अज़ान न कही गई तो वहां के तमाम लोग गुनहगार होंगे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 464)

۞ **अगर** कोई शख़्स शह्र के अन्दर घर में नमाज़ पढ़े तो वहां की मस्जिद की अज़ान उस के लिये काफ़ी है मगर अज़ान कह लेना मुस्तह़ब है। **(رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۶۲،۷۸)**

۞ **अगर** कोई शख़्स शह्र के बाहर या गाउं, बाग़ या खेत वग़ैरा में है और वोह जगह क़रीब है तो गाउं या शह्र की अज़ान काफ़ी है फिर भी अज़ान कह लेना बेहतर है और जो क़रीब न हो तो काफ़ी नहीं। क़रीब की ह़द येह है कि यहां की अज़ान की आवाज़ वहां पहुंचती हो।

(عالمگیری ج۱ ص۵۴)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

۞ **मुसाफ़िर** ने अज़ान व इक़ामत दोनों न कही या इक़ामत न कही तो मक्रूह है और अगर सिर्फ़ इक़ामत कह ली तो कराहत नहीं मगर बेहतर येह है कि अज़ान भी कह ले । चाहे तन्हा हो या इस के दीगर हमराही वहीं मौजूद हों । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 471, **دُرِّمُختار ورَدُّالمُحتار ج۲ ص۷۸**)

۞ **वक़्त** शुरूअ़ होने के बा'द अज़ान कहिये अगर वक़्त से पहले कह दी या वक़्त से पहले शुरूअ़ की और दौराने अज़ान वक़्त आ गया दोनों सूरतों में अज़ान दोबारा कहिये (**الهداية ج۱ ص٤٥**) **मुअज़्ज़िन** साहि़बान को चाहिये कि वोह नक़्शए **निज़ामुल अवक़ात** देखते रहा करें । कहीं कहीं **मुअज़्ज़िन** साहि़बान वक़्त से पहले ही अज़ान शुरूअ़ कर देते हैं । इमाम साहि़बान और इन्तिज़ामिया की ख़िदमत में भी म-दनी इल्तिजा है कि वोह भी इस मस्अले पर नज़र रखें ।

۞ **ख़वातीन** अपनी नमाज़ अदा पढ़ती हों या क़ज़ा इस में इन के लिये अज़ान व इक़ामत कहना मक्रूह है । (**دُرِّمُختار ج۲ ص۷۲**)

۞ **औ़रतों** को जमाअ़त से नमाज़ अदा करना, **ना जाइज़** है ।

(**ایضاًص۳٦۷**, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 584)

۞ **समझदार** बच्चा भी अज़ान दे सकता है । (**دُرِّمُختار ج۲ ص۷۵**)

۞ **बे वुज़ू** की अज़ान सह़ीह़ है मगर बे वुज़ू का अज़ान कहना मक्रूह है । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 466, **مَراقی الفَلاح ص٤٦**)

۞ **ख़ुन्सा**, फ़ासिक़ अगर्चे आ़लिम ही हो, नशे वाला, पागल, बे ग़ुस्ला और ना समझ बच्चे की अज़ान मक्रूह है । इन सब की अज़ान का

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

इआ़दा किया जाए। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 466, دُرِّمُختار ج۲ص۷۵)

۞ **अगर मुअज़्ज़िन** ही इमाम भी हो तो बेहतर है। (دُرِّمُختار ج۲ص۸۸)

۞ **मस्जिद** के बाहर क़िब्ला रू खड़े हो कर, कानों में उंग्लियां डाल कर बुलन्द आवाज़ से अज़ान कही जाए मगर त़ाक़त से ज़ियादा आवाज़ बुलन्द करना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 468, 469, عالمگیری ج۱ص۵۵) अज़ान में उंग्लियां कान में रखना मस्नून व मुस्तह़ब है मगर हिलाना और घुमाना ह़-र-कते फ़ुज़ूल है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 373)

۞ حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ सीधी त़रफ़ मुंह कर के कहे और حَیَّ عَلَی الْفَلَاح उलटी त़रफ़ मुंह कर के, अगर्चे अज़ान नमाज़ के लिये न हो म-सलन बच्चे के कान में कही। येह फिरना फ़क़त़ मुंह का है सारे बदन से न फिरे। (دُرِّمُختار ج۲ص۶۶, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 469) बा'ज़ **मुअज़्ज़िनीन** "सलाह" और "फ़लाह़" पर पहुंचने पर नज़ाकत के साथ दाएं बाएं चेहरे को थोड़ा सा हिला देते हैं, येह त़रीक़ा ग़लत़ है। दुरुस्त अन्दाज़ येह है कि पहले अच्छी त़रह़ दाएं बाएं चेहरा कर लिया जाए इस के बा'द लफ़्ज़ "**ह़य्य**" कहने की इब्तिदा हो।

۞ **फ़ज्र** की अज़ान में حَیَّ عَلَی الْفَلَاح के बा'द اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْم कहना मुस्तह़ब है। (دُرِّمُختار ج۲ص۶۷) अगर न कहा जब भी अज़ान हो जाएगी। (क़ानूने शरीअ़त, स. 89)

www.dawateislami.net

''अज़ाने बिलाली'' के नव ह़ुरूफ़ की निस्बत से जवाबे अज़ान के 9 म-दनी फूल

۞ **अज़ाने** नमाज़ के इलावा दीगर अज़ानों का जवाब भी दिया जाएगा म-सलन बच्चा पैदा होते वक़्त की अज़ान। (رَدُّالْمُحتار ج۲ص۸۲) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जब बच्चा पैदा हो फ़ौरन सीधे कान में अज़ान बाएं (उलटे) में तक्बीर कहे कि ख़-लले शैत़ान व **उम्मुस्सिब्यान** से बचे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 452) **''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत''** सफ़ह़ा 417 ता 418 पर है : ''(सर्अ़) बहुत ख़बीस बला है और इसी को उम्मुस्सिब्यान कहते हैं अगर बच्चों को हो, वरना सर्अ़ (मिर्गी)।''

۞ **मुक़्तदियों को ख़ुत़्बे** की अज़ान का जवाब हरगिज़ न देना चाहिये येही अह़्वत़ (या'नी एह़तियात़ से क़रीब) है। हां अगर येह जवाबे अज़ान या (दो ख़ुत़्बों के दरमियान) दुआ, अगर दिल से करें, ज़बान से तलफ़्फ़ुज़ (या'नी अल्फ़ाज़ अदा करना) अस्लन (या'नी बिल्कुल) न हो तो कोई ह़रज नहीं। और इमाम या'नी ख़त़ीब अगर ज़बान से भी जवाबे अज़ान दे या दुआ करे बिला शुबा जाइज़ है।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 300, 301)

۞ **अज़ान** सुनने वाले के लिये अज़ान का जवाब देने का हुक्म है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 472) जुनुब (या'नी जिसे जिमाअ़ या एह़तिलाम की वज्ह से ग़ुस्ल की ह़ाजत हो) भी अज़ान का जवाब दे। अलबत्ता हैज़ व निफ़ास

www.dawateislami.net

वाली औ़रत, ख़ुत़्बा सुनने वाले, नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वाले, जिमाअ़ में मशग़ूल या जो क़ज़ाए ह़ाजत में हों उन पर जवाब नहीं ।

(دُرِّمُختار ج۲ص۸۱)

۞ **जब** अज़ान हो तो उतनी देर के लिये सलाम व कलाम और जवाबे सलाम और तमाम काम मौक़ूफ़ कर दीजिये यहां तक कि तिलावत भी, अज़ान को ग़ौर से सुनिये और जवाब दीजिये । इक़ामत में भी इसी त़रह़ कीजिये ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473, دُرِّمُختار ج۲ص۸۶، عالمگیری ج۱ص۵۷مُلَخّصاً)

۞ **अज़ान** के दौरान चलना, फिरना, बरतन, गिलास वग़ैरा कोई सी चीज़ उठाना, खाना वग़ैरा रखना, छोटे बच्चों से खेलना, इशारों में गुफ़्त–गू करना वग़ैरा सब कुछ मौक़ूफ़ कर देना ही मुनासिब है ।

۞ **जो** अज़ान के वक़्त बातों में मशग़ूल रहे उस का مَعَاذَالله ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473)

۞ **रास्ते** पर चल रहा था कि अज़ान की आवाज़ आई तो (बेहतर येह है कि) उतनी देर खड़ा हो जाए (चुपचाप) सुने और जवाब दे । (عالمگیری ج۱ص۵۷،ایضاً) हां दौराने अज़ान मस्जिद या वुज़ूख़ाने की त़रफ़ चलने और वुज़ू करने में कोई ह़रज नहीं इस दौरान ज़बान से जवाब भी देते रहिये ।

۞ अज़ान के दौरान इस्तिन्जा ख़ाने जाना बेहतर नहीं क्यूं कि वहां अज़ान का जवाब न दे सकेगा और येह बहुत बड़े सवाब से मह़रूमी है,

www.dawateislami.net

अलबत्ता शदीद ह़ाजत हो या जमाअ़त जाने का अन्देशा हो तो चला जाए।

۞ **अगर** चन्द अज़ानें सुने तो इस पर पहली ही का जवाब है और बेहतर येह है कि सब का जवाब दे। (دُرِّمُختار ورَدُّالمُحتار ج۲ص۸۲, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473) अगर ब वक़्ते अज़ान जवाब न दिया तो अगर ज़ियादा देर न गुज़री हो तो जवाब दे ले। (دُرِّمُختار ج۲ص۸۳)

"या मुस्तफ़ा" के सात हुरूफ़ की निस्बत से इक़ामत के 7 म-दनी फूल

۞ **इक़ामत** मस्जिद में इमाम के ऐन पीछे खड़े हो कर कहना बेहतर है अगर ऐन पीछे मौक़अ़ न मिले तो सीधी त़रफ़ मुनासिब है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 372)

۞ **इक़ामत** अज़ान से भी ज़ियादा ताकीदी सुन्नत है। (دُرِّمُختار ج۲ص۶۸)

۞ **इक़ामत** का जवाब देना मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473)

۞ **इक़ामत** के कलिमात जल्द जल्द कहें और दरमियान में सक्ता मत कीजिये। (ऐज़न, स. 470)

۞ **इक़ामत** में भी حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ और حَیَّ عَلَی الْفَلَاح में (सफ़ह़ा 11 पर बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़) दाएं बाएं मुंह फेरिये।

(دُرِّمُختار ج۲ص۶۶)

۞ **इक़ामत** उसी का ह़क़ है जिस ने अज़ान कही है, अज़ान देने वाले की इजाज़त से दूसरा कह सकता है अगर बिग़ैर इजाज़त कही और

www.dawateislami.net

मुअज़्ज़िन (या'नी जिस ने अज़ान दी थी उस) को ना गवार हो तो मक्रूह है। **(عالمگیری ج١ص٥٤)**

۞ **इक़ामत** के वक़्त कोई शख़्स आया तो उसे खड़े हो कर इन्तिज़ार करना मक्रूह है बल्कि बैठ जाए इसी त़रह़ जो लोग मस्जिद में मौजूद हैं वोह भी बैठे रहें और उस वक़्त खड़े हों जब **मुकब्बिर** حَیَّ عَلَی الْفَلَاح पर पहुंचे येही हुक्म इमाम के लिये है।

(**ایضاًص٥٧**, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 471)

"मेरे ग़ौसे आ'ज़म" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से अज़ान देने के 11 मुस्तह़ब मवाक़ेअ़

﴾1﴿ बच्चे ﴾2﴿ मग़मूम ﴾3﴿ मिर्गी वाले ﴾4﴿ ग़ज़ब नाक और बद मिज़ाज आदमी और ﴾5﴿ बद मिज़ाज जानवर के कान में ﴾6﴿ लड़ाई की शिद्दत के वक़्त ﴾7﴿ आतश ज़-दगी (आग लगने) के वक़्त ﴾8﴿ मय्यित दफ़्न करने के बा'द ﴾9﴿ जिन्न की सरकशी के वक़्त (म-सलन किसी पर जिन्न सुवार हो) ﴾10﴿ जंगल में रास्ता भूल जाएं और कोई बताने वाला न हो उस वक़्त। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 466, رَدُّالْمُحتار ج٢ص٦٢) नीज़ ﴾11﴿ वबा के ज़माने में भी अज़ान देना मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 466, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 370)

मस्जिद में अज़ान देना ख़िलाफ़े सुन्नत है

आज कल अक्सर मस्जिद के अन्दर ही अज़ान देने का रवाज पड़ गया है जो कि ख़िलाफ़े सुन्नत है। "आ़लमगीरी" वग़ैरा में है

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

अज़ान ख़ारिजे मस्जिद में कही जाए मस्जिद में अज़ान न कहे । (عالمگیری ج۱ص۵۵) **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : एक बार भी साबित नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिद के अन्दर अज़ान दिलवाई हो । सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : मस्जिद में अज़ान देनी मस्जिद व दरबारे इलाही की गुस्ताख़ी व बे अ-दबी है । सेह़्ने मस्जिद के नीचे जहां जूते उतारे जाते हैं वोह जगह ख़ारिजे मस्जिद होती है वहां अज़ान देना बिला तकल्लुफ़ मुत़ाबिक़े सुन्नत है । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 408, 411, 412) जुमुआ़ की अज़ाने सानी जो आज कल (ख़ुत़्बे से क़ब्ल) मस्जिद में ख़त़ीब के मिम्बर के सामने मस्जिद के अन्दर दी जाती है येह भी ख़िलाफ़े सुन्नत है, जुमुआ़ की अज़ाने सानी भी मस्जिद के बाहर दी जाए मगर मुअज़्ज़िन ख़त़ीब के सामने हो ।

सो शहीदों का सवाब कमाइये

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एह़याए सुन्नत उ़-लमा का तो ख़ास **फ़र्ज़े मन्सबी** है और जिस मुसल्मान से

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

मुम्किन हो उस के लिये हुक्म आ़म है, हर शह्र के मुसल्मानों को चाहिये कि अपने शह्र या कम अज़् कम अपनी अपनी मसाजिद में (पांचों नमाज़ों की अज़ान और जुमुआ़ की अज़ाने सानी मस्जिद के बाहर देने की) इस सुन्नत को ज़िन्दा करें और सो सो शहीदों का सवाब लें। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "जो फ़सादे उम्मत के वक़्त मेरी सुन्नत को मज़्बूत् थामे उसे सो शहीदों का सवाब मिले।" (**اَلزُّهْدُ الْكَبِير لِلْبَيْهَقِي** ص۱۱۸ حدیث۲۰۷, फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 403) इस मस्अले की तफ़्सील के लिये फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 5 "**बाबुल अज़ाने वल इक़ामह**" का मुता-लआ़ फ़रमाइये।

अज़ान से पहले येह दुरूदे पाक पढ़िये

अज़ान व इक़ामत से क़ब्ल بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर दुरूदो सलाम के येह सीगे़ पढ़ लीजिये :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ الله

फिर दुरूदो सलाम और अज़ान में फ़स्ल (या'नी गेप) करने के लिये येह ए'लान कीजिये : "**अज़ान का एह्तिराम करते हुए गुफ़्त-गू और कामकाज रोक कर अज़ान का जवाब दीजिये और ढेरों नेकियां कमाइये।**" इस के बा'द अज़ान दीजिये दुरूदो सलाम और इक़ामत के दरमियान मस्जिद में येह ए'लान कीजिये : "**ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लीजिये, मोबाइल फ़ोन हो तो बन्द कर दीजिये।**"

www.dawateislami.net

अज़ान व इक़ामत से क़ब्ल तस्मिया और दुरूदो सलाम के मख़्सूस सीग़ों की म-दनी इल्तिजा इस शौक़ में कर रहा हूं कि इस त़रह़ मेरे लिये भी कुछ सवाबे जारिय्या का सामान हो जाए और फ़स्ल (या'नी गेप रखने) का मश्वरा **फ़तावा र-ज़विय्या** के फ़ैज़ान से पेश किया है। चुनान्चे एक इस्तिफ़्ता के जवाब में इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "दुरूद शरीफ़ क़ब्ले इक़ामत पढ़ने में ह़रज नहीं मगर इक़ामत से फ़स्ल (या'नी फ़ासिला या अ़ला-ह़-दगी) चाहिये या दुरूद शरीफ़ की आवाज़, आवाज़े इक़ामत से ऐसी जुदा (म-सलन दुरूद शरीफ़ की आवाज़ इक़ामत की ब निस्बत कुछ पस्त) हो कि इम्तियाज़ रहे और अ़वाम को दुरूद शरीफ़ जुज़्ए इक़ामत (या'नी इक़ामत का हि़स्सा) न मा'लूम हो ।"

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 386)

वस्वसा : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी और दौरे खु-लफ़ाए राशिदीन عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में अज़ान से पहले दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ा जाता था लिहाज़ा ऐसा करना बुरी बिद्अ़त और गुनाह है। (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

जवाबे वस्वसा : अगर येह क़ाइ़दा तस्लीम कर लिया जाए कि जो काम उस दौर में नहीं होता था वोह अब करना बुरी बिद्अ़त और गुनाह है तो फिर फ़ी ज़माना निज़ाम दरहम बरहम हो जाएगा । बे शुमार मिसालों में से फ़क़त़ 12 मिसालें पेश करता हूं कि येह काम उस मुबारक दौर में नहीं थे और अब इन को सब ने अपनाया हुवा है : ﴾1﴿ क़ुरआने

www.dawateislami.net

पाक पर नुक़्ते़ और ए'राब ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने 95 सि.हि. में लगवाए ﴾2﴿ इसी ने ख़त्मे आयात पर अ़लामात के त़ौर पर नुक़्त़े लगवाए ﴾3﴿ क़ुरआने पाक की छपाई ﴾4﴿ मस्जिद के वस्त़ में इमाम के खड़े रहने के लिये त़ाक़ नुमा मेह़राब पहले न थी वलीद मरवानी के दौर में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡحَفِيۡظ ने ईजाद की। आज कोई मस्जिद इस से ख़ाली नहीं ﴾5﴿ छ^6 कलिमे ﴾6﴿ इ़ल्मे सर्फ़ व नह़्व ﴾7﴿ इ़ल्मे ह़दीस और अह़ादीस की अक़्साम ﴾8﴿ दर्से निज़ामी ﴾9﴿ शरीअ़त व त़रीक़त के चार सिल्सिले ﴾10﴿ ज़बान से नमाज़ की निय्यत ﴾11﴿ हवाई जहाज़ के ज़रीए़ सफ़रे ह़ज ﴾12﴿ जदीद साइन्सी हथियारों के ज़रीए़ जिहाद। येह सारे काम उस मुबारक दौर में नहीं थे लेकिन अब इन्हें कोई गुनाह नहीं कहता तो आख़िर अज़ान व इक़ामत से पहले मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **दुरूदो सलाम** पढ़ना ही क्यूं बुरी बिद्अ़त और गुनाह हो गया ! याद रखिये किसी मुआ़-मले में अ़-दमे जवाज़ की दलील न होना ख़ुद दलीले जवाज़ है। यक़ीनन, यक़ीनन, यक़ीनन हर वोह नई चीज़ जिस को शरीअ़त ने मन्अ़ नहीं किया वोह बिद्अ़ते ह़-सना और मुबाह़ या'नी अच्छी बिद्अ़त और जाइज़ है और येह अम्रे मुसल्लम है कि अज़ान से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ने को किसी भी ह़दीस में मन्अ़ नहीं किया गया लिहाज़ा मन्अ़ न होना ख़ुद ब ख़ुद "इजाज़त" बन गया और अच्छी अच्छी बातें इस्लाम में ईजाद करने की तो ख़ुद मदीने के ताजवर, नबियों

www.dawateislami.net

के सरवर, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई है और "मुस्लिम" के बाब "किताबुल इ़ल्म" में सुल्त़ाने दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने इजाज़त निशान मौजूद है :

مَنْ سَنَّ فِی الْاِ سْلَامِ سُنَّۃً حَسَنَۃً فَعُمِلَ بِھَا بَعْدَہٗ کُتِبَ لَہٗ مِثْلُ اَجْرِ مَنْ عَمِلَ بِھَا وَلَا یَنْقُصُ مِنْ اُجُوْرِھِمْ شَیْءٌ ۔ (صَحیح مُسلِم ص۱۴۳۷ حدیث۱۰۱۷)

जिस शख़्स ने मुसल्मानों में कोई नेक त़रीक़ा जारी किया और उस के बा'द उस त़रीके़ पर अ़मल किया गया तो उस त़रीके़ पर अ़मल करने वालों का अज्र भी उस (या'नी जारी करने वाले) के नामए आ'माल में लिखा जाएगा और अ़मल करने वालों के अज्र में कमी नहीं होगी ।

मत़लब येह कि जो इस्लाम में अच्छा त़रीक़ा जारी करे वोह बड़े सवाब का ह़क़दार है तो बिला शुबा जिस ख़ुश नसीब ने अज़ान व इक़ामत से क़ब्ल दुरूदो सलाम का रवाज डाला है वोह भी सवाबे जारिय्या का मुस्तह़िक़ है, क़ियामत तक जो मुसल्मान इस त़रीके़ पर अ़मल करते रहेंगे उन को भी सवाब मिलेगा और जारी करने वाले को भी मिलता रहेगा और दोनों के सवाब में कोई कमी नहीं होगी ।

हो सकता है किसी के ज़ेह्न में येह **वस्वसा** आए कि ह़दीसे पाक में है : کُلُّ بِدْعَۃٍ ضَلَالَۃٌ وَّ کُلُّ ضَلَالَۃٍ فِی النَّار या'नी हर बिद्अ़त (नई बात) गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में (ले जाने वाली) है । (صَحیح اِبن خُزَیمہ ج۳ص۱۴۳ حدیث۱۷۸۵) इस ह़दीस शरीफ़ के क्या मा'ना हैं ? इस

www.dawateislami.net

का जवाब येह है कि ह़दीसे पाक ह़क़ है। यहां बिद्अ़त से मुराद **बिद्अ़ते सय्यिअह** या'नी बुरी बिद्अ़त है और यक़ीनन हर वोह बिद्अ़त बुरी है जो किसी सुन्नत के ख़िलाफ़ या सुन्नत को मिटाने वाली हो। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जो बिद्अ़त उसूल और क़वाइदे सुन्नत के मुवाफ़िक़ और उस के मुत़ाबिक़ क़ियास की हुई है (या'नी शरीअ़त व सुन्नत से नहीं टकराती) उस को **बिद्अ़ते ह़-सना** कहते हैं और जो इस के ख़िलाफ़ हो वोह बिद्अ़त गुमराही कहलाती है। **(اَشِعَّةُ اللَّمعات ج١ص١٣٥)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى محمَّد

अब ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते हुए **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा 359 ता 362 का मज़्मून मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

अज़ान की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : अज़ान की **तौहीन** करना कैसा ?

जवाब : अज़ान शआ़इरे इस्लाम में से है। किसी भी शिआ़रे इस्लाम की तौहीन कुफ़्र है।

حَیَّ عَلَى الصَّلٰوة का मज़ाक़ उड़ाना

सुवाल : अज़ान में حَیَّ عَلَى الصَّلٰوة (या'नी आओ नमाज़ की त़रफ़) या حَیَّ عَلَى الْفَلَاح (या'नी आओ भलाई की त़रफ़) सुन कर मज़ाक़ में येह

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

कहना कैसा कि : **"आओ सिनेमा घर की त़रफ़ वरना टिकटें ख़त्म हो जाएंगी !"**

जवाब : कुफ़्र है । क्यूं कि مَعَاذَاللّٰه येह अज़ान का मज़ाक़ उड़ाना हुवा । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमते बा ब-र-कत में **सुवाल** हुवा : जनाब का क्या इर्शाद है इस मस्अले में कि ज़ैद ने **मुअज़्ज़िन**ने मस्जिद की अज़ान के साथ तमस्ख़ुर (या'नी मज़ाक़) किया या'नी लफ़्ज़ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوة सुन कर यूं **मुज़्ह़का** (या'नी मज़ाक़) उड़ाया : "भय्या लठ चला ।" आया ज़ैद के लिये हुक्मे इरतिदाद व सुकूते निकाह़ साबित हुवा या नहीं ? और ज़ैद का निकाह़ टूटा या नहीं ? بَیِّنُوا تُوجَرُوا । **अल जवाब :** अज़ान से इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़ करना) ज़रूर **कुफ़्र** है अगर अज़ान ही से उस ने इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़) किया तो बिला शुबा **काफ़िर** हो गया, उस की औ़रत उस के **निकाह़** से निकल गई, येह अगर फिर मुसल्मान हो और औ़रत उस से निकाह़ करे उस वक़्त वत़ी (या'नी हम-बिस्तरी) ह़लाल होगी वरना ज़िना । और औ़रत अगर बिला इस्लाम व निकाह़ उस से क़ुरबत पर राज़ी हो वोह भी ज़ानिया है । और अगर **अज़ान** से इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़ उड़ाना) मक़्सूद न था बल्कि ख़ास उस **मुअज़्ज़िन** से ब-ईं वज्ह (या'नी इस वज्ह से) कि वोह ग़लत़ पढ़ता है इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़) किया तो इस ह़ालत में (न काफ़िर होगा न निकाह़ टूटेगा मगर) ज़ैद को तज्दीदे

www.dawateislami.net

इस्लाम व तज्दीदे निकाह़ का हुक्म दिया जाएगा। وَاللهُ تَعَالٰى اَعْلَم

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 215)

अज़ान के मु-तअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात की 8 मिसालें

﴾1﴿ जो **अज़ान** का मज़ाक़ उड़ाए वोह **काफ़िर** है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 102)

﴾2﴿ **अज़ान** की तह़क़ीर करते हुए कहना कि "घन्टी की आवाज़ नमाज़ की इत्तिलाअ़ देने के लिये ज़ियादा अच्छी है" **कुफ़्र** है।

﴾3﴿ जो **अज़ान** देने वाले को **अज़ान** देने पर कहे : "तूने झूट बोला" ऐसा शख़्स **काफ़िर** हो गया। (فتاوٰی قاضی خان ج٤ ص ٤٦٧)

﴾4﴿ जिस ने किसी **मुअज़्ज़िन** के बारे में **अज़ान** के मज़ाक़ के तौ़र पर कहा : येह कौन मह़रूम है जो **अज़ान** कह रहा है ? या ﴾5﴿ **अज़ान** के बारे में कहा : ग़ैर मा'रूफ़ सी आवाज़ है या कहा : ﴾6﴿ अज्नबियों की आवाज़ है, येह तमाम अक़्वाल **कुफ़्र** हैं। या'नी जब कि बतौ़रे तह़क़ीर (ह़क़ारत) कहे। (مِنَحُ الرَّوض الْاَزهَر لِلقاری ص ٤٩٥)

﴾7﴿ एक ने **अज़ान** कही दूसरा मज़ाक़ उड़ाने के लिये दोबारा **अज़ान** कहे तो उस पर **हुक्मे कुफ़्र** है। (مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج٢ ص٥٠٩)

﴾8﴿ **अज़ान** सुन कर येह कहना : क्या शोर मचा रखा है ! अगर येह क़ौल ख़ुद अज़ान को ना पसन्द करने की वज्ह से कहा हो तो **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج٢ ص٢٦٩)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

अज़ान

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ	اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ
अल्लाह सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है	**अल्लाह** सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ	اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ
मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं	मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ

मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ

मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं

حَیَّ عَلَی الصَّلٰوةِ ؕ	حَیَّ عَلَی الصَّلٰوةِ ؕ
नमाज़ पढ़ने के लिये आओ	नमाज़ पढ़ने के लिये आओ
حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ ؕ	حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ ؕ
नजात पाने के लिये आओ	नजात पाने के लिये आओ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ

अल्लाह सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

अज़ान की दुआ

अज़ान के बा'द मुअज़्ज़िन व सामिईन दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ पढ़ें :

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّآمَّۃِ ط وَالصَّلٰوۃِ الْقَآئِمَۃِ ط اٰتِ سَیِّدَنَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस दा'वते ताम्मा और सलाते क़ाइमा के मालिक, तू हमारे सरदार

مُحَمَّدَ نِ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ ط وَالدَّرَجَۃَ الرَّفِیْعَۃَ ط وَابْعَثْہُ مَقَامًا

ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को वसीला और फ़ज़ीलत और बहुत बुलन्द द-रजे अ़त़ा फ़रमा, और उन को मक़ामे

مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ ط وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَہٗ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ ط

मह़मूद में खड़ा कर जिस का तूने उन से वा'दा किया है, और हमें क़ियामत के दिन उन की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा।

اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ط بِرَحْمَتِکَ یَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ ط

बेशक तू वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता, हम पर अपनी रह़मत फ़रमा ऐ सब से बढ़ कर रह़्म करने वाले।

शफ़ाअ़त की बिशारत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम अज़ान सुनो तो उन कलिमात को अदा करो जो **मुअज़्ज़िन** ने कहे फिर मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो फिर वसीले का सुवाल करो। ऐसा करने वाले के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई। (مُسلِم ص۲۰۳ حدیث۳۸٤ مُلَخَّصاً)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर और उस के फ़िरिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर

وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ط

और इस पर कि अच्छी और बुरी तक़्दीर **अल्लाह** की त़रफ़ से है और मौत के बा'द उठाए जाने पर ।

ईमाने मुज्मल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ

मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर जैसा कि वोह अपने नामों और अपनी सिफ़तों के साथ है और मैं ने उस के तमाम

اَحْكَامِهٖ اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَتَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ ط

अह़काम क़बूल किये ज़बान से इक़्रार करते हुए और दिल से तस्दीक़ करते हुए ।

पहला कलिमा त़य्यिब

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं **मुह़म्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं ।

दूसरा कलिमा शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं

وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ط

और मैं गवाही देता हूं कि बेशक **मुह़म्मद** (صَلَّی اللہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के बन्दे और रसूल हैं।

तीसरा कलिमा तम्जीद

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ط

अल्लाह पाक है और सब ख़ूबियां **अल्लाह** के लिये हैं और **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** सब से बड़ा है,

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ط

गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है जो सब से बुलन्द अ़-ज़मत वाला है।

चौथा कलिमा तौह़ीद

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ط لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ

अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है,

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ؕ ذُو الْجَلَالِ

वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं आएगी, बड़े जलाल

وَالْاِكْرَامِ ؕ بِيَدِهِ الْخَيْرُ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؕ

और बुज़ुर्गी वाला है, उस के हाथ में भलाई है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

पांचवां कलिमा इस्तिग़फ़ार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَاً

मैं **अल्लाह** से मुआफ़ी मांगता हूं जो मेरा परवर दगार है, हर गुनाह से जो मैं ने जान बूझ कर किया या भूल कर,

سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْۤ اَعْلَمُ

छुप कर किया या ज़ाहिर हो कर और मैं उस की बारगाह में तौबा करता हूं उस गुनाह से जिस को मैं जानता हूं

وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ لَاۤ اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ

और उस गुनाह से भी जिस को मैं नहीं जानता, (ऐ **अल्लाह**) बेशक तू ग़ैबों का जानने वाला

وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ

और ऐबों का छुपाने वाला और गुनाहों का बख़्शने वाला है और गुनाह से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की क़ुव्वत

اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ؕ

अल्लाह ही की त़रफ़ से है जो सब से बुलन्द अ़-ज़मत वाला है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

छटा कलिमा रद्दे कुफ़्र

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَیْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ

ऐ **अल्लाह** मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं किसी शै को तेरा शरीक बनाऊं जान बूझ कर

بِهٖ وَاسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَآ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ

और बख़्शिश मांगता हूं तुझ से उस (शिर्क) की जिस को मैं नहीं जानता और मैं ने उस से तौबा की और मैं बेज़ार हुवा

اَلْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَالْغِیْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِیْمَةِ

कुफ़्र से और शिर्क से और झूट से और ग़ीबत से और (बुरी) बिद्अ़त से और चुग़ली से

وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا وَاَسْلَمْتُ

और बे ह़याइयों से और बोहतान से और तमाम गुनाहों से और मैं इस्लाम लाया

وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

और मैं कहता हूं **अल्लाह** के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं **मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं ।

एक चुप सो सुख 100

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

20 मुह़र्रमुल ह़राम 1435 सि.हि.
25-11-2013

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفلِ مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا رَسُوۡلَ الله

بقیع

नमाज़ का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

इस रिसाले में......

- शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में
- चोर की दो क़िस्में
- कारपेट के नुक़्सानात
- गर्द आलूद पेशानी की फ़ज़ीलत
- गधे जैसा मुंह
- साह़िबे मज़ार की इन्फ़िरादी कोशिश
- मां चारपाई से उठ खड़ी हुई

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नमाज़ का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

शैत़ान लाख रोके ! येह रिसाला मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के फ़वाइद ख़ुद ही देख लेंगे।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना व दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया, "दुआ़ मांग क़बूल की जाएगी सुवाल कर, दिया जाएगा।" (سُنن النَّسائی ج ۱ ص ۱۸۹ باب المدینه کراچی)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआन व ह़दीस में नमाज़ पढ़ने के बे शुमार फ़ज़ाइल और न पढ़ने की सख़्त सज़ाएं वारिद हैं, चुनान्चे पारह **28 सू-रतुल मुनाफ़िक़ून** की आयत नम्बर 9 में इर्शादे रब्बानी है,

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (مسند احمد)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝۹

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़्सान में हैं ।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद ज़-हबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं, मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि इस आयते मुबा-रका में अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से पांच नमाज़ें मुराद हैं, पस जो शख़्स अपने माल या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त, मईशत व रोज़गार, साज़ो सामान और औलाद में मसरूफ़ रहे और वक़्त पर नमाज़ न पढ़े वोह नुक़्सान उठाने वालों में से है ।

(کتاب الکبائر ص ۲۰ دار مکتبۃالحیاۃ بیروت)

क़ियामत का सब से पहला सुवाल

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है, "क़ियामत के दिन बन्दे के आ'माल में सब से पहले **नमाज़** का सुवाल होगा । अगर वोह दुरुस्त हुई तो उस ने काम्याबी पाई और अगर उस में कमी हुई तो वोह रुस्वा हुवा और उस ने नुक़्सान उठाया ।"

(کنزُالعمّال ج۷ ص۱۱۵ حدیث۱۸۸۸۳ دارالکتب العلمیہ بیروت)

नमाज़ी के लिये नूर

सरकारे दो[2] आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले

www.dawateislami.net

मुह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है, "जो शख़्स नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करे, उस के लिये नमाज़ क़ियामत के दिन नूर, दलील और नजात होगी और जो इस की ह़िफ़ाज़त न करे, उस के लिये बरोज़े क़ियामत न नूर होगा और न दलील और न ही नजात । और वोह शख़्स क़ियामत के दिन फ़िरऔ़न, क़ारून, हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा ।"

(مجمعُ الزَّوائد ج٢ ص٢١ حديث ١٦١١ دارالفكر بيروت)

किस का किस के साथ ह़श्र होगा !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद ज़-हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं, बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं कि नमाज़ के तारिक को इन चार[4] (फ़िरऔ़न, क़ारून, हामान, और उबय बिन ख़लफ़) के साथ इस लिये उठाया जाएगा के लोग उ़मूमन दौलत, हुकूमत, वज़ारत और तिजारत की वज्ह से नमाज़ को तर्क करते हैं । जो **हुकूमत** की मश्ग़ूलिय्यत के सबब नमाज़ नहीं पढ़ेगा उस का ह़श्र **फ़िरऔ़न** के साथ होगा, जो **दौलत** के बाइ़स नमाज़ तर्क करेगा तो उस का **क़ारून** के साथ ह़श्र होगा, अगर तर्के नमाज़ का सबब **वज़ारत** होगी तो फ़िरऔ़न के वज़ीर **हामान** के साथ ह़श्र होगा और अगर **तिजारत** की मस्रूफ़िय्यत की वज्ह से नमाज़ छोड़ेगा तो उस को मक्कए मुकर्रमा के बहुत बड़े काफ़िर ताजिर उबय बिन ख़लफ़ के साथ बरोज़े क़ियामत उठाया जाएगा ।

(كتاب الكبائر ص٢١ دار مكتبة الحياة بيروت)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में नमाज़

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर क़ातिलाना ह़म्ला हुवा तो अ़र्ज़ की गई, ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! नमाज़ (का वक़्त है) फ़रमाया, जी हां, सुनिये ! "जो शख़्स नमाज़ को ज़ाएअ़ करता है उस का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं।" और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने **शदीद ज़ख़्मी** होने के बा वुजूद नमाज़ अदा फ़रमाई। (ऐज़न)

नमाज़ पर नूर या तारीकी के अस्बाब

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, "जो शख़्स अच्छी त़रह़ वुज़ू करे, फिर नमाज़ के लिये खड़ा हो, इस के रुकूअ़, सुजूद और क़िराअत को मुकम्मल करे तो नमाज़ कहती है, **अल्लाह** तआ़ला तेरी ह़िफ़ाज़त करे जिस त़रह़ तूने मेरी ह़िफ़ाज़त की। फिर उस नमाज़ को आस्मान की त़रफ़ ले जाया जाता है और उस के लिये चमक और नूर होता है। पस उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं ह़त्ता कि उसे **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में पेश किया जाता है और वोह नमाज़ उस नमाज़ी की शफ़ाअ़त करती है, और अगर वोह इस का रुकूअ़, सुजूद और क़िराअत मुकम्मल न करे तो नमाज़ कहती है, **अल्लाह** तआ़ला तुझे छोड़ दे जिस त़रह़ तूने मुझे ज़ाएअ़ किया। फिर उस नमाज़ को इस त़रह़ आस्मान की त़रफ़ ले जाया

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (جمع الجوامع)

जाता है कि उस पर तारीकी छाई होती है और उस पर आस्मान के दरवाजे़ बन्द कर दिये जाते हैं फिर उस को पुराने कपड़े की त़रह़ लपेट कर उस नमाज़ी के मुंह पर मारा जाता है ।" (کنزُالعمّال ج۷ ص۱۲۹ حدیث۱۹۰۴۹)

बुरे ख़ातिमे का एक सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक शख़्स को देखा जो नमाज़ पढ़ते हुए रुकूअ़ और सुजूद पूरे अदा नहीं करता था । तो उस से फ़रमाया, "तुम ने जो नमाज़ पढ़ी अगर इसी नमाज़ की ह़ालत में इन्तिक़ाल कर जाओ तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के त़रीके़ पर तुम्हारी मौत वाके़अ़ नहीं होगी । (صحیح بخاری ج۱ ص۱۱۲) सु-नने नसाई की रिवायत में येह भी है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा, "तुम कब से इस त़रह़ नमाज़ पढ़ रहे हो ?" उस ने कहा, "चालीस40 साल से ।" फ़रमाया, "तुम ने **चालीस40** साल से बिल्कुल नमाज़ ही नहीं पढ़ी और अगर इसी ह़ालत में तुम्हें मौत आ गई तो दीने मुह़म्मदी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर नहीं मरोगे ।"

(سننِ نَسائی ج۲ ص۵۸ دارالجیل بیروت)

नमाज़ का चोर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है, "लोगों में बद

www.dawateislami.net

तरीन चोर वोह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करे ।" अ़र्ज़ की गई, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! नमाज़ का चोर कौन है ?" फ़रमाया, "(वोह जो नमाज़ के) रुकूअ़ और सज्दे पूरे न करे ।"

(مسند امام احمد حنبل ج۸ ص۳۸۶ حدیث ۲۲۷۰۵ دارالفکر بیروت)

चोर की दो क़िस्में

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان इस ह़दीस के तह़त फ़रमाते हैं, "मा'लूम हुवा माल के चोर से **नमाज़ का चोर** बदतर है क्यूं कि माल का चोर अगर सज़ा भी पाता है तो कुछ न कुछ नफ़्अ़ भी उठा लेता है मगर **नमाज़** का चोर सज़ा पूरी पाएगा इस के लिये नफ़्अ़ की कोई सूरत नहीं । माल का चोर बन्दे का ह़क़ मारता है जब कि **नमाज़ का चोर** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़, येह ह़ालत उन की है जो नमाज़ को नाक़िस पढ़ते हैं इस से वोह लोग दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं ।

(मिरआत, जि. 2, स. 78, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अव्वल तो लोग नमाज़ पढ़ते ही नहीं हैं और जो पढ़ते हैं उन की अक्सरिय्यत सुन्नतें सीखने के जज़्बे की कमी के बाइ़स आज कल सह़ीह़ त़रीक़े से नमाज़ पढ़ने से मह़रूम रहती है । यहां मुख़्तसरन नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा पेश किया जाता है । बराए मदीना ! बहुत ज़ियादा ग़ौर से पढ़िये और अपनी नमाज़ों की इस्लाह़ फ़रमाइये :-

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

नमाज़ का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

बा वुज़ू क़िब्ला रू इस त़रह़ खड़े हों कि दोनों[2] पाउं के पन्जों में चार[4] उंगल का फ़ासिला रहे और दोनों[2] हाथ कानों तक ले जाइये कि अंगूठे कान की लौ से छू जाएं और उंग्लियां न मिली हुई हों न ख़ूब खुली बल्कि अपनी ह़ालत पर (NORMAL) रखें और हथेलियां क़िब्ले की त़रफ़ हों नज़र सज्दे की जगह हो। अब जो नमाज़ पढ़ना है उस की निय्यत या'नी दिल में उस का पक्का इरादा कीजिये साथ ही ज़बान से भी कह लीजिये कि ज़ियादा अच्छा है (म-सलन निय्यत की मैं ने आज की ज़ोह्र की चार[4] रक्अ़त फ़र्ज़ नमाज़ की, अगर बा जमाअ़त पढ़ रहे हैं तो येह भी कह लें पीछे इस इमाम के) अब तक्बीरे तह़रीमा या'नी اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए हाथ नीचे लाइये और नाफ़ के नीचे इस त़रह़ बांधिये कि सीधी हथेली की गद्दी उल्टी हथेली के सिरे पर और बीच की तीन[3] उंग्लियां उल्टी कलाई की पीठ पर और अंगूठा और छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) कलाई के अग़ल बग़ल। अब इस त़रह़ सना पढ़िये :-

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ط

पाक है तू ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और मैं तेरी ह़म्द करता हूं, तेरा नाम ब-र-कत वाला है और तेरी अ-ज़मत बुलन्द है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

फिर तअ़व्वुज़ पढ़िये :-

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ

मैं **अल्लाह** तआ़ला की पनाह में आता हूं शैत़ान मरदूद से।

फिर तस्मिया पढ़िये :-

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़मत वाला।

फिर मुकम्मल सूरए फ़ातिह़ा पढ़िये :-

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ﴿۱﴾
الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ؕ﴿۳﴾
اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ؕ﴿۴﴾
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۙ﴿۵﴾
صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ ۙ۬
غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ
وَ لَا الضَّآلِّیْنَ ۠﴿۷﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जो मालिक सारे जहान वालों का। बहुत मेह्रबान रह़मत वाला, रोज़े जज़ा का मालिक। हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें। हम को सीधा रास्ता चला, रास्ता उन का जिन पर तूने एह़सान किया, न उन का जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुओं का।

सूरए फ़ातिह़ा ख़त्म कर के आहिस्ता से **आमीन** कहिये। फिर तीन[3] आयात या एक बड़ी आयत जो तीन[3] छोटी आयतों के बराबर हो या कोई **सूरत** म-सलन **सूरए इख़्लास** पढ़िये।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़ह़ा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۝ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्‌रबान रह़मत वाला। तुम फ़रमाओ वोह अल्लाह है वोह एक है। अल्लाह बे नियाज़ है। न उस की कोई औलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा। और न उस के जोड़ का कोई।

अब اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए **रुकूअ़** में जाइये और घुटनों को इस त़रह़ हाथ से पकड़िये कि हथेलियां घुटनों पर और उंग्लियां अच्छी त़रह़ फैली हुई हों। पीठ बिछी हुई और सर पीठ की सीध में हो ऊंचा नीचा न हो और नज़र क़दमों पर हो। कम अज़ कम तीन बार **रुकूअ़ की तस्बीह़** या'नी سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ[1] कहिये। फिर **तस्मीअ़** या'नी سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ[2] कहते हुए बिल्कुल सीधे खड़े हो जाइये, इस खड़े होने को **क़ौमा** कहते हैं। अगर आप **मुन्फ़रिद** हैं या'नी अकेले नमाज़ पढ़ रहे हैं तो इस के बा'द कहिये। اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ[3] **फिर** اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए इस त़रह़ **सज्दे** में जाइये कि पहले घुटने ज़मीन पर रखिये फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच में इस त़रह़ सर रखिये कि पहले नाक फिर पेशानी और **येह ख़ास ख़याल रखिये कि नाक की नोक नहीं बल्कि हड्डी लगे और पेशानी ज़मीन पर जम जाए,** नज़र

मदीنه

1 : या'नी पाक है मेरा अ़-ज़मत वाला परवर्द गार 2 : या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की सुन ली जिस ने उस की ता'रीफ़ की 3 : ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे मालिक ! सब ख़ूबियां तेरे ही लिये हैं।

www.dawateislami.net

नाक पर रहे, बाज़ूओं को करवटों से, पेट को रानों से और रानों को पिंडलियों से जुदा रखिये। (हां अगर सफ़ में हों तो बाज़ू करवटों से लगाए रखिये) और **दोनों पाउं की दसों उंग्लियों का रुख़ इस त़रह़ क़िब्ले की त़रफ़ रहे कि दसों उंग्लियों के पेट (या'नी उंग्लियों के तल्वों के उभरे हुए ह़िस्से) ज़मीन पर लगे रहें।** हथेलियां बिछी रहें और उंग्लियां क़िब्ला रू रहें मगर कलाइयां ज़मीन से लगी हुई मत रखिये। और अब कम अज़ कम तीन3 बार **सज्दे की तस्बीह़** या'नी سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی[1] पढ़िये फिर सर इस त़रह़ उठाइये कि पहले पेशानी फिर नाक फिर हाथ उठें। फिर सीधा क़दम खड़ा कर के उस की उंग्लियां क़िब्ला रुख़ कर दीजिये और उल्टा क़दम बिछा कर उस पर ख़ूब सीधे बैठ जाइये और हथेलियां बिछा कर रानों पर घुटनों के पास रखिये कि दोनों हाथों की उंग्लियां क़िब्ले की जानिब और उंग्लियों के सिरे घुटनों के पास हों। दोनों सज्दों के दरमियान बैठने को **जल्सा** कहते हैं। फिर कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللہ कहने की मिक़्दार ठहरिये (इस वक़्फ़े में اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा कह लेना मुस्तह़ब है) फिर اَللہُ اَکْبَر कहते हुए पहले सज्दे ही की त़रह़ **दूसरा सज्दा** कीजिये। अब इसी त़रह़ पहले सर उठाइये फिर हाथों को घुटनों पर रख कर पन्जों के बल खड़े हो जाइये। उठते वक़्त बिग़ैर मजबूरी ज़मीन पर हाथ से टेक मत लगाइये। येह आप की एक रक्अ़त पूरी हुई। अब दूसरी रक्अ़त में

1 पाक है मेरा परवर्द गार सब से बुलन्द

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○ पढ़ कर अल ह़म्द और सूरह पढ़िये और पहले की त़रह़ **रुकूअ़** और **सज्दे** कीजिये **दूसरे सज्दे** से सर उठाने के बा'द सीधा क़दम खड़ा कर के उल्टा क़दम बिछा कर बैठ जाइये दो रक्अ़त के दूसरे सज्दे के बा'द बैठना **क़ा'दह** कहलाता है अब क़ा'दह में **तशह्हुद** पढ़िये :

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰہِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّیِّبٰتُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَبَرَكَاتُهٗ ط اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰہِ الصّٰلِحِیْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ط

तमाम क़ौली, फ़े'ली और माली इ़बादतें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें। सलाम हो हम पर और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस के बन्दे और रसूल हैं।

जब तशह्हुद में लफ़्ज़े **لا** के क़रीब पहुंचें तो सीधे हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का ह़ल्क़ा बना लीजिये और छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) और बिन्सर या'नी उस के बराबर वाली उंगली को हथेली से मिला दीजिये और (اَشْهَدُ اَنْ के फ़ौरन बा'द) लफ़्ज़े **لا** कहते ही कलिमे की उंगली उठाइये मगर इस को इधर उधर मत हिलाइये और लफ़्ज़े **اِلَّا** पर गिरा दीजिये और फ़ौरन सब उंग्लियां सीधी कर

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोजे़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الايمان)

लीजिये। अब अगर दो से ज़ियादा रक्अ़तें पढ़नी हैं तो اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए खड़े हो जाइये। अगर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रहे हैं तो तीसरी और चौथी रक्अ़त के क़ियाम में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ और अल ह़म्द शरीफ़ पढ़िये, सूरत मिलाने की ज़रूरत नहीं। बाक़ी अफ़्आ़ल इसी त़रह़ बजा लाइये और अगर सुन्नत व नफ़्ल हों तो सूरए फ़ातिह़ा के बा'द सूरत भी मिलाइये (हां अगर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहे हैं तो किसी भी रक्अ़त के क़ियाम में क़िराअत न कीजिये ख़ामोश खड़े रहिये) फिर चार रक्अ़तें पूरी कर के **क़ा'दए** अख़ीरह में **तशह्हुद** के बा'द दुरूदे इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पढ़िये :-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰۤى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰۤى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰۤى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰۤى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुरूद भेज (हमारे सरदार) **मुह़म्मद** पर और उन की आल पर जिस त़रह़ तूने दुरूद भेजा (सय्यिदुना) इब्राहीम पर और उन की आल पर। बेशक तू सराहा हुवा बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ ब-र-कत नाज़िल कर हमारे सरदार पर और उन की आल पर जिस त़रह़ तूने ब-र-कत नाज़िल की (सय्यिदुना) इब्राहीम और उन की आल पर बेशक तू सराहा हुवा बुज़ुर्ग है।

फिर कोई सी **दुआ़ए मासूरा** पढ़िये, म-सलन येह दुआ़ पढ़ लीजिये :

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

اَللّٰھُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

फिर नमाज़ ख़त्म करने के लिये पहले दाएं कन्धे की त़रफ़ मुंह कर के اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللہِ ط कहिये और इसी त़रह़ बाईं त़रफ़। अब **नमाज़ ख़त्म हुई।**

(مراقی الفلاح معہ حاشیۃ الطحطاوی ص۲۷۸، غنیۃ المستملی ص۲۶۱ کراچی)

इस्लामी बहनों की नमाज़ में चन्द जगह फ़र्क़ है

मज़्कूरा नमाज़ का त़रीक़ा इमाम या तन्हा मर्द का है। **इस्लामी बहनें** तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त हाथ कन्धों तक उठाएं और चादर से बाहर न निकालें। (الھدایۃ معہ فتح القدیر ج۱ ص۲۴۶) क़ियाम में उल्टी हथेली सीने पर छाती के नीचे रख कर उस के ऊपर सीधी हथेली रखें। रुकूअ़ में थोड़ा झुकें या'नी इतना कि घुटनों पर हाथ रख दें ज़ोर न दें और घुटनों को न पकड़ें और उंग्लियां मिली हुई और पाउं झुके हुए रखें मर्दों की त़रह़ ख़ूब सीधे न करें। सज्दा सिमट कर करें या'नी बाज़ू करवटों से पेट रान से और रान पिंडलियों से और पिंडलियां ज़मीन से मिला दें, सज्दे और क़ा'दे दोनों में पाउं सीधी त़रफ़ निकाल दें। क़ा'दे में और उल्टी सुरीन पर बैठें और सीधा हाथ सीधी रान के बीच में और उल्टा हाथ उल्टी रान के बीच में रखें। बाक़ी सब त़रीक़ा उसी त़रह़ है।

(رَدُّ الْمُحتار ج۲ ص۲۵۹، عالمگیری ج۱ ص۷۴ وغیرہ)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

दोनों मु–तवज्जेह हों !

इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के दिये हुए इस त़रीक़ए नमाज़ में बा'ज़ बातें **फ़र्ज़** हैं कि इस के बिग़ैर नमाज़ होगी ही नहीं, बा'ज़ **वाजिब** कि इस का जानबूझ कर छोड़ना गुनाह और तौबा करना और नमाज़ का फिर से पढ़ना वाजिब और भूल कर छूटने से सज्दए सह्व वाजिब और बा'ज़ सुन्नते मुअक्कदा हैं कि जिस के छोड़ने की आ़दत बना लेना गुनाह है और बा'ज़ मुस्तह़ब हैं कि जिस का करना सवाब और न करना गुनाह नहीं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 66, मदी–नतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

"या अल्लाह" के छ हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ की 6 शराइत़

﴾1﴿ **त़हारत :** नमाज़ी का बदन, लिबास और जिस जगह नमाज़ पढ़ रहा है उस जगह का हर क़िस्म की नजासत से पाक होना ज़रूरी है।

(مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی ص۲۰۷)

﴾2﴿ **सित्रे औ़रत : (1)** मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों समेत बदन का सारा ह़िस्सा छुपा हुवा होना ज़रूरी है जब कि औ़रत के लिये इन **पांच आ'ज़ा :** मुंह की टिक्ली, दोनों हथेलियां और दोनों पाउं के तल्वों के इ़लावा सारा जिस्म छुपाना लाज़िमी है अलबत्ता अगर दोनों हाथ (गिट्टों तक) पाउं (टख़्नों तक) मुकम्मल ज़ाहिर हों तो एक मुफ़्ता बिही क़ौल पर नमाज़ दुरुस्त है। (الدرالمختار معه ردالمختار ج۲ ص۹۳) **(2)** अगर ऐसा बारीक कपड़ा पहना जिस से बदन का वोह ह़िस्सा जिस का

www.dawateislami.net

नमाज़ में छुपाना फ़र्ज़ है नज़र आए या जिल्द का रंग ज़ाहिर हो नमाज़ न होगी। (فتاوىٰ عالمگیری ج١ ص٥٨) **(3)** आजकल बारीक कपड़ों का रवाज बढ़ता जा रहा है। ऐसे बारीक कपड़े का पाजामा पहनना जिस से रान या सित्र का कोई ह़िस्सा चमकता हो इलावा नमाज़ के भी पहनना **ह़राम** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 42, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़) **(4)** दबीज़ (या'नी मोटा) कपड़ा जिस से बदन का रंग न चमकता हो मगर बदन से ऐसा चिपका हुवा हो कि देखने से उ़ज़्व की हैअत मा'लूम होती हो। ऐसे कपड़े से अगर्चे नमाज़ हो जाएगी मगर उस उ़ज़्व की त़रफ़ दूसरों को निगाह करना जाइज़ नहीं। (ردالمحتار ج٢ ص١٠٣) ऐसा लिबास लोगों के सामने पहनना मन्अ़ है और औ़रतों के लिये ब द-र-जए औला मुमा-न-अ़त। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 42, मदीनतुल मर्शिद बरेली शरीफ़) **(5)** बा'ज़ ख़्वातीन मलमल वग़ैरा की बारीक चादर नमाज़ में ओढ़ती हैं जिस से बालों की सियाही चमक्ती है या ऐसा लिबास पहनती हैं जिस से आ'ज़ा का रंग नज़र आता है ऐसे लिबास में भी नमाज़ नहीं होती।

﴾3﴿ इस्तिक़्बाले क़िब्ला : या'नी नमाज़ में क़िब्ला या'नी का'बे की त़रफ़ मुंह करना। **(1)** नमाज़ी ने बिला उ़ज़्र जानबूझ कर **क़िब्ले** से सीना फैर दिया अगर्चे फ़ौरन ही **क़िब्ले** की त़रफ़ हो गया नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर बिला क़स्द फिर गया और ब क़दर तीन बार "سُبۡحَانَ اللّٰهِ" कहने के वक़्फ़े से पहले वापस **क़िब्ला** रुख़ हो गया तो फ़ासिद न हुई। (البحرالرائق ج١ ص٤٩٧) **(2)** अगर सिर्फ़ मुंह **क़िब्ले** से फेरा तो वाजिब

www.dawateislami.net

है कि फ़ौरन **क़िब्ले** की त़रफ़ मुंह कर ले और नमाज़ न जाएगी मगर बिला उ़ज़्र ऐसा करना मक्रूहे तह़रीमी है । (غنیۃ المستملی ص۲۲۲ کراچی) **(3)** अगर ऐसी जगह पर हैं जहां **क़िब्ले** की शनाख़्त का कोई ज़रीआ़ नहीं है न कोई ऐसा मुसल्मान है जिस से पूछ कर मा'लूम किया जा सके तो **तह़र्री** कीजिये या'नी सोचिये और जिधर **क़िब्ला** होना दिल पर जमे उधर ही रुख़ कर लीजिये आप के ह़क़ में वोही **क़िब्ला** है । (الهدایة معه فتح القدیر ج۱ ص۲۳٦) **(4)** तह़र्री कर के नमाज़ पढ़ी बा'द में मा'लूम हुवा कि **क़िब्ले** की त़रफ़ नमाज़ नहीं पढ़ी, नमाज़ हो गई लौटाने की ह़ाजत नहीं । (فتاویٰ عالمگیری ج۱ ص٦٤) **(5) एक शख़्स तह़र्री कर के नमाज़ पढ़ रहा हो दूसरा उस की देखा देखी उसी सम्त नमाज़ पढ़ेगा तो नहीं होगी दूसरे के लिये भी तह़र्री करने का हुक्म है ।**

(ردالمحتار ج۲ ص۱٤۳)

﴾4﴿ वक़्त : या'नी जो नमाज़ पढ़नी है उस का वक़्त होना ज़रूरी है । म-सलन आज की नमाज़े अ़स्र अदा करना है तो येह ज़रूरी है कि अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाए अगर वक़्ते अ़स्र शुरूअ़ होने से पहले ही पढ़ ली तो नमाज़ न होगी । (غنیۃ المستملی ص۲۲٤) **(1)** उ़मूमन मसाजिद में **निज़ामुल अवक़ात** के नक़्शे आवेज़ां होते हैं उन में जो मुस्तनद तौक़ीत दां के मुरत्तब कर्दा और उ़-लमाए अहले सुन्नत के मुसद्दक़ा हों उन से नमाज़ों के अवक़ात मा'लूम करने में सहूलत रहती है । **(2) इस्लामी बहनों** के लिये अव्वल वक़्त में नमाज़े फ़ज्र अदा करना मुस्तह़ब है और बाक़ी नमाज़ों में बेहतर येह है कि मर्दों की जमाअ़त का इन्तिज़ार करें जब

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

जमाअ़त हो चुके फिर पढ़ें। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۳۰)

तीन अवक़ाते मकरूहा : (1) तुलूए़ आफ़्ताब से ले कर बीस मिनट बा'द तक **(2)** गुरूबे आफ़्ताब से बीस मिनट पहले **(3)** निस्फ़ुन्नहार या'नी ज़ह़्वए कुब्रा से ले कर ज़वाले आफ़्ताब तक। इन तीनों अवक़ात में कोई नमाज़ जाइज़ नहीं न फ़र्ज़ न वाजिब न नफ़्ल न क़ज़ा। हां अगर उस दिन की नमाज़े अ़स्र नहीं पढ़ी थी और मकरूह वक़्त शुरूअ़ हो गया तो पढ़ ले अलबत्ता इतनी ताख़ीर करना ह़राम है। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۴۰, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 23, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

दौराने नमाज़ मकरूह वक़्त दाख़िल हो जाए तो ?

गुरूबे आफ़्ताब से कम से कम 20 मिनट क़ब्ल नमाज़े अ़स्र का सलाम फिर जाना चाहिये जैसा के आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, "नमाज़े अ़स्र में जितनी ताख़ीर हो अफ़्ज़ल है जब कि वक़्ते कराहत से पहले पहले ख़त्म हो जाए।" (फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ मुख़र्रजा, जि. 5, स. 156) फिर अगर इस ने एह़तियात़ की और नमाज़ में तत़्वील की (या'नी तूल दिया) कि वक़्ते कराहत वस्ते़ नमाज़ में आ गया जब भी इस पर ए'तिराज़ नहीं।"

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ मुख़र्रजा, जि. 5, स. 139)

﴾5﴿ निय्यत : निय्यत दिल के पक्के इरादे का नाम है। (حاشية الطَّحطاوی ص۲۱۵ کراچی) **(1)** ज़बान से निय्यत करना ज़रूरी नहीं अलबत्ता दिल में निय्यत ह़ाज़िर होते हुए ज़बान से कह लेना बेहतर है। (فتاویٰ عالمگیری ج۱ ص۶۵) अ़-रबी में कहना भी ज़रूरी नहीं उर्दू वग़ैरा

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

किसी भी ज़बान में कह सकते हैं । (مُلَخَّص از دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۱۱۳) **(2)** निय्यत में ज़बान से कहने का ए'तिबार नहीं या'नी अगर दिल में म-सलन ज़ोह्‌र की निय्यत हो और ज़बान से लफ़्ज़े अ़स्र निकला तब भी ज़ोह्‌र की नमाज़ हो गई । (دُرّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۱۱۲) **(3)** निय्यत का अदना द-रजा येह है कि अगर उस वक़्त कोई पूछे कि कौन सी नमाज़ पढ़ते हो ? तो फ़ौरन बता दे । अगर ह़ालत ऐसी है कि सोच कर बताएगा तो नमाज़ न हुई । (فتاویٰ عالمگیری ج۱ ص۶۵) **(4)** फ़र्ज़ नमाज़ में निय्यते फ़र्ज़ भी ज़रूरी है म-सलन दिल में येह निय्यत हो कि आज की ज़ोह्‌र की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ता हूं । (دُرّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۱۱۶) **(5)** अस्सह़ (या'नी दुरुस्त तरीन) येह है कि नफ़्ल, सुन्नत और तरावीह़ में मुत़्लक़ नमाज़ की निय्यत काफ़ी है मगर एह़तियात़ येह है कि तरावीह़ में तरावीह़ या सुन्नते वक़्त की निय्यत करे और बाक़ी सुन्नतों में सुन्नत या सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुता-ब-अ़त (या'नी पैरवी) की निय्यत करे, इस लिये कि बा'ज़ मशाइख़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی इन में मुत़्लक़ नमाज़ की निय्यत को नाकाफ़ी क़रार देते हैं । (منية المصلی معه غنية المستملی ص۲۴۵) **(6)** नमाज़े नफ़्ल में मुत़्लक़ नमाज़ की निय्यत काफ़ी है अगर्चे नफ़्ल निय्यत में न हो । (دُرّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۱۱۶) **(7)** येह निय्यत कि मुंह मेरा क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ है शर्त़ नहीं । (ایضاً) **(8)** इक़्तिदा में मुक़्तदी का इस त़रह़ निय्यत करना भी जाइज़ है कि जो नमाज़ इमाम की है वोही नमाज़ मेरी है । (عالمگیری ج۱ ص۶۶) **(9)** नमाज़े जनाज़ा की निय्यत येह है, **"नमाज़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये और दुआ़ इस मय्यित के लिये ।"**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

(دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۱۲٦) **(10)** वाजिब में वाजिब की निय्यत करना ज़रूरी है और इसे मुअ़य्यन भी कीजिये म-सलन ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्ह़ा, नज़्र, नमाज़े बा'दे त़वाफ़ (वाजिबुत्त़वाफ़) या वोह नफ़्ल नमाज़ जिस को जानबूझ कर फ़ासिद किया हो कि उस की क़ज़ा भी वाजिब हो जाती है। (حاشية الطحطاوی ص۲۲۲) **(11) सज्दए शुक्र** अगर्चे नफ़्ल है मगर उस में भी निय्यत ज़रूरी है म-सलन दिल में येह निय्यत हो कि मैं सज्दए शुक्र करता हूं। (الدرالمختار معه ردالمحتار ج۲ ص۱۲۰) **(12) सज्दए सह्व** में भी "साहि़बे नहरुल फ़ाइक़" के नज़दीक निय्यत ज़रूरी है। (ایضاً) या'नी उस वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि मैं सज्दए सह्व करता हूं।

《6》 तक्बीरे तह़रीमा : या'नी नमाज़ को "اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर शुरूअ़ करना ज़रूरी है। (عالمگیری ج۱ ص٦٨)

"بِسْمِ الله" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के 7 फ़राइज़

(1) तक्बीरे तह़रीमा **(2)** क़ियाम **(3)** क़िराअत **(4)** रुकूअ़ **(5)** सुजूद **(6)** क़ा'दए अख़ीरह (7) ख़ुरूजे बिसुन्इही। (غنية المستملی ص۲۵۳ تا ۲۸٦)

《1》 तक्बीरे तह़रीमा : दर ह़क़ीक़त तक्बीरे तह़रीमा (या'नी तक्बीरे ऊला) शराइत़े नमाज़ में से है मगर नमाज़ के अफ़्आ़ल से बिल्कुल मिली हुई है इस लिये इसे नमाज़ के फ़राइज़ से भी शुमार किया गया है। (غنية المستملی ص۲۵۳) **(1)** मुक़्तदी ने तक्बीरे तह़रीमा का लफ़्ज़ "अल्लाह" इमाम के साथ कहा मगर "अक्बर" इमाम से पहले ख़त्म कर लिया तो

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

नमाज़ न होगी । (عالمگیری ج ۱ ص ۶۸) **(2)** इमाम को रुकूअ़ में पाया और तक्बीरे तह़रीमा कहता हुवा रुकूअ़ में गया या'नी तक्बीर उस वक़्त ख़त्म हुई कि हाथ बढ़ाए तो घुटने तक पहुंच जाए नमाज़ न होगी । (خلاصۃ الفتاوی ج ۱ ص ۸۳) (ऐसे मौक़अ़ पर क़ाइदे के मुत़ाबिक़ पहले खड़े खड़े तक्बीरे तह़रीमा कह लीजिये इस के बा'द अल्लाहु अक्बर कहते हुए रुकूअ़ कीजिये, इमाम के साथ अगर रुकूअ़ में मा'मूली सी भी शिर्कत हो गई तो रक्अ़त मिल गई अगर आप के रुकूअ़ में दाख़िल होने से क़ब्ल इमाम खड़ा हो गया तो रक्अ़त न मिली ।) **(3)** जो शख़्स तक्बीर के तलफ़्फ़ुज़ पर क़ादिर न हो म-सलन गूंगा हो या किसी और वज्ह से ज़बान बन्द हो गई हो उस पर तलफ़्फ़ुज़ लाज़िम नहीं, दिल में इरादा काफ़ी है । (تبیین الحقائق ج ۱ ص ۱۰۹) **(4)** लफ़्ज़े **अल्लाह** को **आल्लाह** या **अक्बर** को **आक्बर** या **अक्बार** कहा नमाज़ न होगी बल्कि अगर इन के मा'नए फ़ासिदा समझ कर जानबूझ कर कहे तो काफ़िर है । (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج ۲ ص ۱۷۷) नमाज़ियों की ता'दाद ज़ियादा होने की सूरत में पीछे आवाज़ पहुंचाने वाले मुकब्बिरों की अक्सरिय्यत इ़ल्म की कमी के बाइ़स आज कल "**अक्बर**" को "**अक्बार**" कहती सुनाई देती है । इस त़रह़ उन की अपनी नमाज़ भी टूटती और उन की आवाज़ पर जो लोग इन्तिक़ालात करते या'नी नमाज़ के अरकान अदा करते हैं उन की नमाज़ भी टूट जाती है । लिहाज़ा बिग़ैर सीखे कभी मुकब्बिर नहीं बनना चाहिये । **(5)** पहली रक्अ़त का रुकूअ़ मिल गया तो तक्बीरे ऊला की फ़ज़ीलत पा गया । (عالمگیری ج ۱ ص ۶۹)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

﴾2﴿ क़ियाम : **(1)** कमी की जानिब क़ियाम की ह़द येह है कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक न पहुंचें और पूरा क़ियाम येह है कि सीधा खड़ा हो। (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۱۶۳) **(2)** क़ियाम इतनी देर तक है जितनी देर तक क़िराअत है। ब क़-दरे क़िराअते फ़र्ज़ क़ियाम भी फ़र्ज़, ब क़-दरे वाजिब वाजिब, और ब क़-दरे सुन्नत सुन्नत। (ایضاً) **(3)** फ़र्ज़, वित्र, ई़दैन और सुन्नते फ़ज्र में क़ियाम फ़र्ज़ है। अगर बिला उ़ज़्रे सह़ीह़ कोई येह नमाज़ें बैठ कर अदा करेगा तो न होंगी। (ایضاً) **(4)** खड़े होने से मह़्ज़ कुछ तक्लीफ़ होना उ़ज़्र नहीं बल्कि क़ियाम उस वक़्त साक़ित़ होगा कि खड़ा न हो सके या सज्दा न कर सके या खड़े होने या सज्दा करने में ज़ख़्म बहता है या खड़े होने में क़त़रा आता है या चौथाई सित्र खुलता है या क़िराअत से मजबूर मह़्ज़ हो जाता है। यूंही खड़ा हो सकता है मगर उस से मरज़ में ज़ियादती होती है या देर में अच्छा होगा या ना क़ाबिले बरदाश्त तक्लीफ़ होगी तो बैठ कर पढ़े। (غنية المستملى ص۲۰۸) **(5)** अगर अ़सा (या बैसाखी) ख़ादिम या दीवार पर टेक लगा कर खड़ा होना मुम्किन है तो फ़र्ज़ है कि खड़ा हो कर पढ़े। (غنية المستملى ص۲۰۸) **(6)** अगर सिर्फ़ इतना खड़ा होना मुम्किन है कि खड़े खड़े तक्बीरे तह़रीमा कह लेगा तो फ़र्ज़ है कि खड़ा हो कर اَللّٰهُ اَكْبَر कह ले और अब खड़ा रहना मुम्किन नहीं तो बैठ जाए। (غنية المستملى ص۲۰۹)

ख़बरदार ! बा'ज़ लोग मा'मूली सी तक्लीफ़ (या ज़ख़्म) की वज्ह से फ़र्ज़ नमाज़ें बैठ कर पढ़ते हैं वोह इस हुक्मे शर-ई पर

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

ग़ौर फ़रमाएं जितनी नमाज़ें क़ुदरते क़ियाम के बा वुजूद बैठ कर अदा की हों उन को लौटाना फ़र्ज़ है। इसी त़रह़ वैसे ही खड़े न रह सकते थे मगर अ़सा या दीवार या आदमी के सहारे खड़े होना मुम्किन था मगर बैठ कर पढ़ते रहे तो उन की भी नमाज़ें न हुईं उन का लौटाना फ़र्ज़ है। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 64, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़) औ़रतों के लिये भी येही हुक्म है कि येह भी बिग़ैर शर-ई इजाज़त के बैठ कर नमाज़ें नहीं पढ़ सकतीं।

बा'ज़ मसाजिद में कुर्सियों का इन्तिज़ाम भी होता है बा'ज़ बूढ़े वग़ैरा उन पर बैठ कर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ते हैं ह़ालां कि चल कर आए होते हैं, नमाज़ के बा'द खड़े खड़े बातचीत भी कर लेते हैं, ऐसे लोग अगर बिग़ैर इजाज़ते शर-ई बैठ कर नमाज़ें पढ़ेंगे तो उन की नमाज़ें न होंगी।

(7) खड़े हो कर पढ़ने की क़ुदरत हो जब भी बैठ कर नफ़्ल पढ़ सकते हैं मगर खड़े हो कर पढ़ना अफ़्ज़ल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, बैठ कर पढ़ने वाले की नमाज़ खड़े हो कर पढ़ने वाले की निस्फ़ (या'नी आधा सवाब) है। (صحیح مسلم ج۱ ص۲۵۳) अलबत्ता उ़ज़्र की वज्ह से बैठ कर पढ़े तो सवाब में कमी न होगी येह जो आज कल आ़म रवाज पड़ गया है कि नफ़्ल बैठ कर पढ़ा करते हैं ब ज़ाहिर येह मा'लूम होता है कि शायद बैठ कर पढ़ने को अफ़्ज़ल समझते हैं ऐसा है तो उन का ख़याल ग़लत़ है। वित्र के बा'द जो दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ते हैं उन का भी येही हुक्म

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

है कि खड़े हो कर पढ़ना अफ़्ज़ल है ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 4, स. 17, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

﴾3﴿ **क़िराअत : (1)** क़िराअत इस का नाम है कि तमाम हुरूफ़ मख़ारिज से अदा किये जाएं कि हर ह़र्फ़ ग़ैर से सह़ीह़ त़ौर पर मुम्ताज़ (नुमायां) हो जाए । (عالمگیری ج۱ ص۶۹) **(2)** आहिस्ता पढ़ने में भी येह ज़रूरी है कि खुद सुन ले । (غنیة المستملی ص۲۷۱) **(3)** अगर हुरूफ़ तो सह़ीह़ अदा किये मगर इतने आहिस्ता कि खुद न सुना और कोई रुकावट म-सलन शोरो गुल या सिक़्ले समाअ़त (या'नी ऊंचा सुनने का मरज़) भी नहीं तो नमाज़ न हुई । (عالمگیری ج۱ ص۶۹) **(4)** अगर्चे खुद सुनना ज़रूरी है मगर येह भी एह़तियात़ रहे कि सिर्री (या'नी आहिस्ता क़िराअत वाली) नमाज़ों में क़िराअत की आवाज़ दूसरों तक न पहुंचे, इसी त़रह़ तस्बीह़ात वग़ैरा में भी ख़याल रखिये । **(5)** नमाज़ के इ़लावा भी जहां कुछ कहना या पढ़ना मुक़र्रर किया है इस से भी येही मुराद है कि कम अज़ कम इतनी आवाज़ हो कि खुद सुन सके म-सलन त़लाक़ देने, आज़ाद करने या जानवर ज़ब्ह़ करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेने में इतनी आवाज़ ज़रूरी है कि खुद सुन सके । (ایضاً) दुरूद शरीफ़ वग़ैरा अवराद पढ़ते हुए भी कम अज़ कम इतनी आवाज़ होनी चाहिये कि खुद सुन सके जभी पढ़ना कहलाएगा । **(6)** मुत़्लक़न एक आयत पढ़ना फ़र्ज़ की दो रक्अ़तों में और वित्र, सुनन और नवाफ़िल की हर रक्अ़त में इमाम व मुन्फ़रिद (या'नी तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) पर फ़र्ज़ है । (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی ص۲۲۶) **(7)** मुक़्तदी को नमाज़ में क़िराअत जाइज़ नहीं न सू-रतुल फ़ातिह़ा न आयत । न **सिर्री** (या'नी आहिस्ता

www.dawateislami.net

क़िराअत वाली) नमाज़ में न **जहरी** (या'नी बुलन्द आवाज़ से क़िराअत वाली) नमाज़ में। इमाम की क़िराअत मुक़्तदी के लिये भी काफ़ी है। (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی ص۲۲۷) **(8)** फ़र्ज़ की किसी रक्अ़त में क़िराअत न की या फ़क़त़ एक में की नमाज़ फ़ासिद हो गई। (عالمگیری ج۱ ص۶۹) **(9)** फ़र्ज़ों में ठहर ठहर कर क़िराअत करे और तरावीह़ में मु-तवस्सित़ अन्दाज़ पर और रात के नवाफ़िल में जल्द पढ़ने की इजाज़त है मगर ऐसा पढ़े कि समझ में आ सके या'नी कम से कम मद का जो द-रजा क़ारियों ने रखा है उस को अदा करे वरना ह़राम है, इस लिये के तरतील से (या'नी ठहर ठहर कर) क़ुरआन पढ़ने का हुक्म है। (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج اوّل ص۳۶۳) आजकल के अक्सर हुफ़्फ़ाज़ इस त़रह़ पढ़ते हैं कि मद का अदा होना तो बड़ी बात है يَعْلَمُوْنَ تَعلَمُوْنَ के सिवा किसी लफ़्ज़ का पता नहीं चलता न तस्ह़ीह़े हुरूफ़ होती बल्कि जल्दी में लफ़्ज़ के लफ़्ज़ खा जाते हैं और इस पर तफ़ाख़ुर होता है कि फ़ुलां इस क़दर जल्द पढ़ता है! ह़ालां कि इस त़रह़ क़ुरआने मजीद पढ़ना ह़राम और सख़्त ह़राम है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 86, 87, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

हुरूफ़ की सह़ीह़ अदाएगी ज़रूरी है

अक्सर लोग ط ت، س ص ث، ا ء ع، ہ ح، ض ذ ظ में कोई फ़र्क़ नहीं करते। याद रखिये! हुरूफ़ बदल जाने से अगर मा'ना फ़ासिद हो गए तो नमाज़ न होगी। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 108, मक्तबए र-ज़विय्या) म-सलन जिस ने سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ में عَظِيْم को عَزِيْم (ظ

www.dawateislami.net

के बजाए ز) पढ़ दिया नमाज़ जाती रही लिहाज़ा जिस से عَظِیْم सह़ीह़ अदा न हो वोह سُبْحَانَ رَبِّیَ الْکَرِیْمِ पढ़े।

(क़ानूने शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 119, फ़रीद बुक स्टोल, लाहोर)

ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार !

जिस से हुरूफ़ सह़ीह़ अदा नहीं होते उस के लिये थोड़ी देर मश्क़ कर लेना काफ़ी नहीं बल्कि लाज़िम है कि इन्हें सीखने के लिये रात दिन पूरी कोशिश करे और अगर सह़ीह़ पढ़ने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ सकता है तो फ़र्ज़ है कि उस के पीछे पढ़े या वोह आयतें पढ़े जिस के हुरूफ़ सह़ीह़ अदा कर सकता हो। और येह दोनों सूरतें ना मुम्किन हों तो ज़मानए कोशिश में उस की अपनी नमाज़ हो जाएगी। आज कल काफ़ी लोग इस मरज़ में मुब्तला हैं कि न उन्हें क़ुरआन सह़ीह़ पढ़ना आता है न सीखने की कोशिश करते हैं। याद रखिये ! इस त़रह़ नमाज़ें बरबाद होती हैं। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 116) जिस ने रात दिन कोशिश की मगर सीखने में नाकाम रहा जैसे बा'ज़ लोगों से सह़ीह़ हुरूफ़ अदा होते ही नहीं उस के लिये लाज़िमी है कि रात दिन सीखने की कोशिश करे और ज़मानए कोशिश में वोह **मा'ज़ूर** है इस की अपनी नमाज़ हो जाएगी मगर सह़ीह़ पढ़ने वालों की इमामत हरगिज़ नहीं कर सकता। हां जो हुरूफ़ इस के अपने ग़लत हैं वोही दूसरों के भी ग़लत हों तो ज़मानए कोशिश में ऐसों की इमामत कर सकता है। और अगर कोशिश भी नहीं करता तो ख़ुद इस की नमाज़ ही नहीं होती तो दूसरे की इस के पीछे क्या होगी !

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 6, स. 254, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

मद्र-सतुल मदीना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने क़िराअत की अहम्मिय्यत का बख़ूबी अन्दाज़ा लगा लिया होगा। वाक़ेई वोह मुसल्मान बड़ा बद नसीब है जो दुरुस्त क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना नहीं सीखता। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" के बे शुमार मदारिस बनाम "मद्र-सतुल मदीना" क़ाइम हैं इन में म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों को क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है। नीज़ बालिग़ान को उ़मूमन बा'द नमाज़े इशा हुरूफ़ की सह़ीह़ अदाएगी के साथ साथ सुन्नतों की तरबिय्यत दी जाती है। काश ! ता'लीमे क़ुरआन की घर घर धूम पड़ जाए। काश ! हर वोह इस्लामी भाई जो सह़ीह़ क़ुरआान शरीफ़ पढ़ना जानता है वोह दूसरे इस्लामी भाई को सिखाना शुरूअ़ कर दे। इस्लामी बहनें भी येही करें या'नी जो दुरुस्त पढ़ना जानती हैं वोह दूसरी इस्लामी बहनों को पढ़ाएं और न जानने वालियां उन से सीखें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फिर तो हर त़रफ़ ता'लीमे क़ुरआन की बहार आ जाएगी और सीखने सिखाने वालों के लिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब का अम्बार लग जाएगा।

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए
तिलावत शौक़ से करना हमारा काम हो जाए

﴾4﴿ **रुकूअ़ :** इतना झुकना कि हाथ बढ़ाए तो घुटने को पहुंच जाए येह रुकूअ़ का अदना द-रजा है। (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۱۶۶) और पूरा येह कि पीठ सीधी बिछा दे। (حاشية الطحطاوی ص۲۲۹)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ बन्दे की उस नमाज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता जिस में रुकूअ़ व सुजूद के दरमियान पीठ सीधी न करे।

(مسندِ امام احمد بن حنبل ج٣ ص٦١٧ حدیث١٠٨٠٣ دارالفکر بیروت)

《5》 सुजूद : (1) सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है, मुझे हुक्म हुवा कि सात हड्डियों पर सजदा करूं, मुंह और दोनों हाथ और दोनों घुटने और दोनों पन्जे और येह हुक्म हुवा कि कपड़े और बाल न समेटूं। (صحیح مسلم ج١ ص١٩٣) **(2)** हर रक्अ़त में दो बार सज्दा फ़र्ज़ है। (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج٢ ص١٦٧) **(3)** सज्दे में पेशानी जमना ज़रूरी है। जमने के मा'ना येह हैं कि ज़मीन की सख़्ती मह़सूस हो अगर किसी ने इस त़रह़ सज्दा किया कि पेशानी न जमी तो सज्दा न होगा। (عالمگیری ج١ ص٧٠) (4) किसी नर्म चीज़ म-सलन घास (जैसा कि बाग़ की हरियाली) रूई या क़ालीन (CARPET) वग़ैरा पर सज्दा किया तो अगर पेशानी जम गई या'नी इतनी दबी कि अब दबाने से न दबे तो सज्दा हो जाएगा वरना नहीं। (تبیین الحقائق ج١ ص١١٧) **(5)** आज कल मसाजिद में **कारपेट** (CARPET) बिछाने का रवाज पड़ गया है (बल्कि बा'ज़ जगह तो कारपेट के नीचे मज़ीद फ़ोम भी बिछा देते हैं) कारपेट पर सज्दा करते वक़्त इस बात का ख़ास ख़याल रखना है कि पेशानी अच्छी त़रह़ जम जाए वरना नमाज़ न होगी। और नाक की

www.dawateislami.net

हड्डी न दबी तो नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी वाजिबुल इआ़दा होगी। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 71) **(6)** कमानी दार (या'नी स्प्रींग वाले) गद्दे पर पेशानी ख़ूब नहीं जमती लिहाज़ा नमाज़ न होगी। (ऐज़न)

कारपेट के नुक़्सानात

कारपेट से एक तो सज्दे में दुश्वारी होती है, मज़ीद सह़ीह़ मा'नों में इस की सफ़ाई नहीं हो पाती लिहाज़ा धूल वग़ैरा जम्अ़ होती और जरासीम परवरिश पाते हैं, सज्दे में सांस के ज़रीए़ जरासीम, गर्द वग़ैरा अन्दर दाख़िल हो जाते हैं, कारपेट का रुवां फेफड़ों में जा कर चिपक जाने की सूरत में مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ केन्सर का ख़त़रा पैदा होता है। बसा अवक़ात बच्चे कारपेट पर क़ै या पेशाब वग़ैरा कर डालते, बिल्लियां गन्दगी करतीं, चूहे और छुप-कलियां मेंग्नियां करते हैं। कारपेट नापाक हो जाने की सूरत में उ़मूमन पाक करने की ज़ह़मत भी नहीं की जाती। काश ! कारपेट बिछाने का रवाज ही ख़त्म हो जाए।

नापाक कारपेट पाक करने का त़रीक़ा

कारपेट का नापाक ह़िस्सा एक बार धो कर लटका दीजिये यहां तक कि टपक्ना मौक़ूफ़ हो जाए फिर दोबारा धो कर लटकाइये ह़त्ता कि टपक्ना बन्द हो जाए फिर तीसरी बार इसी त़रह़ धो कर लटका दीजिये जब टपक्ना बन्द हो जाएगा तो पाक हो जाएगा। कारपेट और इस जैसी वोह चीज़ें जिन में पतली नजासत जज़्ब हो जाती हो इसी त़रीक़े पर पाक कीजिये। अगर नापाक कारपेट या कपड़ा वग़ैरा बहते पानी में

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

(म-सलन दरिया, नह्र में या टोंटी के नीचे) इतनी देर तक रख छोड़ें कि ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया तब भी पाक हो जाएगा। कारपेट पर बच्चा पेशाब कर दे तो उस जगह पर पानी के छींटे मार देने से वोह पाक नहीं होता। याद रहे ! एक दिन के बच्चे या बच्ची का पेशाब भी नापाक होता है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 2 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये।)

﴾6﴿ क़ा'दए अख़ीरह : या'नी नमाज़ की रक्अ़तें पूरी करने के बा'द इतनी देर तक बैठना कि पूरी तशह्हुद (या'नी पूरी अत्तह़िय्यात) 'رَسُوْلُه' तक पढ़ ली जाए फ़र्ज़ है। (عالمگیری ج۱ ص۷۰) चार रक्अ़त वाले फ़र्ज़ में चौथी रक्अ़त के बा'द क़ा'दह न किया तो जब तक पांचवीं का सज्दा न किया हो बैठ जाए और अगर पांचवीं का सज्दा कर लिया या फ़ज्र में दूसरी पर नहीं बैठा तीसरी का सज्दा कर लिया या मग़्रिब में तीसरी पर न बैठा और चौथी का सज्दा कर लिया इन सब सूरतों में फ़र्ज़ बात़िल हो गए। मग़्रिब के इ़लावा और नमाज़ों में एक रक्अ़त मज़ीद मिला ले। (غنية المستملى ص۲۸۴)

﴾7﴿ ख़ुरूजे बिसुन्इही : या'नी क़ा'दए अख़ीरह के बा'द सलाम या बातचीत वग़ैरा कोई ऐसा फ़े'ल क़स्दन (या'नी इरा-दतन) करना जो नमाज़ से बाहर कर दे। मगर सलाम के इ़लावा कोई फ़े'ल क़स्दन पाया गया तो नमाज़ वाजिबुल इआ़दा होगी। और अगर बिला क़स्द कोई इस त़रह़ का फ़े'ल पाया गया तो नमाज़ बात़िल। (غنية المستملى ص۲۸۶)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (جمع الجوامع)

"क़ियामत में सब से पहले नमाज़ का सुवाल होगा" के तीस हु़रूफ़ की निस्बत से तक़रीबन 30 वाजिबात

(1) तक्बीरे तह़रीमा में लफ़्ज़ "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहना **(2)** फ़र्ज़ों की तीसरी और चौथी रक्अ़त के इ़लावा बाक़ी तमाम नमाज़ों की हर रक्अ़त में अल ह़म्द शरीफ़ पढ़ना, सूरत मिलाना या क़ुरआने पाक की एक बड़ी आयत जो छोटी तीन आयतों के बराबर हो या तीन छोटी आयतें पढ़ना **(3)** अल ह़म्द शरीफ़ का सूरत से पहले पढ़ना **(4)** अल ह़म्द शरीफ़ और सूरत के दरमियान "आमीन" और "بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" के इ़लावा कुछ और न पढ़ना **(5)** क़िराअत के फ़ौरन बा'द रुकूअ़ करना **(6)** एक सज्दे के बा'द बित्तरतीब दूसरा सज्दा करना **(7)** ता'दीले अरकान या'नी रुकूअ़, सुजूद, क़ौमा और जल्सा में कम अज़ कम एक बार "سُبْحٰنَ الله" कहने की मिक़्दार ठहरना **(8)** क़ौमा या'नी रुकूअ़ से सीधा खड़ा होना (बा'ज़ लोग कमर सीधी नहीं करते इस त़रह़ उन का वाजिब छूट जाता है) **(9)** जल्सा या'नी दो सज्दों के दरमियान सीधा बैठना (बा'ज़ लोग जल्द बाज़ी की वज्ह से बराबर सीधे बैठने से पहले ही दूसरे सज्दे में चले जाते हैं इस त़रह़ उन का वाजिब तर्क हो जाता है चाहे कितनी ही जल्दी हो सीधा बैठना लाज़िमी है वरना नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी वाजिबुल इआ़दा होगी) **(10)** क़ा'दए ऊला वाजिब है अगर्चे नमाज़े नफ़्ल हो (दर अस्ल दो नफ़्ल का हर क़ा'दह, "क़ा'दए अख़ीरह" है और फ़र्ज़ है अगर क़ा'दह न किया और भूल कर खड़ा हो गया तो जब तक उस

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

रक्अ़त का सज्दा न कर ले लौट आए और सज्दए सह्व करे ।) (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 52, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़) अगर नफ़्ल की तीसरी रक्अ़त का सज्दा कर लिया तो चार पूरी कर के सज्दए सह्व करे । सज्दए सह्व इस लिये वाजिब हुवा कि अगर्चे नफ़्ल में हर दो रक्अ़त के बा'द क़ा'दह फ़र्ज़ है मगर तीसरी या पांचवीं (عَلٰى هٰذَا الْقِيَاس) रक्अ़त का सज्दा करने के बा'द क़ा'दए ऊला फ़र्ज़ के बजाए वाजिब हो गया । (مُلَخَّصاً حاشية الطحطاوی علی مراقی الفلاح ص٤٦٦) **(11)** फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते मुअक्कदा में तशह्हुद (या'नी अत्तहिय्यात) के बा'द कुछ न बढ़ाना **(12)** दोनों[2] क़ा'दों में "तशह्हुद" मुकम्मल पढ़ना । अगर एक लफ़्ज़ भी छूटा तो वाजिब तर्क हो जाएगा और सज्दए सह्व वाजिब होगा **(13)** फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते मुअक्कदा के क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द अगर बे ख़याली में "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ" या "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا" कह लिया तो सज्दए सह्व वाजिब हो गया और अगर जानबूझ कर कहा तो नमाज़ लौटाना वाजिब है । (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج٢ ص٢٦٩) **(14)** दोनों त़रफ़ सलाम फैरते वक़्त लफ़्ज़ اَلسَّلَامُ दोनों बार वाजिब है । लफ़्ज़ عَلَيْكُم वाजिब नहीं बल्कि सुन्नत है । **(15)** वित्र में तक्बीरे क़ुनूत कहना **(16)** वित्र में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना **(17)** ई़दैन की छ[6] तक्बीरें **(18)** ई़दैन में दूसरी रक्अ़त की तक्बीरे रुकूअ़ और इस तक्बीर के लिये लफ़्ज़े "اَللّٰهُ اَكْبَر" होना **(19)** "जहरी नमाज़" म-सलन मग़रिब व इ़शा की पहली और दूसरी रक्अ़त और फ़ज्र, जुमुआ़, ई़दैन, तरावीह़ और र-मज़ान शरीफ़ के वित्र की हर रक्अ़त में इमाम को जह्र (या'नी

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है। (ابن عساکر)

इतनी बुलन्द आवाज़ कि दूसरे लोग या'नी वोह कि सफ़े अव्वल में हैं सुन सकें) से क़िराअत करना **(20)** ग़ैरे जहरी नमाज़ (म-सलन ज़ोहर व अ़स्र) में आहिस्ता क़िराअत करना **(21)** हर फ़र्ज़ व वाजिब का उस की जगह होना **(22)** रुकूअ़ हर रक्अ़त में एक ही बार करना **(23)** सज्दा हर रक्अ़त में दो ही बार करना **(24)** दूसरी रक्अ़त से पहले क़ा'दह न करना **(25)** चार रक्अ़त वाली नमाज़ में तीसरी रक्अ़त पर क़ा'दह न करना **(26)** आयते सज्दा पढ़ी हो तो सज्दए तिलावत करना **(27)** सज्दए सह्व वाजिब हुवा हो तो सज्दए सह्व करना **(28)** दो फ़र्ज़ या दो वाजिब या फ़र्ज़ व वाजिब के दरमियान तीन तस्बीह़ की क़दर (या'नी तीन बार "سُبْحٰنَ الله" कहने की मिक़्दार) वक़्फ़ा न होना **(29)** इमाम जब क़िराअत करे ख़्वाह बुलन्द आवाज़ से हो या आहिस्ता आवाज़ से मुक़्तदी का चुप रहना **(30)** क़िराअत के सिवा तमाम वाजिबात में इमाम की पैरवी करना। (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۱۸۱، عالمگیری ج۱ ص۷۱)

नमाज़ की तक़रीबन 95 सुन्नतें

तक्बीरे तह़रीमा की सुन्नतें

(1) तक्बीरे तह़रीमा के लिये हाथ उठाना **(2)** हाथों की उंग्लियां अपने ह़ाल पर (Normal) छोड़ना, या'नी न बिल्कुल मिलाइये न इन में तनाव पैदा कीजिये **(3)** हथेलियों और उंग्लियों का पेट क़िब्ला रू होना **(4)** तक्बीर के वक़्त सर न झुकाना **(5)** तक्बीर शुरूअ़ करने से पहले ही दोनों हाथ कानों तक उठा लेना **(6)** तक्बीरे कुनूत और **(7)** तक्बीराते ईदैन में भी येही सुन्नतें हैं (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۲۰۸) **(8)** इमाम का

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे । (طبرانی)

बुलन्द आवाज़ से اَللّٰہُ اَکْبَر (9) سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ ط और (10) सलाम कहना (ह़ाजत से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ करना मक्रूह है) (ردالمحتار ج۲ ص۲۰۸) **(11)** तक्बीर के फ़ौरन बा'द हाथ बांध लेना सुन्नत है (बा'ज़ लोग तक्बीरे ऊला के बा'द हाथ लटका देते हैं या कोहनियां पीछे की त़रफ़ झुलाने के बा'द हाथ बांधते हैं उन का येह फ़े'ल सुन्नत से हट कर है) (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۲۲۹)

क़ियाम की सुन्नतें

(12) मर्द नाफ़ के नीचे सीधे हाथ की हथेली उल्टे हाथ की कलाई के जोड़ पर, छुंग्लिया और अंगूठा कलाई के अग़ल बग़ल और बाक़ी उंग्लियां हाथ की कलाई की पुश्त पर रखे (غنیۃ المستملی ص۲۹٤) **(13)** पहले सना **(14)** फिर तअ़व्वुज़ या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ पढ़ना **(15)** फिर तस्मिया या'नी بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ पढ़ना **(16)** इन तीनों को एक दूसरे के फ़ौरन बा'द कहना **(17)** इन सब को आहिस्ता पढ़ना (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۲۱۰) **(18)** आमीन कहना **(19)** इस को भी आहिस्ता कहना **(20)** तक्बीरे ऊला के फ़ौरन बा'द सना पढ़ना (ایضاً) (नमाज़ में तअ़व्वुज़ व तस्मिया क़िराअत के ताबेअ़ हैं और मुक़्तदी पर क़िराअत नहीं लिहाज़ा तअ़व्वुज़ व तस्मिया भी मुक़्तदी के लिये सुन्नत नहीं । हां जिस मुक़्तदी की कोई रक्अ़त फ़ौत हो गई हो वोह अपनी बाक़ी रक्अ़त अदा करते वक़्त इन दोनों को पढ़े (الھدایۃ معہ فتح القدیر ج۱ ص۲۵۳)) **(21)** तअ़व्वुज़ सिर्फ़ पहली रक्अ़त में है और **(22)** तस्मिया हर रक्अ़त के शुरूअ़ में सुन्नत है । (عالمگیری ج۱ ص۷٤)

www.dawateislami.net

रुकूअ़ की सुन्नतें

(23) रुकूअ़ के लिये اَللّٰہُ اَکْبَر कहना। (الھدایۃ معہ فتح القدیر ج۱ ص۲۵۷) **(24)** रुकूअ़ में तीन बार سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ कहना **(25)** मर्द का घुटनों को हाथ से पकड़ना और **(26)** उंग्लियां ख़ूब खुली रखना **(27)** रुकूअ़ में टांगें सीधी रखना (बा'ज़ लोग कमान की तरह टेढ़ी कर लेते हैं येह मक्रूह है) (عالمگیری ج۱ ص۷۴) **(28)** रुकूअ़ में पीठ अच्छी त़रह़ बिछी हो ह़त्ता कि अगर पानी का पियाला पीठ पर रख दिया जाए तो ठहर जाए (مراقی الفلاح معہ حاشیۃ الطحطاوی ص۲۶۶) **(29)** रुकूअ़ में सर ऊंचा नीचा न हो पीठ की सीध में हो। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "उस की नमाज़ नाकाफ़ी है (या'नी कामिल नहीं) जो रुकूअ़ व सुजूद में पीठ सीधी नहीं करता।" (السنن الکبریٰ ج۲ ص۱۲۶ دارالکتب العلمیہ بیروت) सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "रुकूअ़ व सुजूद को पूरा करो कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम्हें अपने पीछे से देखता हूं।" (مسلم شریف ج۱ ص۱۸۰) **(30)** बेहतर येह है कि اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा रुकूअ़ को जाए या'नी जब रुकूअ़ के लिये झुकना शुरूअ़ करे और ख़त्मे रुकूअ़ पर तक्बीर ख़त्म करे। (عالمگیری ج۱ ص۶۹) इस मसाफ़त को पूरा करने के लिये अल्लाह की ل को बढ़ाए अक्बर की ب वग़ैरा किसी ह़र्फ़ को न बढ़ाए। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 72, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़) अगर **आल्लाह** या **आक्बर** या **अक्बार** कहा तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी।

(دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۱ ص۲۳۲)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

क़ौमा की सुन्नतें

(31) रुकूअ़ से जब उठें तो हाथ लटका दीजिये **(32)** रुकूअ़ से उठने में इमाम के लिये سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ कहना **(33)** मुक़्तदी के लिये اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْد कहना **(34)** मुन्फ़रिद (या'नी तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) के लिये दोनों कहना सुन्नत है رَبَّنَا لَکَ الْحَمْد कहने से भी सुन्नत अदा हो जाती है मगर "رَبَّنَا" के बा'द "وَ" होना बेहतर है "اَللّٰھُمَّ" होना इस से बेहतर, और दोनों होना और ज़ियादा बेहतर है। या'नी اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْد कहिये। (غنية المستملی ص ۳۱۰) **(35)** मुन्फ़रिद سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ कहता हुवा रुकूअ़ से उठे जब सीधा खड़ा हो चुके तो अब اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْد कहे। (عالمگیری ج۱ ص۷۴)

सज्दे की सुन्नतें

(36) सज्दे में जाने के लिये और **(37)** सज्दे से उठने के लिये اَللّٰہُ اَکْبَر कहना। (الهداية معه فتح القدير ج۱ ص۲۶۱) **(38)** सज्दे में कम अज़ कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहना (ایضاً) **(39)** सज्दे में हथेलियां ज़मीन पर रखना **(40)** हाथों की उंग्लियां मिली हुई क़िब्ला रुख़ रखना **(41)** सज्दे में जाएं तो ज़मीन पर पहले घुटने फिर **(42)** हाथ फिर **(43)** नाक, फिर **(44)** पेशानी रखना **(45)** जब सज्दे से उठें तो इस का उलट करना या'नी **(46)** पहले पेशानी, फिर **(47)** नाक, फिर **(48)** हाथ, फिर **(49)** घुटने उठाना **(50)** मर्द के लिये सज्दे में सुन्नत येह है कि बाज़ू करवटों से और **(51)** रानें पेट से जुदा हों। (الهداية معه فتح القدير ج۱ ص۲۶۶) **(52)** कलाइयां ज़मीन पर न बिछाइये हां जब सफ़ में हों तो बाज़ू करवटों

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

से जुदा न रखिये। (ردالمحتار ج۲ ص۲۵۷) **(53)** सज्दे में दोनों पाउं की दसों उंग्लियों का पेट इस त़रह़ ज़मीन पर लगाइये के दसों उंग्लियां क़िब्ला रुख़ रहें। (الھدایۃ معہ فتح القدیر ج۱ ص۲۶۷)

जल्से की सुन्नतें

दोनों सज्दों के बीच में बैठना इसे **जल्सा** कहते हैं **(54)** जल्से में सीधा क़दम खड़ा कर के उल्टा क़दम बिछा कर उस पर बैठना **(55)** सीधे पाउं की उंग्लियां क़िब्ला रुख़ करना **(56)** दोनों हाथ रानों पर रखना। (تبیین الحقائق ج۱ ص۱۱۱)

दूसरी रक्अ़त के लिये उठने की सुन्नतें

(57) जब दोनों सज्दे कर लें तो दूसरी रक्अ़त के लिये पन्जों के बल, **(58)** घुटनों पर हाथ रख कर खड़ा होना सुन्नत है। हां कमज़ोरी या पाउं में तक्लीफ़ वग़ैरा मजबूरी की वज्ह से ज़मीन पर हाथ रख कर खड़े होने में ह़रज नहीं। (ردالمحتار ج۲ ص۲۶۲)

क़ा'दह की सुन्नतें

(59) मर्द का दूसरी रक्अ़त के सज्दों से फ़ारिग हो कर बायां पाउं बिछा कर **(60)** दोनों सुरीन उस पर रख कर बैठना और **(61)** सीधा क़दम खड़ा रखना **(62)** सीधे पाउं की उंग्लियां क़िब्ला रुख़ करना (الھدایۃ معہ فتح القدیر ج۱ ص۲۷۵) **(63)** सीधा हाथ सीधी रान पर और **(64)** उल्टा हाथ उल्टी रान पर रखना **(65)** उंग्लियां अपनी ह़ालत पर या'नी (NORMAL) छोड़ना कि न ज़ियादा खुली हुईं न बिल्कुल मिली हुईं। (ایضاً) **(66)** उंग्लियों के कनारे घुटनों के पास होना, घुटने पकड़ना न

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

चाहिये। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۲٦٥) **(67)** अत्तह़िय्यात में शहादत पर इशारा करना। इस का त़रीक़ा येह है कि छुंग्लिया और पास वाली को बन्द कर लीजिये, अंगूठे और बीच वाली का ह़ल्क़ा बांधिये और "لَا" पर कलिमे की उंगली उठाइये इस को इधर उधर मत हिलाइये और "اِلَّا" पर रख दीजिये और सब उंग्लियां सीधी कर लीजिये। (ردالمحتار ج۲ ص۲٦٦) **(68)** दूसरे क़ा'दे में भी इसी त़रह़ बैठिये जिस त़रह़ पहले में बैठे थे और तशह्हुद भी पढ़िये **(69)** तशह्हुद के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़िये (الهداية معه فتح القدير ج١ ص٢٧٤) दुरूदे इब्राहीम पढ़ना अफ़्ज़ल है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 85) **(70)** नवाफ़िल और सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा के क़ा'दए ऊला में भी तशह्हुद के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है। (ردالمحتار ج۲ ص۲۸۲، غنية المستملی ص۳۲۲) **(71)** दुरूद शरीफ़ के बा'द दुआ़ पढ़ना। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۲۸۳)

सलाम फैरने की सुन्नतें

(72) इन अल्फ़ाज़ के साथ दो बार सलाम फैरना : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ **(73)** पहले सीधी त़रफ़, फिर **(74)** उल्टी त़रफ़ मुंह फैरना **(75)** इमाम के लिये दोनों सलाम बुलन्द आवाज़ से कहना सुन्नत है मगर दूसरा पहले की निस्बत कम आवाज़ से कहे। (عالمگیری ج١ ص٧٦) **(76)** पहली बार के सलाम में **सलाम** कहते ही इमाम नमाज़ से बाहर हो गया अगर्चे عَلَيْكُمْ न कहा हो उस वक़्त अगर कोई शरीके जमाअ़त हो तो इक़्तिदा सह़ीह़ न हुई हां अगर सलाम के बा'द

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

इमाम ने सज्दए सह्व किया बशर्ते़ कि उस पर सज्दए सह्व हो तो इक़्तिदा सह़ीह़ हो गई। (ردالمحتار ج۲ ص۳٥۲) **(77)** इमाम दाह्ने सलाम में ख़ित़ाब से उन मुक़्तदियों की निय्यत करे जो दाह्नी त़रफ़ हैं और बाएं से बाईं त़रफ़ वालों की मगर औ़रत की निय्यत न करे अगर्चे शरीके जमाअ़त हो नीज़ दोनों सलामों में किरामन कातिबीन और उन मलाएका की निय्यत करे जिन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़िफ़ाज़त के लिये मुक़र्रर किया और निय्यत में कोई अ़दद मुअ़य्यन न करे। (ردالمحتار ج۲ ص۲۹٤) **(78)** मुक़्तदी भी हर त़रफ़ के सलाम में उस त़रफ़ वाले मुक़्तदियों और उन मलाएका की निय्यत करे नीज़ जिस त़रफ़ इमाम हो उस त़रफ़ के सलाम में इमाम की भी निय्यत करे और अगर इमाम उस के मह़ाज़ी (या'नी ठीक सामने की सीध में) हो तो दोनों सलामों में इमाम की भी निय्यत करे और मुन्फ़रिद सिर्फ़ उन फ़िरिश्तों ही की निय्यत करे। (دُرِّ مختار ج۱ ص۳٥٦) **(79)** मुक़्तदी के तमाम इन्तिक़ालात (या'नी रुकूअ़ सुजूद वग़ैरा) इमाम के साथ होना।

सलाम फैरने के बा'द की सुन्नतें

(80) सलाम के बा'द इमाम के लिये सुन्नत येह है कि दाईं या बाईं त़रफ़ रुख़ कर ले, दाईं त़रफ़ अफ़्ज़ल है और मुक़्तदियों की त़रफ़ रुख़ कर के भी बैठ सकता है जब कि आख़िरी सफ़ तक भी कोई इस के सामने (या'नी इस के चेहरे की सीध में) नमाज़ न पढ़ता हो। (غنية المستملى ص ۳۳۰) **(81)** मुन्फ़रिद बिग़ैर रुख़ बदले अगर वहीं दुआ़ मांगे तो जाइज़ है। (عالمگیری ج۱ ص۷۷)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

सुन्नते बा'दिय्या की सुन्नतें

(82) जिन फ़र्ज़ों के बा'द सुन्नतें हैं उन में बा'दे फ़र्ज़ कलाम न करना चाहिये अगर्चे सुन्नतें हो जाएंगी मगर सवाब कम होगा और सुन्नतों में ताख़ीर भी मक्रूह है इसी त़रह़ बड़े बड़े अवरादो वज़ाइफ़ की भी इजाज़त नहीं। (غنية المستملى ص٣٣١، ردالمحتار ج٢ ص٣٠٠) **(83)** (फ़र्ज़ों के बा'द) क़ब्ले सुन्नत मुख़्तसर दुआ़ पर क़नाअ़त चाहिये वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 81, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़) **(84)** सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान कलाम करने से असह़्ह़ (या'नी दुरुस्त तरीन) येही है कि सुन्नत बात़िल नहीं होती अलबत्ता सवाब कम हो जाता है। येही हुक्म हर उस काम का है जो मुनाफ़िये तह़रीमा है। (تنوير الابصارمعه ردالمحتارج٢ص٥٥٨) **(85)** सुन्नतें वहीं न पढ़िये बल्कि दाएं बाएं, आगे पीछे हट कर पढ़िये या घर जा कर अदा कीजिये। (عالمگیری ج١ص٧٧) (सुन्नतें पढ़ने के लिये घर जाने की वज्ह से जो फ़स्ल (या'नी फ़ासिला) हुवा उस में ह़रज नहीं। जगह बदलने या घर जाने के लिये नमाज़ी के आगे से गुज़रना या उस की त़रफ़ अपना चेहरा करना गुनाह है अगर निकलने की जगह न मिले तो वहीं सुन्नतें पढ़ लीजिये।)

सुन्नतों का एक अहम मस्अला

जो इस्लामी भाई सुन्नते क़ब्लिय्या या सुन्नते बा'दिय्या पढ़ कर आ-मदो रफ़्त और बातचीत में लग जाते हैं वोह सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इस फ़तवा मुबा-रका से दर्स ह़ासिल करें चुनान्चे एक इस्तिफ़्ता के जवाब में इर्शाद है, "सुन्नते क़ब्लिय्या में औला अव्वल

www.dawateislami.net

वक़्त है बशर्ते कि फ़र्ज़ व सुन्नत के दरमियान कलाम या कोई फ़े'ल मुनाफ़िये नमाज़ न करे, और सुन्नते बा'दिय्या में मुस्तह़ब फ़र्ज़ों से इत्तिसाल है मगर येह कि मकान पर आ कर पढ़े तो फ़स्ल (या'नी फ़ासिले) में ह़रज नहीं, लेकिन अजनबी अफ़्आ़ल से फ़स्ल न चाहिये येह फ़स्ल (फ़ासिला) सुन्नते क़ब्लिय्या व बा'दिय्या दोनों के सवाब को साक़ित़ और इन्हें त़रीक़ए मस्नूना से ख़ारिज करता है।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 139, रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

आगे बयान कर्दा 85 सुन्नतों में ज़िम्नन इस्लामी बहनों के लिये भी सुन्नतें हैं इन के लिये "आ़इशा सिद्दीक़ा" के दस हुरूफ़ की निस्बत से 10 सुन्नतें

(1) इस्लामी बहन के लिये तक्बीरे तह़रीमा और तक्बीरे क़ुनूत में सुन्नत येह है कि कन्धों तक हाथ उठाए। (الهداية معه فتح القدير ج١ ص٢٣٦) **(2)** क़ियाम में औ़रत और ख़ुन्सा (या'नी हीजड़ा) उल्टे हाथ की हथेली सीने पर छाती के नीचे रख कर उस की पुश्त पर सीधी हथेली रखे। (غنية المستملى ص٢٩٤) **(3)** इस्लामी बहन के लिये रुकूअ़ में घुटनों पर हाथ रखना और उंग्लियां कुशादा न करना सुन्नत है। (الهداية معه فتح القدير ج١ ص٢٥٨) **(4)** रुकूअ़ में थोड़ा झुके या'नी सिर्फ़ इतना कि हाथ घुटनों तक पहुंच जाएं पीठ सीधी न करे और घुटनों पर ज़ोर न दे फ़क़त हाथ रख दे और हाथों की उंग्लियां मिली हुई रखे और पाउं झुके हुए रखे मर्दों की त़रह़ ख़ूब सीधे न कर दे। (عالمگیری ج١ ص٧٤) **(5)** सिमट कर सज्दा करे या'नी बाज़ू करवटों से **(6)** पेट रानों से **(7)** रानें

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلیٰ)

पिंडलियों से और **(8)** पिंडलियां ज़मीन से मिला दे **(9)** दूसरी रक्अ़त के सज्दों से फ़ारिग हो कर दोनों पाउं सीधी जानिब निकाल दे और **(10)** उल्टी सुरीन पर बैठे । (الهداية معه فتح القدير ج۱ ص۷۵)

"सदक़े या रसूलल्लाह" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के तक़रीबन 14 मुस्तह़ब्बात

(1) निय्यत के अल्फ़ाज़ ज़बान से कह लेना । (تنويرالابصار معه ردالمحتار ج۲ ص۱۱۳) जब कि दिल में निय्यत ह़ाज़िर हो वरना तो नमाज़ होगी ही नहीं । **(2)** क़ियाम में दोनों पन्जों के दरमियान चार उंगल का फ़ासिला होना । (عالمگیری ج۱ ص۷۳) **(3)** क़ियाम की ह़ालत में सज्दे की जगह, **(4)** रुकूअ़ में दोनों क़दमों की पुश्त पर, **(5)** सज्दे में नाक की त़रफ़, **(6)** क़ा'दह में गोद की त़रफ़, **(7)** पहले सलाम में सीधे कन्धे की त़रफ़ और **(8)** दूसरे सलाम में उल्टे कन्धे की त़रफ़ नज़र करना (تنويرالابصار معه ردالمحتار ج۲ ص۲۱٤) **(9)** मुन्फ़रिद को रुकूअ़ और सज्दों में तीन बार से ज़ियादा (मगर त़ाक़ अ़दद म-सलन पांच, सात, नव) तस्बीह़ कहना (ردالمحتار ج۲ ص۲٤۲) **(10)** "ह़िल्या" वग़ैरा में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ वग़ैरा से है कि इमाम के लिये तस्बीह़ात पांच बार कहना मुस्तह़ब है । **(11)** जिस को खांसी आए उस के लिये मुस्तह़ब है कि जब तक मुम्किन हो न खांसे । (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی ص۲۷۷) **(12)** जमाही आए तो मुंह बन्द किये रहिये और न रुके तो होंट दांत के नीचे दबाइये । अगर इस त़रह़ भी न रुके तो क़ियाम में सीधे हाथ की पुश्त से और ग़ैरे क़ियाम में उल्टे हाथ

www.dawateislami.net

की पुश्त से मुंह ढांप लीजिये । जमाही रोकने का बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि दिल में ख़याल कीजिये कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जमाही कभी नहीं आती थी । फ़ौरन रुक जाएगी اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ (مُلَخَّصاً دُرِّ مختار و ردالمحتار ج۲ ص۲۱۵) **(13)** जब मुकब्बिर حَیَّ عَلَی الْفَلَاح कहे तो इमाम व मुक़्तदी सब का खड़ा हो जाना । (عالمگیری ج۱ ص۵۷ مکتبۂ حقانیه) **(14)** सज्दा ज़मीन पर बिला ह़ाइल होना । (مراقی الفلاح معه حاشیة الطحطاوی ص۳۷۱)

उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का अ़मल

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं, "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ हमेशा ज़मीन ही पर सज्दा करते या'नी सज्दे की जगह मुसल्ला वग़ैरा न बिछाते ।" (احیاء العلوم ج۱ ص۲۰۴ بیروت)

गर्द आलूद पेशानी की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हु़ज़ूर सरापा नूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है, "तुम में से कोई शख़्स जब तक नमाज़ से फ़ारिग न हो जाए अपनी पेशानी (की मिट्टी) को साफ़ न करे क्यूं कि जब तक उस की पेशानी पर नमाज़ के सज्दे का निशान रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं ।" (مجمع الزوائد ج۲ ص۳۱۱ حدیث ۲۷۶۱ دارالفکر بیروت)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दौराने नमाज़ पेशानी से मिट्टी छुड़ाना बेहतर नहीं और مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ **तकब्बुर** के त़ौर पर छुड़ाना गुनाह है । और अगर न छुड़ाने से तक्लीफ़ होती हो या ख़याल बटता हो तो छुड़ाने में ह़रज नहीं । अगर किसी को रियाकारी का ख़ौफ़ हो तो उसे चाहिये कि नमाज़ के बा'द पेशानी से मिट्टी साफ़ कर ले ।

"भाइयो नमाज़ के मुफ़्सिदात सीखना फ़र्ज़ है" के उन्तीस हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ तोड़ने वाली 29 बातें

(1) बात करना (دُرِّ مختار معہ ردالمحتار ج۲ ص۴۴۵) **(2)** किसी को सलाम करना **(3)** सलाम का जवाब देना । (مراقی الفلاح معہ حاشیۃ الطحطاوی ص۳۲۲) **(4)** छींक का जवाब देना (नमाज़ में खुद को छींक आए तो ख़ामोश रहे) अगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कह लिया तब भी ह़रज नहीं और अगर उस वक़्त ह़म्द न की तो फ़ारिग़ हो कर कहे । (عالمگیری ج۱ ص۹۸) **(5)** खुश ख़बरी सुन कर जवाबन اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना । (عالمگیری ج۱ ص۹۹) **(6)** बुरी ख़बर (या किसी की मौत की ख़बर) सुन कर اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ कहना (ایضاً) **(7)** अज़ान का जवाब देना । (عالمگیری ج۱ ص۱۰۰) **(8)** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम सुन कर जवाबन جَلَّ جَلَالُہٗ कहना (غنیۃ المستملی ص۴۲۰) **(9)** सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्मे गिरामी सुन कर जवाबन दुरूद शरीफ़ पढ़ना म-सलन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कहना (عالمگیری ج۱ ص۹۹) (अगर جَلَّ جَلَالُہٗ या صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जवाब की निय्यत से न कहा तो नमाज़ न टूटी)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

नमाज़ में रोना

(10) दर्द या मुसीबत की वज्ह से येह अल्फ़ाज़ ''आह'', ''ऊह'', ''उफ़'', ''तुफ़'' निकल गए या आवाज़ से रोने में ह़र्फ़ पैदा हो गए नमाज़ फ़ासिद हो गई। अगर रोने में सिर्फ़ आंसू निकले आवाज़ व ह़ुरूफ़ नहीं निकले तो ह़रज नहीं। (عالمگیری ج۱ ص۱۰۱) अगर नमाज़ में इमाम के पढ़ने की आवाज़ पर रोने लगा और ''अरे'', ''नअ़म'', ''हां'' ज़बान से जारी हो गया तो कोई ह़रज नहीं कि येह ख़ुशूअ़ के बाइ़स है और अगर इमाम की ख़ुश इल्ह़ानी के सबब येह अल्फ़ाज़ कहे तो नमाज़ टूट गई।

(دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۴۵۶)

नमाज़ में खांसना

(11) मरीज़ की ज़बान से बे इख़्तियार आह ! ऊह निकला नमाज़ न टूटी यूं ही छींक, जमाही, खांसी, डकार वग़ैरा में जितने ह़ुरूफ़ मजबूरन निकलते हैं मुआ़फ़ हैं। (دُرِّ مختار ج۱ ص۴۱۶) **(12)** फूंकने में अगर आवाज़ न पैदा हो तो वोह सांस की मिस्ल है और नमाज़ फ़ासिद नहीं होती मगर क़स्दन फूंकना मक्रूह है और अगर दो ह़र्फ़ पैदा हों जैसे उफ़, तुफ़ तो नमाज़ फ़ासिद हो गई। (غنیہ ص ۴۲۷) **(13)** खन्कारने में जब दो ह़ुरूफ़ ज़ाहिर हों जैसे अख़ तो मुफ़्सिद है। हां अगर उ़ज़्र या सह़ीह़ मक़्सद हो म-सलन त़बीअ़त का तक़ाज़ा हो या आवाज़ साफ़ करने के लिये हो या इमाम को लुक़्मा देना मक़्सूद हो या कोई आगे से गुज़र रहा हो उस को मु-तवज्जेह करना हो इन वुजूहात की बिना पर खांसने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं। (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۴۵۵)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

दौराने नमाज़ देख कर पढ़ना

(14) मुस्ह़फ़ शरीफ़ से या किसी काग़ज़ से या मेह़राब वग़ैरा में लिखा हुवा देख कर कुरआन शरीफ़ पढ़ना (हां अगर याद पर पढ़ रहे हैं और मुस्ह़फ़ शरीफ़ या मेह़राब वग़ैरा पर सिर्फ़ नज़र है तो ह़रज नहीं, अगर किसी काग़ज़ वग़ैरा पर आयात लिखी हैं उसे देखा और समझा मगर पढ़ा नहीं इस में भी कोई मुज़ा-यक़ा नहीं।) (ردالمحتار ج۲ ص٤٦٤) **(15)** इस्लामी किताब या इस्लामी मज़मून दौराने नमाज़ जानबूझ कर देखना और इरा-दतन समझना मक्रूह है। (عالمگیری ج۱ ص۱۰۱) दुन्यवी मज़मून हो तो ज़ियादा कराहिय्यत है, लिहाज़ा नमाज़ में अपने क़रीब किताबें या तह़रीर वाले पेकेट और शॉपिंग बेग, मोबाइल फ़ोन या घड़ी वग़ैरा इस त़रह़ रखिये कि उन की लिखाई पर नज़र न पड़े या इन पर रूमाल वग़ैरा उढ़ा दीजिये, नीज़ दौराने नमाज़ सुतून वग़ैरा पर लगे हुए स्टीकर्ज़, इश्तिहार और फ़्रेमों वग़ैरा पर नज़र डालने से भी बचिये।

अ़-मले कसीर की ता'रीफ़

(16) अ़-मले कसीर नमाज़ को फ़ासिद कर देता है जब कि न नमाज़ के आ'माल से हो न ही इस्लाहे़ नमाज़ के लिये किया गया हो। जिस काम के करने वाले को दूर से देखने से ऐसा लगे कि येह नमाज़ में नहीं है बल्कि अगर गुमान भी ग़ालिब हो कि नमाज़ में नहीं तब भी **अ़-मले कसीर** है। और अगर दूर से देखने वाले को शको शुबा है कि नमाज़ में है या नहीं तो **अ़-मले क़लील** है और नमाज़ फ़ासिद न होगी। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص٤٦٤)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

दौराने नमाज़ लिबास पहनना

(17) दौराने नमाज़ कुरता या पाजामा पहनना या तहबन्द बांधना। (ردالمحتار ج۲ ص٤٦٥) **(18)** दौराने नमाज़ सित्र खुल जाना और इसी ह़ालत में कोई रुक्न अदा करना या तीन बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की मिक़्दार वक़्फ़ा गुज़र जाना। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص٤٦٧)

नमाज़ में कुछ निगलना

(19) मा'मूली सा भी खाना या पीना म-सलन तिल बिग़ैर चबाए निगल लिया। या क़त़रा मुंह में गिरा और निगल लिया। (غنية المستملى ص٤١٨) **(20)** नमाज़ शुरूअ़ करने से पहले ही कोई चीज़ दांतों में मौजूद थी उसे निगल लिया तो अगर वोह चने के बराबर या इस से ज़ियादा थी तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर चने से कम थी तो मक्रूह। (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی ص٣٤١) **(21)** नमाज़ से क़ब्ल कोई मीठी चीज़ खाई थी अब उस के अज्ज़ा मुंह में बाक़ी नहीं सिर्फ़ लुआ़बे दहन में कुछ असर रह गया है उस के निगलने से नमाज़ फ़ासिद न होगी। (خلاصة الفتاوىٰ ج۱ ص۱۲۷) **(22)** मुंह में शकर वग़ैरा हो कि घुल कर ह़ल्क़ में पहुंचती है नमाज़ फ़ासिद हो गई। (ايضاً) **(23)** दांतों से ख़ून निकला अगर थूक ग़ालिब है तो निगलने से फ़ासिद न होगी वरना हो जाएगी। (عالمگیری ج۱ ص۱۰۲) (ग़-लबे की अ़लामत येह है कि अगर ह़ल्क़ में मज़ा मह़सूस हुवा तो नमाज़ फ़ासिद हो गई, नमाज़ तोड़ने में ज़ाएक़े का ए'तिबार है और वुज़ू टूटने में रंग का लिहाज़ा वुज़ू उस वक़्त टूटता है जब थूक सुर्ख़ हो जाए और अगर थूक ज़र्द है तो वुज़ू बाक़ी है)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

दौराने नमाज़ क़िब्ले से इन्ह़िराफ़

(24) बिला उ़ज़्र सीने को सम्ते का'बा से 45 द-रजा या इस से ज़ियादा फैरना मुफ़्सिदे नमाज़ है, अगर उ़ज़्र से हो तो मुफ़्सिद नहीं। म-सलन ह़दस (या'नी वुज़ू टूट जाने) का गुमान हुवा और मुंह फैरा ही था कि गुमान की ग़-लत़ी ज़ाहिर हुई तो अगर मस्जिद से ख़ारिज न हुवा हो नमाज़ फ़ासिद न होगी। (دُرِّ مختار معہ ردالمحتار ج۲ ص۴٦٨)

नमाज़ में सांप मारना

(25) सांप बिच्छू को मारने से नमाज़ नहीं टूटती जब कि न तीन क़दम चलना पड़े न तीन ज़र्ब की ह़ाजत हो वरना फ़ासिद हो जाएगी। (غنیة المستملی ص۴٢٣) सांप बिच्छू को मारना उस वक़्त मुबाह़ है जब कि सामने से गुज़रे और ईज़ा देने का ख़ौफ़ हो, अगर तक्लीफ़ पहुंचाने का अन्देशा न हो तो मारना मक्रूह है। (عالمگیری ج۱ ص۱۰۳) **(26)** पै दर पै तीन बाल उखेड़े या तीन जूएं मारीं या एक ही जूं को तीन बार मारा नमाज़ जाती रही और अगर पै दर पै न हो तो नमाज़ फ़ासिद न हुई मगर मक्रूह है। (ایضاً)

नमाज़ में खुजाना

(27) एक रुक्न में तीन बार खुजाने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है या'नी यूं कि खुजा कर हाथ हटा लिया फिर खुजाया फिर हटा लिया येह दो बार हुवा अगर अब इसी त़रह़ तीसरी बार किया तो नमाज़ जाती रहेगी। अगर एक बार हाथ रख कर चन्द बार ह़-र-कत दी तो येह एक ही मरतबा खुजाना कहा जाएगा। (عالمگیری ج۱ ص۱۰۴، غنیة المستملی ص۴٢٣)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

اَللّٰهُ اَكْبَر कहने में ग़-लत़ियां

(28) तक्बीराते इन्तिक़ालात में اَللّٰهُ اَكْبَر के ا को दराज़ किया या'नी "**आल्लाह**" या "**आक्बर**" कहा या "ب" के बा'द अलिफ़ बढ़ाया या'नी "**अक्बार**" कहा तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर तक्बीरे तह़रीमा में ऐसा हुवा तो नमाज़ शुरूअ़ ही न हुई। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج ٢ ص ١٧٧) अक्सर मुकब्बिर (या'नी जमाअ़त में इमाम की तक्बीरात पर ज़ोर से तक्बीरें कह कर आवाज़ पहुंचाने वाले) येह ग़-लत़ियां ज़ियादा करते हैं और यूं अपनी और दूसरों की नमाज़ें ग़ारत करते हैं। लिहाज़ा जो इन अह़काम को अच्छी त़रह़ न जानता हो उसे **मुकब्बिर** नहीं बनना चाहिये। **(29)** क़िराअत या अज़्कारे नमाज़ में ऐसी ग़-लत़ी जिस से मा'ना फ़ासिद हो जाएं नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج ٢ ص ٤٧٣)

"पक्का नमाज़ी बिला शक जन्नतुल फ़िरदौस का ह़क़दार है" के बत्तीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के 32 मक्रूहाते तह़रीमा

(1) दाढ़ी, बदन या लिबास के साथ खेलना। (عالمگیری ج ١ ص ١٠٤) **(2)** कपड़ा समेटना। जैसा कि आज कल बा'ज़ लोग सज्दे में जाते वक़्त पाजामा वग़ैरा आगे या पीछे से उठा लेते हैं। (غنية المستملى ص ٣٣٧) अगर कपड़ा बदन से चिपक जाए तो एक हाथ से छुड़ाने में ह़रज नहीं।

कन्धों पर चादर लटकाना

(3) सदल या'नी कपड़ा लटकाना। म-सलन सर या कन्धे पर इस त़रह़ से चादर या रूमाल वग़ैरा डालना कि दोनों कनारे लटक्ते हों हां अगर

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

एक कनारा दूसरे कन्धे पर डाल दिया और दूसरा लटक रहा है तो ह़रज नहीं । (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج٢ ص٤٨٨) **(4)** आज कल बा'ज़ लोग एक कन्धे पर इस त़रह़ रूमाल रखते हैं कि इस का एक सिरा पेट पर लटक रहा होता है और दूसरा पीठ पर । इस त़रह़ नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 165) **(5)** दोनों आस्तीनों में से अगर एक आस्तीन भी आधी कलाई से ज़ियादा चढ़ी हुई हो तो नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी होगी । (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج٢ ص٤٩٠)

त़बई ह़ाजत की शिद्दत

(6) पेशाब, पाख़ाना या रीह़ की शिद्दत होना । अगर नमाज़ शुरूअ़ करने से पहले ही शिद्दत हो तो वक़्त में वुस्अ़त होने की सूरत में नमाज़ शुरूअ़ करना ही गुनाह है । हां अगर ऐसा है कि फ़रागत और वुज़ू के बा'द नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाएगा तो नमाज़ पढ़ लीजिये । और अगर दौराने नमाज़ येह ह़ालत पैदा हुई तो अगर वक़्त में गुन्जाइश हो तो नमाज़ तोड़ देना वाजिब है अगर इसी त़रह़ पढ़ ली तो गुनहगार होंगे । (ردالمحتار ج٢ ص٤٩٢)

नमाज़ में कंकरियां हटाना

(7) दौराने नमाज़ कंकरियां हटाना मक्रूहे तह़रीमी है । (غنية المستملی ص٣٣٨) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, मैंने दौराने नमाज़ कंकरी छूने से मु-तअ़ल्लिक़ बारगाहे रिसालत में सुवाल किया, इर्शाद हुवा, "एक बार । और अगर तू इस से बचे तो सियाह आंख वाली सो100 ऊंटनियों से बेहतर है ।" (صحيح ابن خُزَيمة، حديث ٨٩٧، ج٢، ص٥٢، المكتب الاسلامی بيروت) हां अगर सुन्नत के

www.dawateislami.net

मुत़ाबिक़ सज्दा अदा न हो सकता हो तो एक बार हटाने की इजाज़त है और अगर बिग़ैर हटाए वाजिब अदा न होता हो तो हटाना वाजिब है चाहे एक बार से ज़ियादा की ह़ाजत पडे़।

उंग्लियां चटख़ाना

(8) नमाज़ में उंग्लियां चटख़ाना। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج٢ ص٤٩٣) **ख़ा-तमुल मुह़क़्क़िक़ीन** ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحۡمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه फ़रमाते हैं, इब्ने माजह की रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "नमाज़ में अपनी उंग्लियां न चटख़ाया करो।" (سنن ابن ماجه ج١ ص٥١٤ حديث ٩٦٥ دارالمَعرِفة بيروت) "मुज्तबा" के ह़वाले नक़्ल किया, सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने "इन्तिज़ारे नमाज़ के दौरान उंग्लियां चटख़ाने से मन्अ़ फ़रमाया।" मज़ीद एक रिवायत में है, "नमाज़ के लिये जाते हुए उंग्लियां चटख़ाने से मन्अ़ फ़रमाया।" इन अह़ादीसे मुबा-रका से येह तीन अह़काम साबित हुए (الف) नमाज़ के दौरान और तवाबेए़ नमाज़ में म-सलन नमाज़ के लिये जाते हुए, नमाज़ का इन्तिज़ार करते हुए उंग्लियां चटख़ाना **मक्रूहे तह़रीमी** है (ب) ख़ारिजे नमाज़ (या'नी तवाबेए़ नमाज़ में भी न हो) में बिग़ैर ह़ाजत के उंग्लियां चटख़ाना **मक्रूहे तन्ज़ीही** है (ج) ख़ारिजे नमाज़ में किसी ह़ाजत के सबब म-सलन उंग्लियों को आराम देने के लिये उंग्लियां चटख़ाना **मुबाह़** (या'नी बिला कराहत जाइज़) है (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج١ ص٤٠٩ طبعة ملتان) **(9)** तश्बीक या'नी एक हाथ की

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

उंग्लियां दूसरे हाथ की उंग्लियों में डालना। (غنية المستملى ص٣٣٨) सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो मस्जिद के इरादे से निकले तो तश्बीक या'नी एक हाथ की उंग्लियां दूसरे हाथ की उंग्लियों में न डाले बेशक वोह नमाज़ (के हुक्म) में है। (مسند امام احمد بن حنبل حديث ١٨١٢٦ ج٦ ص ٣٢٠ دار الفكر بيروت) नमाज़ के लिये जाते वक़्त और नमाज़ के इन्तिज़ार में भी येह दोनों चीज़ें मक्रूहे तह़रीमी हैं। (مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوى ص٣٤٦)

कमर पर हाथ रखना

(10) कमर पर हाथ रखना (ايضاً ٣٤٧) नमाज़ के इ़लावा भी (बिला उ़ज़्र) कमर पर (या'नी दोनों पहलूओं के वस्त़ में) हाथ नहीं रखना चाहिये। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج٢ ص٤٩٤) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "कमर पर हाथ रखना जहन्नमियों की राह़त है।" (السنن الكبرىٰ ج٢ ص٤٠٨ حديث ٣٥٦٦ دار الكتب العلمية بيروت) या'नी येह यहूदियों का फ़े'ल है कि वोह जहन्नमी हैं वरना जहन्नमियों के लिये जहन्नम में क्या राह़त है!

(ह़ाशिया बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 115, मक्तबए इस्लामिय्या, लाहोर)

आस्मान की त़रफ़ देखना

(11) निगाह आस्मान की त़रफ़ उठाना (البحر الرائق ج٢ ص٣٨) **अल्लाह** के मह़बूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "क्या ह़ाल है उन लोगों का जो नमाज़ में आस्मान की त़रफ़ आंखें उठाते हैं इस से बाज़ रहें या

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइ़स है। (ابویعلی)

उन की आंखें उचक ली जाएंगी।" (صحیح بخاری ج۲ ص۱۰۳) **(12)** इधर उधर मुंह फैर कर देखना, चाहे पूरा मुंह फैरा या थोड़ा। मुंह फैरे बिग़ैर सिर्फ़ आंखें फिरा कर इधर उधर बे ज़रूरत देखना मक्रूहे तन्ज़ीही है और नादिरन किसी ग़-रज़े सह़ीह़ के तह़्त हो तो ह़रज नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 194) सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "जो बन्दा नमाज़ में है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मते ख़ास्सा उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह रहती है जब तक इधर उधर न देखे, जब उस ने अपना मुंह फैरा उस की रह़मत भी फिर जाती है।" (ابو داوٗد ج۱ ص۳۳٤ حدیث ۹۰۹ دار احیاء التراث العربی بیروت)

(13) मर्द का सज्दे में कलाइयां बिछाना। (دُرِّ مختار معہ ردالمحتار ج۲ ص٤۹٦)

नमाज़ी की त़रफ़ देखना

(14) किसी शख़्स के मुंह के सामने नमाज़ पढ़ना। दूसरे शख़्स को भी नमाज़ी की त़रफ़ मुंह करना ना जाइज़ व गुनाह है कोई पहले से चेहरा किये हुए हो और अब कोई उस के चेहरे की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ शुरूअ़ करे तो नमाज़ शुरूअ़ करने वाला गुनहगार हुवा और इस नमाज़ी पर कराहत आई वरना चेहरा करने वाले पर गुनाह व कराहत है। (دُرِّ مختار معہ ردالمحتار ج۲ ص٤۹٦) जो लोग जमाअ़त का सलाम फिर जाने के बा'द अपने ऐ़न पीछे नमाज़ पढ़ने वाले की त़रफ़ चेहरा कर के उस को देखते हैं या पीछे जाने के लिये उस की त़रफ़ मुंह कर के खड़े हो जाते हैं कि येह सलाम फैरे तो निकलूं, या नमाज़ी के ठीक सामने खड़े हो कर

www.dawateislami.net

या बैठ कर ए'लान करते, दर्स देते, बयान करते हैं येह सब तौबा करें **(15)** नमाज़ में नाक और मुंह छुपाना (عالمگیری ج۱ ص۱۰۶) **(16)** बिला ज़रूरत खन्कार (या'नी बल्ग़म वग़ैरा) निकालना (غنية المستملى ص٣٣٩) **(17)** क़स्दन जमाही लेना (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوى ص٣٥٤) (अगर खु़द ब खु़द आए तो ह़रज नहीं मगर रोकना मुस्तह़ब है) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "जब नमाज़ में किसी को जमाही आए तो जहां तक हो सके रोके कि शैत़ान मुंह में दाखि़ल हो जाता है।" (صحیح مسلم ص٤١٣) **(18)** उल्टा कु़रआने मजीद पढ़ना (म-सलन पहली रक्अ़त में "تَبَّتۡ" पढ़ी और दूसरी में اِذَا جَآءَ) **(19)** किसी वाजिब को तर्क करना (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوى ص٣٤٥) म-सलन "क़ौमा" और "जल्सा" में पीठ सीधी होने से पहले ही रुकूअ़ या दूसरे सज्दे में चला जाना (عالمگیری ج۱ ص۱۰۷) इस गुनाह में मुसल्मानों की अच्छी ख़ासी ता'दाद मुलव्वस नज़र आती है, याद रखिये ! जितनी भी नमाज़ें इस त़रह़ पढ़ी होंगी सब का लौटाना वाजिब है **(20)** "क़ियाम" के इ़लावा किसी और मौक़अ़ पर कु़रआने मजीद पढ़ना (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوى ص٣٥١) **(21)** क़िराअत रुकूअ़ में पहुंच कर ख़त्म करना (ایضاً) **(22)** इमाम से पहले मुक़्तदी का रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा में चला जाना या इस से पहले सर उठाना। (ردالمحتار ج۲ ص۵۱۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत करते हैं कि सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

ने फ़रमाया, जो इमाम से पहले सर उठाता और झुकाता है उस की पेशानी के बाल शैत़ान के हाथ में हैं । (مُؤَطّا امامِ مالك حديث ٢١٢ ج ١ ص ١٠٢ دار المعرفة بيروت) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, ''क्या जो शख़्स इमाम से पहले सर उठाता है इस से डरता नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला उस का सर गधे का सर कर दे ।''

(صحيح مسلم، ج١، ص١٨١)

गधे जैसा मुंह

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ह़दीस लेने के लिये एक बड़े मशहूर शख़्स के पास दिमश्क़ गए । वोह पर्दा डाल कर पढ़ाते थे, मुद्दतों तक उन के पास बहुत कुछ पढ़ा मगर उन का मुंह न देखा, जब ज़मानए दराज़ गुज़रा और उन मुह़द्दिस साह़िब ने देखा कि इन को (या'नी इमाम न-ववी) को इ़ल्मे ह़दीस की बहुत ख़्वाहिश है तो एक रोज़ पर्दा हटा दिया ! देखते क्या हैं कि उन का **गधे जैसा मुंह** है !! उन्हों ने फ़रमाया, साह़िब ज़ादे ! दौराने जमाअ़त इमाम पर सब्क़त करने से डरो कि येह ह़दीस जब मुझ को पहुंची मैं ने इसे मुस्तब्अ़द (या'नी बा'ज़ रावियों की अ़-दमे सिह़ह़त के बाइ़स दूर अज़ क़ियास) जाना और मैं ने इमाम पर क़स्दन सब्क़त की तो मेरा मुंह ऐसा हो गया जैसा तुम देख रहे हो । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 95, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

(23) दूसरा कपड़ा होने के बा वुजूद सिर्फ़ पाजामा या तहबन्द में नमाज़

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

पढ़ना **(24)** किसी आने वाले शनासा की ख़ा़त़िर इमाम का नमाज़ को तू़ल देना (عالمگیری ج۱ ص۱۰۷) अगर उस की नमाज़ पर इआ़नत (मदद) के लिये एक दो तस्बीह़ की क़दर तू़ल दिया तो ह़रज नहीं (ایضاً) (25) ज़मीने मग़्सूबा (या'नी ऐसी ज़मीन जिस पर ना जाइज़ क़ब्ज़ा किया हो) या **(26)** पराया खेत जिस में ज़राअ़त मौजूद है (مراقی الفلاح معه حاشیة الطحطاوی ص۲۵۸، دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۵۲) या **(27)** जुते हुए खेत में (ایضاً) या **(28)** क़ब्र के सामने जब कि क़ब्र और नमाज़ी के बीच में कोई चीज़ ह़ाइल न हो नमाज़ पढ़ना (عالمگیری ج۱ ص۱۰۷) **(29)** कुफ़्फ़ार के इ़बादत ख़ा़नों में नमाज़ पढ़ना बल्कि इन में जाना भी मम्नूअ़ है (ردالمحتار ج۲ ص۵۳) **(30)** कुरते वग़ैरा के बटन खुले होना जिस से सीना खुला रहे मकरूहे तह़रीमी है हां अगर नीचे कोई और कपड़ा है जिस से सीना नहीं खुला तो मकरूहे तन्ज़ीही है ।

नमाज़ और तसावीर

(31) जानदार की तस्वीर वाला लिबास पहन कर नमाज़ पढ़ना मकरूहे तह़रीमी है नमाज़ के इ़लावा भी ऐसा कपड़ा पहनना जाइज़ नहीं (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۵۰۲) **(32)** नमाज़ी के सर पर या'नी छत पर या सज्दे की जगह पर या आगे या दाएं या बाएं जानदार की तस्वीर आवेज़ां होना मकरूहे तह़रीमी है और पीछे होना भी मकरूह है मगर गुज़श्ता सूरतों से कम । अगर तस्वीर फ़र्श पर है और उस पर सज्दा नहीं होता तो कराहत नहीं । अगर तस्वीर ग़ैर जानदार की है जैसे दरिया पहाड़ वग़ैरा तो इस में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं । इतनी छोटी तस्वीर हो जिसे

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

ज़मीन पर रख कर खड़े हो कर देखें तो आ'ज़ा की तफ़्सील न दिखाई दे (जैसा के उ़मूमन त़वाफ़े का'बा के मन्ज़र की तस्वीरें बहुत छोटी होती हैं येह तसावीर) नमाज़ के लिये बाइ़से कराहत नहीं हैं (غنية المستملى ص٣٤٧، دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج٢ ص٥٠٣) हां त़वाफ़ की भीड़ में एक भी चेहरा वाजे़ह़ हो गया तो मुमा-न-अ़त बाक़ी रहेगी। चेहरे के इ़लावा म-सलन हाथ, पाउं, पीठ, चेहरे का पिछला ह़िस्सा या ऐसा चेहरा जिस की आंखें, नाक, होंट वग़ैरा सब आ'ज़ा मिटे हुए हों ऐसी तसावीर में कोई ह़रज नहीं।

"या रब ! तेरी पसन्द की नमाज़ पढ़ने की सआ़दत मिले" के तेंतीस हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के 33 मक्रूहाते तन्ज़ीहा

(1) दूसरे कपड़े मुयस्सर होने के बा वुजूद कामकाज के लिबास में नमाज़ पढ़ना (غنية المستملى ص٣٣٧) मुंह में कोई चीज़ लिये हुए होना। अगर इस की वज्ह से क़िराअत ही न हो सके या ऐसे अल्फ़ाज़ निकलें कि जो क़ुरआने पाक के न हों तो नमाज़ ही फ़ासिद हो जाएगी। (عالمگیری ج١ ص١٠٦) (دُرِّ مختار، ردالمحتار) **(2)** सुस्ती से नंगे सर नमाज़ पढ़ना नमाज़ में टोपी या इमामा शरीफ़ गिर पड़ा तो उठा लेना अफ़्ज़ल है जब कि **अ़-मले कसीर** की ह़ाजत न पड़े वरना नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। और बार बार उठाना पड़े तो छोड़ दें और न उठाने से ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ मक़्सूद हो तो न उठाना अफ़्ज़ल है। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج٢ ص٤٩١)

www.dawateislami.net

अगर कोई नंगे सर नमाज़ पढ़ रहा हो या उस की टोपी गिर पड़ी हो तो उस को दूसरा शख़्स टोपी न पहनाए **(3)** रुकूअ़ या सज्दे में बिला ज़रूरत तीन बार से कम तस्बीह़ कहना (अगर वक़्त तंग हो या ट्रेन चल पड़ने के ख़ौफ़ से हो तो ह़रज नहीं । अगर मुक़्तदी तीन तस्बीह़ात न कहने पाया था कि इमाम ने सर उठा लिया तो इमाम का साथ दे) **(4)** नमाज़ में पेशानी से ख़ाक या घास छुड़ाना । हां अगर इन की वज्ह से नमाज़ में ध्यान बटता हो तो छुड़ाने में ह़रज नहीं (عالمگیری ج۱ ص۱۰۶) **(5)** सज्दे वग़ैरा में उंग्लियां क़िब्ले से फैर देना (فتاوٰی قاضی خان معه عالمگیری ج۱ ص۱۱۹) **(6)** मर्द का सज्दे में रान को पेट से चिपका देना (عالمگیری ج۱ ص۱۰۹) **(7)** नमाज़ में हाथ या सर के इशारे से सलाम का जवाब देना (دُرّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۴۹۷) ज़बान से जवाब देना मुफ़्सिदे नमाज़ है (مراقی الفلاح معه حاشیة الطحطاوی ص۳۲۲ قدیمی کتب خانه) **(8)** नमाज़ में बिला उ़ज़्र चार ज़ानू या'नी चोकड़ी मार कर बैठना (غنیة المستملی ص۳۳۹) **(9)** अंगड़ाई लेना और **(10)** इरादतन खांसना, खन्कारना (غنیة المستملی ص۳٤٠) अगर त़बीअ़त चाहती हो तो ह़रज नहीं **(11)** सज्दे में जाते हुए घुटने से पहले बिला उ़ज़्र हाथ ज़मीन पर रखना (عالمگیری ج۱ ص۱۰۷) **(12)** उठते वक़्त बिला उ़ज़्र हाथ से क़ब्ल घुटने ज़मीन से उठाना (غنیة المستملی ص۳۳۵) **(13)** रुकूअ़ में सर को पीठ से ऊंचा नीचा करना (غنیة المستملی ص۳۳۸) **(14)** नमाज़ में सना, तअ़व्वुज़, तस्मिया और आमीन ज़ोर से कहना (عالمگیری ج۱ص۱۰۷) **(15)** बिग़ैर उ़ज़्र दीवार वग़ैरा पर टेक लगाना (ایضاً)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

(16) रुकूअ़ में घुटनों पर और **(17)** सज्दों में ज़मीन पर हाथ न रखना **(18)** दाएं बाएं झूमना। और तरावुह़ या'नी कभी दाएं पाउं पर और कभी बाएं पाउं पर ज़ोर देना येह **सुन्नत** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 202) और सज्दे के लिये जाते हुए सीधी त़रफ़ ज़ोर देना और उठते वक़्त उल्टी त़रफ़ ज़ोर देना मुस्तह़ब है। (ऐज़न, स. 101) **(19)** नमाज़ में आंखें बन्द रखना। हां अगर खुशूअ़ आता हो तो आंखें बन्द रखना अफ़्ज़ल है (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۴۹۹) **(20)** जलती आग के सामने नमाज़ पढ़ना शम्अ़ या चराग़ सामने हो तो ह़रज नहीं (عالمگیری ج۱ ص۱۰۸) **(21)** ऐसी चीज़ के सामने नमाज़ पढ़ना जिस से ध्यान बटे म-सलन ज़ीनत और लह्वो लअ़ब वग़ैरा (ردالمحتار ج۱ ص۴۳۹) **(22)** नमाज़ के लिये दौड़ना **(23)** आ़म रास्ता **(24)** कूड़ा डालने की जगह **(25)** मज़्बह़ या'नी जहां जानवर ज़ब्ह़ किये जाते हों वहां **(26)** इस्त़बल या'नी घोड़े बांधने की जगह, **(27)** ग़ुस्ल ख़ाना, **(28)** मवेशी ख़ाना खुसूसन जहां ऊंट बांधे जाते हों, **(29)** इस्तिन्जा ख़ाने की छत और **(30)** सह़रा में बिला सुतरा के जब कि आगे से लोगों के गुज़रने का इम्कान हो इन जगहों पर नमाज़ पढ़ना (غنیۃ المستملی ص۳۳۹) **(31)** बिग़ैर उ़ज़्र हाथ से मक्खी मच्छर उड़ाना (فتاویٰ قاضی خان معہ عالمگیری ج۱ ص۱۱۸) (नमाज़ में जूं या मच्छर ईज़ा देते हों तो पकड़ कर मार डालने में कोई ह़रज नहीं जब कि अ़-मले कसीर से न हो।) (बहारे शरीअ़त) **(32)** हर वोह अ़-मले क़लील जो नमाज़ी के लिये मुफ़ीद हो जाइज़ है और जो मुफ़ीद न हो वोह मक्रूह (عالمگیری ج۱ ص ۱۰۹)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे । (طبرانی)

(33) उल्टा कपड़ा पहनना या ओढ़ना ।

(फ़तावा र-ज़विय्या जि. 7, स. 358 ता 360, फ़तावा अहले सुन्नत ग़ैर मत़्बूआ)

हाफ़ आस्तीन में नमाज़ पढ़ना कैसा ?

आधी आस्तीन वाला कुरता या क़मीस पहन कर नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तन्ज़ीही है जब कि उस के पास दूसरे कपड़े मौजूद हों । ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जिस के पास कपड़े मौजूद हों और सिर्फ़ नीम आस्तीन (या'नी आधी आस्तीन) या बनियान पहन कर नमाज़ पढ़ता है तो कराहते तन्ज़ीही है और कपड़े मौजूद नहीं तो कराहत भी नहीं ।" (फ़तावा अम्जदिय्या, ह़िस्सा : 1, स. 193, मक्तबए र-ज़विय्या, बाबुल मदीना कराची) मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते क़िब्ला मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, हाफ़ आस्तीन वाला कुरता, क़मीस या शर्ट कामकाज करने वाले लिबास में शामिल हैं (कि कामकाज वाला लिबास पहन कर इन्सान मुअ़ज़्ज़ज़ीन के सामने जाते हुए कतराता है) इस लिये जो हाफ़ आस्तीन वाला कुरता पहन कर दूसरे लोगों के सामने जाना गवारा नहीं करते, उन की नमाज़ मक्रूहे तन्ज़ीही है और जो लोग ऐसा लिबास पहन कर सब के सामने जाने में कोई बुराई मह़सूस नहीं करते, उन की नमाज़ मक्रूह नहीं । (वक़ारुल फ़तावा, जि. 2, स. 246)

ज़ोहर के आख़िरी दो नफ़्ल के भी क्या कहने

ज़ोहर के बा'द चार रक्अ़त पढ़ना मुस्तह़ब है कि ह़दीसे पाक में फ़रमाया जिस ने ज़ोहर से पहले चार और बा'द में चार पर

www.dawateislami.net

मुह़ा-फ़ज़त की **अल्लाह** तआ़ला उस पर आग ह़राम फ़रमा देगा । (سنن نسائی حدیث۱۸۱۷ ص۲۲۰۷ دارالجیل بیروت) अ़ल्लामा सय्यिद तह़त़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि सिरे से आग में दाख़िल ही न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और उस पर (बन्दों की ह़क़ त-लफ़ियों के) जो मुत़ा-लबात हैं **अल्लाह** तआ़ला उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा या येह मत़लब है कि ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो । और अ़ल्लामा शामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि उस के लिये बिशारत येह है कि सआ़दत पर उस का ख़ातिमा होगा और दोज़ख़ में न जाएगा । (شامی ج۲ ص۴۵۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ जहां ज़ोह्र की दस रक्अ़त नमाज़ पढ़ लेते हैं वहां आख़िर में मज़ीद दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ कर बारहवीं शरीफ़ की निस्बत से 12 रक्अ़त करने में देर ही कितनी लगती है ! इस्तिक़ामत के साथ दो नफ़्ल पढ़ने की निय्यत फ़रमा लीजिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इमामत का बयान

मर्दे ग़ैरे मा'ज़ूर के इमाम के लिये छ[6] शर्तें हैं :-

(1) सह़ीहुल अ़क़ीदा मुसल्मान होना **(2)** बालिग़ होना **(3)** आ़क़िल होना **(4)** मर्द होना **(5)** क़िराअत सह़ीह़ होना **(6)** मा'ज़ूर न होना । (دُرِّ مختار مع ردالمحتار ج۲ ص۲۸۴)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

"या इमामल अम्बिया" के तेरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से इक़्तिदा की 13 शराइत़

(1) निय्यत (2) इक़्तिदा और इस निय्यते इक़्तिदा का तह़रीमा के साथ होना या तक्बीरे तह़रीमा से पहले होना बशर्ते कि पहले होने की सूरत में कोई अजनबी काम निय्यत व तह़रीमा में जुदाई करने वाला न हो **(3)** इमाम व मुक़्तदी दोनों का एक मकान में होना **(4)** दोनों की नमाज़ एक हो या इमाम की नमाज़, नमाज़े मुक़्तदी को अपने ज़िम्न में लिये हुए हो **(5)** इमाम की नमाज़ का मज़्हबे मुक़्तदी पर सह़ीह़ होना और **(6)** इमाम व मुक़्तदी दोनों का इसे सह़ीह़ समझना **(7)** शराइत़ की मौजू-दगी में औ़रत का मह़ाज़ी (बराबर) न होना **(8)** मुक़्तदी का इमाम से मुक़द्दम (या'नी आगे) न होना **(9)** इमाम के इन्तिक़ालात का इ़ल्म होना **(10)** इमाम का मुक़ीम या मुसाफ़िर होना मा'लूम हो **(11)** अरकान की अदाएगी में शरीक होना **(12)** अरकान की अदाएगी में मुक़्तदी इमाम के मिस्ल हो या कम **(13)** यूंही शराइत़ में मुक़्तदी का इमाम से ज़ाइद न होना। (ردالمحتار ج۲ ص۲۸٤ تا ۲۸۵)

इक़ामत के बा'द इमाम साह़िब ए'लान करें

अपनी एड़ियां, गरदनें और कन्धे एक सीध में कर के सफ़ सीधी कर लीजिये। दो आदमियों के बीच में जगह छोड़ना गुनाह है, कन्धे से कन्धा मस या'नी टच किया हुवा रखना वाजिब, सफ़ सीधी रखना वाजिब और जब तक अगली सफ़ कोने तक पूरी न हो जाए जानबूझ कर पीछे नमाज़ शुरूअ़ कर देना तर्के वाजिब, ह़राम और गुनाह

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

है। **15** साल से छोटे ना बालिग़ बच्चों को सफ़ों में खड़ा न रखिये, इन्हें कोने में भी न भेजिये छोटे बच्चों की सफ़ सब से आख़िर में बनाइये। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये देखिये : फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 219 ता 225, रज़ा फ़ाउन्डेशन, लाहोर)

जमाअ़त का बयान

आ़क़िल, बालिग़, आज़ाद और क़ादिर पर मस्जिद की जमाअ़ते ऊला वाजिब है बिला उ़ज़्र एक बार भी छोड़ने वाला गुनहगार और मुस्तह़िक़े सज़ा है और कई बार तर्क करे तो फ़ासिक़ मर्दूदुश्शहादह (या'नी उस की गवाही क़ाबिले क़बूल नहीं) और उस को सख़्त सज़ा दी जाएगी अगर पड़ोसियों ने सुकूत किया (या'नी ख़ामोशी इख़्तियार की) तो वोह भी गुनहगार हुए। (دُرِّ مختار و ردالمحتار ج۲ ص۲۸۷) बा'ज़ फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स अज़ान सुन कर घर में इक़ामत का इन्तिज़ार करता है तो वोह गुनहगार होगा और उस की शहादत (या'नी गवाही) क़बूल नहीं।" (البحرالرائق ج۱ ص۶۰۴،۴۵۱)

"या रसूलल्लाह मदीने बुला लो" के बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से तर्के जमाअ़त के 20 आ'ज़ार

(1) मरीज़, जिसे मस्जिद तक जाने में मशक़्क़त हो **(2)** अपाहज **(3)** जिस का पाउं कट गया हो **(4)** जिस पर फ़ालिज गिरा हो **(5)** इतना बूढ़ा कि मस्जिद तक जाने से आ़जिज़ हो **(6)** अन्धा, अगर्चे अन्धे के लिये कोई ऐसा हो जो हाथ पकड़ कर मस्जिद तक पहुंचा दे **(7)** सख़्त बारिश और **(8)** शदीद कीचड़ का ह़ाइल होना **(9)** सख़्त सर्दी **(10)** सख़्त अंधेरा

www.dawateislami.net

(11) आंधी **(12)** माल या खाने के ज़ाएअ़ होने का अन्देशा **(13)** क़र्ज़ ख़्वाह का ख़ौफ़ है और येह तंगदस्त है **(14)** ज़ालिम का ख़ौफ़ **(15)** पाख़ाना **(16)** पेशाब या **(17)** रीह़ की ह़ाजते शदीद है **(18)** खाना ह़ाज़िर है और नफ़्स को इस की ख़्वाहिश है **(19)** क़ाफ़िला चले जाने का अन्देशा है **(20)** मरीज़ की तीमार दारी, कि जमाअ़त के लिये जाने से इस को तक्लीफ़ होगी और घबराएगा। येह सब तर्के जमाअ़त के लिये उ़ज़्र हैं। (دُرِّ مختار مع ردالمحتار ج۲ ص۲۹۲ تا ۲۹۳)

कुफ़्र पर ख़ातिमे का ख़ौफ़

इफ़्त़ार पार्टियों, दा'वतों, नियाज़ों और ना'त ख़्वानियों वग़ैरा की वज्ह से फ़र्ज़ नमाज़ों की मस्जिद की जमाअ़ते ऊला (या'नी पहली जमाअ़त) तर्क करने की हरगिज़ इजाज़त नहीं, यहां तक कि जो लोग घर या हॉल या बंगले के कम्पाउन्ड वग़ैरा में तरावीह़ की जमाअ़त क़ाइम करते हैं और क़रीब मस्जिद मौजूद है तो उन पर वाजिब है कि पहले फ़र्ज़ रक्अ़तें जमाअ़ते ऊला के साथ मस्जिद में अदा करें। जो लोग बिला उ़ज़्रे शर-ई बा वुजूदे क़ुदरत फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में जमाअ़ते ऊला के साथ अदा नहीं करते उन को डर जाना चाहिये कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, ''जिस को येह पसन्द हो कि कल **अल्लाह** तआ़ला से मुसल्मान हो कर मिले तो वोह इन पांच नमाज़ों (की जमाअ़त) पर वहां पाबन्दी करे जहां अज़ान दी जाती है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये सु-नने हुदा मशरूअ़ कीं और येह

www.dawateislami.net

(बा जमाअ़त) नमाज़ें भी सु-नने हुदा से हैं और अगर तुम अपने नबी की सुन्नत छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे।" (مسلم شریف ج۱ ص۲۳۲) इस ह़दीसे मुबारक से इशारा मिलता है कि जमाअ़ते ऊला की पाबन्दी करने वाले का ख़ातिमा बिलख़ैर होगा और जो बिला शर-ई मजबूरी के मस्जिद की जमाअ़ते ऊला तर्क करता है उस के लिये مَعَاذَالله عَزَّوَجَلَّ कुफ़्र पर ख़ातिमे का ख़ौफ़ है।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّ وَجَلَّ ! हमें पांचों नमाज़ें मस्जिद की जमाअ़ते ऊला में पहली सफ़ के अन्दर तक्बीरे ऊला के साथ अदा करने की हमेशा सआ़दत नसीब फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلَّی اللهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त

हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"या इमाम अह़मद रज़ा" के तेरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से नमाज़े वित्र के 13 म-दनी फूल

(1) नमाज़े वित्र वाजिब है (البحر الرائق ج۱ ص۶۶) **(2)** अगर येह छूट जाए तो इस की क़ज़ा लाज़िम है (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۵۳۲) **(3)** वित्र का वक़्त इ़शा के फ़र्ज़ों के बा'द से सुब्ह़े सादिक़ तक है (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی ص۱۷۸) **(4)** जो सो कर उठने पर क़ादिर हो उस के लिये अफ़्ज़ल है कि पिछली रात में उठ कर पहले तहज्जुद अदा करे फिर वित्र (غنية المستملی ص۴۰۳) **(5)** इस की तीन रक्अ़तें हैं (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی ص۳۷۵) **(6)** इस में क़ा'दए ऊला वाजिब है

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

सिर्फ़ तशह्हुद पढ़ कर खड़े हो जाइये **(7)** तीसरी रक्अ़त में क़िराअत के बा'द तक्बीरे क़ुनूत कहना वाजिब है (دُرِّ مختار مع ردالمحتار ج۲ ص۵۳۳) **(8)** जिस त़रह़ तक्बीरे तह़रीमा कहते हैं इसी त़रह़ पहले हाथ कानों तक उठाइये फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कहिये (حاشية الطحطاوى ص۳۷۶) **(9)** फिर हाथ बांध कर दुआ़ए क़ुनूत पढ़िये।

दुआ़ए क़ुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ
وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ
عَلَيْكَ الْخَيْرَ ؕ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ
وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ؕ
اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ
وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ
وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ
اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ؕ

ऐ **अल्लाह** हम तुझ से मदद चाहते हैं और तुझ से बख़्शिश मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी ना शुक्री नहीं करते और अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस शख़्स को जो तेरी ना फ़रमानी करे, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे ही लिये नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं और तेरी इत़ाअ़त की त़रफ़ दौड़ते और जल्दी करते हैं और तेरी रह़मत के उम्मीद वार हैं और तेरे अ़ज़ाब से डरते हैं बेशक तेरा अ़ज़ाब काफ़िरों को मिलने वाला है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (فردوس الاخبار)

(10) दुआ़ए क़ुनूत के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना बेहतर है

(غنية المستملى ص٤٠٢)

(11) जो दुआ़ए क़ुनूत न पढ़ सकें वोह येह पढ़ें :

اَللّٰھُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

ऐ **अल्लाह** ! ऐ हमारे मालिक ! तू हमें दुन्या में भलाई और आख़िरत में भी भलाई अ़त़ा फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ।

या येह पढ़ें : اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ ऐ **अल्लाह** मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे । (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی ص٣٨٥) **(12)** अगर दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना भूल गए और रुकूअ़ में चले गए तो वापस न लौटिये बल्कि सज्दए सह्व कर लीजिये (عالمگیری ج١ ص١١٠) **(13)** वित्र जमाअ़त से पढ़ी जा रही हो (जैसा कि **र-मज़ानुल मुबारक** में पढ़ते हैं) और मुक़्तदी क़ुनूत से फ़ारिग़ न हुवा था कि इमाम रुकूअ़ में चला गया तो मुक़्तदी भी रुकूअ़ में चला जाए । (عالمگیری ج١ ص١١٠، تبيين الحقائق ج١ ص١٧١ ملتان)

सज्दए सह्व का बयान

(1) वाजिबाते नमाज़ में से अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए या फ़राइज़ व वाजिबाते नमाज़ में भूले से ताख़ीर हो जाए तो सज्दए सह्व वाजिब है (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج٢ ص٦٥٥) **(2)** अगर सज्दए सह्व वाजिब होने के बा वुजूद न किया तो नमाज़ लौटाना वाजिब है । (ایضاً) **(3)** जानबूझ कर वाजिब तर्क किया तो सज्दए सह्व काफ़ी नहीं बल्कि नमाज़ दोबारा

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلٰی)

लौटाना वाजिब है। (ایضاً) **(4)** कोई ऐसा वाजिब तर्क हुवा जो वाजिबाते नमाज़ से नहीं बल्कि इस का वुजूब अम्रे ख़ारिज से हो तो सज्दए सह्व वाजिब नहीं म-सलन ख़िलाफ़े तरतीब कुरआने पाक पढ़ना तर्के वाजिब (और गुनाह) है मगर इस का तअ़ल्लुक़ वाजिबाते नमाज़ से नहीं बल्कि वाजिबाते तिलावत से है लिहाज़ा सज्दए सह्व नहीं (अलबत्ता इस से तौबा करे) (ایضاً) **(5)** फ़र्ज़ तर्क हो जाने से नमाज़ जाती रहती है सज्दए सह्व से इस की तलाफ़ी नहीं हो सकती लिहाज़ा दोबारा पढ़िये **(6)** सुन्नतें या मुस्तह़ब्बात म-सलन ''सना'', ''तअ़व्वुज़'', ''तस्मिया', ''आमीन'', तक्बीराते इन्तिक़ालात और तस्बीह़ात के तर्क से सज्दए सह्व वाजिब नहीं होता, नमाज़ हो गई (فتح القدیر ج۱ ص۴۳۸) मगर दोबारा पढ़ लेना मुस्तह़ब है भूल कर तर्क किया हो या जानबूझ कर **(7)** नमाज़ में अगर्चे दस वाजिब तर्क हुए सह्व के दो ही सज्दे सब के लिये काफ़ी हैं (ردالمحتار ج۲ ص۶۵۵) **(8)** ता'दीले अरकान (म-सलन रुकूअ़ के बा'द सीधा खड़ा होना या दो सज्दों के दरमियान एक बार سُبْحٰنَ اللّٰہ कहने की मिक़्दार सीधा बैठना) भूल गए सज्दए सह्व वाजिब है (عالمگیری ج۱ ص۱۲۷) **(9)** कुनूत या तक्बीरे कुनूत भूल गए सज्दए सह्व वाजिब है (عالمگیری ج۱ ص۱۲۸) **(10)** क़िराअत वग़ैरा किसी मौक़अ़ पर सोचने में तीन मर्तबा سُبْحٰنَ اللّٰہ कहने का वक़्फ़ा गुज़र गया सज्दए सह्व वाजिब हो गया (ردالمحتار ج۲ ص۶۵۵) **(11)** सज्दए सह्व के बा'द भी अत्तहिय्यात पढ़ना वाजिब है। अत्तहिय्यात पढ़ कर सलाम फैरिये और बेहतर

www.dawateislami.net

येह है कि दोनों क़ा'दों (या'नी सज्दए सह्व से पहले और बा'द) में दुरूद शरीफ़ भी पढ़िये (عالمگیری ج۱ ص۱۲۵) **(12)** इमाम से सह्व हुवा और सज्दए सह्व किया तो मुक़्तदी पर भी सज्दा वाजिब है (دُرِّ مختار معہ ردالمحتار ج۲ ص۶۵۸) **(13)** अगर मुक़्तदी से ब ह़ालते इक़्तिदा सह्व वाक़ेअ़ हुवा तो सज्दए सह्व वाजिब नहीं (عالمگیری ج۱ ص۱۲۸) और नमाज़ लौटाने की भी ह़ाजत नहीं।

निहायत अहम मस्अला

कसीर इस्लामी भाई ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर अपनी नमाज़ ज़ाएअ़ कर बैठते हैं लिहाज़ा येह मस्अला ख़ूब तवज्जोह से पढ़िये **(14) मस्बूक़** (या'नी जो एक या कई रक्अ़तें फ़ौत होने के बा'द नमाज़ में शामिल हुवा) **को इमाम के साथ सलाम फैरना जाइज़ नहीं अगर क़स्दन फैरेगा तो नमाज़ जाती रहेगी और अगर भूल कर इमाम के साथ बिला वक़्फ़ा फ़ौरन सलाम फैरा तो ह़रज नहीं लेकिन येह नादिर सूरत है** (या'नी ऐसा बहुत ही कम होता है) **और अगर भूल कर सलाम इमाम के कुछ भी बा'द फैरा तो खड़ा हो जाए अपनी नमाज़ पूरी कर के सज्दए सह्व करे।** (دُرِّ مختار معہ ردالمحتار ج۲ ص۶۵۹) **(15)** मस्बूक़ इमाम के साथ सज्दए सह्व करे अगर्चे उस के शरीक होने से पहले ही इमाम को सह्व हुवा और अगर इमाम के साथ सज्दए सह्व न किया और अपनी बक़िय्या पढ़ने खड़ा हो गया तो आख़िर में सज्दए सह्व करे और इस मस्बूक़ से अपनी नमाज़ में भी सह्व हुवा तो आख़िर के येही सज्दे इस इमाम वाले सह्व के लिये भी काफ़ी हैं।

www.dawateislami.net

(16) क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द इतना पढ़ा "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ" तो सज्दए सह्व वाजिब है इस की वज्ह येह नहीं कि दुरूद शरीफ़ पढ़ा बल्कि इस की वज्ह येह है कि तीसरी रक्अ़त के क़ियाम में ताख़ीर हुई। लिहाज़ा अगर इतनी देर तक ख़ामोश रहा जब भी सज्दए सह्व वाजिब है। (عالمگیری ج۱ ص۱۲۸)

ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़्वाब में सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया, "दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर तुम ने सज्दा क्यूं वाजिब बताया ?" अ़र्ज़ की, "इस लिये कि उस ने भूल कर (या'नी ग़फ़्लत से) पढ़ा।" सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह जवाब पसन्द फ़रमाया।

(دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۶۵۷)

(17) किसी क़ा'दह में **तशह्हुद** से कुछ रह गया तो सज्दए सह्व वाजिब है नमाज़ नफ़्ल हो या फ़र्ज़। (عالمگیری ج۱ ص۱۲۷)

सज्दए सह्व का त़रीक़ा

अत्तह़िय्यात पढ़ कर बल्कि अफ़्ज़ल येह है कि दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लीजिये, सीधी त़रफ़ सलाम फैर कर दो सज्दे कीजिये, फिर तशह्हुद, दुरूद शरीफ़ और दुआ़ पढ़ कर सलाम फैर दीजिये।

(فتاوىٰ قاضى خان معه عالمگیری ج۱ ص۱۲۱)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

सज्दए सह्व करना भूल जाए तो....

सज्दए सह्व करना था और भूल कर सलाम फैरा तो जब तक मस्जिद से बाहर न हुवा कर ले। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج٢ ص٥٥٦) मैदान में हो तो जब तक सफ़ों से मु-तजाविज़ न हो या आगे को सज्दे की जगह से न गुज़रा कर ले जो चीज़ मानेए़ बिना है म-सलन कलाम वग़ैरा मुनाफ़िये नमाज़ अगर सलाम के बा'द पाई गई तो अब सज्दए सह्व नहीं हो सकता। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج٢ ص٥٥٦)

सज्दए तिलावत और शैत़ान की शामत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, जब जब आदमी आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है, शैत़ान हट जाता है और रो कर कहता है, हाए मेरी बरबादी ! इब्ने आदम को सज्दे का हुक्म हुवा उस ने सज्दा किया उस के लिये जन्नत है और मुझे हुक्म हुवा मैं ने इन्कार किया मेरे लिये दोज़ख़ है। (صحیح مسلم، ج١، ص٦١)

اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ हर मुराद पूरी हो

जिस मक़्सद के लिये एक मजलिस में सज्दे की सब (या'नी 14) आयतें पढ़ कर सज्दे करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का मक़्सद पूरा फ़रमा देगा। ख़्वाह एक एक आयत पढ़ कर उस का सज्दा करता जाए या सब पढ़ कर आख़िर में 14 सज्दे कर ले। (غنیه، در مختار وغیرهما)

www.dawateislami.net

"कुरआने मजीद" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से सज्दए तिलावत के 8 म-दनी फूल

(1) आयते सज्दा पढ़ने या सुनने से सज्दा वाजिब हो जाता है। पढ़ने में येह शर्त़ है कि इतनी आवाज़ में हो कि अगर कोई उ़ज़्र न हो तो खु़द सुन सके, सुनने वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि बिल क़स्द सुनी हो बिला क़स्द सुनने से भी सज्दा वाजिब हो जाता है। (عالمگیری ج۱ ص۱۳۲)

(2) किसी भी ज़बान में आयत का तरजमा पढ़ने और सुनने वाले पर सज्दा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने येह समझा हो या न समझा हो कि आयते सज्दा का तरजमा है। अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे न मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह आयते सज्दा का तरजमा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाले को आयते सज्दा होना बताया गया हो। (عالمگیری ج۱ ص۱۳۳)

(3) सज्दा वाजिब होने के लिये पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी है लेकिन बा'ज़ उ़-लमाए मु-तअख़्ख़िरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के नज़्दीक वोह लफ़्ज़ जिस में सज्दे का माद्दा पाया जाता है उस के साथ क़ब्ल या बा'द का कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ा तो सज्दए तिलावत वाजिब हो जाता है लिहाज़ा एह़तियात़ येही है कि दोनों सूरतों में सज्दए तिलावत किया जाए।

(मुलख़्ख़स़न फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 8, स. 223, 233, रज़ा फ़ाउन्डेशन, लाहोर)

(4) आयते सज्दा बैरूने नमाज़ पढ़ी तो फ़ौरन सज्दा कर लेना वाजिब नहीं है अलबत्ता वुज़ू हो तो ताख़ीर मक्रूहे तन्ज़ीही है।

(تنویرالابصار معه ردالمحتار ج۲ ص۵۸۳)

www.dawateislami.net

(5) सज्दए तिलावत नमाज़ में फ़ौरन करना वाजिब है अगर ताख़ीर की या'नी तीन आयात से ज़ियादा पढ़ लिया तो गुनहगार होगा और जब तक नमाज़ में है या सलाम फैरने के बा'द कोई नमाज़ के मुनाफ़ी फ़े'ल नहीं किया तो सज्दए तिलावत कर के सज्दए सह्व बजा लाए।

(دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج ٢ ص ٥٨٤)

दौराने नमाज़ दूसरे से आयते सज्दा सुन ली तो......

(6) र-मज़ानुल मुबारक में तरावीह़ या शबीना में अगर्चे शरीक न हों बेशक अपनी ही अलग नमाज़ पढ़ रहे हों या नमाज़ में भी न हों तो आयते सज्दा सुन लेने से आप पर भी सज्दए तिलावत वाजिब हो जाएगा। काफ़िर या ना बालिग़ से आयते सज्दा सुनी तब भी सज्दए तिलावत वाजिब हो गया। नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ी तो उस का सज्दा नमाज़ ही में वाजिब है बैरूने नमाज़ नहीं हो सकता और क़स्दन न किया तो गुनहगार हुवा तौबा लाज़िम है। अलबत्ता बालिग़ होने के बा'द बैरूने नमाज़ जितनी बार भी आयाते सज्दा पढ़ या सुन कर सज्दा वाजिब हुवा और अभी तक सज्दा न किया हो उन का ग़-ल-बए ज़न के ए'तिबार से ह़िसाब लगा कर उतनी बार बा वुज़ू सज्दए तिलावत करना लाज़िम है।

सज्दए तिलावत का त़रीक़ा

(7) खड़ा हो कर اَللهُ اَكْبَر कहता हुवा सज्दे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى कहे फिर اَللهُ اَكْبَر कहता हुवा खड़ा हो जाए। पहले, पीछे दोनों बार اَللهُ اَكْبَر कहना सुन्नत है और खड़े हो कर सज्दे में जाना और सज्दे के बा'द खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तह़ब। (عالمگیری ج١ ص١٣٥)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

(8) सज्दए तिलावत के लिये اَللّٰہُ اَکْبَر कहते वक़्त न हाथ उठाना है न इस में तशह्हुद है न सलाम। (تنویرالابصار معه ردالمحتار ج۲ ص ۵۸۰)

सज्दए शुक्र का बयान

औलाद पैदा हुई या माल पाया या गुमी हुई चीज़ मिल गई या मरीज़ ने शिफ़ा पाई या मुसाफ़िर वापस आया अल ग़रज़ किसी ने'मत के हुसूल पर सज्दए शुक्र करना मुस्तह़ब है इस का त़रीक़ा वोही है जो सज्दए तिलावत का है। (عالمگیری ج۱ ص۱۳۶) इसी त़रह़ जब भी कोई ख़ुश ख़बरी या ने'मत मिले तो सज्दए शुक्र करना कारे सवाब है म-सलन मदीनए मुनव्वरह का वीज़ा लग गया, किसी पर **इन्फ़िरादी कोशिश** काम्याब हुई और वोह **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये तय्यार हो गया, किसी सुन्नी आ़लिमे बा अ़मल की ज़ियारत हो गई, मुबारक ख़्वाब नज़र आया, त़ालिबे इ़ल्मे दीन इम्तिह़ान में काम्याब हुवा, आफ़त टली या कोई दुश्मने इस्लाम मरा वग़ैरा वग़ैरा।

नमाज़ी के आगे से गुज़रना सख़्त गुनाह है

(1) सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर कोई जानता कि अपने भाई के सामने नमाज़ में आड़े हो कर गुज़रने में क्या है तो सो100 बरस खड़ा रहना उस एक क़दम चलने से बेहतर समझता।" (سنن ابن ماجه حديث ٩٤٦ ج١ ص٥٠٦ دار المعرفة بيروت)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इर्शाद है,

www.dawateislami.net

"नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला अगर जानता कि इस पर क्या गुनाह है तो ज़मीन में धंस जाने को गुज़रने से बेहतर जानता ।" (مُؤَطّا امام مالك حديث ٣٧١ ج١ ص١٥٤ دارالمعرفة بيروت) नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला बेशक गुनाहगार है मगर ख़ुद नमाज़ी की नमाज़ में इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ।

(मुलख़्ख़स अज़ : फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 254, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

"या रसूले ख़ुदा नज़रे करम" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ी के आगे से गुज़रने के बारे में 15 अह़काम

(1) मैदान और बड़ी मस्जिद में नमाज़ी के क़दम से मौज़ए सुजूद तक गुज़रना ना जाइज़ है । **मौज़ए सुजूद** से मुराद येह है कि क़ियाम की ह़ालत में सज्दे की जगह नज़र जमाए तो जितनी दूर तक निगाह फैले वोह मौज़ए सुजूद है । उस के दरमियान से गुज़रना जाइज़ नहीं । (تبيين الحقائق ج١ ص١٦٠) मौज़ए सुजूद का फ़ासिला अन्दाज़न क़दम से ले कर तीन गज़ तक है । (क़ानूने शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल, स. 131, फ़रीद बुक स्टोल मर्कज़ुल औलिया लाहोर) लिहाज़ा मैदान में नमाज़ी के क़दम के तीन गज़ के बा'द से गुज़रने में ह़रज नहीं **(2)** मकान और छोटी मस्जिद में नमाज़ी के आगे अगर सुतरा (या'नी आड़) न हो तो क़दम से दीवारे क़िब्ला तक कहीं से गुज़रना जाइज़ नहीं । (عالمگیری ج١ ص١٠٤) **(3)** नमाज़ी के आगे सुतरा या'नी कोई आड़ हो तो उस सुतरे के बा'द से गुज़रने में कोई ह़रज नहीं । (ایضاً) **(4)** सुतरा कम अज़ कम एक हाथ (या'नी तक़रीबन आधा गज़) ऊंचा और उंगली बराबर मोटा होना चाहिये ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

(مراقی الفلاح معہ حاشیۃ الطحطاوی ص۳٦٥) **(5)** इमाम का सुतरा मुक़्तदी के लिये भी सुतरा है। या'नी इमाम के आगे सुतरा हो तो अगर कोई मुक़्तदी के आगे से गुज़र जाए तो गुनाहगार न होगा। (ردالمحتار ج۲ ص٤٨٤) **(6)** दरख़्त, आदमी और जानवर वग़ैरा का भी सुतरा हो सकता है। (عالمگیری ج۱ ص١٠٤) **(7)** आदमी को इस ह़ालत में सुतरा किया जाए जब कि उस की पीठ नमाज़ी की त़रफ़ हो। (حاشیۃ الطحطاوی ص۳٦٥، ردالمحتار ج۲ ص٤٩٦) (अगर नमाज़ पढ़ने वाले के ऐ़न रुख़ की त़रफ़ किसी ने मुंह किया तो अब कराहत नमाज़ी पर नहीं उस मुंह करने वाले पर है, लिहाज़ा इमाम के सलाम फैरने के बा'द मुड़ कर पीछे देखने में एह़तियात़ ज़रूरी है कि आप के ऐ़न पीछे की जानिब अगर कोई अपनी बक़िय्या नमाज़ पढ़ रहा होगा और उस की त़रफ़ आप अपना मुंह करेंगे तो गुनहगार होंगे) **(8)** एक शख़्स नमाज़ी के आगे से गुज़रना चाहता है अगर दूसरा शख़्स उसी को आड़ बना कर उस के चलने की रफ़्तार के ऐ़न मुत़ाबिक़ उस के साथ ही साथ गुज़र जाए तो पहला शख़्स गुनहगार हुवा और दूसरे के लिये येही पहला शख़्स सुतरा भी बन गया (ردالمحتار ج۲ ص٤٨٣) **(9)** नमाजे़ बा जमाअ़त में अगली सफ़ में जगह होने के बा वुजूद किसी ने पीछे नमाज़ शुरूअ़ कर दी तो आने वाला उस की गरदन फलांगता हुवा जा सकता है कि उस ने अपनी ह़ुरमत अपने आप खोई। (دُرِّ مختار معہ ردالمحتار ج۲ ص٤٨٣) **(10)** अगर कोई इस क़दर ऊंची जगह पर नमाज़ पढ़ रहा है कि गुज़रने वाले के आ'ज़ा नमाज़ी के सामने नहीं हुए तो गुज़रने वाला गुनहगार नहीं। (عالمگیری ج۱ ص١٠٤) **(11)** दो शख़्स नमाज़ी के आगे से गुज़रना चाहते हैं इस का त़रीक़ा येह है कि इन

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

में से एक नमाज़ी के सामने पीठ कर के खड़ा हो जाए। अब इस को आड़ बना कर दूसरा गुज़र जाए। फिर दूसरा पहले की पीठ के पीछे नमाज़ी की त़रफ़ पीठ कर के खड़ा हो जाए। अब पहला गुज़र जाए फिर वोह दूसरा जिधर से आया था उसी त़रफ़ हट जाए। (ایضاً) **(12)** कोई नमाज़ी के आगे से गुज़रना चाहता है तो नमाज़ी को इजाज़त है कि वोह उसे गुज़रने से रोके ख़्वाह "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहे या जह्‌र (या'नी बुलन्द आवाज़ से) क़िराअत करे या हाथ या सर या आंख के इशारे से मन्अ़ करे। इस से ज़ियादा की इजाज़त नहीं। म-सलन कपड़ा पकड़ कर झटक्ना या मारना बल्कि अगर अ़-मले कसीर हो गया तो नमाज़ ही जाती रही। (ردالمحتار، دُرِّ مختار ج۲ ص۴۸۳، مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوی ص۳۶۷) **(13)** तस्बीह़ व इशारा दोनों को बिला ज़रूरत जम्अ़ करना मक्रूह है। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۴۸۶) **(14)** औ़रत के सामने से गुज़रे तो औ़रत तस्फ़ीक़ से मन्अ़ करे या'नी सीधे हाथ की उंग्लियां उल्टे हाथ की पुश्त पर मारे। अगर मर्द ने तस्फ़ीक़ की और औ़रत ने तस्बीह़ कही तो नमाज़ फ़ासिद न हुई मगर ख़िलाफ़े सुन्नत हुवा। (ایضاً) **(15)** त़वाफ़ करने वाले को दौराने त़वाफ़ नमाज़ी के आगे से गुज़रना जाइज़ है। (ردالمحتار ج۲ ص۴۸۲)

सैर होने की ह़ालत में खाना बरस पैदा करता है।

(क़ूतुल क़ुलूब मुतर्जम, जि. 2, स. 589)

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

11 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1426 सि.हि.

www.dawateislami.net

साह़िबे मज़ार की इन्फ़िरादी कोशिश

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में बुज़ुर्गों का बहुत अदब किया जाता है, बल्कि सच्ची बात येह है कि **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इनायत से दा'वते इस्लामी **फ़ैज़ाने औलिया** ही की बदौलत चल रही है। चुनान्चे एक इस्लामी भाई का बयान कर्दा एक **साह़िबे मज़ार** वलिय्युल्लाह عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہ की म-दनी क़ाफ़िले के लिये **इन्फ़िरादी कोशिश** का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ अपने अन्दाज़ में पेश करता हूं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **आ़शिक़ाने रसूल** का एक म-दनी क़ाफ़िला **चक्वाल** (पंजाब पाकिस्तान) से मुज़फ़्फ़रआबाद और अत़राफ़ के दीहातों में सुन्नतों की बहारें लुटाता हुवा एक मक़ाम "अन्वार शरीफ़" वारिद हुवा, वहां से **हाथों हाथ** चार इस्लामी भाई तीन दिन के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ शरीक हुए, उन चारों में "अन्वार शरीफ़" के साह़िबे मज़ार बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़ानवादे के एक फ़रज़न्द भी थे। **म-दनी क़ाफ़िला** नेकी की दा'वत की धूमें मचाता हुवा "गढ़ी दूपट्टा" पहुंचा। जब अन्वार शरीफ़ वालों के तीन दिन मुकम्मल हो गए तो साह़िबे मज़ार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के रिश्तेदार ने कहा, मैं तो वापस नहीं जाऊंगा क्यूं कि आज रात मैं ने अपने "ह़ज़रत" رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देखा कि फ़रमा रहे थे, "बेटा ! पलट कर घर न जाना म-दनी क़ाफ़िले वालों के साथ मज़ीद आगे सफ़र जारी रखो।" **साह़िबे मज़ार** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की **इन्फ़िरादी कोशिश** का येह वाक़िआ़

www.dawateislami.net

सुन कर **म-दनी क़ाफ़िले** में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, सब के ह़ौसलों को मदीने के 12 चांद लग गए और **अन्वार शरीफ़** से आए हुए चारों इस्लामी भाई हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले में मज़ीद आगे सफ़र पर चल पड़े।

औलियाए किराम इन का फ़ैज़ाने आ़म   लूटने सब चलें क़ाफ़िले में चलो
औलिया का करम तुम पे हो ला जरम   मिल के सब चल पड़ें क़ाफ़िले में चलो

मां चारपाई से उठ खड़ी हुई !

बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, **मेरी अम्मीजान** सख़्त बीमारी के सबब चारपाई से उठने तक से मा'ज़ूर थीं और डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। मैं सुना करता था कि **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र करने से दुआ़एं क़बूल होतीं और बीमारियां दूर होती हैं। चुनान्चे मैं ने भी दिल बांधा और **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों का नूर बरसाते आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** के अन्दर क़ाइम "म-दनी तरबिय्यत गाह" में ह़ाज़िर हो कर तीन दिन के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र का इरादा ज़ाहिर किया, इस्लामी भाइयों ने निहायत शफ़क़त के साथ हाथों हाथ लिया, आ़शिक़ाने रसूल की मइय्यत में हमारा **म-दनी क़ाफ़िला** बाबुल इस्लाम सिन्ध के **सह़राए मदीना** के क़रीब एक गोठ में पहुंचा, दौराने सफ़र **आ़शिक़ाने रसूल** की ख़िदमात में दुआ़ की दर-ख़्वास्त करते हुए मैं ने अम्मीजान की तश्वीश नाक ह़ालत बयान की, इस पर उन्हों ने अम्मीजान के लिये ख़ूब दुआ़एं करते हुए मुझे काफ़ी दिलासा दिया, अमीरे

www.dawateislami.net

क़ाफ़िला ने बड़ी नर्मी के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे मज़ीद 30 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये आमादा किया, मैं ने भी निय्यत कर ली । मैं ने अम्मीजान की सिह़्ह़त याबी के लिये ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ़एं कीं, तीन दिन के इस **म-दनी क़ाफ़िले** की **तीसरी** रात मुझे एक रोशन चेहरे वाले **बुज़ुर्ग** की ज़ियारत हुई, उन्हों ने फ़रमाया, "अपनी अम्मीजान की फ़िक्र मत करो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वोह सिह़्ह़त याब हो जाएंगी ।" तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** से फ़ारिग़ हो कर मैं ने घर आ कर **दरवाज़े पर दस्तक दी, दरवाज़ा खुला तो मैं ह़ैरत से खड़े का खड़ा रह गया, क्यूं कि मेरी वोह बीमार अम्मीजान जो कि चारपाई से उठ तक नहीं सकती थीं उन्हों ने ख़ुद अपने पाउं पर चल कर दरवाज़ा खोला था !** मैं ने फ़र्ते मसर्रत से मां के क़दम चूमे और म-दनी क़ाफ़िले में देखा हुवा ख़्वाब सुनाया । फिर मां से इजाज़त ले कर मज़ीद 30 दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हो गया ।

मां जो बीमार हो	हो क़र्ज़ का बार हो	रन्जो ग़म मत करें	क़ाफ़िले में चलो
रब के दर पर झुकें	इल्तिजाएं करें	बाबे रह़मत खुलें	क़ाफ़िले में चलो
दिल की कालक धुले	मरज़े इस्यां टले	आओ सब चल पड़ें	क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوْا اِلَی اللہِ ! اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفلِ مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللہ

بقیع

मुसाफ़िर की नमाज़

(ह़-नफ़ी)

इस रिसाले में......

- उ़म्रह के वीज़े पर ह़ज के लिये रुकना कैसा ?
- मुसाफ़िर बनने के लिये शर्त़
- सेठ और नोकर का इकट्ठा सफ़र
- चलती गाड़ी में नफ़्ल के 4 म-दनी फूल
- क्या मुसाफ़िर को सुन्नतें मुआ़फ़ हैं ?
- अ़रब मुमालिक में वीज़े पर रहने वालों के लिये मस्अला

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

मुसाफ़िर की नमाज़ (ह़-नफ़ी)

बराए करम ! येह रिसाला (17 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के फ़वाइद ख़ुद ही देख लेंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन **यौमे जुमा'रात** और **शबे जुमुआ़** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है ।

(کنزالعمال ج۱ ص۲۵۰ حدیث ۲۱۷۴ دارالکتب العلمیہ بیروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला **सू-रतुन्निसाअ** की आयत नम्बर 101 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اِذَا ضَرَبْتُمْ فِی الْاَرْضِ فَلَیْسَ عَلَیْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖۗ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ یَّفْتِنَكُمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِیْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِیْنًا ﴿۱۰۱﴾ (پ ۵ النساء ۱۰۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर गुनाह नहीं कि बा'ज़ नमाज़ें क़स्र से पढ़ो । अगर तुम्हें अन्देशा हो कि काफ़िर तुम्हें ईज़ा देंगे, बेशक कुफ़्फ़ार तुम्हारे खुले दुश्मन हैं ।

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं, ख़ौफ़े कुफ़्फ़ार क़स्र के लिये शर्त़ नहीं, ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ की, कि हम तो अम्न में हैं, फिर हम क्यूं क़स्र करते हैं ? फ़रमाया, इस का मुझे भी तअ़ज्जुब हुवा था तो मैं ने सरकारे **मदीनए मुनव्वरह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दर्याफ़्त किया । हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे लिये येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से स-दक़ा है तुम उस का स-दक़ा क़बूल करो । (صحیح مسلم ج۱ ص۲۳۱)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं, नमाज़ दो रक्अ़त फ़र्ज़ की गई फिर जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत फ़रमाई तो चार फ़र्ज़ की गई और सफ़र की नमाज़ उसी पहले फ़र्ज़ पर छोड़ी गई ।

(صحیح بخاری ج۱ ص۵۶۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े सफ़र की दो रक्अ़तें मुक़र्रर फ़रमाईं और येह पूरी है कम नहीं या'नी अगर्चे ब ज़ाहिर दो रक्अ़तें कम हो गईं मगर सवाब में दो ही चार के बराबर हैं । (سنن ابن ماجہ ج۲ ص۵۹ حدیث ۱۱۹۴ دارالمعرفۃ بیروت)

www.dawateislami.net

शर-ई सफ़र की मसाफ़त

शरअ़न मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो साढ़े 57 मील (तक़रीबन 92 किलो मीटर) के फ़ासिले तक जाने के इरादे से अपने मक़ामे इक़ामत म-सलन शहर या गाउं से बाहर हो गया। (मुलख़्ख़सन फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 8, स. 270, रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

मुसाफ़िर कब होगा ?

मह़्ज़ निय्यते सफ़र से मुसाफ़िर न होगा बल्कि मुसाफ़िर का हुक्म उस वक़्त है कि बस्ती की आबादी से बाहर हो जाए शहर में है तो शहर से, गाउं में है तो गाउं से और शहर वाले के लिये येह भी ज़रूरी है कि शहर के आस पास जो आबादी शहर से **मुत्तसिल** है उस से भी बाहर आ जाए। (دُرِّ مختار، ردالمحتار ج۲ ص۵۹۹)

आबादी ख़त्म होने का मत़लब

आबादी से बाहर होने से मुराद येह है कि जिधर जा रहा है उस त़रफ़ आबादी ख़त्म हो जाए अगर्चे उस की मह़ाज़ात में (या'नी बराबर) दूसरी त़रफ़ ख़त्म न हुई हो। (غنیۃ المستملی، ص۵۳۶)

फ़िनाए शहर की ता'रीफ़

फ़िनाए शहर से जो गाउं **मुत्तसिल** है शहर वाले के लिये उस गाउं से बाहर हो जाना ज़रूरी नहीं यूंही शहर के **मुत्तसिल** बाग़ हों अगर्चे उन के निगहबान और काम करने वाले उन बाग़ात ही में रहते हों, उन बाग़ों से निकल जाना ज़रूरी नहीं। (رَدُّالْمُحتَار ج۲ ص ۵۹۹) **फ़िनाए** शहर से बाहर जो जगह शहर के कामों के लिये हो म-सलन क़ब्रिस्तान, घोड़दौड़

www.dawateislami.net

का मैदान, कूड़ा फेंकने की जगह अगर येह शह्र से **मुत्तसिल** हों तो इस से बाहर हो जाना ज़रूरी है। और अगर शह्र व फ़िना के दरमियान फ़ासिला हो तो नहीं। (ایضاً ص ٦٠٠)

मुसाफ़िर बनने के लिये शर्त़

सफ़र के लिये येह भी ज़रूरी है कि जहां से चला वहां से तीन दिन की राह (या'नी तक़रीबन 92 किलो मीटर) का इरादा हो और अगर दो दिन की राह (या'नी 92 किलो मीटर से कम) के इरादे से निकला वहां पहुंच कर दूसरी जगह का इरादा हुवा कि वोह भी तीन दिन (92 किलो मीटर) से कम का रास्ता है यूं ही सारी दुन्या घूम कर आए मुसाफ़िर नहीं (غنیہ، در مختار ج٢ ص٦٠٩) येह भी शर्त़ है कि तीन दिन की राह के सफ़र का **मुत्तसिल** इरादा हो, अगर यूं इरादा किया कि म-सलन दो दिन की राह पर पहुंच कर कुछ काम करना है वोह कर के फिर एक दिन की राह जाऊंगा तो येह तीन दिन की राह का **मुत्तसिल** इरादा न हुवा मुसाफ़िर न हुवा।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 77, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

वत़न की क़िस्में

वत़न की दो क़िस्में हैं **(1) वत़ने अस्ली :** या'नी वोह जगह जहां इस की पैदाइश हुई है या इस के घर के लोग वहां रहते हैं या वहां सुकूनत कर ली और येह इरादा है कि यहां से न जाएगा। **(2) वत़ने इक़ामत :** या'नी वोह जगह कि मुसाफ़िर ने पन्दरह दिन या इस से ज़ियादा ठहरने का वहां इरादा किया हो। (عالمگیری ج١ ص١٤٥)

www.dawateislami.net

वत़ने इक़ामत बात़िल होने की सूरतें

वत़ने इक़ामत दूसरे वत़ने इक़ामत को बात़िल कर देता है या'नी एक जगह पन्दरह दिन के इरादे से ठहरा फिर दूसरी जगह इतने ही दिन के इरादे से ठहरा तो पहली जगह अब वत़न न रही। दोनों के दरमियान मसाफ़ते सफ़र हो या न हो। यूं ही वत़ने इक़ामत वत़ने अस्ली और सफ़र से बात़िल हो जाता है। (عالمگیری ج۱ ص۱۴۵)

सफ़र के दो रास्ते

किसी जगह जाने के दो रास्ते हैं एक से मसाफ़ते सफ़र है दूसरे से नहीं तो जिस रास्ते से येह जाएगा उस का ए'तिबार है, नज़्दीक वाले रास्ते से गया तो मुसाफ़िर नहीं और दूर वाले से गया तो है अगर्चे इस रास्ते के इख़्तियार करने में इस की कोई ग–रज़े सह़ीह़ न हो।

(عالمگیری ج۱ ص۱۳۸، دُرِّ مختار مع ردالمحتار ج۲ ص۶۰۳)

मुसाफ़िर कब तक मुसाफ़िर है

मुसाफ़िर उस वक़्त तक मुसाफ़िर है जब तक अपनी बस्ती में पहुंच न जाए या आबादी में पूरे 15 दिन ठहरने की निय्यत न कर ले येह उस वक़्त है जब पूरे तीन दिन की राह (या'नी तक़रीबन 92 किलो मीटर) चल चुका हो अगर तीन मन्ज़िल (या'नी तक़रीबन 92 किलो मीटर) पहुंचने से पेशतर वापसी का इरादा कर लिया तो मुसाफ़िर न रहा अगर्चे जंगल में हो। (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۶۰۴)

सफ़र ना जाइज़ हो तो ?

सफ़र जाइज़ काम के लिये हो या ना जाइज़ काम के लिये बहर

www.dawateislami.net

ह़ाल मुसाफ़िर के अह़काम जारी होंगे। (عالمگیری ج۱ ص۱۳۹)

सेठ और नोकर का इकट्ठा सफ़र

माहाना या सालाना इजारे वाला नोकर अगर अपने सेठ के साथ सफ़र करे तो सेठ के ताबेअ़ है, फ़रमां बरदार बेटा वालिद के ताबेअ़ है और वोह शागिर्द जिस को उस्ताद से खाना मिलता है वोह उस्ताद के ताबेअ़ है या'नी जो निय्यत **मत्बूअ़** (या'नी जिस के ताबेअ़ है) की है वोही ताबेअ़ की मानी जाएगी। ताबेअ़ को चाहिये कि **मत्बूअ़** को सुवाल करे वोह जो जवाब दे उस के ब मूजिब अ़मल करे। अगर उस ने कुछ भी जवाब न दिया तो देखे कि वोह (या'नी मत्बूअ़) मुक़ीम है या मुसाफ़िर, अगर मुक़ीम है तो अपने आप को भी मुक़ीम समझे और अगर मुसाफ़िर है तो मुसाफ़िर। और येह भी मा'लूम नहीं तो तीन दिन की राह (या'नी तक़रीबन 92 किलो मीटर) का सफ़र तै़ करने के बा'द क़स्र करे, इस से पहले पूरी पढ़े और अगर सुवाल न कर सका तो वोही हुक्म है कि सुवाल किया और कुछ जवाब न मिला। (مُلَخَّصاً ردالمحتار ج۲ ص۶۱۶،۶۱۷)

काम हो गया तो चला जाऊंगा !

मुसाफ़िर किसी काम के लिये या अह़बाब के इन्तिज़ार में दो चार या तेरह चौदह दिन की निय्यत से ठहरा, या येह इरादा है कि काम हो जाएगा तो चला जाएगा, दोनों सूरतों में अगर आज कल आज कल करते बरसों गुज़र जाएं जब भी मुसाफ़िर ही है, नमाज़ क़स्र पढ़े।

(عالمگیری ج۱ ص۱۳۹)

www.dawateislami.net

औ़रत के सफ़र का मस्अला

औ़रत को बिग़ैर मह़रम के तीन दिन (तक़रीबन 92 किलो मीटर) या ज़ियादा की राह जाना जाइज़ नहीं। ना बालिग़ बच्चा या मा'तूह (या'नी नीम पागल) के साथ भी सफ़र नहीं कर सकती, हमराही में बालिग़ मह़रम या शोहर का होना ज़रूरी है। (عالمگیری ج۱ ص۱٤۲) **औ़रत,** मुराहिक़ (क़रीबुल बुलूग़ लड़का) मह़रम (क़ाबिले इत़्मीनान) के साथ सफ़र कर सकती है। "मुराहिक़ बालिग़ के हुक्म में है।" (فتاوٰی عالمگیری ج۱ ص۲۱۹) मह़रम के लिये ज़रूरी है कि सख़्त फ़ासिक़, बेबाक, ग़ैर मामून न हो।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 84, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

औ़रत का सुसराल व मयका

औ़रत बियाह कर सुसराल गई और यहीं रहने सहने लगी तो मयका (या'नी औ़रत के वालिदैन का घर) इस के लिये **वत़ने अस्ली** न रहा या'नी अगर सुसराल तीन मन्ज़िल (तक़रीबन 92 किलो मीटर) पर है वहां से मयके आई और पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत न की तो क़स्र पढ़े और अगर मयके रहना नहीं छोड़ा बल्कि सुसराल आरिज़ी त़ौर पर गई तो मयके आते ही सफ़र ख़त्म हो गया नमाज़ पूरी पढ़े।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 84, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

अ़रब मुमालिक में वीज़ा पर रहने वालों का मस्अला

आज कल कारोबार वग़ैरा के लिये कई लोग बाल बच्चों समेत अपने मुल्क से दूसरे मुल्क मुन्तक़िल हो जाते हैं। उन के पास मख़्सूस

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

मुद्दत का VISA होता है। (म–सलन अ़रब अमारात में ज़ियादा से ज़ियादा तीन साल का रिहाइशी वीज़ा मिलता है) येह वीज़ा आ़रिज़ी होता है और मख़्सूस रक़म अदा कर के हर तीन साल के आख़िर में इस की तज्दीद करवानी पड़ती है। **चूंकि वीज़ा मह़दूद मुद्दत के लिये मिलता है लिहाज़ा बाल बच्चे भी अगर्चे साथ हों इस की अमारात में मुस्तक़िल क़ियाम की निय्यत बेकार है और इस त़रह़ ख़्वाह कोई 100 साल तक यहां रहे अमारात उस का वत़ने अस्ली नहीं हो सकता।** येह जब भी सफ़र से लौटेगा और क़ियाम करना चाहे तो इक़ामत की निय्यत करनी होगी। म–सलन **दुबई** में रहता है और सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **दा'वते इस्लामी** के **म–दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ तक़रीबन 150 किलो मीटर दूर वाक़ेअ़ अमारात के **दारुल ख़िलाफ़ा अबू ज़हबी** का इस ने सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार किया। अब दोबारा **दुबई** में आ कर अगर इस को मुक़ीम होना है तो 15 दिन या इस से ज़ाइद क़ियाम की निय्यत करनी होगी वरना मुसाफ़िर के अह़काम जारी होंगे। हां अगर ज़ाहिरे ह़ाल (या'नी UNDER STOOD) येह है कि अब 15 दिन या इस से ज़ियादा अ़र्सा येह **दुबई** में ही गुज़ारेगा तो मुक़ीम हो गया। अगर इस का कारोबार ही इस त़रह़ का है कि मुकम्मल 15 दिन रात येह **दुबई** में नहीं रहता, वक़्तन फ़ वक़्तन शर–ई सफ़र करता है तो इस त़रह़ अगर्चे बरसों अपने बाल बच्चों के पास **दुबई** आना जाना रहे येह मुसाफ़िर ही रहेगा इस को नमाज़

www.dawateislami.net

क़स्र करना होगी। अपने शह्‌र के बाहर दूर दूर तक माल सप्लाय करने वाले और शह्‌र ब शह्‌र, मुल्क ब मुल्क फैरे लगाने वाले और ड्राइवर साह़िबान वग़ैरा इन अह़काम को ज़ेह्‌न में रखें।

ज़ाइरे मदीना के लिये ज़रूरी मस्अला

जिस ने इक़ामत की निय्यत की मगर उस की ह़ालत बताती है कि पन्दरह दिन न ठहरेगा तो निय्यत सह़ीह़ नहीं म-सलन **ह़ज** करने गया और **ज़िल ह़िज्जतिल ह़राम** का महीना शुरूअ़ हो जाने के बा वुजूद पन्दरह दिन **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** में ठहरने की निय्यत की तो येह निय्यत बेकार है कि जब ह़ज का इरादा किया है तो (15 दिन इस को मिलेंगे ही नहीं कि) 8 ज़िल ह़िज्जतिल ह़राम **मिना शरीफ़** (और 9 को) **अ़-रफ़ात शरीफ़** को ज़रूर जाएगा फिर इतने दिनों तक (या'नी 15 दिन मुसल्सल) **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** में क्यूंकर ठहर सकता है ? **मिना शरीफ़** से वापस हो कर निय्यत करे तो सह़ीह़ है। (دُرِّ مختار ج٢ ص٧٢٩، عالمگیری ج١ ص١٤٠) जब कि वाक़ेई 15 या ज़ियादा दिन मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ठहर सकता हो, अगर ज़न्ने ग़ालिब हो कि 15 दिन के अन्दर अन्दर **मदीनए मुनव्वरह** या वत़न के लिये रवाना हो जाएगा तो अब भी मुसाफ़िर है।

उ़म्रह के वीज़े पर ह़ज के लिये रुकना कैसा ?

उ़म्रह के वीज़े पर जा कर ग़ैर क़ानूनी त़ौर पर **ह़ज** के लिये रुकने या दुन्या के किसी भी मुल्क में VISA की मुद्दत पूरी होने के बा'द ग़ैर क़ानूनी रहने की जिन की निय्यत हो वोह वीज़े की मुद्दत ख़त्म होते वक़्त

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

जिस शह्र या गाउं में मुक़ीम हों वहां जब तक रहेंगे उन के लिये मुक़ीम ही के अह्काम होंगे। अगर्चे बरसों पड़े रहें मुक़ीम ही रहेंगे। अलबत्ता एक बार भी अगर 92 किलो मीटर या इस से ज़ियादा फ़ासिले के सफ़र के इरादे से उस शह्र या गाउं से चले तो अपनी आबादी से बाहर निकलते ही मुसाफ़िर हो गए और अब उन की इक़ामत की निय्यत बेकार है। म-सलन कोई शख़्स पाकिस्तान से उ़म्रह के VISA पर **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا गया, VISA की मुद्दत ख़त्म होते वक़्त भी मक्का शरीफ़ ही में मुक़ीम है तो उस पर मुक़ीम के अह्काम हैं। अब अगर म-सलन वहां से मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا आ गया तो चाहे बरसों ग़ैर क़ानूनी पड़ा रहे, मगर **मुसाफ़िर** ही है, यहां तक कि अगर दोबारा **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا आ जाए फिर भी मुसाफ़िर रहेगा, इस को नमाज़ **क़स्र** ही अदा करनी होगी। हां अगर दोबारा VISA मिल गया तो इक़ामत की निय्यत की जा सकती है। याद रहे ! जिस क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने पर ज़िल्लत, रिश्वत और झूट वग़ैरा आफ़ात में पड़ने का अन्देशा हो उस क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी जाइज़ नहीं। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُالرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : मुबाह़ (या'नी जाइज़) सूरतों में से बा'ज़ (सूरतें) क़ानूनी तौर पर जुर्म होती हैं इन में मुलव्वस होना (या'नी ऐसे क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करना) अपनी ज़ात को अज़िय्यत व ज़िल्लत के लिये पेश करना है और वोह ना जाइज़

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

है। (फ़तावा र-ज़विय्या जि. 17, स. 370) लिहाज़ा बिग़ैर VISA के दुन्या के किसी भी मुल्क में रहना या ह़ज के लिये रुकना जाइज़ नहीं । **ग़ैर क़ानूनी ज़राएअ़ से ह़ज के लिये रुकने में काम्याबी ह़ासिल करने को (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का करम कहना सख़्त बेबाकी है ।**

क़स्र वाजिब है

मुसाफ़िर पर वाजिब है कि नमाज़ में क़स्र करे या'नी चार रक्अ़त वाले फ़र्ज़ को दो पढ़े इस के ह़क़ में दो ही रक्अ़तें पूरी नमाज़ है और क़स्दन चार पढ़ीं और दो पर क़ा'दह किया तो फ़र्ज़ अदा हो गए और पिछली दो रक्अ़तें नफ़्ल हो गईं मगर गुनहगार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है कि वाजिब तर्क किया लिहाज़ा तौबा करे और दो रक्अ़त पर क़ा'दह न किया तो फ़र्ज़ अदा न हुए और वोह नमाज़ नफ़्ल हो गई हां अगर तीसरी रक्अ़त का सज्दा करने से पेशतर इक़ामत की निय्यत कर ली तो फ़र्ज़ बात़िल न होंगे मगर क़ियाम व रुकूअ़ का इआ़दा करना होगा और तीसरी के सज्दे में निय्यत की तो अब फ़र्ज़ जाते रहे यूंही अगर पहली दो या एक में क़िराअत न की नमाज़ फ़ासिद हो गई ।

(عالمگیری ج۱ ص۱۳۹)

क़स्र के बदले चार की निय्यत बांध ली तो....?

मुसाफ़िर ने क़स्र के बजाए चार रक्अ़त फ़र्ज़ की निय्यत बांध ली फिर याद आने पर दो पर सलाम फैर दिया तो नमाज़ हो जाएगी ।

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ मुक़ीम ने चार रक्अ़त फ़र्ज़ की जगह दो रक्अ़त फ़र्ज़ की निय्यत की और चार पर सलाम फैरा तो उस की भी नमाज़ हो गई । फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं ,"निय्यते नमाज़ में ता'दादे रक्आ़त की ता'यीन या'नी तक़र्रुर करना ज़रूरी नहीं क्यूं कि येह ज़िम्नन ह़ासिल है । निय्यत में ता'दाद मुअ़य्यन करने में ख़त़ा नुक़्सान देह नहीं ।" (دُرِّ مختار معه ردالمحتار ج۲ ص۹۷، ۹۸)

मुसाफ़िर इमाम और मुक़ीम मुक़्तदी

इक़्तिदा दुरुस्त होने के लिये एक शर्त़ येह भी है कि इमाम का मुक़ीम या मुसाफ़िर होना मा'लूम हो ख़्वाह नमाज़ शुरूअ़ करते वक़्त मा'लूम हुवा या बा'द में, लिहाज़ा इमाम को चाहिये कि शुरूअ़ करते वक़्त अपना मुसाफ़िर होना ज़ाहिर कर दे और शुरूअ़ में न कहा तो बा'दे नमाज़ कह दे कि "मुक़ीम इस्लामी भाई अपनी नमाज़ें पूरी कर लें मैं मुसाफ़िर हूं।" (دُرِّ مختار ج۲ ص۶۱۱، ۶۱۲) और शुरूअ़ में ए'लान कर चुका है जब भी बा'द में कह दे कि जो लोग उस वक़्त मौजूद न थे उन्हें भी मा'लूम हो जाए। अगर इमाम का मुसाफ़िर होना ज़ाहिर था तो नमाज़ के बा'द वाला येह ए'लान मुस्तह़ब है। (دُرِّ مختار ج۲ ص۷۳۵، ۷۳۶ دارالمعرفة بيروت)

मुक़ीम मुक़्तदी और बक़िय्या दो रक्अ़तें

क़स्र वाली नमाज़ में मुसाफ़िर इमाम के सलाम फैरने के बा'द मुक़ीम मुक़्तदी जब अपनी बक़िय्या नमाज़ अदा करे तो फ़र्ज़ की तीसरी और चौथी रक्अ़त में **सू-रतुल फ़ातिह़ा** पढ़ने के बजाए अन्दाज़न उतनी

www.dawateislami.net

देर चुप खड़ा रहे।

(मुलख़्ख़सन बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 82, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

क्या मुसाफ़िर को सुन्नतें मुआ़फ़ हैं ?

सुन्नतों में क़स्र नहीं बल्कि पूरी पढ़ी जाएंगी, ख़ौफ़ और रवा रवी (या'नी घबराहट) की ह़ालत में सुन्नतें मुआ़फ़ हैं और अम्न की ह़ालत में पढ़ी जाएंगी। (عالمگیری ج۱ ص۱۳۹)

"नमाज़" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से चलती गाड़ी में नफ़्ल पढ़ने के 4 म-दनी फूल

1 **बैरूने** शह्र (बैरूने शह्र से मुराद वोह जगह है जहां से मुसाफ़िर पर क़स्र करना वाजिब होता है) सुवारी पर (म-सलन चलती कार, बस, वेगन में भी नफ़्ल पढ़ सकता है और इस सूरत में इस्तिक़्बाले क़िब्ला या'नी क़िब्ला रुख़ होना) शर्त़ नहीं बल्कि सुवारी (या गाड़ी) जिस रुख़ को जा रही हो उधर ही मुंह हो और अगर उधर मुंह न हो तो नमाज़ जाइज़ नहीं और शुरूअ़ करते वक़्त भी क़िब्ले की त़रफ़ मुंह होना शर्त़ नहीं बल्कि सुवारी (या गाड़ी) जिधर जा रही है उसी त़रफ़ मुंह हो और रुकूअ़ व सुजूद इशारे से करे और (ज़रूरी है कि) सज्दे का इशारा ब निस्बत रुकूअ़ के पस्त हो। (या'नी रुकूअ़ के लिये जिस क़दर झुका, सज्दे के लिये उस से ज़ियादा झुके) (دُرِّ مختار معہ ردالمحتار ج۲ ص۴۸۷) **चलती** ट्रेन वग़ैरा ऐसी सुवारी

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

जिस में जगह मिल सकती है उस में क़िब्ला रुख़ हो कर क़ाइदे के मुत़ाबिक़ नवाफ़िल पढ़ने होंगे ।

2 **गाउं** में रहने वाला जब गाउं से बाहर हुवा तो सुवारी (गाड़ी) पर नफ़्ल पढ़ सकता है । (ردالمحتار ج۲ ص۴۸۶)

3 **बैरूने** शह्र सुवारी पर नमाज़ शुरूअ़ की थी और पढ़ते पढ़ते शह्र में दाख़िल हो गया तो जब तक घर न पहुंचा सुवारी पर पूरी कर सकता है । (دُرِّ مختار ج۲ ص۴۸۷، ۴۸۸)

4 **चलती** गाड़ी में बिला उ़ज़्रे शर-ई फ़र्ज़ व सुन्नते फ़ज्र व तमाम वाजिबात जैसे वित्र व नज़्र और वोह नफ़्ल जिस को तोड़ दिया हो और सज्दए तिलावत जब कि आयते सज्दा ज़मीन पर तिलावत की हो अदा नहीं कर सकता और अगर उ़ज़्र की वज्ह से हो तो इन सब में शर्त़ येह है कि अगर मुम्किन हो तो क़िब्ला रू खड़ा हो कर अदा करे वरना जैसे भी मुम्किन हो । (फिर ट्रेन से उतर कर इआ़दा करे) (دُرِّ مختار ج۲ ص۴۸۸)

मुसाफ़िर तीसरी रक्अ़त के लिये खड़ा हो जाए तो...?

अगर मुसाफ़िर क़स्र वाली नमाज़ की तीसरी रक्अ़त शुरूअ़ कर दे तो इस की दो सूरतें हैं **(1)** ब क़दरे **तशह्हुद क़ा'दए** अख़िरह कर चुका था तो जब तक तीसरी रक्अ़त का सज्दा न किया हो लौट आए और सज्दए सह्व कर के सलाम फैर दे अगर न लौटे और खड़े खड़े सलाम फैर दे तो भी नमाज़ हो जाएगी मगर सुन्नत तर्क हुई । अगर

www.dawateislami.net

तीसरी रक्अ़त का सज्दा कर लिया तो एक और रक्अ़त मिला कर सज्दए सह्व कर के नमाज़ मुकम्मल करे येह आख़िरी दो रक्अ़तें नफ़्ल शुमार होंगी **(2)** क़ा'दए अख़ीरा किये बिग़ैर खड़ा हो गया था तो जब तक तीसरी रक्अ़त का सज्दा न किया हो लौट आए और सज्दए सह्व कर के सलाम फैर दे अगर तीसरी रक्अ़त का सज्दा कर लिया फ़र्ज़ बात़िल हो गए अब एक और रक्अ़त मिला कर सज्दए सह्व कर के नमाज़ मुकम्मल करे चारों रक्अ़तें नफ़्ल शुमार होंगी। (दो रक्अ़त फ़र्ज़ अदा करने अभी ज़िम्मे बाक़ी हैं) (ماخوذ از دُرِّ مختار معہ ردالمحتار ج۲ ص ۵۵۰)

सफ़र में क़ज़ा नमाज़ें

ह़ालते इक़ामत में होने वाली क़ज़ा नमाज़ें सफ़र में भी पूरी पढ़नी होंगी और सफ़र में क़ज़ा होने वाली क़स्र वाली नमाज़ें मुक़ीम होने के बा'द भी क़स्र ही पढ़ी जाएंगी।

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब
27 र-जबुल मुरज्जब 1426 हि.

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

हिफ़्ज़ भुला देने का अ़ज़ाब

यक़ीनन हिफ़्ज़े कुरआने करीम कारे सवाबे अ़ज़ीम है, मगर याद रहे हिफ़्ज़ करना आसान, मगर उ़म्र भर इस को याद रखना दुश्वार है। हुफ़्फ़ाज़ व हाफ़िज़ात को चाहिये कि रोज़ाना कम अज़ कम एक पारह लाज़िमन तिलावत कर लिया करें। जो हुफ़्फ़ाज़ र-मज़ानुल मुबारक की आमद से थोड़ा अ़र्सा क़ब्ल फ़क़त मुसल्ला सुनाने के लिये मन्ज़िल पक्की करते हैं और इस के इलावा مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सारा साल ग़फ़्लत के सबब कई आयात भुलाए रहते हैं, वोह बार बार पढ़ें और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ें। नीज़ जिस ने एक आयत भी भुलाई है वोह दोबारा याद कर ले और भुलाने का जो गुनाह हुवा उस से सच्ची तौबा करे।

1 **जो** कुरआनी आयात याद करने के बा'द भुला देगा बरोज़े क़ियामत **अन्धा** उठाया जाएगा। (ماخذ:پ۱۶طٰہٰ۱۲۵،۱۲۶)

फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

2 **मेरी** उम्मत के सवाब मेरे हुज़ूर पेश किये गए यहां तक कि मैं ने उन में वोह तिन्का भी पाया जिसे आदमी मस्जिद से निकालता है और मेरी उम्मत के गुनाह मेरे हुज़ूर पेश किये गए मैं ने इस से **बड़ा गुनाह** न देखा कि किसी आदमी को कुरआन की एक सूरत या एक आयत याद हो फिर वोह उसे भुला दे।

(جامع ترمذی حدیث ۲۹۱۶)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा–फ़ह़ा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

3 **जो** शख़्स़ क़ुरआन पढ़े फिर उसे भुला दे तो क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला से **कोढ़ी** हो कर मिले। (ابو داوٗد حدیث ۱۴۷۴)

4 **क़ियामत** के दिन मेरी उम्मत को जिस **गुनाह** का पूरा बदला दिया जाएगा वोह येह है कि उन में से किसी को क़ुरआने पाक की कोई सूरत याद थी फिर उस ने इसे भुला दिया।

(کنزُالعُمّال حدیث ۲۸۴۶)

5 **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, ''उस से ज़ियादा नादान कौन है जिसे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ऐसी हिम्मत बख़्शे और वोह इसे अपने हाथ से खो दे अगर क़द्र इस (ह़िफ़्ज़े क़ुरआने पाक) की जानता और जो सवाब और द–रजात इस पर मौऊ़द हैं (या'नी जिन का वा'दा किया गया है) उन से वाक़िफ़ होता तो इसे जानो दिल से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखता।'' मज़ीद फ़रमाते हैं, ''जहां तक हो सके इस के पढ़ाने और ह़िफ़्ज़ कराने और ख़ुद याद रखने में कोशिश करे ताकि वोह सवाब जो इस पर मौऊ़द (या'नी वा'दा किये गए) हैं ह़ासिल हों और बरोज़े क़ियामत **अन्धा कोढ़ी** उठने से नजात पाए। (फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 23, स. 645, 647)

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفلِ مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللہ

بقیع

क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा

(ह़-नफ़ी)

इस रिसाले में......

क़ब्र में आग के शो'ले

तौबा के तीन रुक्न हैं

हुक़ूक़े आ़म्मा के एह़सास की ह़िकायत

जुमुअ़तुल वदाअ़ में क़ज़ाए उ़म्री

क़ज़ाए उ़म्री का त़रीक़ा

नमाज़ का फ़िदया

ज़कात का शर-ई ह़ीला

कान छेदने का रवाज कब से पड़ा ?

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

(ह़-नफ़ी)

क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा

शैत़ान लाख रोके येह रिसाला (25 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें ख़ुद ही देख लेंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर 80 बार दुरूदे पाक पढ़े उस के 80 साल के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे ।

(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۲ص۴۰۸ حدیث ۳۸۱۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पारह 30 **सू-रतुल माऊ़न** की आयत नम्बर 4 और 5 में इर्शाद होता है :

فَوَیْلٌ لِّلْمُصَلِّیْنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴿۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं ।

मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत**, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان **सू-रतुल माऊ़न** की आयत नम्बर 5 के तह़्त

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : नमाज़ से भूलने की चन्द सूरतें हैं : कभी न पढ़ना, **पाबन्दी से न पढ़ना**, सह़ीह़ वक़्त पर न पढ़ना, नमाज़ सह़ीह़ त़रीक़े से अदा न करना, शौक़ से न पढ़ना, समझ बूझ कर अदा न करना, कसल व सुस्ती, बे परवाई से पढ़ना। (नूरुल इरफ़ान, स. 958)

जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादी

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जहन्नम में **वैल** नामी एक ख़ौफ़नाक वादी है जिस की सख़्ती से ख़ुद जहन्नम भी पनाह मांगता है। जान बूझ कर नमाज़ **क़ज़ा** करने वाले उस के मुस्तह़िक़ हैं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 347 मुलख़्ख़सन)

पहाड़ गरमी से पिघल जाएं

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद ज़-हबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कहा गया है कि जहन्नम में एक **वादी** है जिस का नाम **वैल** है, अगर उस में दुन्या के **पहाड़** डाले जाएं तो वोह भी उस की **गरमी** से पिघल जाएं और येह उन लोगों का ठिकाना है जो **नमाज़** में सुस्ती करते और वक़्त के बा'द **क़ज़ा** कर के पढ़ते हैं मगर येह कि वोह अपनी कोताही पर नादिम हों और बारगाहे ख़ुदा वन्दी में तौबा करें। **(کتابُ الکبائِر ص۱۹)**

सर कुचलने की सज़ा

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : आज

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

रात दो शख़्स (या'नी जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام और मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام) मेरे पास आए और मुझे अर्ज़े मुक़द्दसा में ले आए। मैं ने देखा कि **एक शख़्स** लैटा है और उस के सिरहाने एक शख़्स **पथ्थर** उठाए खड़ा है और पै दर पै **पथ्थर** से उस का सर कुचल रहा है, हर बार **कुचलने** के बा'द सर फिर ठीक हो जाता है। मैं ने फ़िरिश्तों से कहा : سُبْحٰنَ الله येह कौन है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : आगे तशरीफ़ ले चलिये (मज़ीद मनाज़िर दिखाने के बा'द) फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की, कि : पहला शख़्स जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा **येह वोह था जिस ने कुरआन पढ़ा फिर उस को छोड़ दिया था और फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाता था इस के साथ येह बरताव क़ियामत तक होगा।** (بُخاری ج۱ ص٤٢٥،٤٦٨ حدیث١٣٨٦،٧٠٤٧ مُلَخّصاً)

हज़ारों बरस के अ़ज़ाब का ह़क़दार

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 9 सफ़ह़ा 158 ता 159 पर फ़रमाते हैं : जिस ने क़स्दन एक वक़्त की (नमाज़) छोड़ी **हज़ारों बरस जहन्नम** में रहने का मुस्तह़िक़ हुवा, जब तक तौबा न करे और उस की क़ज़ा न कर ले, मुसल्मान अगर उस की ज़िन्दगी में उसे यक-लख़्त छोड़ दें उस से बात न करें, उस के पास न बैठें, तो ज़रूर वोह इस का सज़ावार है। **अल्लाह तआ़ला** फ़रमाता है :

وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾
(پ ۷، الانعام:٦٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

क़ब्र में आग के शो 'ले

एक शख़्स की बहन फ़ौत हो गई। जब उसे दफ़्न कर के लौटा तो याद आया कि रक़म की थेली **क़ब्र** में गिर गई है चुनान्चे क़ब्रिस्तान आ कर थेली निकालने के लिये उस ने अपनी बहन की **क़ब्र** खोद डाली ! **एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र उस के सामने था, उस ने देखा कि बहन की क़ब्र में आग के शो 'ले भड़क रहे हैं !** चुनान्चे उस ने जूं तूं **क़ब्र** पर मिट्टी डाली और सदमे से चूर चूर रोता हुवा मां के पास आया और पूछा : प्यारी अम्मीजान ! मेरी बहन के **आ 'माल** कैसे थे ? वोह बोली : बेटा क्यूं पूछते हो ? अ़र्ज़ की : "मैं ने अपनी बहन की **क़ब्र** में **आग के शो 'ले** भड़क्ते देखे हैं।" येह सुन कर मां भी रोने लगी और कहा : "अफ़्सोस ! तेरी बहन **नमाज़** में सुस्ती किया करती थी और **नमाज़ क़ज़ा** कर के पढ़ा करती थी।" **(کتابُ الکبائِر ص۲۶)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब **क़ज़ा** करने वालों की ऐसी ऐसी सख़्त सज़ाएं हैं तो जो **बद नसीब** सिरे से **नमाज़** ही नहीं पढ़ते उन का क्या अन्जाम होगा !

अगर नमाज़ पढ़ना भूल जाए तो......?

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत सरापा रह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो **नमाज़** से सो जाए या **भूल** जाए तो जब याद आए पढ़ ले कि वोही उस का **वक़्त** है। **(مُسلِم ص۳۴۶حدیث۶۸۴)**

फ़ु–क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **सोते** में या भूले से नमाज़ क़ज़ा हो गई तो उस की क़ज़ा पढ़नी **फ़र्ज़ है** अलबत्ता क़ज़ा का गुनाह उस पर नहीं मगर बेदार होने और याद आने पर अगर वक़्ते मकरूह

www.dawateislami.net

न हो तो उसी वक़्त पढ़ ले **ताख़ीर** मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 701)

इत्तिफ़ाक़न आंख न खुली तो......?

फ़तावा र-ज़विय्या में है : ۞ जब जाने कि अब सोया तो नमाज़ जाती रहेगी उस वक़्त सोना ह़लाल नहीं मगर जब कि किसी जगा देने वाले पर ए'तिमाद हो ۞ ऐसे वक़्त में सोया कि आ़दतन वक़्त में आंख खुल जाती और इत्तिफ़ाक़न न खुली तो गुनहगार नहीं।

(फ़वाइदे जलीला फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 4, स. 698)

मजबूरी में अदा का सवाब मिलेगा या नहीं ?

आंख न खुलने की वज्ह से नमाज़े फ़ज्र ''क़ज़ा'' हो जाने की सूरत में ''अदा'' का सवाब मिलेगा या नहीं। इस ज़िम्न में **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, इमामे इश्क़ो मह़ब्बत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 8 सफ़ह़ा 161 पर फ़रमाते हैं : रहा **अदा** का सवाब मिलना येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इख़्तियार में है। अगर वोह जानेगा कि इस ने अपनी जानिब से कोई तक़्सीर (कोताही) न की, सुब्ह़ तक जागने के क़स्द से बैठा था और बे इख़्तियार आंख लग गई तो ज़रूर उस पर गुनाह नहीं। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : नींद की सूरत में कोताही नहीं, कोताही

www.dawateislami.net

उस शख़्स की है जो (जागते में) नमाज़ न पढ़े ह़त्ता कि दूसरी नमाज़ का वक़्त आ जाए। **(مُسلِم ص ٣٤٤ حديث ٦٨١)**

रात के आख़िरी ह़िस्से में सोना कैसा ?

नमाज़ का वक़्त दाख़िल हो जाने के बा'द सो गया फिर वक़्त निकल गया और **नमाज़** क़ज़ा हो गई तो क़त्अ़न गुनहगार हुवा जब कि जागने पर सह़ीह़ **ए'तिमाद** या जगाने वाला मौजूद न हो बल्कि फ़ज्र में दुख़ूले वक़्त से पहले भी **सोने** की इजाज़त नहीं हो सकती जब कि अक्सर ह़िस्सा रात का जागने में गुज़रा और ज़न्ने ग़ालिब है कि अब सो गया तो वक़्त में आंख न खुलेगी। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 701)

रात देर तक जागना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ना'त ख़्वानियों, ज़िक्रो फ़िक्र की मह़फ़िलों नीज़ सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त वग़ैरा में रात देर तक जागने के बा'द सोने के सबब अगर नमाज़े फ़ज्र **क़ज़ा** होने का अन्देशा हो तो ब निय्यते ए'तिकाफ़ मस्जिद में क़ियाम करें या वहां सोएं जहां कोई क़ाबिले ए'तिमाद इस्लामी भाई जगाने वाला मौजूद हो। या अलार्म वाली घड़ी हो जिस से आंख खुल जाती हो मगर एक अ़दद घड़ी पर भरोसा न किया जाए कि नींद में हाथ लग जाने से या यूं ही ख़राब हो कर बन्द हो जाने का इम्कान रहता है, दो या ह़स्बे ज़रूरत ज़ाइद घड़ियां हों तो बेहतर है। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **"जब येह अन्देशा हो कि सुब्ह़ की नमाज़ जाती रहेगी तो बिला ज़रूरते शरइय्या उसे रात देर तक जागना मम्नूअ़ है।"** (رَدُّالْمُحتار ج٢ ص٣٣)

www.dawateislami.net

अदा, क़ज़ा और वाजिबुल इआ़दा की ता'रीफ़

जिस चीज़ का बन्दों को हुक्म है उसे वक़्त में बजा लाने को **अदा** कहते हैं और वक़्त ख़त्म होने के बा'द अ़मल में लाना **क़ज़ा** है और अगर उस हुक्म के बजा लाने में कोई ख़राबी पैदा हो जाए तो उस ख़राबी को दूर करने के लिये वोह अ़मल दोबारा बजा लाना **इआ़दा** कहलाता है। वक़्त के अन्दर अन्दर अगर तह़रीमा बांध ली तो नमाज़ क़ज़ा न हुई बल्कि अदा है। (دُرِّمُختار ج۲ ص۶۲۷-۶۳۲) मगर नमाज़े फ़ज्र, **जुमुआ़** और ईदैन में वक़्त के अन्दर सलाम फिरना लाज़िमी है वरना नमाज़ न होगी। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 701) बिला उ़ज़्रे शर-ई **नमाज़** क़ज़ा कर देना सख़्त गुनाह है, इस पर फ़र्ज़ है कि उस की **क़ज़ा** पढ़े और सच्चे दिल से तौबा भी करे, तौबा या **ह़ज्जे** मक़्बूल से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ताख़ीर का गुनाह मुआ़फ़ हो जाएगा (دُرِّمُختار ج۲ ص۶۲۶) तौबा उसी वक़्त सह़ीह़ है जब कि क़ज़ा पढ़ ले उस को अदा किये बिग़ैर तौबा किये जाना तौबा नहीं कि जो नमाज़ इस के ज़िम्मे थी उस को न पढ़ना तो अब भी बाक़ी है और जब गुनाह से बाज़ न आया तो तौबा कहां हुई? (رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۶۲۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : गुनाह पर क़ाइम रह कर तौबा करने वाला उस की मिस्ल है जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से **ठट्ठा** (या'नी मज़ाक़) करता है। (شُعَبُ الْاِيمان ج۵ ص۴۳۶ حديث۷۱۷۸)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

तौबा के तीन रुक्न हैं

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा **सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : "तौबा के तीन रुक्न हैं : ﴾1﴿ ए'तिराफ़े जुर्म ﴾2﴿ नदामत ﴾3﴿ अ़ज़्मे तर्क (या'नी इस गुनाह को छोड़ने का पुख़्ता अ़ह्द)। अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी है तो उस की तलाफ़ी भी लाज़िम। म–सलन तारिके सलात (या'नी नमाज़ तर्क कर देने वाले) की तौबा के लिये नमाज़ों की **क़ज़ा** भी लाज़िम है।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 12)

सोते को नमाज़ के लिये जगाना वाजिब है

कोई सो रहा है या नमाज़ पढ़ना भूल गया है तो जिसे मा'लूम है उस पर वाजिब है कि सोते को जगा दे और भूले हुए को याद दिला दे। (वरना गुनहगार होगा) (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 701) याद रहे ! जगाना या याद दिलाना उस वक़्त वाजिब होगा जब कि ज़न्ने ग़ालिब हो कि येह नमाज़ पढ़ेगा वरना वाजिब नहीं।

फ़ज्र का वक़्त हो गया उठो !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब **सदाए मदीना** लगाइये या'नी सोने वालों को नमाज़ के लिये जगाइये और ढेरों नेकियां कमाइये। दा'वते इस्लामी के म–दनी माह़ोल में फ़ज्र के लिये मुसल्मानों को जगाना **सदाए मदीना** लगाना कहलाता है, **सदाए मदीना** वाजिब नहीं, नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना कारे सवाब है जो हर मुसल्मान को ह़स्बे मौक़अ़ करना चाहिये। सदाए मदीना लगाने में इस बात की एह़तियात़ ज़रूरी है कि किसी मुसल्मान को ईज़ा न हो।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढे़गा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

हि़कायत

एक इस्लामी भाई ने मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को) बताया था हम चन्द इस्लामी भाई **मेगाफ़ोन** पर फ़ज्र के वक़्त **सदाए मदीना** लगाते हुए एक गली से गुज़रे। एक साहि़ब ने हम को टोका और कहा कि मेरा बच्चा रात भर नहीं सोया अभी अभी आंख लगी है आप लोग **मेगाफ़ोन** बन्द कर दीजिये। हम को उन साहि़ब पर बड़ा गुस्सा आया कि न जाने कैसा मुसल्मान है, हम नमाज़ के लिये जगा रहे हैं और येह इस नेक काम में रुकावट डाल रहा है! ख़ैर दूसरे दिन हम फिर **सदाए मदीना** लगाते हुए उस त़रफ़ जा निकले तो वोही साहि़ब पहले से गली के **नुक्कड़** पर ग़मज़दा खड़े थे और हम से कहने लगे : आज भी बच्चा सारी रात नहीं सोया अभी अभी आंख लगी है इसी लिये मैं यहां खड़ा हो गया ताकि हमारी गली से ख़ामोशी से गुज़रने की आप ह़ज़रात की ख़िदमात में दर-ख़्वास्त करूं। इस से मा'लूम हुवा कि बिग़ैर **मेगाफ़ोन** के **सदाए मदीना** लगाई जाए। नीज़ बिग़ैर **मेगाफ़ोन** के भी इस क़दर बुलन्द आवाज़ें न निकाली जाएं जिस से घरों में नमाज़ व तिलावत में मश्ग़ूल इस्लामी बहनों, ज़ईफ़ों, मरीज़ों और बच्चों को तश्वीश हो या जो अव्वल वक़्त में पढ़ कर सो रहा या सो रही हो उस की नींद में ख़लल पड़े। और अगर कोई मुसल्मान अपने घर के पास **सदाए मदीना** लगाने से रोके तो उस से ज़िद बह़्स करने के बजाए उस से मुआ़फ़ी मांग ली जाए और उस पर हुस्ने ज़न रखा जाए कि यक़ीनन कोई मुसल्मान नमाज़ के लिये जगाने का मुख़ालिफ़ नहीं हो सकता, उस बिचारे की कोई मजबूरी होगी। बिलफ़र्ज़ वोह बे नमाज़ी हो तो भी आप उस पर सख़्ती करने के मजाज़

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

नहीं, किसी मुनासिब वक़्त पर इन्तिहाई नरमी के साथ इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए उस को नमाज़ के लिये आमादा कीजिये । मसाजिद में भी अज़ाने फ़ज्र वग़ैरा के इलावा बे मौक़अ़ नीज़ मह़ल्लों या मकानों के अन्दर मह़ाफ़िले ना'त वग़ैरा में स्पीकर इस्ति'माल करने वालों को भी अपने अपने घरों में इ़बादत करने वालों, मरीज़ों, शीर ख़्वार बच्चों और सोने वालों की ईज़ा को पेशे नज़र रखना चाहिये ।

हु़क़ूक़े आ़म्मा के एह़सास की ह़िकायत

हु़क़ूक़े आ़म्मा का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है, हमारे अस्लाफ़ इस मुआ़-मले में बेह़द मोह़तात़ हुवा करते थे । चुनान्चे **हु़ज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में एक शख़्स कई साल से ह़ाज़िर होता और इ़ल्म ह़ासिल करता । एक बार जब आया तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से मुंह फेर लिया । उस के ब इसरार इस्तिफ़्सार पर फ़रमाया : अपने मकान की दीवार के सड़क वाले कोने पर गारा लगा कर क़दे आदम (या'नी इन्सानी क़द) के बराबर उस (कोने) को तुम ने आगे बढ़ा दिया है ह़ालां कि वोह मुसल्मानों की गुज़र गाह है । या'नी मैं तुम से कैसे ख़ुश हो सकता हूं कि तुम ने मुसल्मानों का रास्ता तंग कर दिया है ! (اِحیاءُ الْعُلوم ج۵ ص۹۶ مُلَخّصاً) यहां वोह लोग भी इ़ब्रत ह़ासिल करें जो अपने घरों के बाहर ऐसे चबूतरे वग़ैरा बना देते हैं जिस से मुसल्मानों का रास्ता तंग हो जाता है ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जल्द से जल्द क़ज़ा पढ़ लीजिये

जिस के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हों उन का जल्द से जल्द पढ़ना वाजिब है मगर बाल बच्चों की परवरिश और अपनी ज़रूरिय्यात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर जाइज़ है । लिहाज़ा कारोबार भी करता रहे और फ़ुरसत का जो वक़्त मिले उस में **क़ज़ा** पढ़ता रहे यहां तक कि पूरी हो जाएं । **(دُرِّمُختار ج۲ص٦٤٦)**

छुप कर क़ज़ा पढ़िये

क़ज़ा नमाज़ें छुप कर पढ़िये लोगों पर (या घर वालों बल्कि क़रीबी दोस्त पर भी) इस का इज़्हार न कीजिये (म-सलन येह मत कहा कीजिये कि मेरी आज की फ़ज्र क़ज़ा हो गई या मैं क़ज़ाए उ़म्री पढ़ रहा हूं वग़ैरा) **कि गुनाह का इज़्हार भी मक्रूहे तह़रीमी व गुनाह है ।** **(رَدُّالْمُحتار ج۲ص٦٥٠)** लिहाज़ा अगर लोगों की मौजू-दगी में वित्र क़ज़ा पढ़ें तो तक्बीरे क़ुनूत के लिये हाथ न उठाएं ।

जुमुअ़तुल वदाअ़ में क़ज़ाए उ़म्री

र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी **जुमुआ** में बा'ज़ लोग बा जमाअ़त क़ज़ाए उ़म्री पढ़ते हैं और येह समझते हैं कि उ़म्र भर की क़ज़ाएं इसी एक नमाज़ से अदा हो गईं येह बात़िल मह़ज़ है ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 708)

उ़म्र भर की क़ज़ा का ह़िसाब

जिस ने कभी नमाज़ें ही न पढ़ी हों और अब तौफ़ीक़ हुई और **क़ज़ाए उ़म्री** पढ़ना चाहता है वोह जब से बालिग़ हुवा है उस वक़्त से

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

नमाज़ों का ह़िसाब लगाए और तारीख़े बुलूग़ भी नहीं मा'लूम तो एह़तियात़ इसी में है कि हिजरी सिन के ह़िसाब से औ़रत **नव साल** की उ़म्र से और मर्द **बारह साल** की उ़म्र से नमाज़ों का ह़िसाब लगाए ।

क़ज़ा पढ़ने में तरतीब

क़ज़ाए उ़म्री में यूं भी कर सकते हैं कि पहले तमाम फ़ज्रें अदा कर लें फिर तमाम ज़ोह्र की नमाज़ें इसी त़रह़ अ़स्र, मग़रिब और इ़शा ।

क़ज़ाए उ़म्री का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

क़ज़ा हर रोज़ की बीस रक्अ़तें होती हैं । दो फ़र्ज़ फ़ज्र के, चार ज़ोह्र, चार अ़स्र, तीन मग़रिब, चार इ़शा के और तीन वित्र । निय्यत इस त़रह़ कीजिये, म-सलन : **"सब से पहली फ़ज्र जो मुझ से क़ज़ा हुई उस को अदा करता हूं ।"** हर नमाज़ में इसी त़रह़ निय्यत कीजिये । जिस पर ब कसरत क़ज़ा नमाज़ें हैं वोह आसानी के लिये अगर यूं भी अदा करे तो जाइज़ है कि हर रुकूअ़ और हर सज्दे में तीन तीन बार "سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْعَظِيْم، سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى" की जगह सिर्फ़ एक एक बार कहे । मगर येह हमेशा और हर त़रह़ की नमाज़ में याद रखना चाहिये कि जब रुकूअ़ में पूरा पहुंच जाए उस वक़्त سُبْحٰن का "सीन" शुरूअ़ करे और जब عظیم का "मीम" ख़त्म कर चुके उस वक़्त रुकूअ़ से सर उठाए । इसी त़रह़ सज्दे में भी करे । **एक** तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) तो येह हुई और **दूसरी** येह कि फ़र्ज़ों की तीसरी और चौथी रक्अ़त में **अल ह़म्द शरीफ़** की जगह फ़क़त़ "سُبْحٰنَ اللهِ" तीन बार कह कर रुकूअ़ कर ले । मगर वित्र की तीनों रक्अ़तों में **अल ह़म्द** शरीफ़ और सूरत दोनों ज़रूर पढ़ी जाएं । **तीसरी** तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) येह कि क़ा'दए

www.dawateislami.net

अख़ीरा में तशह्हुद या'नी अत्तह़िय्यात के बा'द दोनों दुरूदों और दुआ़ की जगह सिर्फ़ "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ" कह कर सलाम फेर दे। **चौथी** तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) येह कि वित्र की तीसरी रक्अ़त में दुआ़ए क़ुनूत की जगह اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर फ़क़त़ एक बार या तीन बार "رَبِّ اغْفِرْ لِيْ" कहे। (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 157) याद रखिये ! तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) के इस त़रीक़े की आ़दत हरगिज़ न बनाइये, मा'मूल की नमाज़ें सुन्नत के मुत़ाबिक़ ही पढ़िये और इन में फ़राइज़ व वाजिबात के साथ साथ सुनन और मुस्तह़ब्बात व आदाब की भी रिआ़यत कीजिये।

नमाज़े क़स्र की क़ज़ा

अगर ह़ालते सफ़र की क़ज़ा नमाज़ ह़ालते इक़ामत में पढ़ेंगे तो क़स्र ही पढ़ेंगे और ह़ालते इक़ामत की क़ज़ा नमाज़ ह़ालते सफ़र में पढ़ेंगे तो पूरी पढ़ेंगे या'नी क़स्र नहीं करेंगे। (عالمگیری ج۱ ص۱۲۱)

ज़मानए इरतिदाद की नमाज़ें

जो शख़्स مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **मुरतद** हो गया फिर इस्लाम लाया तो **ज़मानए इरतिदाद** की नमाज़ों की क़ज़ा नहीं और मुरतद होने से पहले ज़मानए इस्लाम में जो नमाज़ें जाती रही थीं उन की क़ज़ा वाजिब है। (رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۶٤۷)

बच्चे की पैदाइश के वक़्त नमाज़

दाई (Nurse/Midwife) नमाज़ पढ़ेगी तो बच्चे के मर जाने का अन्देशा है, नमाज़ क़ज़ा करने के लिये येह उ़ज़्र (या'नी मजबूरी) है। बच्चे का सर बाहर आ गया और निफ़ास से पेशतर वक़्त ख़त्म हो जाएगा तो

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

इस ह़ालत में भी उस की मां पर नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है न पढ़ेगी तो गुनहगार होगी। किसी बरतन में बच्चे का सर रख कर जिस से उस को नुक़्सान न पहुंचे नमाज़ पढ़े मगर इस तरकीब से पढ़ने में भी बच्चे के मर जाने का अन्देशा हो तो ताख़ीर मुआ़फ़ है। बा'दे निफ़ास इस नमाज़ की क़ज़ा पढ़े। (ایضاً ص ٦٢٧)

मरीज़ को नमाज़ कब मुआ़फ़ है ?

ऐसा मरीज़ कि इशारे से भी नमाज़ नहीं पढ़ सकता अगर येह ह़ालत पूरे छ[6] वक़्त तक रही तो इस ह़ालत में जो नमाज़ें फ़ौत हुईं उन की क़ज़ा वाजिब नहीं। (عالمگیری ج ١ ص ١٢١)

उ़म्र भर की नमाज़ें दोबारा पढ़ना

जिस की नमाज़ों में नुक़्सान व कराहत हो वोह तमाम उ़म्र की नमाज़ें फेरे तो अच्छी बात है और कोई ख़राबी न हो तो न चाहिये और करे तो फ़ज्र व अ़स्र के बा'द न पढ़े और तमाम रक्अ़तें भरी पढ़े और वित्र में कुनूत पढ़ कर तीसरी के बा'द क़ा'दा कर के, फिर एक और मिलाए कि चार हो जाएं। (عالمگیری ج١ص١٢٤)

क़ज़ा का लफ़्ज़ कहना भूल गया तो ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हमारे उ़-लमा तसरीह़ फ़रमाते हैं : क़ज़ा ब निय्यते अदा और अदा ब निय्यते क़ज़ा दोनों सह़ीह़ हैं।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 161)

क़ज़ा नमाज़ें नवाफ़िल की अदाएगी से बेहतर

"**फ़तावा शामी**" में है : क़ज़ा नमाज़ें नवाफ़िल की अदाएगी

www.dawateislami.net

से बेहतर और अहम हैं मगर सुन्नते मुअक्कदा, नमाज़े चाश्त, **सलातुत्तस्बीह़** और वोह नमाज़ें जिन के बारे में अह़ादीसे मुबा-रका मरवी हैं या'नी जैसे **तह़िय्यतुल मस्जिद**, अ़स्र से पहले की चार रक्अ़त (सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा) और मग़रिब के बा'द छ्6 रक्अ़तें (पढ़ी जाएंगी)। **(رَدُّالْمُحتار ج۲ص۶۴۶)** याद रहे ! क़ज़ा नमाज़ की बिना पर सुन्नते मुअक्कदा छोड़ना जाइज़ नहीं, अलबत्ता सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा और ह़दीसों में वारिद शुदा मख़्सूस नवाफ़िल पढ़े तो सवाब का ह़क़दार है मगर इन्हें न पढ़ने पर कोई गुनाह नहीं, चाहे ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ हो या न हो।

फ़ज्र व अ़स्र के बा'द नवाफ़िल नहीं पढ़ सकते

नमाज़े फ़ज्र और अ़स्र के बा'द वोह तमाम नवाफ़िल अदा करने मक्रूहे (तह़रीमी) हैं जो क़स्दन हों अगर्चे **तह़िय्यतुल मस्जिद** हों, और हर वोह नमाज़ (भी नहीं पढ़ सकते) जो ग़ैर की वज्ह से लाज़िम हो म-सलन नज़्र और त़वाफ़ के नवाफ़िल और हर वोह नमाज़ जिस को शुरूअ़ किया फिर उसे तोड़ डाला, अगर्चे वोह फ़ज्र और अ़स्र की सुन्नतें ही क्यूं न हों। **(دُرِّمُختار ج۲ص۴۴۔۴۵)**

क़ज़ा के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं उ़म्र में जब (भी) पढ़ेगा **बरिय्युज़्ज़िम्मा** हो जाएगा। मगर तुलूअ़ व ग़ुरूब और ज़वाल के वक़्त नमाज़ नहीं पढ़ सकता कि इन वक़्तों में नमाज़ जाइज़ नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 702, **عالمگیری ج۱ص۵۲**)

ज़ोहर की चार सुन्नतें रह जाएं तो क्या करे ?

अगर ज़ोहर के फ़र्ज़ पहले पढ़ लिये तो दो रक्अ़त सुन्नते बा'दिया अदा करने के बा'द चार रक्अ़त सुन्नते क़ब्लिया अदा कीजिये

www.dawateislami.net

चुनान्चे सरकारे **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **ज़ोह्र** की पहली **चार सुन्नतें** जो फ़र्ज़ से पहले न पढ़ी हों तो बा'दे फ़र्ज़ बल्कि मज़्हबे अरजह़ (या'नी पसन्दीदा तरीन मज़हब) पर बा'द (दो रक्अ़त) सुन्नते बा'दिया के पढ़ें बशर्ते कि हुनूज़ (या'नी अभी) वक़्ते ज़ोह्र बाक़ी हो। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 148)

फ़ज्र की सुन्नतें रह जाएं तो क्या करे ?

सुन्नतें पढ़ने से अगर फ़ज्र की जमाअ़त फ़ौत हो जाने का अन्देशा हो तो बिग़ैर पढ़े शामिल हो जाए। मगर सलाम फेरने के बा'द पढ़ना जाइज़ नहीं। तुलूए़ आफ़्ताब के कम अज़ कम बीस मिनट बा'द से ले कर **ज़ह़्वए कुब्रा** तक पढ़ ले कि **मुस्तह़ब** है। इस के बा'द **मुस्तह़ब** भी नहीं।

क्या मग़रिब का वक़्त थोड़ा सा होता है ?

मग़रिब की नमाज़ का वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब ता इब्तिदाए वक़्ते इशा होता है। येह वक़्त मक़ामात और तारीख़ के ए'तिबार से घटता बढ़ता रहता है म-सलन बाबुल मदीना कराची में निज़ामुल अवक़ात के नक़्शे के मुत़ाबिक़ मग़रिब का वक़्त कम अज़ कम एक घन्टा 18 मिनट होता है। फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : रोज़े अब्र (या'नी जिस दिन बादल छाए हों उस) के सिवा मग़रिब में हमेशा ता'जील (या'नी जल्दी) मुस्तह़ब है और दो रक्अ़त से ज़ाइद की ताख़ीर मक्रूहे तन्ज़ीही और अगर बिग़ैर उ़ज़्र सफ़र व मरज़ वग़ैरा इतनी ताख़ीर की, कि सितारे गुथ गए तो मक्रूहे तह़रीमी। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 453)

www.dawateislami.net

सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इस (या'नी मग़रिब) का वक़्ते मुस्तह़ब जब तक है कि सितारे ख़ूब ज़ाहिर न हो जाएं, इतनी देर करनी कि (बड़े बड़े सितारों के इ़लावा) छोटे छोटे सितारे भी चमक आएं मक्रूह है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 153) **अ़स्र व इशा** से पहले जो रक्अ़तें हैं वोह सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा हैं उन की क़ज़ा नहीं।

तरावीह़ की क़ज़ा का क्या हुक्म है ?

जब तरावीह़ फ़ौत हो जाए तो उस की क़ज़ा नहीं, न जमाअ़त से न तन्हा और अगर कोई क़ज़ा पढ़ भी लेता है तो येह जुदागाना नफ़्ल हो जाएंगे, तरावीह़ से इन का तअ़ल्लुक़ न होगा।

(تَنوِيرُ الْاَبصار ودُرِّمُختار ج٢ص٥٩٨)

नमाज़ का फ़िदया

जिन के रिश्तेदार फ़ौत हुए हों वोह इस मज़मून का ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं

मय्यित की उ़म्र मा'लूम कर के इस में से नव साल औ़रत के लिये और बारह साल मर्द के लिये ना बालिग़ी के निकाल दीजिये। बाक़ी जितने साल बचे उन में ह़िसाब लगाइये कि कितनी मुद्दत तक वोह (या'नी मर्ह़ूम) बे नमाज़ी रहा या बे रोज़ा रहा, या कितनी नमाज़ें या रोज़े उस के ज़िम्मे क़ज़ा के बाक़ी हैं। ज़ियादा से ज़ियादा अन्दाज़ा लगा लीजिये बल्कि चाहें तो ना बालिग़ी की उ़म्र के बा'द बक़िय्या तमाम उ़म्र का ह़िसाब लगा लीजिये। अब फ़ी नमाज़ एक एक स-द-क़ए फ़ित्र

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

ख़ैरात कीजिये। एक स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार 2 किलो से 80 ग्राम कम गेहूं या उस का आटा या उस की रक़म है। और एक दिन की छ[6] नमाज़ें हैं पांच फ़र्ज़ और एक वित्र वाजिब। म-सलन 2 किलो से 80 ग्राम कम गेहूं की रक़म 12 रुपै हो तो एक दिन की नमाज़ों के 72 रुपै हुए और 30 दिन के 2160 रुपै और बारह माह के तक़रीबन 25920 रुपै हुए। अब किसी मय्यित पर 50 साल की नमाज़ें बाक़ी हैं तो फ़िदया अदा करने के लिये 1296000 रुपै ख़ैरात करने होंगे। ज़ाहिर है हर शख़्स इतनी रक़म ख़ैरात करने की इस्तित़ाअ़त (त़ाक़त) नहीं रखता, इस के लिये उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने शर-ई ह़ीला इर्शाद फ़रमाया है। म-सलन वोह 30 दिन की तमाम नमाज़ों के फ़िदये की निय्यत से 2160 रुपै किसी फ़क़ीर (फ़क़ीर और मिस्कीन की ता'रीफ़ सफ़ह़ा नम्बर 263 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये) की मिल्क कर दे, येह 30 दिन की नमाज़ों का फ़िदया अदा हो गया। अब वोह फ़क़ीर येह रक़म देने वाले ही को हिबा कर दे (या'नी तोह़फ़े में दे दे) येह क़ब्ज़ा करने के बा'द फिर फ़क़ीर को 30 दिन की नमाज़ों के फ़िदये की निय्यत से क़ब्ज़े में दे कर उस का मालिक बना दे। इसी त़रह़ लौट फेर करते रहें यूं सारी नमाज़ों का फ़िदया अदा हो जाएगा। 30 दिन की रक़म के ज़रीए ही ह़ीला करना शर्त़ नहीं वोह तो समझाने के लिये मिसाल दी है। बिलफ़र्ज़ 50 साल के फ़िदयों की रक़म मौजूद हो तो एक ही बार लौट फेर करने में काम हो जाएगा। नीज़ फ़ित्रे की रक़म का ह़िसाब गेहूं के मौजूदा भाव से

www.dawateislami.net

लगाना होगा। **इसी त़रह़ फ़ी रोज़ा भी एक स-द-क़ए फ़ित्र है।** नमाज़ों का फ़िदया अदा करने के बा'द रोज़ों का भी इसी त़रीक़े से फ़िदया अदा कर सकते हैं। ग़रीब व अमीर सभी फ़िदये का ह़ीला कर सकते हैं। अगर वु-रसा अपने मर्ह़ूमीन के लिये येह अ़मल करें तो येह मय्यित की ज़बर दस्त इमदाद होगी, इस त़रह़ मरने वाला भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़र्ज़ के बोझ से आज़ाद होगा और वु-रसा भी अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़ होंगे। बा'ज़ लोग मस्जिद वग़ैरा में एक क़ुरआने पाक का नुस्ख़ा दे कर अपने मन को मना लेते हैं कि हम ने मर्ह़ूम की तमाम नमाज़ों का फ़िदया अदा कर दिया येह उन की ग़लत़ फ़ह़मी है। (तफ़्सील के लिये देखिये : फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 167) **याद रखिये !** मर्ह़ूम की नमाज़ों का फ़िदया औलाद और दीगर वु-रसा की त़रह़ कोई आ़म मुसल्मान भी दे सकता है।

(مِنْحَةُ الْخَالِقِ عَلَى الْبَحْرِ الرَّائِق لابن عابدين ج۲ ص ۱۶۰ مُلَخَّصاً)

मर्ह़ूमा के फ़िदये का एक मस्अला

औ़रत की आ़दते ह़ैज़ अगर मा'लूम हो तो उस क़दर दिन और न मा'लूम हो तो हर महीने से तीन दिन नव बरस की उ़म्र से मुस्तस्ना करें मगर जितनी बार ह़म्ल रहा हो मुद्दते ह़म्ल के महीनों से अय्यामे ह़ैज़ का इस्तिस्ना न करें। औ़रत की आ़दत दरबारए निफ़ास अगर मा'लूम हो तो हर ह़म्ल के बा'द उतने दिन मुस्तस्ना करे और न मा'लूम हो तो कुछ नहीं कि निफ़ास के लिये जानिबे अक़ल (कम से कम) में शरअ़न

www.dawateislami.net

कुछ तक्दीर नहीं। मुम्किन है कि एक ही मिनट आ कर फ़ौरन पाक हो जाए। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 154)

सादाते किराम को नमाज़ का फ़िदया नहीं दे सकते

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से **सय्यिदों** और **ग़ैर मुस्लिमों** को **नमाज़ का फ़िदया** देने के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा गया तो फ़रमाया : येह स-दक़ा (या'नी नमाज़ का फ़िदया) ह़ज़राते सादाते किराम के लाइक़ नहीं और हुनूद वग़ैरहुम कुफ़्फ़ारे हिन्द इस स-दक़े के लाइक़ नहीं। इन दोनों को देने की अस्लन इजाज़त नहीं, न इन के दिये अदा हो। मुस्लिमीन मसाकीन ज़विल क़ुर्बा ग़ैर हाशिमीन (या'नी अपने मिस्कीन मुसल्मान रिश्तेदार ग़ैर हाशिमियों) को देना दूना (या'नी दुगना) अज्र है।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 166)

100 कोड़ों का ह़ीला

ह़ीलए शर-ई का जवाज़ क़ुरआनो ह़दीस और फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मो'तबर कुतुब में मौजूद है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बीमारी के ज़माने में आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़ौजए मोह़-त-रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا एक बार ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में ताख़ीर से ह़ाज़िर हुई तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने क़सम खाई कि "मैं तन्दुरुस्त हो कर **सो कोड़े** मारूंगा" सिह़्ह़त याब होने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें **सो तीलियों की झाड़ू** मारने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

(नूरुल इरफ़ान, स. 728 मुलख़्ख़सन) **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** पारह 23 **सूरए** صٓ की आयत नम्बर 44 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَخُذْ بِیَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ (پ۲۳، ص:٤٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू ले कर इस से मार दे और क़सम न तोड़।

"आ़लमगीरी" में ह़ीलों का एक मुस्तक़िल बाब है जिस का नाम "**किताबुल ह़ियल**" है चुनान्चे आ़लमगीरी "**किताबुल ह़ियल**" में है : जो ह़ीला किसी का ह़क़ मारने या उस में शुबा पैदा करने या बात़िल से फ़रेब देने के लिये किया जाए वोह मक्रूह है और जो ह़ीला इस लिये किया जाए कि आदमी ह़राम से बच जाए या ह़लाल को ह़ासिल कर ले वोह अच्छा है। इस क़िस्म के ह़ीलों के जाइज़ होने की दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान है :

وَخُذْ بِیَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ (پ۲۳، ص:٤٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू ले कर इस से मार दे और क़सम न तोड़। (عالمگیری ج٦ ص۳۹۰)

कान छेदने का रवाज कब से हुवा ?

ह़ीले के जवाज़ पर एक और दलील मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

रिवायत है कि एक बार ह़ज़रते सय्यि-दतुना **सारह** और ह़ज़रते सय्यि-दतुना **हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا में कुछ चप-क़लश हो गई। ह़ज़रते सय्यि-दतुना सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने क़सम खाई कि मुझे अगर क़ाबू मिला तो मैं हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا का कोई उ़ज़्व काटूंगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में भेजा कि इन में सुल्ह़ करवा दें। ह़ज़रते सय्यि-दतुना सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : "**مَاحِیلَةُ یَمِیْنِی؟**" या'नी मेरी क़सम का क्या ह़ीला होगा ? तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह़्य नाज़िल हुई कि (ह़ज़रते) **सारह** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا) को हुक्म दो कि वोह (ह़ज़रते) हाजिरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا) के कान छेद दें। **उसी वक़्त से औ़रतों के कान छेदने का रवाज पड़ा।** (غمزعیون البصائر للحموی ج ۳ ص ۲۹۵)

गाय के गोश्त का तोह़फ़ा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि दो जहान के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गाय का गोश्त ह़ाज़िर किया गया, किसी ने अ़र्ज़ की : येह गोश्त ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا पर **स-दक़ा** हुवा था। फ़रमाया : **هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ وَّلَنَا هَدِیَّةٌ** या'नी येह बरीरा के लिये **स-दक़ा** था हमारे लिये **हदिय्या** है। (مسلم ص ۵٤۱ حدیث ۱۰۷۵)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

ज़कात का शर-ई ह़ीला

इस ह़दीसे पाक से साफ़ ज़ाहिर है कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जो कि स-दके़ की ह़क़दार थीं उन को बत़ौरे स-दक़ा मिला हुवा गाय का गोश्त अगर्चे उन के ह़क़ में स-दक़ा ही था मगर उन के क़ब्ज़ा कर लेने के बा'द जब बारगाहे रिसालत में पेश किया गया था तो उस का हुक्म बदल गया था और अब वोह स-दक़ा न रहा था। यूं ही कोई मुस्तह़िक़ शख़्स ज़कात अपने क़ब्जे़ में लेने के बा'द किसी भी आदमी को तोह़्फ़तन दे सकता या मस्जिद वग़ैरा के लिये पेश कर सकता है कि मज़्कूरा मुस्तह़िक़ शख़्स का पेश करना अब ज़कात न रहा, हदिय्या या अ़तिय्या हो गया। फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام **ज़कात का शर-ई ह़ीला** करने का त़रीक़ा यूं इर्शाद फ़रमाते हैं : **ज़कात** की रक़म मुर्दे की तज्हीज़ो तक्फ़ीन या मस्जिद की ता'मीर में सर्फ़ नहीं कर सकते कि तम्लीके फ़क़ीर (या'नी फ़क़ीर को मालिक करना) न पाई गई। अगर इन उमूर में ख़र्च करना चाहें तो इस का त़रीक़ा येह है कि **फ़क़ीर** को (ज़कात की रक़म का) मालिक कर दें और वोह (ता'मीरे मस्जिद वग़ैरा में) सर्फ़ करे, इस त़रह़ सवाब दोनों को होगा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 890)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! कफ़न दफ़्न बल्कि ता'मीरे मस्जिद में भी **ह़ीलए शर-ई** के ज़रीए ज़कात इस्ति'माल की जा सकती है क्यूं कि ज़कात तो फ़क़ीर के ह़क़ में थी जब फ़क़ीर ने

www.dawateislami.net

क़ब्ज़ा कर लिया तो अब वोह मालिक हो चुका, जो चाहे करे । ह़ीलए शर-ई की ब-र-कत से देने वाले की ज़कात भी अदा हो गई और फ़क़ीर भी मस्जिद में दे कर सवाब का ह़क़दार हो गया । फ़क़ीरे शर-ई को ह़ीले का मस्अला बेशक समझा दिया जाए ।

फ़क़ीर की ता'रीफ़

फ़क़ीर वोह है कि ۞ जिस के पास कुछ न कुछ हो मगर इतना न हो कि निसाब को पहुंच जाए या ۞ निसाब की क़दर तो हो मगर उस की ह़ाजते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी) में मुस्तग़रक़ (घिरा हुवा) हो । म-सलन रहने का मकान, ख़ानादारी का सामान, सुवारी के जानवर (या स्कूटर या कार), कारीगरों के औज़ार, पहनने के कपड़े, ख़िदमत के लिये लौंडी, ग़ुलाम, इल्मी शुग़्ल रखने वाले के लिये इस्लामी किताबें जो उस की ज़रूरत से ज़ाइद न हों ۞ इसी त़रह़ अगर मद्यून (या'नी मक़्रूज़) है और दैन (या'नी क़र्ज़ा) निकालने के बा'द निसाब बाक़ी न रहे तो **फ़क़ीर** है अगर्चे उस के पास एक तो क्या कई निसाबें हों ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 924, رَدُّالْمُحتار ج۳ص۳۳۳وغیرہ)

मिस्कीन की ता'रीफ़

मिस्कीन वोह है जिस के पास कुछ न हो यहां तक कि खाने और बदन छुपाने के लिये इस का मोह़ताज है कि लोगों से सुवाल करे और इसे सुवाल ह़लाल है । **फ़क़ीर** (या'नी जिस के पास कम अज़ कम एक

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

दिन का खाने के लिये और पहनने के लिये मौजूद है उस) **को बिग़ैर ज़रूरत व मजबूरी सुवाल ह़राम है।**

(**عالمگیری ج۱ص۱۸۷۔۱۸۸**, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 924)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जो भिकारी कमाने पर क़ादिर होने के बा वुजूद बिला ज़रूरत व मजबूरी बत़ौरे पेशा भीक मांगते हैं गुनाहगार व अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार हैं और जो ऐसों के ह़ाल से बा ख़बर हो उसे उन को देना जाइज़ नहीं।

एक चुप 100 सो सुख

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

यकुम मुह़र्रमुल ह़राम 1435 सि.हि.
06-11-2013

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفلِ مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

بقیع

नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा

(ह़-नफ़ी)

इस रिसाले में......

- हि़कायात
- जन्नती का जनाज़ा
- ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा
- काफ़िर का जनाज़ा
- जनाज़े की दुआएं
- खुदकुशी वाले का जनाज़ा
- बच्चे का जनाज़ा उठाने का त़रीक़ा

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

(ह़-नफ़ी)

नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा

शैत़ान लाख रोके येह रिसाला (19 सफ़ह़ात)
मुकम्मल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के
फ़वाइद ख़ुद ही देख लेंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़-लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : जो मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये **एक क़ीरात़** अज्र लिखता है और क़ीरात़ **उहुद पहाड़** जितना है। (مُصَنَّف عَبد الرَّزّاق ج١ ص٣٩ حديث ١٥٣)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वली के जनाज़े में शिर्कत की ब-र-कत

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़त़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के जनाज़े में शरीक हुवा। रात को ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़त़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ज़ियारत हुई तो पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी और मेरे जनाज़े में शरीक हो कर नमाज़े जनाज़ा

www.dawateislami.net

पढ़ने वालों की **मग़्फ़िरत** फ़रमा दी। उस ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी मैं ने भी **आप** के जनाज़े में शरीक हो कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी थी। तो **आप** ने एक फ़ेहरिस निकाली मगर उस शख़्स का नाम शामिल न था, जब ग़ौर से देखा तो उस का नाम **ह़ाशिये** पर मौजूद था। **(تاریخ دمشق لابن عساکر ج۲۰ص۱۹۸)**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अ़क़ीदत मन्दों की भी मग़्फ़िरत

ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی को इन्तिक़ाल के बा'द क़ासिम बिन मुनब्बेह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّافِع ने ख़्वाब में देख कर पूछा : **مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और इर्शाद फ़रमाया : ऐ बिश्र ! तुम को बल्कि तुम्हारे **जनाज़े** में जो जो शरीक हुए उन को भी मैं ने **बख़्श** दिया। तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझ से मह़ब्बत करने वालों को भी बख़्श दे। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **रह़मत** मज़ीद जोश पर आई, और फ़रमाया : **क़ियामत तक जो तुम से मह़ब्बत करेंगे उन सब को भी मैं ने बख़्श दिया।** **(ایضاً ج۱۰ص ۲۲۵)**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आ'माल न देखे येह देखा, है मेरे वली के दर का गदा

ख़ालिक़ ने मुझे यूं बख़्श दिया, سُبْحٰنَ اللہ سُبْحٰنَ اللہ

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वालों رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى से निस्बत बाइसे सआ़दत, इन का ज़िक्रे ख़ैर बाइसे नुज़ूले रह़मत, इन की सोह़बत दो जहां के लिये बा ब-र-कत, इन के मज़ारात की ज़ियारत तिरयाक़े अमराज़े मा'सियत और इन की अ़क़ीदत ज़रीअ़ए नजाते आख़िरत है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमें भी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से अ़क़ीदत और वलिय्ये कामिल ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي से मह़ब्बत है। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! इन के सदक़े हमारी भी मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

बिश्रे ह़ाफ़ी से हमें तो प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰه *अपना बेड़ा पार है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى محمَّد

कफ़न चोर

एक औ़रत की नमाज़े जनाज़ा में एक **कफ़न चोर** भी शामिल हो गया और क़ब्रिस्तान साथ जा कर उस ने **क़ब्र** का पता मह़फ़ूज़ कर लिया। जब रात हुई तो उस ने कफ़न चुराने के लिये **क़ब्र** खोद डाली। यकायक मर्हूमा बोल उठी : سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ एक **मग़्फ़ूर** (या'नी बख़्शिश का ह़क़दार) शख़्स **मग़्फ़ूर** (या'नी बख़्शी हुई) औ़रत का कफ़न चुराता है ! सुन, **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी भी **मग़्फ़िरत** कर दी और उन तमाम लोगों की भी जिन्हों ने मेरे जनाज़े की **नमाज़** पढ़ी और तू भी उन में शरीक था। (येह सुन कर उस ने फ़ौरन **क़ब्र** पर मिट्टी डाल दी और **सच्चे दिल** से ताइब हो गया) (شُعَبُ الْاِيمان ج۷ص۸رقم ۹۲۶۱) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की**

www.dawateislami.net

उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

तमाम शु-रकाए जनाज़ा की बख़्शिश

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! नेक बन्दों की नमाज़े जनाज़ा में ह़ाज़िरी किस क़दर सआ़दत मन्दी की बात है। जब भी मौक़अ़ मिले बल्कि मौक़अ़ निकाल कर मुसल्मानों के जनाज़ों में शिर्कत करते रहना चाहिये, हो सकता है किसी नेक बन्दे के जनाज़े में शुमूलिय्यत हमारे लिये **सामाने मग़्फ़िरत** बन जाए। ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की **रह़मत** पर क़ुरबान कि जब वोह किसी मरने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है तो उस के जनाज़े का साथ देने वालों को भी **बख़्श** देता है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تعالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बन्दए मोमिन को मरने के बा'द सब से पहली जज़ा येह दी जाएगी कि उस के तमाम **शु-रकाए जनाज़ा की बख़्शिश** कर दी जाएगी।" (اَلتَّرغیب وَالتَّرھیب ج۴ ص۱۷۸ حدیث۱۳)

क़ब्र में पहला तोह़फ़ा

सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللہُ تعالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किसी ने पूछा : मोमिन जब **क़ब्र** में दाख़िल होता है तो उस को सब से **पहला तोह़फ़ा** क्या दिया जाता है ? तो इर्शाद फ़रमाया : उस की **नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों की मग़्फ़िरत** कर दी जाती है। (شُعَبُ الْاِیمان ج۷ ص۸ رقم۹۲۵۷)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

जन्नती का जनाज़ा

मीठे मीठे आक़ा, मक्की म–दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : जब कोई **जन्नती शख़्स** फ़ौत हो जाता है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़या फ़रमाता है कि उन लोगों को अ़ज़ाब दे जो उस का जनाज़ा ले कर चले और जो इस के पीछे चले और जिन्हों ने इस की नमाज़े जनाज़ा अदा की। **(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۱ص۲۸۲حدیث۱۱۰۸)**

जनाज़े का साथ देने का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जिस ने मह़्ज़ तेरी रिज़ा के लिये **जनाज़े** का साथ दिया, उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह तआ़ला** ने फ़रमाया : जिस दिन वोह **मरेगा** तो फ़िरिश्ते उस के जनाज़े के हमराह चलेंगे और मैं उस की **मग़्फ़िरत** करूंगा। **(شَرْحُ الصُّدُورص۹۷)**

उहुद पहाड़ जितना सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : जो शख़्स (ईमान का तक़ाज़ा समझ कर और ह़ुसूले सवाब की निय्यत से) अपने घर से जनाज़े के साथ चले, नमाज़े जनाज़ा पढ़े और दफ़्न होने तक जनाज़े के साथ रहे उस के लिये **दो क़ीरात़** सवाब है जिस में से **हर क़ीरात़** उहुद (पहाड़) के बराबर है और जो शख़्स सिर्फ़ जनाज़े की नमाज़ पढ़ कर वापस आ जाए तो उस के लिये **एक क़ीरात़** सवाब है। **(مُسلِم ص۴۷۲حدیث۹۴۵)**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

नमाज़े जनाज़ा बाइसे इब्रत है

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इर्शाद है : मुझ से सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ब्रों की ज़ियारत करो ताकि आख़िरत की याद आए और मुर्दे को नहलाओ कि फ़ानी जिस्म (या'नी मुर्दा जिस्म) का छूना बहुत बड़ी नसीह़त है और **नमाज़े जनाज़ा** पढ़ो ताकि येह तुम्हें ग़मगीन करे क्यूं कि ग़मगीन इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साए में होता है और नेकी का काम करता है। **(اَلْمُستَدرَک لِلْحاکِم ج۱ص۷۱۱حدیث۱٤۳۵)**

मय्यित को नहलाने वग़ैरा की फ़ज़ीलत

मौलाए काएनात, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि जो किसी मय्यित को **नहलाए**, कफ़न **पहनाए**, ख़ुश्बू **लगाए**, जनाज़ा **उठाए**, नमाज़ पढ़े और जो **नाक़िस बात** नज़र आए उसे **छुपाए** वोह अपने गुनाहों से ऐसा **पाक** हो जाता है जैसा जिस दिन **मां के पेट** से पैदा हुवा था। **(اِبنِ ماجہ ج۲ص۲۰۱حدیث۱٤٦۲)**

जनाज़ा देख कर पढ़ने का विर्द

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया ? कहा : एक कलिमे की वज्ह से बख़्श दिया जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

www.dawateislami.net

जनाज़े को देख कर कहा करते थे। (वोह कलिमा येह है :) **سُبْحٰنَ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ** (या'नी वोह ज़ात पाक है जो ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आएगी) लिहाज़ा मैं भी **जनाज़ा** देख कर येही कहा करता था येह कलिमा कहने के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे **बख़्श** दिया।

(اِحیاءُ الْعُلوم ج٥ ص٢٦٦ مُلَخَّصاً)

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब से पहला जनाज़ा किस का पढ़ा ?

नमाज़े जनाज़ा की इब्तिदा ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام के दौर से हुई है, फ़िरिश्तों ने सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام के जनाज़ए मुबा-रका पर चार तक्बीरें पढ़ी थीं। इस्लाम में वुजूबे नमाज़े जनाज़ा का हुक्म मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में नाज़िल हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना **अस्अ़द बिन ज़ुरारह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का विसाले मुबारक हिजरत के बा'द नवें महीने के आख़िर में हुवा और येह पहले सहा़बी की मय्यित थी जिस पर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **नमाज़े जनाज़ा** पढ़ी। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 375, 376)

नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है

नमाज़े जनाज़ा "फ़र्ज़े किफ़ाया" है या'नी कोई एक भी अदा कर ले तो सब बरिय्युज़्ज़िम्मा हो गए वरना जिन जिन को ख़बर पहुंची थी और नहीं आए वोह सब गुनहगार होंगे। इस के लिये जमाअ़त शर्त़ नहीं एक शख़्स भी पढ़ ले तो फ़र्ज़ अदा हो गया। इस की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 825, **عالمگیری ج١ ص١٦٢، دُرِّمُختار ج٣ ص١٢٠**)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلی)

नमाज़े जनाज़ा में दो रुक्न और तीन सुन्नतें हैं

दो रुक्न येह हैं : ﴾1﴿ चार बार "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहना ﴾2﴿ क़ियाम । (دُرِّمُختار ج٣ص١٢٤) इस में **तीन** सुन्नते मुअक्कदा येह हैं : ﴾1﴿ सना ﴾2﴿ दुरूद शरीफ़ ﴾3﴿ मय्यित के लिये दुआ़ ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 829)

नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

मुक़्तदी इस त़रह़ निय्यत करे : "मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की वासित़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के, दुआ़ इस मय्यित के लिये, पीछे इस इमाम के" (فتاوٰی تاتارخانیہ ج٢ص١٥٣) अब इमाम व मुक़्तदी पहले कानों तक हाथ उठाएं और "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहते हुए फ़ौरन ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लें और **सना** पढ़ें । इस में "وَتَعَالٰى جَدُّكَ" के बा'द "وَجَلَّ ثَنَاۗؤُكَ وَلَاۤ اِلٰهَ غَيْرُكَ" पढ़ें फिर बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहें, फिर **दुरूदे इब्राहीम** पढ़ें, फिर बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहें और दुआ़ पढ़ें (इमाम तक्बीरें बुलन्द आवाज़ से कहे और मुक़्तदी आहिस्ता । बाक़ी तमाम अज़्कार इमाम व मुक़्तदी सब आहिस्ता पढ़ें) दुआ़ के बा'द फिर "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहें और हाथ लटका दें फिर दोनों त़रफ़ सलाम फैर दें । सलाम में मय्यित और फ़िरिश्तों और ह़ाज़िरीने नमाज़ की निय्यत करे, उसी त़रह़ जैसे और नमाज़ों के सलाम में निय्यत की जाती है यहां इतनी बात ज़ियादा है कि मय्यित की भी निय्यत करे ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 829, 835 माख़ूज़न)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنز العمال)

बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِحَیِّنَا وَمَیِّتِنَا وَشَاھِدِنَا وَغَآئِبِنَا وَصَغِیْرِنَا
इलाही ! बख़्श दे हमारे हर ज़िन्दा को और हमारे हर फ़ौत शुदा को और हमारे हर ह़ाज़िर को और हमारे हर ग़ाइब को और हमारे हर छोटे को
وَکَبِیْرِنَا وَذَکَرِنَا وَاُنْثَانَا ط اَللّٰھُمَّ مَنْ اَحْیَیْتَہٗ مِنَّا فَاَحْیِہٖ
और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औ़रत को। इलाही ! तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे तो उस को इस्लाम पर
عَلَی الْاِسْلَامِ ط وَمَنْ تَوَفَّیْتَہٗ مِنَّا فَتَوَفَّہٗ عَلَی الْاِیْمَانِ ط
ज़िन्दा रख और हम में से जिस को मौत दे तो उस को ईमान पर मौत दे।

(اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج١ ص٦٨٤ حديث١٣٦٦)

ना बालिग़ लड़के की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْہُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْہُ لَنَآ اَجْرًا
इलाही ! इस (लड़के) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाला बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (का मूजिब)
وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْہُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا ط
और वक़्त पर काम आने वाला बना दे और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाला बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए।

(كنزُالدّقائق ص٥٢)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

ना बालिग़ा लड़की की दुआ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَآ اَجْرًا
इलाही ! इस (लड़की) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाली बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (की मूजिब)
وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ط
और वक़्त पर काम आने वाली बना दे और इस को हमारे लिये सिफ़ारिश करने वाली बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए।

जूते पर खड़े हो कर जनाज़ा पढ़ना

जूता पहन कर अगर नमाज़े जनाज़ा पढ़ें तो जूते और ज़मीन दोनों का पाक होना ज़रूरी है और जूता उतार कर उस पर खड़े हो कर पढ़ें तो जूते के तले और ज़मीन का पाक होना ज़रूरी नहीं। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक सुवाल के जवाब में इर्शाद फ़रमाते हैं : "अगर वोह जगह पेशाब वग़ैरा से नापाक थी या जिन के जूतों के तले नापाक थे और इस ह़ालत में जूता पहने हुए नमाज़ पढ़ी उन की नमाज़ न हुई, एह़तियात़ येही है कि जूता उतार कर उस पर पाउं रख कर नमाज़ पढ़ी जाए कि ज़मीन या तला अगर नापाक हो तो नमाज़ में ख़लल न आए।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 188)

www.dawateislami.net

ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा नहीं हो सकती

मय्यित का सामने होना ज़रूरी है, **ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा** नहीं हो सकती । **मुस्तह़ब** येह है कि इमाम मय्यित के सीने के सामने खड़ा हो । (دُرِّمُختار ج ۳ص۱۲۳،۱۳٤)

चन्द जनाज़ों की इकट्ठी नमाज़ का त़रीक़ा

चन्द जनाज़े एक साथ भी पढ़े जा सकते हैं, इस में इख़्तियार है कि सब को आगे पीछे रखें या'नी सब का सीना इमाम के सामने हो या क़ित़ार बन्द । या'नी एक के पाउं की सीध में दूसरे का सिरहाना और दूसरे के पाउं की सीध में तीसरे का सिरहाना **وَعَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس** (या'नी इसी पर क़ियास कीजिये) । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 839, **عالمگیری ج ۱ ص ۱٦٥**)

जनाज़े में कितनी सफ़ें हों ?

बेहतर येह है कि जनाज़े में तीन सफ़ें हों कि ह़दीसे पाक में है : **"जिस की नमाज़ (जनाज़ा) तीन सफ़ों ने पढ़ी उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी ।"** अगर कुल सात ही आदमी हों तो एक इमाम बन जाए अब पहली सफ़ में तीन खड़े हो जाएं दूसरी में दो और तीसरी में एक । (غُنیـہ ص۵۸۸) **जनाज़े में पिछली सफ़ तमाम सफ़ों से अफ़्ज़ल है ।** (دُرِّمُختار ج۳ص۱۳۱)

जनाज़े की पूरी जमाअ़त न मिले तो ?

मस्बूक़ (या'नी जिस की बा'ज़ तक्बीरें फ़ौत हो गईं वोह) अपनी बाक़ी तक्बीरें इमाम के सलाम फेरने के बा'द कहे और अगर येह अन्देशा हो कि दुआ़ वग़ैरा पढ़ेगा तो पूरी करने से क़ब्ल लोग जनाज़े को कन्धे तक उठा लेंगे तो सिर्फ़ तक्बीरें कह ले दुआ़ वग़ैरा छोड़ दे । चौथी

www.dawateislami.net

तक्बीर के बा'द जो शख़्स आया तो जब तक इमाम ने सलाम नहीं फेरा शामिल हो जाए और इमाम के सलाम के बा'द तीन बार "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहे। फिर सलाम फेर दे। (دُرِّمُختار ج۳ص۱۳۶)

पागल या ख़ुदकुशी वाले का जनाज़ा

जो पैदाइशी पागल हो या बालिग़ होने से पहले पागल हो गया हो और इसी पागल पन में मौत वाक़ेअ़ हुई तो उस की नमाज़े जनाज़ा में ना बालिग़ की दुआ़ पढ़ेंगे। (جوھرہ ص۱۳۸،غُنیہ ص ۵۸۷) जिस ने ख़ुदकुशी की उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाएगी। (دُرِّمُختار ج۳ص۱۲۷)

मुर्दा बच्चे के अह़काम

मुसल्मान का बच्चा ज़िन्दा पैदा हुवा या'नी अक्सर ह़िस्सा बाहर होने के वक़्त ज़िन्दा था फिर मर गया तो उस को ग़ुस्ल व कफ़न देंगे और उस की नमाज़ पढ़ेंगे, वरना उसे वैसे ही नहला कर एक कपड़े में लपेट कर दफ़्न कर देंगे। इस के लिये सुन्नत के मुत़ाबिक़ ग़ुस्ल व कफ़न नहीं है और नमाज़ भी इस की नहीं पढ़ी जाएगी। सर की त़रफ़ से अक्सर की मिक़्दार सर से ले कर सीने तक है। लिहाज़ा अगर इस का सर बाहर हुवा था और चीख़ता था मगर सीने तक निकलने से पहले ही फ़ौत हो गया तो उस की नमाज़ नहीं पढ़ेंगे। पाउं की जानिब से अक्सर की मिक़्दार कमर तक है। बच्चा ज़िन्दा पैदा हुवा या मुर्दा या कच्चा गिर गया उस का नाम रखा जाए और वोह क़ियामत के दिन उठाया जाएगा। (دُرِّمُختار ورَدُّالمُحتار ج۳ص۱۵۲۔۱۵۴, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 841)

जनाज़े को कन्धा देने का सवाब

ह़दीसे पाक में है : "जो जनाज़े को चालीस क़दम ले कर चले

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سُنّی)

उस के **चालीस कबीरा गुनाह** मिटा दिये जाएंगे ।" नीज़ ह़दीस शरीफ़ में है : जो जनाज़े के चारों पायों को कन्धा दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **ह़त्मी** (या'नी मुस्तक़िल) मग़्फ़िरत फ़रमा देगा ।

(اَلْجَوْهَرَةُ النَّيِّرَة ص١٣٩، دُرِّمُختار ج٣ ص١٥٨-١٥٩, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 823)

जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा

जनाज़े को कन्धा देना इ़बादत है । सुन्नत येह है कि यके बा'द दीगरे चारों पायों को कन्धा दे और हर बार दस दस क़दम चले । पूरी सुन्नत येह है कि पहले सीधे सिरहाने कन्धा दे फिर सीधी पाइंती (या'नी सीधे पाउं की त़रफ़) फिर उलटे सिरहाने फिर उलटी पाइंती और दस दस क़दम चले तो कुल चालीस क़दम हुए । (عالمگیری ج١ ص١٦٢, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 822) बा'ज़ लोग जनाज़े के जुलूस में ए'लान करते रहते हैं, दो दो क़दम चलो ! उन को चाहिये कि इस त़रह़ ए'लान किया करें : **"दस दस क़दम चलो ।"**

बच्चे का जनाज़ा उठाने का त़रीक़ा

छोटे बच्चे के जनाज़े को अगर एक शख़्स हाथ पर उठा कर ले चले तो ह़रज नहीं और यके बा'द दीगरे लोग हाथों हाथ लेते रहें । (عالمگیری ج١ ص١٦٢) औ़रतों को (बच्चा हो या बड़ा किसी के भी) जनाज़े के साथ जाना **ना जाइज़** व मम्नूअ़ है ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 823, دُرِّمُختار ج٣ ص١٦٢)

नमाज़े जनाज़ा के बा'द वापसी के मसाइल

जो शख़्स जनाज़े के साथ हो उसे बिग़ैर नमाज़ पढ़े वापस न होना चाहिये और नमाज़ के बा'द औलियाए मय्यित (या'नी मरने वाले

www.dawateislami.net

के सर परस्तों) से इजाज़त ले कर वापस हो सकता है और दफ़्न के बा'द इजाज़त की ह़ाजत नहीं। (عالمگیری ج۱ص۱۶۵)

क्या शोहर बीवी के जनाज़े को कन्धा दे सकता है ?

शोहर अपनी बीवी के जनाज़े को कन्धा भी दे सकता है, **क़ब्र** में भी उतार सकता है और मुंह भी देख सकता है। सिर्फ़ ग़ुस्ल देने और बिला ह़ाइल बदन को छूने की मुमा-न-अ़त है। औ़रत अपने शोहर को ग़ुस्ल दे सकती है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 812, 813)

मुरतद की नमाज़े जनाज़ा का हुक्मे शर-ई

मुरतद और काफ़िर के जनाज़े का एक ही हुक्म है। मज़हब तब्दील कर के ईसाई (क्रिस्चेन) होने वाले का जनाज़ा पढ़ने वाले के बारे में किये गए एक सुवाल का जवाब देते हुए सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा** र-ज़विय्या जिल्द 9 सफ़्ह़ा 170 पर इर्शाद फ़रमाते हैं : अगर ब सुबूते शर-ई साबित हो कि मय्यित "**عِیاذًا بِاللّٰہ**" (या'नी ख़ुदा की पनाह) तब्दीले मज़हब कर के ईसाई (क्रिस्चेन) हो चुका था तो बेशक उस के जनाज़े की नमाज़ और मुसल्मानों की त़रह़ इस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन सब **ह़रामे क़त़ई** थी। **قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی** (**अल्लाह तआ़ला** फ़रमाता है)

وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤی اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰی قَبْرِهٖ ؕ (پ۱۰،التوبہ:۸۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उस की **क़ब्र** पर खड़े होना।

www.dawateislami.net

मगर नमाज़ पढ़ने वाले अगर उस की नसरानिय्यत (या'नी क्रिस्चेन होने) पर मुत्त़लअ़ न थे और बर बिनाए इ़ल्मे साबिक़ (या'नी पिछली मा'लूमात के सबब) उसे मुसल्मान समझते थे न उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन व नमाज़ तक उन के नज़्दीक उस शख़्स का नसरानी (या'नी क्रिस्चेन) हो जाना साबित हुवा, तो इन अफ़्आ़ल में वोह अब भी मा'ज़ूर व बे क़ुसूर हैं कि जब उन की दानिस्त (या'नी मा'लूमात) में वोह मुसल्मान था, उन पर येह अफ़्आ़ल बजा लाने ब ज़ो'मे ख़ुद शरअ़न लाज़िम थे, हां अगर येह भी उस की ईसाइय्यत से ख़बरदार थे फिर नमाज़ व तज्हीज़ो तक्फ़ीन के मुर-तकिब हुए क़त्अ़न सख़्त गुनहगार और वबाले कबीरा में गिरिफ़्तार हुए, जब तक तौबा न करें नमाज़ उन के पीछे मक्रूह। मगर मुआ़-म-लए मुरतद्दीन फिर भी बरत्ना जाइज़ नहीं कि येह लोग भी इस गुनाह से काफ़िर न होंगे। हमारी शर-ए़ मुत़ह्हर सिराते़ मुस्तक़ीम है, इफ़रात़ो तफ़रीत़ (या'नी ह़द्दे ए'तिदाल से बढ़ाना घटाना) किसी बात में पसन्द नहीं फ़रमाती, अलबत्ता अगर साबित हो जाए कि उन्हों ने उसे नसरानी जान कर न सिर्फ़ ब वज्हे ह़माक़त व जहालत किसी ग़-रज़े दुन्यवी की निय्यत से बल्कि ख़ुद इसे ब वज्हे नसरानिय्यत मुस्तह़िक़्क़े ता'ज़ीम व क़ाबिले तज्हीज़ो तक्फ़ीन व नमाज़े जनाज़ा तसव्वुर किया तो बेशक जिस जिस का ऐसा ख़याल होगा वोह सब भी काफ़िर व मुरतद हैं और उन से वोही मुआ़-मला बरत्ना वाजिब जो मुरतद्दीन से बरता जाए। (फ़तावा र-ज़विय्या)

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पारह 10 **सू-रतुत्तौबह** की आयत नम्बर 84 में इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۸۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर खड़े होना बेशक वोह **अल्लाह** व रसूल से मुन्किर हुए और फ़िस्क़ (कुफ़्र) ही में मर गए।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : इस आयत से साबित हुवा कि काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ किसी ह़ाल में जाइज़ नहीं और काफ़िर की क़ब्र पर दफ़्न व ज़ियारत के लिये खड़े होना भी मम्नूअ़ है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 376)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सरकारे **मदीनए मुनव्वरह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अगर वोह बीमार पड़ें तो पूछने न जाओ, मर जाएं तो जनाज़े में ह़ाज़िर न हो। **(اِبنِ ماجه ج۱ص۷۰حديث۹۲)**

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से जनाज़े के मु-तअ़ल्लिक़ पांच म-दनी फूल

"फ़ुलां मेरी नमाज़ पढ़ाए" ऐसी वसिय्यत का हुक्म

﴾1﴿ मय्यित ने वसिय्यत की थी कि मेरी नमाज़ फ़ुलां पढ़ाए या मुझे फ़ुलां शख़्स ग़ुस्ल दे तो येह वसिय्यत बात़िल है या'नी इस वसिय्यत से (मरने वाले के) वली (या'नी सर परस्त) का ह़क़ जाता न रहेगा, हां वली को इख़्तियार है कि ख़ुद न पढ़ाए उस से पढ़वा दे। (बहारे शरीअ़त,

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

जि. 1, स. 837, عالمگیری ج۱ ص۱۶۳ وغیرہ) अगर किसी मुत्तक़ी बुज़ुर्ग या आ़लिम के बारे में वसिय्यत की हो तो वु-रसा को चाहिये कि इस पर अ़मल करें।

इमाम मय्यित के सीने की सीध में खड़ा हो

﴾2﴿ **मुस्तह़ब** येह है कि मय्यित के सीने के सामने इमाम खड़ा हो और मय्यित से दूर न हो मय्यित ख़्वाह मर्द हो या औ़रत बालिग़ हो या ना बालिग़, येह उस वक़्त है कि एक ही मय्यित की नमाज़ पढ़ानी हो और अगर चन्द हों तो एक के सीने के मुक़ाबिल (या'नी सामने) और क़रीब खड़ा हो। (دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتارج۳ص۱۳٤)

नमाज़े जनाज़ा पढ़े बिग़ैर दफ़्ना दिया तो ?

﴾3﴿ मय्यित को बिग़ैर नमाज़ पढ़े दफ़्न कर दिया और मिट्टी भी दे दी गई तो अब उस की **क़ब्र** पर नमाज़ पढ़ें जब तक फटने का गुमान न हो, और मिट्टी न दी गई हो तो निकालें और नमाज़ पढ़ कर दफ़्न करें, और **क़ब्र** पर नमाज़ पढ़ने में दिनों की कोई ता'दाद मुक़र्रर नहीं कि कितने दिन तक पढ़ी जाए कि येह मौसिम और ज़मीन और मय्यित के जिस्म व मरज़ के इख़्तिलाफ़ से मुख़्तलिफ़ है, गरमी में जल्द फटेगा और जाड़े (या'नी सर्दी) में ब-देर (या'नी देर में), तर (या'नी गीली) या शोर (या'नी खारी) ज़मीन में जल्द, ख़ुश्क और ग़ैरे शोर में ब-देर, फ़र्बा (या'नी मोटा) जिस्म जल्द, लाग़र (या'नी दुबला पतला) देर में। (اَیضاً ص۱٤٦)

मकान में दबे हुए की नमाज़े जनाज़ा

﴾4﴿ कूंएं में गिर कर मर गया या उस के ऊपर मकान गिर पड़ा और मुर्दा निकाला न जा सका तो उसी जगह उस की नमाज़ पढ़ें, और

www.dawateislami.net

दरिया में डूब गया और निकाला न जा सका तो उस की नमाज़ नहीं हो सकती कि मय्यित का मुसल्ली (या'नी नमाज़ पढ़ने वाले) के आगे होना मा'लूम नहीं। (رَدُّالْمُحتار ج٣ص١٤٧)

नमाज़े जनाज़ा में ता'दाद बढ़ाने के लिये ताख़ीर

﴾5﴿ **जुमुआ़** के दिन किसी का इन्तिक़ाल हुवा तो अगर **जुमुआ़** से पहले तज्हीज़ो तक्फ़ीन हो सके तो पहले ही कर लें, इस ख़याल से रोक रखना कि **जुमुआ़** के बा'द मज्मअ़ ज़ियादा होगा मक्रूह है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 840, رَدُّالْمُحتار ج٣ص ١٧٣ वग़ैरा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये

मर्ह़ूम के अ़ज़ीज़ व अह़बाब तवज्जोह फ़रमाएं! मर्ह़ूम ने अगर ज़िन्दगी में कभी आप की दिल आज़ारी या ह़क़ त-लफ़ी की हो या आप के मक़रूज़ हों तो इन को रिज़ाए इलाही के लिये मुआ़फ़ कर दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मर्ह़ूम का भी भला होगा और आप को भी सवाब मिलेगा। नमाज़े जनाज़ा की निय्यत और इस का त़रीक़ा भी सुन लीजिये। "**मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की, वासित़े अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के, दुआ़ इस मय्यित के लिये पीछे इस इमाम के।**" अगर येह अल्फ़ाज़ याद न रहें तो कोई ह़रज नहीं, आप के दिल में येह निय्यत होनी ज़रूरी है कि "मैं इस मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ रहा हूं" जब इमाम

www.dawateislami.net

साह़िब "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहें तो कानों तक हाथ उठाने के बा'द "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहते हुए फ़ौरन ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और **सना** पढ़िये। **दूसरी** बार इमाम साह़िब "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहिये, फिर नमाज़ वाला **दुरूदे इब्राहीम** पढ़िये। **तीसरी** बार इमाम साह़िब "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहिये और बालिग़ के जनाज़े की दुआ़ पढ़िये[1] जब **चौथी** बार इमाम साह़िब "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहें तो आप "اَللّٰہُ اَکْبَر" कह कर दोनों हाथों को खोल कर लटका दीजिये और इमाम साह़िब के साथ क़ाइदे के मुत़ाबिक़ सलाम फेर दीजिये।

एक चुप 100 सुख

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

25 मुह़र्रमुल ह़राम 1435 सि.हि.

30-11-2013

सवाब कमाने का म-दनी मौक़अ़

जनाज़े के इन्तिज़ार में जहां लोग जम्अ़ हों वहां इस रिसाले से दर्स दे कर ख़ूब सवाब कमाइये। नीज़ अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये ऐसे मौक़अ़ पर जनाज़े के जुलूस में या ता'ज़ियत के लिये जम्अ़ होने वालों में येह रिसाला तक़्सीम फ़रमाइये।

1 : अगर ना बालिग़ या ना बालिग़ा का जनाज़ा हो तो उस की दुआ़ पढ़ने का ए'लान कीजिये।

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفلِ مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللہ

بقیع

फ़ैज़ाने जुमुआ

इस रिसाले में......

- दस दिन तक बलाओं से ह़िफ़ाज़त
- 200 साल की इ़बादत का सवाब
- गुस्ले जुमुआ़ का वक़्त
- ग़रीबों का ह़ज
- रूह़ें जम्अ़ होती हैं
- पहली अज़ान होते ही कारोबार ना जाइज़
- दस हज़ार बरस के रोज़ों का सवाब

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फै़ज़ाने जुमुआ़

शैत़ान सुस्ती दिलाएगा मगर आप येह रिसाला (25 सफ़ह़ात) पूरा पढ़ कर ईमान ताज़ा कीजिये ।

जुमुआ़ को दुरूद शरीफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : जिस ने मुझ पर रोज़े **जुमुआ़** दो सो200 बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के **दो सो200 साल** के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث۲۲۳۵۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम कितने ख़ुश नसीब हैं कि **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सदके़ हमें **जुमुअ़तुल मुबारक** की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया । अफ़्सोस ! हम ना क़दरे **जुमुआ़** शरीफ़ को भी आ़म दिनों की त़रह़ ग़फ़्लत में गुज़ार देते हैं ह़ालां कि **जुमुआ़** यौमे ईद है, **जुमुआ़** सब दिनों का सरदार है, **जुमुआ़** के रोज़ जहन्नम की आग नहीं सुलगाई जाती, **जुमुआ़** की रात दोज़ख़ के दरवाज़े नहीं खुलते, **जुमुआ़** को बरोज़े क़ियामत दुल्हन की त़रह़ उठाया जाएगा, **जुमुआ़** के रोज़ मरने वाला ख़ुश नसीब मुसल्मान शहीद का रुत्बा पाता और अ़ज़ाबे **क़ब्र**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہٖ و الہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

से मह़फ़ूज़ हो जाता है । **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان के फ़रमान के मुत़ाबिक़, **जुमुआ** को ह़ज हो तो इस का सवाब सत्तर70 ह़ज के बराबर है, **जुमुआ की एक नेकी का सवाब सत्तर गुना है ।** (चूंकि जुमुआ का शरफ़ बहुत ज़ियादा है लिहाज़ा) **जुमुआ के रोज़ गुनाह का अ़ज़ाब भी सत्तर गुना है ।**

(मुलख़्ख़स अज़ मिरआत, जि. 2, स. 323, 325, 336)

जुमुअ़तुल मुबारक के फ़ज़ाइल के तो क्या कहने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **जुमुआ** के मु-तअ़ल्लिक़ एक पूरी सूरत **"सू-रतुल जुमुअ़ह"** नाज़िल फ़रमाई है जो कि कुरआने करीम के 28वें पारे में जगमगा रही है । **अल्लाह तबा-र-क व तआला सू-रतुल जुमुअ़ह** की आयत नम्बर 9 में इर्शाद फ़रमाता है :

يَاۤ اَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِیَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ یَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَیْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝۹

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुआ के दिन तो **अल्लाह** के ज़िक्र की त़रफ़ दौड़ो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो, येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो ।

आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہٖ و الہٖ وسلَّم ने पहला जुमुआ कब अदा फ़रमाया

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : **हु़ज़ूर** عَلَیْہِ السَّلَام जब हिजरत कर के **मदीनए त़य्यिबा** तशरीफ़ लाए तो 12 रबीउ़ल अव्वल (622 सि.ई.) रोज़े दो2 शम्बा (या'नी पीर शरीफ़) को चाश्त के वक़्त

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

मक़ामे **क़ुबा** में इक़ामत फ़रमाई। दो[2] शम्बा (या'नी पीर शरीफ़) सेह शम्बा (या'नी मंगल) चहार शम्बा (या'नी बुध) पंज शम्बा (या'नी जुमा'रात) यहां क़ियाम फ़रमाया और मस्जिद की बुन्याद रखी। रोज़े **जुमुआ़ मदीनए त़य्यिबा** का अ़ज़्म फ़रमाया। बनी सालिम इब्ने औ़फ़ के बत़्ने वादी में **जुमुआ़** का वक़्त आया उस जगह को लोगों ने मस्जिद बनाया। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां **जुमुआ़** अदा फ़रमाया और ख़ुत़्बा फ़रमाया। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 884)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज भी उस जगह पर शानदार "**मस्जिदे जुमुआ़**" क़ाइम है और ज़ाइरीन हुसूले ब-र-कत के लिये उस की ज़ियारत करते और वहां नवाफ़िल अदा करते हैं।

जुमुआ़ के मा'ना

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : चूंकि इस दिन में तमाम मख़्लूक़ात वुजूद में **मुज्तमअ़** (या'नी इकठ्ठी) हुई कि तक्मीले ख़ल्क़ इसी दिन हुई नीज़ ह़ज़रते **आदम** عَلَیْہِ السَّلام की मिट्टी इसी दिन जम्अ़ हुई **नीज़ इस दिन में लोग जम्अ़ हो कर नमाज़े जुमुआ़ अदा करते हैं,** इन वुजूह से इसे **जुमुआ़** कहते हैं। इस्लाम से पहले अहले अ़रब इसे **अ़रूबह** कहते थे। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 317)

सरकार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुल कितने जुमुए अदा फ़रमाए ?

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **नबिय्ये** करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

तक़रीबन पांच सो जुमुए पढ़े हैं इस लिये कि जुमुआ़ बा'दे हिजरत शुरूअ़ हुवा जिस के बा'द दस साल आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ज़िन्दगी शरीफ़ रही इस अ़र्से में जुमुए इतने ही होते हैं।

(मिरआत, जि. 2, स. 346, لمعات للشیخ عبد الحق الدھلوی ج٤ ص١٩٠ تحتَ الحدیث١٤١٥)

तीन जुमुए सुस्ती से छोड़े उस के दिल पर मोहर

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स तीन **जुमुआ़** (की नमाज़) सुस्ती के सबब छोड़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के दिल पर मोहर कर देगा।" (سُنَنِ تِرمِذی ج٢ ص٣٨ حدیث٥٠٠)

जुमुआ़ फ़र्ज़े ऐन है और इस की फ़र्ज़िय्यत ज़ोहर से ज़ियादा **मुअक्कद** (या'नी ताकीदी) है और इस का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) काफ़िर है। (دُرِّمُختار ج ٣ ص٥, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 762)

जुमुआ़ के इ़मामा की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : "बेशक **अल्लाह** तआ़ला और उस के फ़िरिश्ते **जुमुआ़ के दिन इ़मामा** बांधने वालों पर **दुरूद** भेजते हैं।" (مَجمَعُ الزَّوائِد ج٢ ص٣٩٤ حدیث٣٠٧٥)

शिफ़ा दाख़िल होती है

ह़ज़रते ह़ुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया : "जो शख़्स **जुमुआ़** के दिन अपने नाख़ुन काटता है **अल्लाह** तआ़ला उस से बीमारी निकाल कर शिफ़ा

www.dawateislami.net

दाख़िल कर देता है।" (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج۲ ص۶۵)

दस दिन तक बलाओं से ह़िफ़ाज़त

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, **ह़दीसे** पाक में है : जो **जुमुआ़** के रोज़ नाख़ुन तरश्वाए **अल्लाह** तआ़ला उस को दूसरे जुमुए़ तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक। एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरश्वाए तो **रह़मत आएगी गुनाह जाएंगे।**

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 226, دُرِّمُختار ورَدُّالمُحتار ج۹ ص۶۶۸،۶۶۹)

रिज़्क़ में तंगी का एक सबब

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **जुमुआ़** के दिन नाख़ुन तरश्वाना **मुस्तह़ब** है, हां अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो **जुमुआ़** का इन्तिज़ार न करे कि नाख़ुन बड़ा होना अच्छा नहीं क्यूं कि नाख़ुनों का बड़ा होना **तंगिये रिज़्क़ का सबब** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 225)

फ़िरिश्ते ख़ुश नसीबों के नाम लिखते हैं

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत, मम्बए़ जूदो सख़ावत, सरापा फ़ज़्लो रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : "**जब जुमुआ़** का दिन आता है तो मस्जिद के दरवाज़े पर फ़िरिश्ते आने वाले को लिखते हैं, जो पहले आए उस को पहले लिखते हैं, जल्दी आने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो **अल्लाह** तआ़ला की

www.dawateislami.net

राह में **एक ऊंट** स-दक़ा करता है, और उस के बा'द आने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो **एक गाय** स-दक़ा करता है, उस के बा'द वाला उस शख़्स की मिस्ल है जो **मेंढा** स-दक़ा करे, फिर उस की मिस्ल है जो **मुर्ग़ी** स-दक़ा करे, फिर उस की मिस्ल है जो **अन्डा** स-दक़ा करे और जब इमाम (ख़ुत़्बे के लिये) बैठ जाता है तो वोह आ'माल नामों को लपेट लेते हैं और आ कर ख़ुत़्बा सुनते हैं।" (صَحیح بُخاری ج۱ ص۳۱۹ حدیث۹۲۹)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया कि मलाएका जुमुआ़ की तुलूए़ फ़ज्र से खड़े होते हैं, बा'ज़ के नज़्दीक आफ़्ताब चमक्ने से, मगर ह़क़ येह है कि सूरज ढलने (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोह्र) से शुरूअ़ होते हैं क्यूं कि उसी वक़्त से वक़्ते जुमुआ़ शुरूअ़ होता है, मा'लूम हुवा कि वोह फ़िरिश्ते सब आने वालों के नाम जानते हैं, ख़याल रहे कि अगर अव्वलन सो100 आदमी एक साथ मस्जिद में आएं तो वोह सब अव्वल हैं। (मिरआत, जि. 2, स. 335)

पहली सदी में जुमुआ़ का जज़्बा

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : पहली सदी में स-ह़री के वक़्त और फ़ज्र के बा'द रास्ते लोगों से भरे हुए देखे जाते थे, वोह चराग़ लिये हुए (नमाज़े जुमुआ़ के लिये) जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जाते गोया ई़द का दिन हो, ह़त्ता कि येह (या'नी नमाज़े जुमुआ़ के लिये जल्दी

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

जाने का) का सिल्सिला ख़त्म हो गया। पस कहा गया कि इस्लाम में जो पहली बिद्अ़त ज़ाहिर हुई वोह जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जल्दी जाना छोड़ना है। अफ़्सोस ! मुसल्मानों को किसी त़रह़ यहूदियों से ह़या नहीं आती कि वोह लोग अपनी इ़बादत गाहों की त़रफ़ हफ़्ते और इतवार के दिन सुब्ह़ सवेरे जाते हैं नीज़ त़लब गाराने दुन्या ख़रीद व फ़रोख़्त और ह़ुसूले नफ़्ए़ दुन्यवी के लिये सवेरे सवेरे बाज़ारों की त़रफ़ चल पड़ते हैं तो आख़िरत त़लब करने वाले इन से मुक़ाबला क्यूं नहीं करते ! (اِحیاءُ العُلوم ج۱ص۲٤٦) **जहां जुमुआ़ पढ़ा जाता है उस को ''जामेअ़ मस्जिद'' बोलते हैं।**

ग़रीबों का ह़ज

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلْجُمُعَةُ حَجُّ الْمَسَاكِيْن या'नी **जुमुआ़** की नमाज़ मसाकीन का ह़ज है। और दूसरी रिवायत में है कि اَلْجُمُعَةُ حَجُّ الْفُقَرَاء या'नी **जुमुआ़** की नमाज़ ग़रीबों का **ह़ज** है। (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج٤ ص٨٤ حدیث١١١٠٩،١١١٠٨)

जुमुआ़ के लिये जल्दी निकलना ह़ज है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बिला शुबा तुम्हारे लिये हर **जुमुआ़** के दिन में **एक ह़ज** और

www.dawateislami.net

एक उ़म्रह मौजूद है, लिहाज़ा **जुमुआ़** की नमाज़ के लिये जल्दी निकलना **ह़ज** है और जुमुआ़ की नमाज़ के बा'द अ़स्र की नमाज़ के लिये इन्तिज़ार करना **उ़म्रह** है।" (اَلسّنَنُ الکُبریٰ لِلْبَیْھَقِی ج۳ص۳٤۲ حدیث ۵۹۵۰)

ह़ज व उ़म्रह का सवाब

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : (नमाज़े जुमुआ़ के बा'द) अ़स्र की नमाज़ पढ़ने तक मस्जिद ही में रहे और अगर नमाज़े मग़रिब तक ठहरे तो **अफ़्ज़ल** है। कहा जाता है कि जिस ने जामेअ़ मस्जिद में (जुमुआ़ अदा करने के बा'द वहीं रुक कर) नमाज़े अ़स्र पढ़ी उस के लिये **ह़ज** का सवाब है और जिस ने (वहीं रुक कर) मग़रिब की नमाज़ पढ़ी उस के लिये **ह़ज** और **उ़म्रे** का सवाब है।

(اِحْیاءُ الْعُلوم ج۱ص۲٤۹)

सब दिनों का सरदार

नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम, सुल्त़ाने ज़ी ह़शम, ताजदारे ह़रम, सरापा जूदो करम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : **जुमुआ़ का दिन तमाम दिनों का सरदार है** और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ा है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक **ई़दुल अज़्ह़ा** और **ई़दुल फ़ित्र** से बड़ा है। इस में पांच[5] ख़स्लतें हैं : ﴾1﴿ **अल्लाह** तआ़ला ने इसी में आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) को पैदा किया और ﴾2﴿ इसी में ज़मीन पर उन्हें उतारा और ﴾3﴿ इसी में उन्हें वफ़ात दी और ﴾4﴿ इस में

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

एक साअ़त ऐसी है कि बन्दा उस वक़्त जिस चीज़ का सुवाल करेगा वोह उसे देगा जब तक ह़राम का सुवाल न करे और ﴾5﴿ इसी दिन में क़ियामत क़ाइम होगी। कोई मुक़र्रब फ़िरिश्ता व आस्मान व ज़मीन और हवा व पहाड़ और दरिया ऐसा नहीं कि **जुमुआ़** के दिन से डरता न हो।

(سُنَنِ اِبنِ ماجه ج٢ص٨حديث١٠٨٤)

जानवरों का ख़ौफ़े क़ियामत

एक और रिवायत में **सरकारे** मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया है कि कोई जानवर ऐसा नहीं कि जुमुआ़ के दिन सुब्ह़ के वक़्त आफ़्ताब निकलने तक क़ियामत के डर से चीख़ता न हो, सिवाए आदमी और जिन्न के। (مُؤطّا امام مالك ج١ص١١٥حديث٢٤٦)

दुआ़ क़बूल होती है

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे **मदीनए मुनव्वरह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इनायत निशान है : **जुमुआ़** में एक ऐसी घड़ी है कि अगर कोई मुसल्मान उसे पा कर उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कुछ मांगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ज़रूर देगा और वोह घड़ी मुख़्तसर है। (صَحيح مُسلِم ص٤٢٤حديث٨٥٢)

अ़स्र व मग़रिब के दरमियान ढूंडो

हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है : "**जुमुआ़** के दिन जिस साअ़त की ख़्वाहिश की जाती है उसे अ़स्र के बा'द से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक तलाश करो।"

(سُنَنِ تِرمِذی ج٢ص٣٠حديث٤٨٩)

www.dawateislami.net

साहि़बे बहारे शरीअ़त का इर्शाद

ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह मौलाना मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : क़बूलिय्यते दुआ़ की साअ़तों के बारे में दो[2] क़ौल क़वी हैं : ﴾1﴿ इमाम के खु़त़्बे के लिये बैठने से ख़त्मे नमाज़ तक ﴾2﴿ **जुमुआ़** की पिछली (या'नी आख़िरी) साअ़त।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 754)

क़बूलिय्यत की घड़ी कौन सी ?

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : रात में रोज़ाना क़बूलिय्यते दुआ़ की साअ़त (या'नी घड़ी) आती है मगर दिनों में सिर्फ़ **जुमुआ़** के दिन। मगर यक़ीनी त़ौर पर येह नहीं मा'लूम कि वोह साअ़त कब है, ग़ालिब येह कि **दो[2] खु़त़्बों** के दरमियान या मग़रिब से कुछ पहले। एक और ह़दीसे पाक के तह़त मुफ़्ती साहि़ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस साअ़त के मु-तअ़ल्लिक़ उ़-लमा के चालीस क़ौल हैं, जिन में दो[2] क़ौल ज़ियादा क़वी हैं, एक दो[2] खु़त़्बों के दरमियान का, दूसरा आफ़्ताब डूबते वक़्त का। (मिरआत, जि. 2, स. 319, 320)

ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यि-दतुना **फ़ाति़-मतुज्ज़हरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उस वक़्त खु़द हुजरे में बैठतीं और अपनी ख़ादिमा फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बाहर खड़ा करतीं, जब आफ़्ताब डूबने लगता तो ख़ादिमा आप को ख़बर

www.dawateislami.net

देतीं, उस की ख़बर पर **सय्यिदह** अपने हाथ दुआ़ के लिये उठातीं। (ऐज़न, स. 320) **बेहतर येह है कि इस साअ़त में** (कोई) जामेअ़ **दुआ़** मांगे जैसे येह कुरआनी दुआ़ : رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ○ (پ۲البقرة:۲۰۱) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा) (मिरआत, जि. 2, स. 325) दुआ़ की निय्यत से दुरूद शरीफ़ भी पढ़ सकते हैं कि दुरूदे पाक भी अ़ज़ीमुश्शान दुआ़ है। **अफ़्ज़ल येह है कि दोनों ख़ुत़्बों के दरमियान बिग़ैर हाथ उठाए बिला ज़बान हिलाए दिल में दुआ़ मांगी जाए।**

हर जुमुआ़ को एक करोड़ 44 लाख जहन्नम से आज़ाद

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नजात निशान है : **जुमुआ़** के दिन और रात में चौबीस घन्टे हैं कोई घन्टा ऐसा नहीं जिस में **अल्लाह** तआ़ला जहन्नम से **छ[6] लाख आज़ाद** न करता हो, जिन पर जहन्नम **वाजिब** हो गया था। (مُسْنَد اَبِی یَعْلٰی ج۳ص۲۹۱۔۲۳۵حدیث۳٤۲۱،۳٤۷۱)

अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़

ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो रोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी शब) मरेगा अ़ज़ाबे **क़ब्र** से बचा लिया जाएगा और क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि **उस पर शहीदों की मोहर** होगी। (حِلْیَةُ الْاولیاء ج۳ص۱۸۱حدیث۳٦۲۹)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلی)

जुमुआ़ ता जुमुआ़ गुनाहों की मुआ़फ़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स **जुमुआ़** के दिन नहाए और जिस त़हारत (या'नी पाकीज़गी) की इस्तित़ाअ़त हो करे और तेल लगाए और घर में जो ख़ुश्बू हो मले फिर नमाज़ को निकले और दो[2] शख़्सों में जुदाई न करे या'नी दो शख़्स बैठे हुए हों उन्हें हटा कर बीच में न बैठे और जो नमाज़ उस के लिये लिखी गई है पढ़े और इमाम जब ख़ुत़्बा पढ़े तो चुप रहे **उस के लिये उन गुनाहों की, जो इस जुमुआ़ और दूसरे जुमुआ़ के दरमियान हैं मग़्फ़िरत हो जाएगी ।** (صَحیح بُخاری ج۱ص۳۰۶حدیث۸۸۳)

200 साल की इ़बादत का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व ह़ज़रते सय्यिदुना इ़मरान बिन हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا रिवायत करते हैं कि **ताजदारे** मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो जुमुआ़ के दिन **नहाए** उस के गुनाह और ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं और जब चलना शुरूअ़ किया तो हर क़दम पर **बीस[20] नेकियां** लिखी जाती हैं । (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۱۸ص۱۳۹حدیث ۲۹۲) और दूसरी रिवायत में है : हर क़दम पर बीस[20] साल का अ़मल लिखा जाता है और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो उसे **दो सो[200]** बरस के अ़मल का अज्र मिलता है । (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ص۳۱۴ حدیث ۳۳۹۷)

www.dawateislami.net

मर्हूम वालिदैन को हर जुमुआ़ आ'माल पेश होते हैं

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, मह़बूबे परवर्द गार صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : पीर और जुमा'रात को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर **आ'माल** पेश होते हैं और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام और मां बाप के सामने हर **जुमुआ़** को। वोह नेकियों पर ख़ुश होते हैं और उन के चेहरों की सफ़ाई व ताबिश (या'नी चमक दमक) बढ़ जाती है, तो **अल्लाह** से डरो और अपने वफ़ात पाने वालों को **अपने गुनाहों** से रन्ज न पहुंचाओ। (نَوادِرُ الاصول لِلحَکیم التِرمذِی ج۲ص ۲۶۰)

जुमुआ़ के पांच ख़ुसूसी आ'माल

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू सई़द** رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, सरकारे दो आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : पांच चीजे़ं जो एक दिन में करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को **जन्नती** लिख देगा। 《1》 जो **मरीज़ की इ़यादत** को जाए 《2》 **नमाजे़ जनाज़ा** में ह़ाज़िर हो 《3》 **रोज़ा** रखे 《4》 (नमाजे़) **जुमुआ़** को जाए और 《5》 **ग़ुलाम** आज़ाद करे।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حِبّان ج٤ص١٩١حدیث ٢٧٦٠)

जन्नत वाजिब हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उमामा** رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने **जुमुआ़** की नमाज़ पढ़ी, उस दिन का **रोज़ा** रखा, किसी मरीज़ की **इ़यादत** की, किसी

www.dawateislami.net

जनाज़े में ह़ाज़िर हुवा और किसी **निकाह़** में शिर्कत की तो **जन्नत** उस के लिये वाजिब हो गई। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج٨ص٩٧حديث٧٤٨٤)

सिर्फ़ जुमुआ़ का रोज़ा न रखिये

ख़ुसूसिय्यत के साथ तन्हा **जुमुआ़** या सिर्फ़ हफ़्ता का रोज़ा रखना **मक्रूहे तन्ज़ीही** है। हां अगर किसी मख़्सूस तारीख़ को **जुमुआ़** या हफ़्ता आ गया तो कराहत नहीं। म-सलन 15 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म,** 27 **र-जबुल मुरज्जब** वग़ैरा। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** **जुमुआ़** का दिन तुम्हारे लिये **ईद** है इस दिन **रोज़ा** मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बा'द में भी रोज़ा रखो। (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٢ص٨١حديث١١)

दस हज़ार बरस के रोज़ों का सवाब

सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं **:** रोज़ए **जुमुआ़** या'नी जब इस के साथ **पंज शम्बा** (या'नी जुमा'रात का) या **शम्बा** (हफ़्ता का रोज़ा) भी शामिल हो, मरवी हुवा कि **दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है।**

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 653)

जुमुआ़ का रोज़ा कब मक्रूह है

जुमुआ़ का रोज़ा हर सूरत में मक्रूह नहीं, मक्रूह सिर्फ़ इसी सूरत में है जब कि कोई ख़ुसूसिय्यत के साथ जुमुआ़ का रोज़ा रखे। चुनान्चे **जुमुआ़ का रोज़ा कब मक्रूह है** इस ज़िम्न में **फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा** जिल्द 10 सफ़ह़ा 559 से **सुवाल जवाब** मुला-ह़ज़ा हों, **सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन इस मस्अले में

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह्मतें भेजता है। (مسلم)

कि **जुमुआ** का रोज़ए नफ़्ल रखना कैसा है ? एक शख़्स ने **जुमुआ** का रोज़ा रखा दूसरे ने उस से कहा : **जुमुआ ईदुल मुअमिनीन** है रोज़ा रखना इस दिन में मक्रूह है और ब इसरार बा'द दो पहर के रोज़ा तुड़वा दिया...। **जवाब : जुमुआ** का रोज़ा ख़ास इस निय्यत से कि आज **जुमुआ** है इस का रोज़ा **बित्तख़्सीस** चाहिये मक्रूह है मगर न वोह कराहत कि तोड़ना लाज़िम हुवा, और अगर ख़ास ब निय्यते **तख़्सीस** न थी तो अस्लन कराहत भी नहीं, उस दूसरे शख़्स को अगर निय्यते मक्रूहा पर इत्तिलाअ़ न थी जब तो ए'तिराज़ ही सिरे से ह़माक़त हुवा, और रोज़ा तोड़ देना शर-अ़ पर सख़्त **जुरअत**, और अगर इत्तिलाअ़ भी हुई जब भी मस्अला बता देना काफ़ी था न कि रोज़ा तुड़वाना, और वोह भी बा'द दो पहर के, जिस का इख़्तियार नफ़्ल रोज़े में वालिदैन के सिवा किसी को नहीं, तोड़ने वाला और तुड़वाने वाला दोनों गुनहगार हुए, तोड़ने वाले पर क़ज़ा लाज़िम है कफ़्फ़ारा अस्लन नहीं। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

जुमुआ को मां बाप की क़ब्र पर ह़ाज़िरी का सवाब

सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : जो अपने मां बाप दोनों या एक की **क़ब्र** पर हर **जुमुआ** के दिन ज़ियारत को ह़ाज़िर हो, **अल्लाह** तआ़ला उस के **गुनाह** बख़्श दे और मां बाप के साथ अच्छा बरताव करने वाला लिखा जाए। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطّبرانی ج٤ص٣٢١حدیث ٦١١٤)

क़ब्रे वालिदैन पर "यासीन" पढ़ने की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रोज़े **जुमुआ़** अपने वालिदैन या एक की **क़ब्र** की ज़ियारत करे और उस के पास **यासीन** पढ़े बख़्श दिया जाए।

(اَلْکامِل فِی ضُعَفاءِ الرِّجال ج٦ص٢٦٠)

तीन हज़ार मग़्फ़िरतें

सुल्त़ाने ह़-रमैन, रह़मते कौनैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बाइ़से चैन है : जो हर **जुमुआ़** वालिदैन या एक की ज़ियारते **क़ब्र** कर के वहां **यासीन** पढ़े, **यासीन** (शरीफ़) में जितने ह़र्फ़ हैं उन सब की गिनती के बराबर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये मग़्फ़िरत फ़रमाए। (اِتحافُ السّادۃ ج١٤ص٢٧٢) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हर **जुमुआ़** शरीफ़ को फ़ौत शुदा वालिदैन या इन में से एक की **क़ब्र** पर ह़ाज़िर हो कर यासीन शरीफ़ पढ़ने वाले का तो बेड़ा ही पार है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ यासीन शरीफ़ में 5 रुकूअ़ 83 आयात 729 कलिमात और **3000 ह़ुरूफ़** हैं अगर **इ़न्दल्लाह** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक) येह गिनती दुरुस्त है तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **तीन हज़ार मग़्फ़िरतों का सवाब मिलेगा।**

जुमुआ़ को यासीन पढ़ने वाले की मग़्फ़िरत होगी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : जो शबे जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी शब) **यासीन** पढ़े उस की **मग़्फ़िरत** हो जाएगी।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج١ص٢٩٨حدیث٤)

रूह़ें जम्अ़ होती हैं

जुमुआ़ के दिन **रूह़ें** जम्अ़ होती हैं लिहाज़ा इस में ज़ियारते क़ुबूर करनी चाहिये और **इस रोज़ जहन्नम** नहीं भड़काया जाता।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

(دُرِّمُختار ج٣ ص٤٩) **सरकारे** आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ज़ियारते (क़ुबूर) का अफ़्ज़ल वक़्त रोज़े जुमुआ़ बा'दे नमाज़े सुब्ह़ है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 523)

"सू-रतुल कह्फ़" की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है : नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा अ़-ज़मत है : "जो शख़्स **जुमुआ़** के रोज़ **सू-रतुल कह्फ़** पढ़े उस के क़दम से आस्मान तक नूर बुलन्द होगा जो क़ियामत को उस के लिये रोशन होगा और **दो जुमुओं के दरमियान जो गुनाह हुए हैं बख़्श दिये जाएंगे।"**

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج١ ص٢٩٨ حدیث٢)

दोनों जुमुआ़ के दरमियान नूर

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू सई़द** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, ह़ुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नूरुन अ़ला नूर है : "जो शख़्स बरोज़े **जुमुआ़ सू-रतुल कह्फ़** पढ़े उस के लिये दोनों **जुमुओं** के दरमियान नूर रोशन होगा।"

(اَلسّنَنُ الکُبری لِلْبَیْهَقِی ج٣ ص٣٥٣ حدیث٥٩٩٦)

का'बे तक नूर

एक रिवायत में है : "जो **सू-रतुल कह्फ़** शबे जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी शब) पढ़े उस के लिये वहां से **का'बे तक नूर** रोशन होगा।" (سُنَن دارِمی ج٢ ص٥٤٦ حدیث٣٤٠٧)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

"सूरए حٰمٓ الدُّخَان" की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उमामा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ **सू-रतुद्दुख़ान** पढ़े उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **जन्नत** में एक घर बनाएगा। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۸ص۲۶۴ حدیث ۸۰۲۶) **एक** रिवायत में है कि उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी। (سُنَنِ تِرمِذی ج ۴ ص۴۰۷ حدیث ۲۸۹۸)

सत्तर हज़ार फ़िरिश्तों का इस्तिग़्फ़ार

इमामुल अन्सारे वल मुहाजिरीन, **मुह़िब्बुल फ़ु-क़राए वल मसाकीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जो शख़्स रात में **सू-रतुद्दुख़ान** पढ़े तो सुब्ह़ होने तक उस के लिये **सत्तर हज़ार** फ़िरिश्ते इस्तिग़्फ़ार करेंगे।"

(سُنَنِ تِرمِذی ج۴ ص۴۰۶ حدیث ۲۸۹۷)

सारे गुनाह मुआ़फ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : जो शख़्स जुमुआ़ के दिन नमाज़े **फ़ज्र** से पहले तीन बार اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الَّذِیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ पढ़े **उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर की झाग से ज़ियादा हों।** (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج۵ص۳۹۲ حدیث۷۷۱۷)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

नमाज़े जुमुआ़ के बा'द

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पारह 28 **सू-रतुल जुमुअ़ह** की आयत नम्बर 10 में इर्शाद फ़रमाता है :

فَاِذَا قُضِیَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِی الْاَرْضِ وَ ابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब नमाज़ (जुमुआ़) हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और **अल्लाह** का फ़ज़्ल तलाश करो और **अल्लाह** को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे **ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान** में फ़रमाते हैं : अब (या'नी नमाज़े **जुमुआ़** के बा'द) तुम्हारे लिये जाइज़ है कि मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो या त़-लबे इ़ल्म या इ़यादते मरीज़ या शिर्कते जनाज़ा या ज़ियारते उ़-लमा या इस के मिस्ल कामों में मश्ग़ूल हो कर नेकियां ह़ासिल करो।

मजलिसे इ़ल्म में शिर्कत

नमाज़े जुमुआ़ के बा'द मजलिसे इ़ल्म में शिर्कत करना मुस्तह़ब है। चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का क़ौल है : इस आयत में (फ़क़त़) ख़रीद व फ़रोख़्त और कस्बे दुन्या मुराद नहीं बल्कि त़-लबे इ़ल्म, भाइयों की ज़ियारत, बीमारों की इ़यादत, जनाज़े के साथ जाना और इस त़रह़ के काम हैं। (کیمیائے سعادت ج۱ ص۱۹۱)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अदाएगिये जुमुआ वाजिब होने के लिये ग्यारह शर्तें हैं इन में से एक भी मा'दूम (कम) हो तो फ़र्ज़ नहीं फिर भी अगर पढ़ेगा तो हो जाएगा बल्कि मर्दे आ़क़िल बालिग़ के लिये **जुमुआ** पढ़ना अफ़्ज़ल है। ना बालिग़ ने **जुमुआ** पढ़ा तो नफ़्ल है कि इस पर नमाज़ फ़र्ज़ ही नहीं। (دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج۳ص۳۰)

"मेरे ग़ौसे आ'ज़म" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से अदाएगिये जुमुआ फ़र्ज़ होने की 11 शराइत़

❀ शह्‌र में मुक़ीम होना ❀ सिह़्ह़त, या'नी मरीज़ पर **जुमुआ** फ़र्ज़ नहीं मरीज़ से मुराद वोह है कि मस्जिदे **जुमुआ** तक न जा सकता हो या चला तो जाएगा मगर मरज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा। शैख़े फ़ानी मरीज़ के हुक्म में है ❀ आज़ाद होना, ग़ुलाम पर **जुमुआ** फ़र्ज़ नहीं और उस का आक़ा मन्अ़ कर सकता है ❀ मर्द होना ❀ बालिग़ होना ❀ आ़क़िल होना। येह दोनों[2] शर्तें ख़ास **जुमुआ** के लिये नहीं बल्कि हर इ़बादत के वुजूब में अ़क़्ल व बुलूग़ शर्त़ है ❀ अंखियारा होना ❀ चलने पर क़ादिर होना ❀ क़ैद में न होना ❀ बादशाह या चोर वग़ैरा किसी ज़ालिम का ख़ौफ़ न होना ❀ मींह या आंधी या ओले या सर्दी का न होना या'नी इस क़दर कि इन से नुक़्सान का ख़ौफ़े सह़ीह़ हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 770, 772)

जिन पर नमाज़ फ़र्ज़ है मगर किसी शर-ई उ़ज़्र के सबब जुमुआ फ़र्ज़ नहीं, उन को जुमुआ के रोज़ ज़ोह्‌र मुआफ़ नहीं है वोह तो पढ़नी ही होगी।

जुमुआ की सुन्नतें

नमाज़े जुमुआ के लिये अव्वल वक़्त में जाना, **मिस्वाक** करना, अच्छे और **सफ़ेद** कपड़े पहनना, **तेल** और ख़ुश्बू लगाना और पहली सफ़

www.dawateislami.net

में बैठना **मुस्तह़ब** है और **ग़ुस्ल** सुन्नत है। (عالمگیری ج۱ص۱٤۹، غُنیه ص۵۵۹)

ग़ुस्ले जुमुआ़ का वक़्त

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام फ़रमाते हैं कि ग़ुस्ले जुमुआ़ नमाज़ के लिये मस्नून है न कि **जुमुआ़** के दिन के लिये। लिहाज़ा जिन पर जुमुआ़ की नमाज़ नहीं उन के लिये येह ग़ुस्ल सुन्नत नहीं, बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام फ़रमाते हैं कि जुमुआ़ का ग़ुस्ल नमाज़े जुमुआ़ से क़रीब करो ह़त्ता कि इस के वुज़ू से जुमुआ़ पढ़ो मगर ह़क़ येह है कि ग़ुस्ले जुमुआ़ का वक़्त तुलूए़ फ़ज्र से शुरूअ़ हो जाता है। (मिरआत, जि. 2, स. 334) मा'लूम हुवा औ़रत और मुसाफ़िर वग़ैरा जिन पर जुमुआ़ वाजिब नहीं है उन के लिये ग़ुस्ले जुमुआ़ भी सुन्नत नहीं।

ग़ुस्ले जुमुआ़ सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा है

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی फ़रमाते हैं : नमाज़े जुमुआ़ के लिये ग़ुस्ल करना सु-नने ज़वाइद से है इस के तर्क पर इ़ताब (या'नी मलामत) नहीं। (رَدُّالْمُحتار ج۱ص۳۳۹)

ख़ुत़्बे में क़रीब रहने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना **समुरह** बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़ाज़िर रहो ख़ुत़्बे के वक़्त और इमाम से क़रीब रहो इस लिये कि आदमी जिस क़दर दूर रहेगा उसी क़दर जन्नत में पीछे रहेगा अगर्चे वोह (या'नी मुसल्मान) जन्नत में दाख़िल ज़रूर होगा। (سُنَنِ ابوداوٗد ج۱ص٤۱۰حدیث۱۱۰۸)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

तो जुमुआ़ का सवाब नहीं मिलेगा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो जुमुआ़ के दिन कलाम करे जब कि इमाम ख़ुत़्बा दे रहा हो तो उस की मिसाल उस गधे जैसी है जो किताबें उठाए हो और उस वक़्त जो कोई उस येह कहे कि "चुप रहो" तो उसे जुमुआ़ का सवाब न मिलेगा।

(مُسندِ اِمام احمد ج۱ ص۴۹٤ حدیث ۲۰۳۳)

चुपचाप ख़ुत़्बा सुनना फ़र्ज़ है

जो चीज़ें नमाज़ में ह़राम हैं म-सलन खाना पीना, सलाम व जवाबे सलाम वग़ैरा येह सब ख़ुत़्बे की ह़ालत में भी **ह़राम** हैं यहां तक कि **अम्रुन बिल मा'रूफ़**, हां ख़त़ीब **अम्रुन बिल मा'रूफ़** कर (या'नी नेकी की दा'वत दे) सकता है। जब ख़ुत़्बा पढ़े, तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना और चुप रहना **फ़र्ज़** है, जो लोग इमाम से दूर हों कि ख़ुत़्बे की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचती उन्हें भी चुप रहना **वाजिब** है अगर किसी को बुरी बात करते देखें तो हाथ या सर के इशारे से मन्अ़ कर सकते हैं ज़बान से **ना जाइज़** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 774, دُرِّمُختار ج۳ ص۳۹)

ख़ुत़्बा सुनने वाला दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ सकता

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक ख़त़ीब ने लिया तो ह़ाज़िरीन दिल में दुरूद शरीफ़ पढ़ें ज़बान से पढ़ने की उस वक़्त इजाज़त नहीं, यूंही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ज़िक्रे पाक पर उस वक़्त رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ज़बान से कहने की इजाज़त नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 775, دُرِّمُختار ج۳ ص٤٠)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइ़स है। (ابویعلٰی)

ख़ुत़्बए निकाह़ सुनना वाजिब है

ख़ुत़्बए जुमुआ़ के इ़लावा और ख़ुत़्बों का सुनना भी वाजिब है म-सलन ख़ुत़्बए ई़दैन व निकाह़ वग़ैरहुमा। (دُرِّمُختار ج۳ص۴۰)

पहली अज़ान होते ही कारोबार भी ना जाइज़

पहली अज़ान के होते ही (नमाज़े जुमुआ़ के लिये जाने की) कोशिश (शुरूअ़ कर देना) वाजिब है और बैअ़ (या'नी ख़रीद व फ़रोख़्त) वग़ैरा उन चीज़ों का जो सअ़्य (या'नी कोशिश) के मुनाफ़ी (या'नी ख़िलाफ़) हों छोड़ देना वाजिब। यहां तक कि रास्ते चलते हुए अगर ख़रीद व फ़रोख़्त की तो येह भी ना जाइज़ और **मस्जिद** में ख़रीद व फ़रोख़्त तो **सख़्त गुनाह** है और खाना खा रहा था कि अज़ाने **जुमुआ़** की आवाज़ आई अगर येह अन्देशा हो कि खाएगा तो **जुमुआ़** फ़ौत हो जाएगा तो खाना छोड़ दे और **जुमुआ़** को जाए। **जुमुआ़** के लिये इत़्मीनान व वक़ार के साथ जाए।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 775, عالمگیری ج۱ص۱۴۹، دُرِّمُختار ج۳ص۴۲)

आज कल इ़ल्मे दीन से दूरी का दौर है, लोग दीगर इ़बादात की त़रह़ ख़ुत़्बा सुनने जैसी अ़ज़ीम इ़बादत में भी ग़-लति़यां कर के कई गुनाहों का इरतिकाब करते हैं लिहाज़ा म-दनी इल्तिजा है कि ढेरों नेकियां कमाने के लिये हर जुमुआ़ को ख़त़ीब क़ब्ल अज़ अज़ाने ख़ुत़्बा मिम्बर पर चढ़ने से पहले येह ए'लान करे :

"बिस्मिल्लाह" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से ख़ुत़्बे के 7 म-दनी फूल

❀ **ह़दीसे** पाक में है : "जिस ने **जुमुआ़** के दिन लोगों की गरदनें

www.dawateislami.net

फलांगीं उस ने जहन्नम की त़रफ़ पुल बनाया।" (ترمذی ج۲ ص۴۸ حدیث۵۱۳) इस के एक मा'ना येह हैं कि उस पर चढ़ चढ़ कर लोग जहन्नम में दाख़िल होंगे। (ह़ाशियए बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 761, 762)

❀ **ख़त़ीब** की त़रफ़ मुंह कर के बैठना सुन्नते सह़ाबा है।

❀ **बुज़ुर्गाने** दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : दो[2] ज़ानू बैठ कर ख़ुत़्बा सुने, पहले ख़ुत़्बे में हाथ बांधे, दूसरे में ज़ानू पर हाथ रखे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दो[2] रक्अ़त का सवाब मिलेगा। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 338)

❀ **आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ख़ुत़्बे में ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक सुन कर दिल में दुरूद पढ़ें कि ज़बान से सुकूत (या'नी ख़ामोशी) फ़र्ज़ है।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 365)

❀ "**दुर्रे मुख़्तार**" में है : ख़ुत़्बे में खाना पीना, कलाम करना अगर्चे سُبْحٰنَ اللّٰه कहना, सलाम का जवाब देना या नेकी की बात बताना **ह़राम** है। (دُرِّمُختار ج۳ ص۳۹)

❀ **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ब ह़ालते ख़ुत़्बा चलना **ह़राम** है। यहां तक उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि अगर ऐसे वक़्त आया कि ख़ुत़्बा शुरूअ़ हो गया तो मस्जिद में जहां तक पहुंचा वहीं रुक जाए, आगे न बढ़े कि येह अ़मल होगा और ह़ाले ख़ुत़्बा में कोई अ़मल रवा (या'नी जाइज़) नहीं। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 333)

❀ **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ुत़्बे में किसी त़रफ़ गरदन फैर कर देखना (भी) **ह़राम** है। (ऐज़न, स. 334)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

जुमुअ़ा की इमामत का अहम मस्अला

एक बहुत ज़रूरी अम्र जिस की त़रफ़ अ़वाम की बिल्कुल तवज्जोह नहीं वोह येह है कि **जुमुअ़ा** को और नमाज़ों की त़रह़ समझ रखा है कि जिस ने चाहा नया **जुमुअ़ा** क़ाइम कर लिया और जिस ने चाहा पढ़ा दिया येह **ना जाइज़** है इस लिये कि **जुमुअ़ा** क़ाइम करना बादशाहे इस्लाम या उस के नाइब का काम है। और जहां इस्लामी सल्त़नत न हो वहां जो **सब से बड़ा फ़क़ीह (आ़लिम) सुन्नी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा हो, वोह** अह़कामे शरइय्या जारी करने में सुल्त़ाने इस्लाम का क़ाइम मक़ाम है लिहाज़ा वोही **जुमुअ़ा** क़ाइम करे, बिग़ैर उस की इजाज़त के (जुमुअ़ा) नहीं हो सकता और येह भी न हो तो आ़म लोग जिस को इमाम बनाएं। **आ़लिम** के होते हुए **अ़वाम** बत़ौरे ख़ुद किसी को इमाम **नहीं** बना सकते न येह हो सकता है कि दो चार शख़्स किसी को इमाम मुक़र्रर कर लें **ऐसा जुमुअ़ा कहीं साबित नहीं ।** (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 764)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

एक चुप सो[100] सुख

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे हि़साब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

25 रबीउ़ल अव्वल 1432 सि.हि.

٧٨٦

قُفلِ مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

بقیع

नमाज़े ईद का त़रीक़ा

(ह़-नफ़ी)

(ईदुल फ़ित्र, बक़र ईद)

इस रिसाले में......

- ईद की जमाअ़त न मिली तो ?
- ईद की अधूरी जमाअ़त मिली तो ?
- तक्बीरे तशरीक़ के 8 म-दनी फूल
- दिल ज़िन्दा रहेगा
- ईद के मुस्तह़ब्बात

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

नमाज़े ईद का त़रीक़ा
(ह़-नफ़ी)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (10 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के फ़वाइद ख़ुद ही देख लेंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, मह़बूबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुझ पर शबे जुमुआ़ और रोजे़ जुमुआ़ सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उस की सो ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा **सत्तर आख़िरत** की और **तीस** दुन्या की ।

(تاریخ دِمشق لابن عَساکِر ج٥٤ ص٣٠١ دارالفکر بیروت)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दिल ज़िन्दा रहेगा

ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने ईदैन की रात (या'नी शबे ईदुल फ़ित्र और शबे ईदुल अज़्ह़ा) त़-लबे सवाब के लिये क़ियाम किया (या'नी इ़बादत में गुज़ारा) उस दिन उस का **दिल** नहीं मरेगा, जिस दिन लोगों के **दिल** मर जाएंगे । (سُنَنِ اِبن ماجه ج٢ ص٣٦٥ حديث١٧٨٢ دار المعرفة بيروت)

जन्नत वाजिब हो जाती है

एक और मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : जो **पांच** रातों में शब बेदारी करे (या'नी जाग कर इबादत में गुज़ारे) उस के लिये जन्नत **वाजिब** हो जाती है । **ज़िल ह़िज्जह** शरीफ़ की आठवीं, नवीं और दसवीं रात (इस त़रह़ तीन रातें तो येह हुईं) और चौथी **ईदुल फ़ित़्र** की रात, पांचवीं **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत) ।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۲ ص۹۸ حدیث۲)

नमाज़े ईद के लिये जाने से क़ब्ल की सुन्नत

ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे अन्वर, **शाफ़ेए़ मह़शर**, मदीने के ताजवर, **बि इज़्ने** रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ईदुल फ़ित़्र** के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और **ईदे अज़्ह़ा** के रोज़ नहीं खाते थे जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाते । **(سُنَنِ تِرمِذی ج۲ ص۷۰ حدیث۵٤۲ دارالفکر بیروت)** और "बुख़ारी" की रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से है कि **ईदुल फ़ित़्र** के दिन तशरीफ़ न ले जाते जब तक चन्द खजूरें न तनावुल फ़रमा लेते और वोह त़ाक़ होतीं । **(بُخاری ج۱ ص۳۲۸ حدیث۹۵۳ دارالکتب العلمیة بیروت)**

नमाज़े ईद के लिये आने जाने की सुन्नत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ईद को (नमाज़े ईद के लिये) एक रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाते । **(سُنَنِ تِرمِذی ج۲ ص۶۹ حدیث۵٤۱)**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

नमाज़े ईद का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

पहले इस त़रह़ निय्यत कीजिये : "मैं निय्यत करता हूं दो रक्अ़त नमाज़ **ईदुल फ़ित्र** (या **ईदुल अज़्ह़ा**) की, साथ छ६ ज़ाइद तक्बीरों के, वासिते़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के, पीछे इस इमाम के" फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और **सना** पढ़िये। फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए लटका दीजिये। फिर हाथ कानों तक उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर लटका दीजिये। फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर बांध लीजिये या'नी पहली तक्बीर के बा'द हाथ बांधिये इस के बा'द दूसरी और तीसरी तक्बीर में लटकाइये और चौथी में हाथ बांध लीजिये। इस को यूं याद रखिये कि **जहां क़ियाम में तक्बीर के बा'द कुछ पढ़ना है वहां हाथ बांधने हैं और जहां नहीं पढ़ना वहां हाथ लटकाने हैं।** फिर इमाम **तअ़व्वुज़** और **तस्मिया** आहिस्ता पढ़ कर **अल ह़म्द शरीफ़** और सूरह जह्र (या'नी बुलन्द आवाज़) के साथ पढ़े, फिर रुकूअ़ करे। दूसरी रक्अ़त में पहले **अल ह़म्द शरीफ़** और सूरह जह्र के साथ पढ़े, फिर तीन बार कान तक हाथ उठा कर اَللّٰهُ اَكْبَر कहिये और हाथ न बांधिये और चौथी बार बिग़ैर हाथ उठाए اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए रुकूअ़ में जाइये और क़ाइदे के मुत़ाबिक़ नमाज़ मुकम्मल कर लीजिये। हर दो तक्बीरों के दरमियान तीन बार "سُبْحٰنَ الله" कहने की मिक्दार चुप खड़ा रहना है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 781, دُرِّمُختار ج٣ص٦١ वग़ैरा)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

नमाज़े ईद किस पर वाजिब है ?

ईदैन (या'नी **ईदुल फ़ित्र** और **बक़र ईद**) की नमाज़ वाजिब है मगर सब पर नहीं सिर्फ़ उन पर जिन पर **जुमुआ** वाजिब है। **ईदैन** में न अज़ान है न इक़ामत। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 779, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची, دُرِّمُختار ج۳ص۱۵۱دارالمعرفة بيروت)

ईद का ख़ुत़्बा सुन्नत है

ईदैन की अदा की वोही शर्तें हैं जो **जुमुआ** की, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि **जुमुआ** में ख़ुत़्बा शर्त़ है और **ईदैन** में सुन्नत। **जुमुआ** का ख़ुत़्बा क़ब्ल अज़ नमाज़ है और **ईदैन** का बा'द अज़ नमाज़।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 779, عالمگیری ج۱ص۱۵۰)

नमाज़े ईद का वक़्त

इन दोनों नमाज़ों का वक़्त सूरज के ब क़दर एक नेज़ा बुलन्द होने (या'नी त़ुलूए़ आफ़्ताब के 20 मिनट के बा'द) से **ज़ह़्वए कुब्रा** या'नी **निस्फ़ुन्नहारे** शर-ई तक है मगर **ईदुल फ़ित्र** में देर करना और **ईदुल अज़्ह़ा** जल्द पढ़ना **मुस्तह़ब** है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 781, دُرِّمُختار ج۳ص۶۰)

ईद की अधूरी जमाअ़त मिली तो......?

पहली रक्अ़त में इमाम के तक्बीरें कहने के बा'द मुक़्तदी शामिल हुवा तो उसी वक़्त (तक्बीरे तह़रीमा के इलावा मज़ीद) तीन तक्बीरें कह ले अगर्चे इमाम ने क़िराअत शुरूअ़ कर दी हो और तीन ही कहे अगर्चे इमाम ने तीन से ज़ियादा कही हों और अगर इस ने तक्बीरें न कहीं कि इमाम रुकूअ़ में चला गया तो खड़े खड़े न कहे बल्कि इमाम

www.dawateislami.net

के साथ रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कह ले और अगर इमाम को रुकूअ़ में पाया और ग़ालिब गुमान है कि तक्बीरें कह कर इमाम को रुकूअ़ में पा लेगा तो खड़े खड़े तक्बीरें कहे फिर रुकूअ़ में जाए वरना اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कहे फिर अगर इस ने रुकूअ़ में तक्बीरें पूरी न की थीं कि इमाम ने सर उठा लिया तो बाक़ी साक़ित़ हो गईं (या'नी बक़िय्या तक्बीरें अब न कहे) और अगर इमाम के रुकूअ़ से उठने के बा'द शामिल हुवा तो अब तक्बीरें न कहे बल्कि (इमाम के सलाम फैरने के बा'द) जब अपनी (बक़िय्या) पढ़े उस वक़्त कहे और रुकूअ़ में जहां तक्बीर कहना बताया गया उस में हाथ न उठाए और अगर दूसरी रक्अ़त में शामिल हुवा तो पहली रक्अ़त की तक्बीरें अब न कहे बल्कि जब अपनी फ़ौत शुदा पढ़ने खड़ा हो उस वक़्त कहे। दूसरी रक्अ़त की तक्बीरें अगर इमाम के साथ पा जाए फ़बिहा (या'नी तो बेहतर)। वरना इस में भी वोही तफ़्सील है जो पहली रक्अ़त के बारे में मज़्कूर हुई।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 782, دُرِّمُختار ج۳ص۶۴، عالمگیری ج۱ص۱۵۱)

ईद की जमाअ़त न मिली तो क्या करे ?

इमाम ने नमाज़ पढ़ ली और कोई शख़्स बाक़ी रह गया ख़्वाह वोह शामिल ही न हुवा था या शामिल तो हुवा मगर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई तो अगर दूसरी जगह मिल जाए पढ़ ले वरना (बिग़ैर जमाअ़त के) नहीं पढ़ सकता। हां बेहतर येह है कि येह शख़्स चार रक्अ़त चाश्त की नमाज़ पढ़े। (دُرِّمُختار ج۳ص۶۷)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

ईद के ख़ुत़्बे के अह़काम

नमाज़ के बा'द इमाम दो ख़ुत़्बे पढ़े और **ख़ुत़्बए जुमुआ** में जो चीजें सुन्नत हैं इस में भी सुन्नत हैं और जो वहां मक्रूह यहां भी मक्रूह। सिर्फ़ दो बातों में फ़र्क़ है एक येह कि **जुमुआ** के पहले ख़ुत़्बे से पेश्तर ख़त़ीब का बैठना सुन्नत था और इस में न बैठना सुन्नत है। दूसरे येह कि इस में पहले ख़ुत़्बे से पेश्तर 9 बार और दूसरे के पहले 7 बार और मिम्बर से उतरने के पहले 14 बार اَللّٰهُ اَكْبَر कहना सुन्नत है और जुमुआ में नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 783, دُرِّمُختار ج٣ص٦٧، عالمگیری ج١ص١٥٠)

इस मुबारक मिस्रअ़, "दे दो ईदी में ग़म मदीने का" के बीस हुरूफ़ की निस्बत से ईद के 20 आदाब

ईद के दिन येह उमूर मुस्तह़ब हैं :

❁ ह़जामत बनवाना (मगर ज़ुल्फ़ें बनवाइये न कि इंग्रेज़ी बाल) ❁ नाख़ुन तरश्वाना ❁ ग़ुस्ल करना ❁ मिस्वाक करना (येह उस के इ़लावा है जो वुज़ू में की जाती है) ❁ अच्छे कपड़े पहनना, नए हों तो नए वरना धुले हुए ❁ ख़ुश्बू लगाना ❁ अंगूठी पहनना (जब कभी अंगूठी पहनिये तो इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि सिर्फ़ साढ़े चार माशे से कम वज़्न चांदी की एक ही अंगूठी पहनिये। एक से ज़ियादा न पहनिये और उस एक अंगूठी में भी नगीना एक ही हो, एक से ज़ियादा नगीने न हों, बिग़ैर नगीने की भी मत पहनिये। नगीने के वज़्न की कोई क़ैद नहीं। चांदी का छल्ला या चांदी के बयान कर्दा वज़्न वग़ैरा के इ़लावा किसी भी धात की अंगूठी या छल्ला मर्द नहीं पहन सकता) ❁ नमाज़े फ़ज्र मस्जिदे मह़ल्ला में पढ़ना ❁ **ईदुल फ़ित्र** की नमाज़ को जाने से पहले चन्द खजूरें खा

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

लेना, तीन, पांच, सात या कमोबेश मगर त़ाक़ हों। खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खा लीजिये। अगर नमाज़ से पहले कुछ भी न खाया तो गुनाह न हुवा मगर इशा तक न खाया तो इ़ताब (मलामत) किया जाएगा ❁ नमाज़े ईद, ईदगाह में अदा करना ❁ ईदगाह पैदल चलना ❁ सुवारी पर भी जाने में ह़रज नहीं मगर जिस को पैदल जाने पर क़ुदरत हो उस के लिये पैदल जाना अफ़्ज़ल है और वापसी पर सुवारी पर आने में ह़रज नहीं ❁ नमाज़े ईद के लिये एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना ❁ ईद की नमाज़ से पहले स-द-क़ए फ़ित्र अदा करना (अफ़्ज़ल तो येही है मगर ईद की नमाज़ से क़ब्ल न दे सके तो बा'द में दे दीजिये) ❁ ख़ुशी ज़ाहिर करना ❁ कसरत से स-दक़ा देना ❁ ईदगाह को इत़्मीनान व वक़ार और नीची निगाह किये जाना ❁ आपस में मुबारक बाद देना ❁ बा'दे नमाज़े ईद मुसा-फ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाना) और मुआ़-नक़ा (या'नी गले मिलना) जैसा कि उ़मूमन मुसल्मानों में राइज है बेहतर है कि इस में इज़्हारे मसर्रत है। मगर **अम्रद** ख़ूब सूरत से गले मिलना **मह़ल्ले फ़ितना** है ❁ **ईदुल फ़ित्र** (या'नी मीठी ईद) की नमाज़ के लिये जाते हुए रास्ते में आहिस्ता से तक्बीर कहें और नमाज़े ईदे अज़्ह़ा के लिये जाते हुए रास्ते में बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहें। तक्बीर येह है :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُط وَلِلّٰهِ الْحَمْد

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

लिये तमाम ख़ूबियां हैं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 779 ता 781, عالمگیری ج۱ص۱۴۹،۱۵۰ वग़ैरा)

बक़र ईद का एक मुस्तह़ब

ईदे अज़्ह़ा (या'नी बक़र ईद) तमाम अह़काम में **ईदुल फ़ित्र** (या'नी मीठी ईद) की त़रह़ है। सिर्फ़ बा'ज़ बातों में फ़र्क़ है, म-सलन इस में (या'नी बक़र ईद में) **मुस्तह़ब** येह है कि नमाज़ से पहले कुछ न खाए चाहे कुरबानी करे या न करे और अगर खा लिया तो कराहत भी नहीं। **(عالمگیری ج۱ص۱۵۲ دارالفکربیروت)**

"अल्लाहु अक्बर" के आठ ह़ुरूफ़ की निस्बत से तक्बीरे तशरीक़ के 8 म-दनी फूल

۞ नवीं **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** की फ़ज्र से तेरहवीं की अ़स्र तक पांचों वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ें जो मस्जिद की जमाअ़ते मुस्तह़ब्बा के साथ अदा की गई उन में एक बार बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहना वाजिब है और तीन बार अफ़्ज़ल इसे **तक्बीरे तशरीक़** कहते हैं। और वोह येह है :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط وَلِلّٰهِ الْحَمْد

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 779 ता 785, تَنوِیرُ الْاَبصار ج۳ص۷۱) ۞ **तक्बीरे तशरीक़ सलाम फैरने के बा'द फ़ौरन कहना वाजिब है।** या'नी जब तक कोई ऐसा फ़े'ल न किया हो कि उस पर नमाज़ की बिना न कर सके म-सलन अगर मस्जिद से बाहर हो गया या क़स्दन वुज़ू तोड़ दिया या चाहे भूल कर ही कलाम किया तो तक्बीर साक़ित़ हो गई और बिला क़स्द वुज़ू टूट गया तो कह ले। **(دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج۳ص۷۳ دارالمعرفة بیروت)**

۞ **तक्बीरे तशरीक़** उस पर वाजिब है जो शह्र में **मुक़ीम** हो या जिस ने इस मुक़ीम की इक़्तिदा की। वोह इक़्तिदा करने वाला चाहे मुसाफ़िर

www.dawateislami.net

हो या गाउं का रहने वाला और अगर उस की इक्तिदा न करें तो उन पर (या'नी मुसाफ़िर और गाउं के रहने वाले पर) वाजिब नहीं। (دُرِّمُختار ج۳ص۷٤)

❁ मुक़ीम ने अगर मुसाफ़िर की इक्तिदा की तो मुक़ीम पर वाजिब है अगर्चे इस मुसाफ़िर इमाम पर वाजिब नहीं। (دُرِّمُختار ورَدُّالمُحتار ج۳ص۷٤)

❁ नफ़्ल, सुन्नत और वित्र के बा'द तक्बीर वाजिब नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 785, رَدُّالمُحتار ج۳ص۷۳)

❁ **जुमुआ** के बा'द वाजिब है और नमाज़े (बक़र) ईद के बा'द भी कह ले। (ऐज़न)

❁ **मस्बूक़** (जिस की एक या ज़ाइद रक्अ़तें फ़ौत हुई हों) पर तक्बीर वाजिब है मगर जब ख़ुद सलाम फैरे उस वक़्त कहे। (رَدُّالمُحتار ج۳ص۷٦)

❁ **मुन्फ़रिद** (या'नी तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) पर वाजिब नहीं। (اَلْجَوْهَرَةُ النَّیِّرَة ص۱۲۲) मगर कह ले कि **साहिबैन** (या'नी इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰی) के नज़्दीक इस पर भी वाजिब है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 786)

(ईद के फ़ज़ाइल वग़ैरा की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** के बाब **"फ़ैज़ाने र-मज़ान"** से **फ़ैज़ाने इदुल फ़ित्र** का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ईदे सईद की ख़ुशियां सुन्नत के मुत़ाबिक़ मनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। और हमें ह़ज शरीफ़ और दियारे मदीना व ताजदारे मदीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दीद की ह़क़ीक़ी ईद बार बार नसीब फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेरी जब कि दीद होगी जभी मेरी ईद होगी
मेरे ख़्वाब में तू आना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفلِ مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ

بقیع

म–दनी वसिय्यत नामा

मअ़ कफ़न व दफ़्न के अह़कामात

इस रिसाले में......

मदीनए मुनव्वरह से चालीस वसिय्यतें

वसिय्यत बाइ़से मग़्फ़िरत

त़रीक़ए तज्हीज़ व तक्फ़ीन

मर्द को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

औ़रत को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

म-दनी वसिय्यत नामा

मअ़ कफ़न दफ़्न के अह़कामात

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह पुरसोज़ रिसाला (15 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपने क़ल्ब में रिक़्क़त व हलचल मह़सूस करेंगे।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (الکامل لابن عدی ج۵ص۵۰۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ इस वक़्त नमाज़े **फ़ज्र** के बा'द **मस्जिदुन-बविय्यिशशरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में बैठ कर "اَرْبَعِیْنَ وَصَایَا مِنَ الْمَدِیْنَۃِ الْمُنَوَّرَۃِ" (या'नी **मदीनए मुनव्वरह** से चालीस40 वसिय्यतें) तह़रीर करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं, आह ! सद आह !

आज मेरी **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا की ह़ाज़िरी की आख़िरी सुब्ह़ है, सूरज रौज़ए मह़बूब عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर अ़र्ज़े सलाम के लिये ह़ाज़िर हुवा चाहता है, आह ! आज रात तक अगर **जन्नतुल बक़ीअ़** में मदफ़न मिलने की सूरत न हुई तो मदीने से जुदा होना पड़ जाएगा। आंख अश्कबार है, दिल बे क़रार है, हाए !

अफ़्सोस चन्द घड़ियां त़यबा की रह गई हैं
दिल में जुदाई का ग़म तूफ़ां मचा रहा है

www.dawateislami.net

आह ! दिल ग़म में डूबा हुवा है, हिज्रे मदीना की जां सोज़ फ़िक्र ने सरापा तस्वीरे ग़म बना कर रख दिया है, ऐसा लगता है गोया होंटों का तबस्सुम किसी ने छीन लिया हो, आह ! अ़न्क़रीब मदीना छूट जाएगा, दिल टूट जाएगा, आह ! मदीने से सूए वत़न रवानगी के लम्ह़ात ऐसे जां गुज़ा होते हैं गोया,

किसी शीर ख़्वार बच्चे को उस की मां की गोद से छीन लिया गया हो और वोह रोता हुवा निहायत ही ह़सरत के साथ बार बार मुड़ कर अपनी मां की त़रफ़ देखता हो कि शायद मां एक बार फिर बुला लेगी...... और शफ़्क़त के साथ गोद में छुपा लेगी...... अपने सीने से चिमटा लेगी...... मुझे लोरी सुना कर अपनी मामता भरी गोद में मीठी नींद सुला देगी...... आह !

मैं शिकस्ता दिल लिये बोझल क़दम रखता हुवा
चल पड़ा हूं या शहन्शाहे मदीना अल वदाअ़

अब शिकस्ता दिल के साथ ''चालीस वसाया'' अ़र्ज़ करता हूं, मेरे येह वसाया ''दा'वते इस्लामी'' से वाबस्ता तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की त़रफ़ भी हैं नीज़ मेरी औलाद और दीगर अहले ख़ाना भी इन वसाया पर ज़रूर तवज्जोह रखें ।

ज़हे क़िस्मत ! मुझ पापी व बदकार को मदीनए पुर अन्वार में, वोह भी सायए सब्ज़ सब्ज़ गुम्बदो मीनार में, ऐ काश ! जल्वए सरकारे नामदार, शहन्शाहे अबरार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, मह़बूबे परवर दगार, अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में शहादत नसीब हो जाए और **जन्नतुल बक़ीअ़** में दो[2] गज़ ज़मीन मुयस्सर आए अगर ऐसा हो जाए तो दोनों जहां की सआ़दतें ही सआ़दतें हैं। आह ! वरना जहां मुक़द्दर......

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

《1》 अगर आ़लमे नज़्अ़ में पाएं तो उस वक़्त का हर काम सुन्नत के मुत़ाबिक़ करें, मुम्किना सूरत में सीधी करवट लिटा कर चेहरा क़िब्ला रू करें। यासीन शरीफ़ भी सुनाएं और कलिमए त़य्यिबा सीने पर दम आने तक मुसल्सल ब आवाज़ पढ़ा जाए।

《2》 बा'दे क़ब्ज़े रूह़ भी हर हर मुआ़-मले में सुन्नतों का लिह़ाज़ रखें, म-सलन तज्हीज़ो तक्फ़ीन वग़ैरा में **ता'जील** (या'नी जल्दी) और ज़ियादा अ़वाम इकठ्ठी करने के शौक़ में ताख़ीर करना सुन्नत नहीं। बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 4 में बयान किये हुए अह़काम पर अ़मल किया जाए। ख़ुसूसन ताकीद अशद ताकीद है कि हरगिज़ नौह़ा न किया जाए क्यूं कि येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

《3》 **क़ब्र** का साइज़ वग़ैरा सुन्नत के मुत़ाबिक़ हो और लह़्द बनाएं कि सुन्नत है।[1]

《4》 अन्दरूने क़ब्र दीवारें वग़ैरा कच्ची मिट्टी की हों, आग की पक्की हुई ईंटें इस्ति'माल न की जाएं, अगर अन्दर में पक्की हुई ईंट की दीवारें ज़रूरी हों तो फिर अन्दरूनी ह़िस्सा मिट्टी के गारे से अच्छी त़रह़ लीप दिया जाए।

《5》 मुम्किन हो तो अन्दरूनी तख़्तों पर **यासीन शरीफ़, सू-रतुल मुल्क** और दुरूदे ताज पढ़ कर दम कर दिया जाए।

1 : क़ब्र की दो क़िस्में हैं **(1) सन्दूक़ (2) लह़्द :** लह़्द बनाने का त़रीक़ा येह है कि क़ब्र खोदने के बा'द मय्यित रखने के लिये जानिबे क़िब्ला जगह खोदी जाती है। लह़्द सुन्नत है अगर ज़मीन इस क़ाबिल हो तो येही करें और अगर ज़मीन नर्म हो तो सन्दूक़ में मुज़ा-यक़ा नहीं। हो सकता है गोरकन वग़ैरा मश्वरा दें कि स्लेब अन्दरूनी ह़िस्से में तिरछी कर के लगा लो मगर उस की बात न मानी जाए।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

《6》 कफ़ने मस्नून खुद सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ के पैसों से हो। ह़ालते फ़क़्र की सूरत में किसी **सह़ीह़ुल अ़क़ीदा** सुन्नी के माले ह़लाल से लिया जाए।

《7》 गुस्ल बा रीश, बा इमामा व पाबन्दे सुन्नत इस्लामी भाई ऐ़न सुन्नत के मुत़ाबिक़ दें (सादाते किराम अगर गन्दे वुजूद को गुस्ल दें तो सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ इसे अपने लिये बे अ-दबी तसव्वुर करता है)

《8》 गुस्ल के दौरान सत्रे औ़रत की मुकम्मल ह़िफ़ाज़त की जाए अगर नाफ़ से ले कर **घुटनों** समेत कथ्थई या किसी गहरे रंग की दो2 मोटी चादरें उढ़ा दी जाएं तो ग़ालिबन सत्र चमक्ने का एह़तिमाल जाता रहेगा। हां पानी ज़ाहिरी जिस्म के हर ह़िस्से बल्कि रूएं रूएं की जड़ से ले कर नोक पर बहना लाज़िमी है।

《9》 कफ़न अगर आबे ज़मज़म या आबे मदीना बल्कि दोनों से तर किया हुवा हो तो सआ़दत है। काश ! कोई सय्यिद साह़िब सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजा दें।[1]

《10》 बा'दे गुस्ले मय्यित, कफ़न में चेहरा छुपाने से क़ब्ल, पहले पेशानी पर अंगुश्ते शहादत से بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिखिये।

《11》 इसी त़रह़ सीने पर : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

《12》 दिल की जगह पर : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

《13》 नाफ़ और सीने के दरमियानी ह़िस्सए कफ़न पर : **या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ, **या इमाम अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ, **या इमाम अह़मद रज़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ, **या शैख़**

مدينه

1 : सिर्फ़ उ़-लमा व मशाइख़ को बा इमामा दफ़्न किया जा सकता है, आ़म लोगों की मय्यित को मअ़ इमामा दफ़्नाना मन्अ़ है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

ज़ियाउद्दीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहादत की उंगली से लिखें।

﴾14﴿ नीज़ नाफ़ के ऊपर से ले कर सर तक तमाम ह़िस्सए कफ़न पर (इ़लावा पुश्त के) ''मदीना मदीना'' लिखा जाए। याद रहे ! येह सब कुछ रोशनाई से नहीं सिर्फ़ अंगुश्ते शहादत से लिखना है और ज़हे नसीब कोई सय्यिद साह़िब लिखें।

﴾15﴿ दोनों[2] आंखों पर **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की खजूरों की गुठलियां रख दी जाएं।

﴾16﴿ जनाज़ा ले कर चलते वक़्त भी तमाम सुन्नतें मल्हूज़ रखिये।

﴾17﴿ जनाज़े के जुलूस में सब इस्लामी भाई मिल कर इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़सीदए दुरूद ''का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद'' पढ़ें। (इस के इ़लावा भी ना'तें वग़ैरा पढ़ें मगर सिर्फ़ और सिर्फ़ उ़-लमाए अहले सुन्नत ही का कलाम पढ़ा जाए)

﴾18﴿ जनाज़ा कोई **सह़ीहुल अ़क़ीदा** सुन्नी आ़लिमे बा अ़मल या कोई सुन्नतों के पाबन्द इस्लामी भाई या अह्ल हों तो औलाद में से कोई पढ़ा दें मगर ख़्वाहिश है कि सादाते किराम को **फ़ौक़िय्यत** दी जाए।

﴾19﴿ ज़हे नसीब ! सादाते किराम अपने रह़मत भरे हाथों क़ब्र में उतार कर **अर-ह़मुर्राह़िमीन** के सिपुर्द कर दें।

﴾20﴿ चेहरे की त़रफ़ दीवारे क़िब्ला में त़ाक़ बना कर उस में किसी पाबन्दे सुन्नत इस्लामी भाई के हाथ का लिखा हुवा अ़ह्द नामा, नक़्शे ना'ले शरीफ़, सब्ज़ गुम्बद शरीफ़ का नक़्शा, श-जरा शरीफ़, नक़्शे हरकारा वग़ैरा **तबर्रुकात** रखिये।

﴾21﴿ **जन्नतुल बक़ीअ़** में जगह मिल जाए तो ज़हे क़िस्मत ! वरना

www.dawateislami.net

किसी **वलिय्युल्लाह** के कुर्ब में, येह भी न हो सके तो जहां इस्लामी भाई चाहें सिपुर्दे ख़ाक करें मगर जाए ग़स्ब पर दफ़्न न करें कि ह़राम है।

《22》 **क़ब्र** पर अज़ान दीजिये।

《23》 ज़हे नसीब ! कोई सय्यिद साहि़ब तल्क़ीन फ़रमा दें।[1]

《24》 हो सके तो मेरे अहले **मह़ब्बत** मेरी तदफ़ीन के बा'द 12 रोज़ तक, येह न हो सके तो कम अज़ कम 12 घन्टे ही सही मेरी क़ब्र पर ह़ल्क़ा किये रहें और ज़िक्रो दुरूद और तिलावत व ना'त से मेरा दिल बहलाते रहें اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ नई जगह में दिल लग ही जाएगा इस

---

1 : **तल्क़ीन की फ़ज़ीलत :** सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब तुम्हारा कोई मुसल्मान भाई मरे और उस को मिट्टी दे चुको तो तुम में एक शख़्स क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो कर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह सुनेगा और जवाब न देगा। फिर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह सीधा हो कर बैठ जाएगा, फिर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह कहेगा : "हमें इर्शाद कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए।" मगर तुम्हें उस के कहने की ख़बर नहीं होती। फिर कहे :

اُذْكُرْ مَاخَرَجْتَ عَلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا: شَهَادَةَ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)، وَاَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) نَبِيًّا وَّبِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا۔ तरजमा : "तू उसे याद कर जिस पर तू दुन्या से निकला या'नी येह गवाही कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं और येह कि तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब और इस्लाम के दीन और मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी और कुरआन के इमाम होने पर राज़ी था।" मुन्कर नकीर एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहेंगे चलो हम उस के पास क्या बैठें जिसे लोग उस की **हुज्जत** सिखा चुके। इस पर किसी ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : अगर उस की मां का नाम मा'लूम न हो ? फ़रमाया : ह़व्वा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) की त़रफ़ निस्बत करे। (طبرانی کبیر ج٨ ص٢٥٠ حدیث٧٩٧٩) याद रहे ! फ़ुलां बिन फ़ुलाना की जगह मय्यित और उस की मां का नाम ले, म-सलन या मुह़म्मद इल्यास बिन अमीना। अगर मय्यित की मां का नाम मा'लूम न हो तो मां के नाम की जगह ह़व्वा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) का नाम ले। तल्क़ीन सिर्फ़ अ़-रबी में पढ़िये।

www.dawateislami.net

दौरान भी और हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम रखें।

《25》 मेरे ज़िम्मे अगर क़र्ज़ वग़ैरा हो तो मेरे माल से और अगर माल न हो तो दर-ख़्वास्त है कि मेरी औलाद अगर ज़िन्दा हो तो वोह या कोई और इस्लामी भाई एह़सानन अपने पल्ले से अदा फ़रमा दें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अज्रे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाएगा। (मुख़्तलिफ़ इज्तिमाआ़त में ए'लान किया जाए कि जिस किसी की भी दिल आज़ारी या ह़क़ त-लफ़ी हुई हो वोह मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी को मुआ़फ़ फ़रमा दें अगर क़र्ज़ वग़ैरा हो तो फ़ौरन वु-रसा से रुजूअ़ करें या मुआ़फ़ कर दें)

《26》 मुझे कसरत के साथ ईसाले सवाब व दुआ़ए मग़्फ़िरत से नवाज़ते रहें तो एह़साने अ़ज़ीम होगा।

《27》 सब के सब मस्लके आ'ला ह़ज़रत या'नी मज़्हबे अहले सुन्नत पर इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की सह़ीह़ इस्लामी ता'लीमात के मुत़ाबिक़ क़ाइम रहें।

《28》 बद मज़्हबों की सोह़बत से कोसों दूर भागिये कि इन की सोह़बत ख़ातिमा बिलख़ैर में बहुत बड़ी रुकावट और सबबे बरबादिये आख़िरत है।

《29》 ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** और सुन्नत पर मज़बूत़ी से क़ाइम रहिये।

《30》 नमाज़े पन्जगाना, रोज़ए र-मज़ान, ज़कात, ह़ज वग़ैरा फ़राइज़ (व दीगर वाजिबात व सुनन) के मुआ़-मले में किसी क़िस्म की कोताही न किया करें।

www.dawateislami.net

﴾31﴿ **वसिय्यत ज़रूरी वसिय्यत :** दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के साथ हर दम वफ़ादार रहिये, इस के हर रुक्न और अपने हर निगरान के हर उस हुक्म की इत़ाअ़त कीजिये जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो शूरा या दा'वते इस्लामी के किसी भी ज़िम्मेदार की बिला इजाज़ते शर-ई मुख़ा-लफ़त करने वाले से मैं बेज़ार हूं, ख़्वाह वोह मेरा कैसा ही क़रीबी अ़ज़ीज़ हो।

﴾32﴿ हर इस्लामी भाई हफ़्ते में कम अज़ कम एक बार अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करे और हर माह कम अज़ कम तीन दिन, बारह माह में 30 दिन और ज़िन्दगी में **यक मुश्त** कम अज़ कम बारह माह के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करे। हर इस्लामी भाई और हर इस्लामी बहन अपने किरदार की इस्लाह़ पर इस्तिक़ामत पाने के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के "म-दनी इन्आ़मात" का रिसाला पुर करे और हर माह अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाए।

﴾33﴿ ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** व सुन्नत का पैग़ाम दुन्या में आ़म करते रहिये।

﴾34﴿ बद अ़क़ी-दगियों और बद आ'मालियों नीज़ दुन्या की बे जा **मह़ब्बत**, माले ह़राम और ना जाइज़ फ़ेशन वग़ैरा के ख़िलाफ़ अपनी जिद्दो जह्द जारी रखिये। हुस्ने अख़्लाक़ और म-दनी मिठास के साथ नेकी की दा'वत की धूमें मचाते रहिये।

﴾35﴿ गुस्सा और चिड़चिड़ा पन को क़रीब भी मत फटक्ने दीजिये वरना दीन का काम दुश्वार हो जाएगा।

﴾36﴿ मेरी तालीफ़ात और मेरे बयान की **केसिटों** से मेरे वु-रसा को

www.dawateislami.net

दुन्या की दौलत कमाने से बचने की म-दनी इल्तिजा है ।

《37》 मेरे "तर्के" वग़ैरा के मुआ़-मले में हुक्मे शरीअ़त पर अ़मल किया जाए ।

《38》 मुझे जो कोई गाली दे, बुरा भला कहे, ज़ख़्मी कर दे या किसी त़रह़ भी दिल आज़ारी का सबब बने मैं उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये पेशगी मुआ़फ़ कर चुका हूं ।

《39》 मुझे सताने वालों से कोई इन्तिक़ाम न ले ।

《40》 बिलफ़र्ज़ कोई मुझे शहीद कर दे तो मेरी त़रफ़ से उसे मेरे हुक़ूक़ मुआ़फ़ हैं । वु-रसा से भी दर-ख़्वास्त है कि उसे अपना ह़क़ मुआ़फ़ कर दें । अगर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के सदक़े मह़शर में ख़ुसूसी करम हो गया तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने क़ातिल या'नी मुझे शहादत का जाम पिलाने वाले को भी जन्नत में लेता जाऊंगा बशर्ते़ कि उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा हो । (अगर मेरी शहादत अ़मल में आए तो इस की वज्ह से किसी क़िस्म के हंगामे और हड़तालें न की जाएं । अगर "हड़ताल" इस का नाम है कि ज़बर दस्ती कारोबार बन्द करवाया जाए, दुकानों और गाड़ियों पर पथराव वग़ैरा किया जाए तो बन्दों की ऐसी ह़क़ त-लफ़ियां करना कोई भी **मुफ़्तिये इस्लाम** जाइज़ नहीं कह सकता, इस त़रह़ की हड़ताल ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।)

काश ! गुनाह बख़्शने वाला ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ मुझ गुनहगार को अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल मुआ़फ़ फ़रमा दे । ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब तक ज़िन्दा रहूं इश्क़े रसूल

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में गुम रहूं, ज़िक्रे मदीना करता रहूं, नेकी की दा'वत के लिये कोशां रहूं, मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त पाऊं और बे ह़िसाब बख़्शा जाऊं । **जन्नतुल फ़िरदौस** में प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब हो । आह ! काश ! हर वक़्त नज़्ज़ारए मह़बूब में गुम रहूं । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने ह़बीब पर बे शुमार दुरूदो सलाम भेज, इन की तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए

दौलते बेदार इ़श्क़े मुस्त़फ़ा का साथ हो

"म-दनी वसिय्यत नामा" पहली बार **मुह़र्रमुल ह़राम** 1411 सि.हि. मुत़ाबिक़ 1990 ई. **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से जारी किया था फिर कभी कभी थोड़ी बहुत तरमीम की गई थी, अब मज़ीद बा'ज़ तरामीम के साथ ह़ाज़िर किया है ।

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

10 जुमादल ऊला 1434 सि.हि.
23-3-2013

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

वसिय्यत बाइसे मग़्फ़िरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जो वसिय्यत करने के बा'द फ़ौत हुवा वोह सीधे रास्ते और सुन्नत पर फ़ौत हुवा और उस की मौत तक़्वा और शहादत पर हुई और इस ह़ालत में मरा कि उस की मग़्फ़िरत हो गई ।" **(ابنِ ماجه ج۳ص۳۰۴حدیث۲۷۰۱)**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

कफ़न दफ़्न का त़रीक़ा

मर्द का मस्नून कफ़न

(1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) क़मीस

औ़रत का मस्नून कफ़न

मुन्दरिजए बाला तीन और दो मज़ीद (4) सीना बन्द (5) ओढ़नी। खुन्सा मुश्किल को औ़रत की त़रह़ पांच कपड़े दिये जाएं मगर कुसुम या ज़ा'फ़रान का रंगा हुवा और रेशमी कफ़न इसे ना जाइज़ है।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 817, 819, عالمگیری ج۱ص۱۶۰،۱۶۱)

कफ़न की तफ़्सील

﴾1﴿ **लिफ़ाफ़ा :** या'नी चादर मय्यित के क़द से इतनी बड़ी हो कि दोनों त़रफ़ बांध सकें ﴾2﴿ **इज़ार :** (या'नी तहबन्द) चोटी (या'नी सर के सिरे) से क़दम तक या'नी लिफ़ाफ़े से इतना छोटा जो बन्दिश के लिये ज़ाइद था ﴾3﴿ **क़मीस** (या'नी कफ़्नी) गरदन से घुटनों के नीचे तक और येह आगे और पीछे दोनों त़रफ़ बराबर हो इस में चाक और आस्तीनें न हों। मर्द की कफ़्नी कन्धों पर चीरें और औ़रत के लिये सीने की त़रफ़ ﴾4﴿ **सीना बन्द :** पिस्तान से नाफ़ तक और बेहतर येह है कि रान तक हो।[1]

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 818)

---

1 : उ़मूमन तय्यार कफ़न ख़रीद लिया जाता है उस का मय्यित के क़द के मुत़ाबिक़ मस्नून साइज़ का होना ज़रूरी नहीं येह भी हो सकता है कि इतना ज़ियादा हो कि इसराफ़ में दाख़िल हो जाए, लिहाज़ा एह़तियात़ इसी में है कि थान में से ह़स्बे ज़रूरत कपड़ा काटा जाए।

www.dawateislami.net

ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा

अगरबत्तियां या लूबान जला कर तीन, पांच या सात बार ग़ुस्ल के तख़्ते को धूनी दें या'नी इतनी बार तख़्ते के गिर्द फिराएं, तख़्ते पर मय्यित को इस त़रह़ लिटाएं जैसे क़ब्र में लिटाते हैं, नाफ़ से घुटनों समेत कपड़े से छुपा दें। (आज कल ग़ुस्ल के दौरान सफ़ेद कपड़ा उढ़ाते हैं और उस पर पानी लगने से मय्यित के सत्र की बे पर्दगी होती है लिहाज़ा **कथ्थई** या गहरे रंग का इतना मोटा कपड़ा हो कि पानी पड़ने से सत्र न चमके, कपड़े की दो तहें कर लें तो ज़ियादा बेहतर) अब नहलाने वाला अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर पहले दोनों त़रफ़ इस्तिन्जा करवाए (या'नी पानी से धोए) फिर नमाज़ जैसा वुज़ू करवाएं या'नी तीन बार मुंह फिर कोहनियों समेत दोनों हाथ तीन तीन बार धुलाएं, फिर सर का मस्ह़ करें, फिर तीन बार दोनों पाउं धुलाएं। मय्यित के वुज़ू में पहले गिट्टों तक हाथ धोना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना नहीं है, अलबत्ता कपड़े या रूई की फुरेरी भिगो कर दांतों, मसूढ़ों, होंटों और नथनों पर फेर दें। फिर सर या दाढ़ी के बाल हों तो धोएं। अब बाईं (या'नी उलटी) करवट पर लिटा कर बेरी के पत्तों का जोश दिया हुवा (जो अब नीम गर्म रह गया हो) और येह न हो तो ख़ालिस पानी नीम गर्म सर से पाउं तक बहाएं कि तख़्ते तक पहुंच जाए। फिर सीधी करवट लिटा कर भी इसी त़रह़ करें फिर टेक लगा कर बिठाएं और नरमी के साथ पेट के निचले ह़िस्से पर हाथ फेरें और कुछ निकले तो धो डालें। दोबारा वुज़ू और ग़ुस्ल की ह़ाजत नहीं फिर आख़िर में सर से पाउं तक तीन बार काफ़ूर का पानी बहाएं। फिर

www.dawateislami.net

किसी पाक कपड़े से बदन आहिस्ता से पोंछ दें। एक बार सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़ है और तीन बार सुन्नत। (ग़ुस्ले मय्यित में बे तह़ाशा पानी न बहाएं आख़िरत में एक क़त़रे क़त़रे का ह़िसाब है येह याद रखें)

मर्द को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

कफ़न को एक या तीन या पांच या सात बार धूनी दे दें। फिर इस त़रह़ बिछाएं कि पहले लिफ़ाफ़ा या'नी बड़ी चादर उस पर तहबन्द और उस के ऊपर कफ़नी रखें, अब मय्यित को इस पर लिटाएं और कफ़्नी पहनाएं, अब दाढ़ी (न हो तो ठोड़ी पर) और तमाम जिस्म पर ख़ुश्बू मलें, वोह आ'ज़ा जिन पर सज्दा किया जाता है या'नी पेशानी, नाक, हाथों, घुटनों और क़दमों पर काफ़ूर लगाएं। फिर तहबन्द उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से **लपेटें**। अब आख़िर में लिफ़ाफ़ा भी इसी त़रह़ पहले उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से **लपेटें** ताकि सीधा ऊपर रहे। सर और पाउं की त़रफ़ बांध दें।

औ़रत को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

कफ़्नी पहना कर उस के बालों के दो[2] ह़िस्से कर के कफ़्नी के ऊपर सीने पर डाल दें और ओढ़नी को आधी पीठ के नीचे बिछा कर सर पर ला कर मुंह पर निक़ाब की त़रह़ डाल दें कि सीने पर रहे। इस का तूल आधी पुश्त से नीचे तक और अ़र्ज़ एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हो। बा'ज़ लोग ओढ़नी इस त़रह़ उढ़ाते हैं जिस त़रह़ औ़रतें ज़िन्दगी में सर पर ओढ़ती हैं येह ख़िलाफ़े सुन्नत है। फिर ब दस्तूर तहबन्द व लिफ़ाफ़ा या'नी चादर **लपेटें**। फिर आख़िर में सीनाबन्द पिस्तान के ऊपर वाले ह़िस्से से रान तक ला कर किसी डोरी

www.dawateislami.net

से बांधें ।[1]

बा'द नमाज़े जनाज़ा तदफ़ीन[2]

﴾1﴿ जनाज़ा **क़ब्र** से क़िब्ले की जानिब रखना मुस्तह़ब है ताकि मय्यित क़िब्ले की त़रफ़ से **क़ब्र** में उतारी जाए। **क़ब्र** की पाइंती (या'नी पाउं की जानिब वाली जगह) रख कर सर की त़रफ़ से न लाएं[3] ﴾2﴿ ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन (बेहतर येह है कि क़वी और नेक) आदमी **क़ब्र** में उतरें। औ़रत की मय्यित मह़ारिम उतारें येह न हों तो दीगर रिश्तेदार येह भी न हों तो परहेज़ गारों से उतरवाएं[4] ﴾3﴿ औ़रत की मय्यित को उतारने से ले कर तख़्ते लगाने तक किसी कपड़े से छुपाए रखें ﴾4﴿ **क़ब्र** में उतारते वक़्त येह दुआ़ पढ़ें : بِسْمِ اللّٰہِ وَبِاللّٰہِ وَعَلٰی مِلَّۃِ رَسُوْلِ اللّٰہ[5] ﴾5﴿ मय्यित को सीधी करवट पर लिटाएं और उस का मुंह क़िब्ले की त़रफ़ कर दें और कफ़न की बन्दिश खोल दें कि अब ज़रूरत नहीं, न खोली तो भी ह़रज नहीं[6] ﴾6﴿ **क़ब्र** कच्ची ईंटों[7] से बन्द कर दें अगर ज़मीन नर्म हो तो (लकड़ी के) तख़्ते लगाना भी जाइज़ है[8] ﴾7﴿ अब मिट्टी दी जाए,

मदीना

1 : आज कल औ़रतों के कफ़न में भी लिफ़ाफ़ा ही आख़िर में रखा जाता है तो अगर कफ़नी के बा'द सीनाबन्द रखा जाए तो भी कोई मुज़ा-यक़ा नहीं मगर अफ़्ज़ल है कि सीनाबन्द सब से आख़िर में हो। 2 : जनाज़ा उठाने और इस की नमाज़ का त़रीक़ा "नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा" में मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। 3 : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 844 4 : عالمگیری ج۱ص۱٦٦ 5 : عالمگیری ج۱ص۱٦٦ ,جوہرہ ص۱٤۰ 6 : تنویر الابصار ج۳ص۱٦٦
7 : क़ब्र के अन्दरूनी ह़िस्से में आग की पक्की हुई ईंटें लगाना मन्अ़ है मगर अक्सर अब सिमेन्ट की दीवारों और स्लेब का रवाज है लिहाज़ा सिमेन्ट की दीवारों और सिमेन्ट के तख़्तों का वोह ह़िस्सा जो अन्दर की त़रफ़ रखना है कच्ची मिट्टी के गारे से लीप दें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों को आग के असर से मह़फ़ूज़ रखे। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم 8 : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 844।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

मुस्तह़ब येह है कि सिरहाने की त़रफ़ से दोनों हाथों से तीन बार मिट्टी डालें। पहली बार कहें [1] مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ दूसरी बार [2] وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ तीसरी बार [3] وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى कहें। अब बाक़ी मिट्टी फावड़े वग़ैरा से डाल दें[4] ﴾8﴿ जितनी मिट्टी **क़ब्र** से निकली है उस से ज़ियादा डालना मकरूह है[5] ﴾9﴿ **क़ब्र** ऊंट के कोहान की त़रह़ ढाल वाली बनाएं चौखुंटी (या'नी चार कोनों वाली जैसा कि आज कल तदफ़ीन के कुछ रोज़ बा'द अक्सर ईंटों वग़ैरा से बनाते हैं) न बनाएं[6] ﴾10﴿ **क़ब्र** एक बालिश्त ऊंची हो या इस से मा'मूली ज़ियादा[7] ﴾11﴿ बा'दे दफ़्न क़ब्र पर पानी छिड़कना मस्नून है[8] ﴾12﴿ इस के इलावा बा'द में पौदे वग़ैरा को पानी देने की ग़रज़ से छिड़कें तो जाइज़ है ﴾13﴿ बा'ज़ लोग अपने अ़ज़ीज़ की **क़ब्र** पर बिला मक़्सदे सह़ीह़ मह़ज़ रस्मी त़ौर पर पानी छिड़कते हैं येह इसराफ़ व ना जाइज़ है, फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ जिल्द 9 **सफ़ह़ा** 373 पर है : बे ह़ाजत (क़ब्र पर) पानी का डालना ज़ाएअ़ करना है और पानी ज़ाएअ़ करना जाइज़ नहीं ﴾14﴿ दफ़्न के बा'द सिरहाने الٓمّٓ ता مُفْلِحُوْن और क़दमों की त़रफ़ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्म सूरह तक पढ़ना मुस्तह़ब है[9] ﴾15﴿ तल्क़ीन कीजिये। (त़रीक़ा सफ़ह़ा 327 के ह़ाशिये पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये) ﴾16﴿ क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा[10] ﴾17﴿ क़ब्र के सिरहाने क़िब्ला रू खड़े हो कर अज़ान दीजिये।[11]

مدینہ

1 : हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया। **2 :** और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे। **3 :** और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे। **4 :** جوہرہ ص۱٤١ **5 :** عالمگیری ج۱ص١٦٦ **6 :** رَدُّالْمُحتار ج۳ص١٦٩ **7 :** ایضاً ص١٦٨ **8 :** फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 373। **9 :** جوہرہ ص١٤١, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 846। **10 :** رَدُّالْمُحتار ج۳ص ١٨٤ **11 :** माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 370।

www.dawateislami.net

٧٨٦

قُفلِ مدینہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللہ

بقیع

फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा

इस रिसाले में......

- मक़्बूल ह़ज का सवाब
- दुआ़ए मग़्फ़िरत की फ़ज़ीलत
- अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा
- सू-रतुल इख़्लास का सवाब
- ईसाले सवाब का त़रीक़ा
- मज़ार पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा

वरक़ उलटिये......

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा

शैत़ान लाख रोके मगर येह रिसाला (27 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ कर अपनी आख़िरत का भला कीजिये ।

मर्ह़ूम रिश्तेदार को ख़्वाब में देखने का त़रीक़ा

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू **अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन अह़मद मालिकी कुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो कर एक औ़रत ने अ़र्ज़ की : मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, कोई त़रीक़ा इर्शाद हो कि मैं उसे ख़्वाब में देख लूं । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे अ़मल बताया । उस ने अपनी मर्ह़ूमा बेटी को ख़्वाब में तो देखा, मगर इस ह़ाल में देखा कि **उस के बदन पर तारकोल** (या'नी डामर) **का लिबास, गरदन में ज़न्जीर और पाउं में बेड़ियां हैं !** येह **हैबत नाक** मन्ज़र देख कर वोह औ़रत कांप उठी ! उस ने दूसरे दिन ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़्वाब सुनाया, सुन कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत मग़्मूम हुए । कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ख़्वाब में एक लड़की को देखा, जो **जन्नत** में एक तख़्त पर अपने **सर पर ताज** सजाए बैठी है । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देख कर वोह कहने

www.dawateislami.net

लगी : "मैं उसी ख़ातून की बेटी हूं, जिस ने आप को मेरी ह़ालत बताई थी।" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : उस के बक़ौल तो तू अ़ज़ाब में थी, आख़िर येह इन्क़िलाब किस त़रह़ आया ? मर्ह़ूमा बोली : क़ब्रिस्तान के क़रीब से एक शख़्स गुज़रा और उस ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत, मम्बए़ जूदो सख़ावत, सरापा फ़ज़्लो रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजा, उस के **दुरूद शरीफ़ पढ़ने की ब-र-कत से अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने हम 560 क़ब्र वालों से अ़ज़ाब उठा लिया।** (التذکرۃ فی احوال الموتٰی واُمور الآخرۃ ج۱ ص۷٤ ماخوذاً) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि पहले के मुसल्मानों का बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن की त़रफ़ ख़ूब रुजूअ़ था, उन की ब-र-कतों से लोगों के काम भी बन जाया करते थे, येह भी मा'लूम हुवा कि मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ों को ख़्वाब में देखने का मुत़ा-लबा करने में सख़्त इम्तिह़ान भी है कि अगर मर्ह़ूम को अ़ज़ाब में देख लिया तो परेशानी का सामना होगा। इस **ह़िकायत** से **ईसाले सवाब** की ज़बर दस्त ब-र-कत भी जानने को मिली और येह भी पता चला कि सिर्फ़ **एक बार दुरूद शरीफ़** पढ़ कर भी ईसाले

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

सवाब किया जा सकता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे पायां रह़मतों के भी क्या कहने ! कि अगर वोह एक दुरूद शरीफ़ ही को क़बूल फ़रमा ले तो उस के **ईसाले सवाब** की ब-र-कत से सारे के सारे क़ब्रिस्तान वालों पर भी अगर अ़ज़ाब हो तो उठा ले और उन सब को इन्आ़मो इक्राम से मालामाल फ़रमा दे ।

लाज रख ले गुनाहगारों की नाम रह़मान है तेरा या रब !
बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब !
तू करीम और करीम भी ऐसा
कि नहीं जिस का दूसरा या रब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन के वालिदैन या उन में कोई एक फ़ौत हो गया हो तो उन को चाहिये कि उन की त़रफ़ से ग़फ़्लत न करें, उन की क़ब्रों पर ह़ाज़िरी भी देते रहें और **ईसाले सवाब** भी करते रहें । इस ज़िम्न में **5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿ मक़्बूल ह़ज का सवाब

जो ब निय्यते सवाब अपने वालिदैन दोनों या एक की **क़ब्र** की ज़ियारत करे, **ह़ज्जे मक़्बूल** के बराबर सवाब पाए और जो ब कसरत इन की **क़ब्र** की ज़ियारत करता हो, फ़िरिश्ते उस की **क़ब्र** की (या'नी जब येह फ़ौत होगा) ज़ियारत को आएं । (نَوادِرُ الاصُول للحکیم الترمذی ج۱ ص۷۳ حدیث۹۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

﴾2﴿ दस ह़ज का सवाब

जो अपनी मां या बाप की त़रफ़ से **ह़ज** करे उन (या'नी मां या बाप) की त़रफ़ से ह़ज अदा हो जाए, इसे (या'नी ह़ज करने वाले को) मज़ीद **दस ह़ज का सवाब** मिले। (دارقُطنی ج۲ص۳۲۹حدیث۲۵۸۷)

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! जब कभी **नफ़्ली ह़ज** की सआ़दत ह़ासिल हो तो फ़ौत शुदा मां या बाप की निय्यत कर लीजिये ताकि उन को भी ह़ज का सवाब मिले, आप का भी ह़ज हो जाए बल्कि मज़ीद **दस ह़ज** का सवाब हाथ आए। अगर मां बाप में से कोई इस ह़ाल में फ़ौत हो गया कि उन पर ह़ज फ़र्ज़ हो चुकने के बा वुजूद वोह न कर पाए थे तो अब औलाद को **ह़ज्जे बदल** का शरफ़ ह़ासिल करना चाहिये। "ह़ज्जे बदल" के तफ़्सीली अह़काम के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब **"रफ़ीक़ुल ह़-रमैन"** का सफ़ह़ा 208 ता 214 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

﴾3﴿ वालिदैन की त़रफ़ से ख़ैरात

जब तुम में से कोई कुछ नफ़्ल ख़ैरात करे तो चाहिये कि उसे अपने मां बाप की त़रफ़ से करे कि इस का सवाब उन्हें मिलेगा और इस के (या'नी ख़ैरात करने वाले के) सवाब में कोई कमी भी नहीं आएगी।

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج۶ ص۲۰۵ حدیث۷۹۱۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ रोज़ी में बे ब-र-कती की वज्ह

बन्दा जब मां बाप के लिये दुआ़ तर्क कर देता है उस का रिज़्क़ क़त़्अ़ हो जाता है। (جَمعُ الْجَوامِع ج۱ص۲۹۲حدیث۲۱۳۸)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

《5》 जुमुआ़ को ज़ियारते क़ब्र की फ़ज़ीलत

जो शख़्स **जुमुआ़** के रोज़ अपने **वालिदैन** या इन में से किसी एक की **क़ब्र** की ज़ियारत करे और उस के पास **सूरए यासीन** पढ़े बख़्श दिया जाए। **(اَلْكَامِل لابن عَدِی ج٦ ص٢٦٠)**

लाज रख ले गुनाहगारों की नाम रह़मान है तेरा या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कफ़न फट गए !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है, जो मुसल्मान दुन्या से रुख़्सत हो जाते हैं उन के लिये भी उस ने अपने फ़ज़्लो करम के दरवाज़े खुले ही रखे हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मते बे पायां से मु-तअ़ल्लिक़ एक **ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत** पढ़िये और झूमिये ! चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना अरमिया عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام कुछ ऐसी क़ब्रों के पास से गुज़रे जिन में अ़ज़ाब हो रहा था। एक साल बा'द जब फिर वहीं से गुज़र हुवा तो अ़ज़ाब ख़त्म हो चुका था। आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क्या वज्ह है कि पहले इन को अ़ज़ाब हो रहा था अब ख़त्म हो गया ? आवाज़ आई : "**ऐ अरमिया !** इन के **कफ़न फट गए,** बाल बिखर गए और क़ब्रें मिट गईं तो मैं ने इन पर रह़्म किया और ऐसे लोगों पर मैं रह़्म किया ही करता हूं।" **(شَرحُ الصُّدُوْر لِلسُّيُوطی ص٣١٣)**

www.dawateislami.net

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी

ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 193)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"करम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के 3 ईमान अफ़्रोज़ फ़ज़ाइल

(1) दुआ़ओं की ब-र-कत

मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : मेरी उम्मत गुनाह समेत **क़ब्र** में दाख़िल होगी और जब निकलेगी तो बे गुनाह होगी क्यूं कि वोह मुअमिनीन की दुआ़ओं से बख़्श दी जाती है। **(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط ج۱ص۵۰۹حديث۱۸۷۹)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) ईसाले सवाब का इन्तिज़ार !

सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : मुर्दे का ह़ाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ इस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा **मु-तअ़ल्लिक़ीन** की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है। **(شُعَبُ الْاِيْمَان ج٦ص٢٠٣حديث٧٩٠٥)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

रूहें घरों पर आ कर ईसाले सवाब का मुत़ा-लबा करती हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा मरने वाले अपनी क़ब्रों पर आने जाने वालों को पहचानते हैं और उन्हें ज़िन्दों की **दुआ़ओं** से फ़ाएदा पहुंचता है, जब ज़िन्दा लोगों की त़रफ़ से **ईसाले सवाब** के तोह़फ़े आना बन्द होते हैं, तो उन को आगाही ह़ासिल हो जाती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें इजाज़त देता है तो घरों पर जा कर ईसाले सवाब का मुत़ा-लबा भी करते हैं। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या (मुख़र्रजा)** जिल्द 9 **सफ़ह़ा** 650 पर नक़्ल करते हैं : ''ग़राइब'' और ''ख़ज़ाना'' में मन्क़ूल है कि **मुअमिनीन की रूहें हर शबे जुमुआ़** (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी रात) **रोज़े ईद, रोज़े आ़शूरा और शबे बराअत को अपने घर आ कर बाहर खड़ी रहती हैं** और हर रूह़ ग़मनाक बुलन्द आवाज़ से निदा करती (या'नी पुकार कर कहती) है कि ऐ मेरे घर वालो ! ऐ मेरी औलाद ! ऐ मेरे क़राबत दारो ! (हमारे ईसाले सवाब की निय्यत से) स-दक़ा (ख़ैरात) कर के हम पर मेहरबानी करो।

है कौन कि गिर्या करे या फ़ातिह़ा को आए
बेकस के उठाए तेरी रह़मत के भरन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

(3) दूसरों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो कोई तमाम मोमिन मर्दों और औ़रतों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर मोमिन मर्द व औ़रत के इ़वज़ एक नेकी लिख देता है।

(مسندُ الشّامیین لِلطَّبَرانی ج۳ص۲۳٤حدیث ۲۱۵۵)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِيۡب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा मिल गया !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! झूम जाइये ! अरबों, खरबों नेकियां कमाने का **आसान नुस्ख़ा** हाथ आ गया ! ज़ाहिर है इस वक़्त रूए ज़मीन पर करोड़ों मुसल्मान मौजूद हैं और करोड़ों बल्कि अरबों दुन्या से चल बसे हैं। अगर हम सारी उम्मत की मग़्फ़िरत के लिये दुआ़ करेंगे तो اِنۡ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ हमें अरबों, खरबों नेकियों का ख़ज़ाना मिल जाएगा। मैं अपने लिये और तमाम मुअमिनीन व मुअमिनात के लिये दुआ़ तह़रीर कर देता हूं। (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये) اَللّٰهُمَّ اغۡفِرۡ لِیۡ وَلِکُلِّ مُؤۡمِنٍ وَّمُؤۡمِنَةٍ اِنۡ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ ढेरों नेकियां हाथ आएंगी।

या'नी ऐ **अल्लाह** ! मेरी और हर मोमिन व मोमिना की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِين صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आप भी ऊपर दी हुई दुआ़ को अ़-रबी या उर्दू या दोनों ज़बानों में अभी और हो सके तो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द भी पढ़ने की आ़दत बना लीजिये।

www.dawateislami.net

बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल

नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब !

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

नूरानी लिबास

एक बुज़ुर्ग ने अपने मर्ह़ूम भाई को ख़्वाब में देख कर पूछा : क्या ज़िन्दा लोगों की दुआ़ तुम लोगों को पहुंचती है ? मर्ह़ूम ने जवाब दिया : "हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह नूरानी लिबास की सूरत में आती है उसे हम पहन लेते हैं।" **(شَرحُ الصُّدُور ص ۳۰۵)**

जल्वए यार से हो क़ब्र आबाद   वह़शते क़ब्र से बचा या रब !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

नूरानी त़बाक़

मन्क़ूल है : जब कोई शख़्स मय्यित को **ईसाले सवाब** करता है तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلام उसे **नूरानी त़बाक़** में रख कर **क़ब्र** के कनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं : "**ऐ क़ब्र वाले !** येह हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर।" येह सुन कर वोह खुश होता है और उस के पड़ोसी अपनी मह़रूमी पर ग़मगीन होते हैं।

(اَیضاً ص ۳۰۸)

क़ब्र में आह ! घुप अंधेरा है

फ़ज़्ल से कर दे चांदना या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 88)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

मुर्दों की ता'दाद के बराबर अज्र

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **: जो** क़ब्रिस्तान में ग्यारह बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ कर मुर्दों को इस का **ईसाले सवाब** करे तो मुर्दों की ता'दाद के बराबर ईसाले सवाब करने वाले को इस का अज्र मिलेगा।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطى ج۷ ص۲۸۵ حديث۲۳۱۵۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सब क़ब्र वालों को सिफ़ारिशी बनाने का अ़मल

सुल्त़ाने दो जहान, शफ़ीए़ मुजरिमान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : "जो शख़्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने **सू-रतुल फ़ातिह़ा, सू-रतुल इख़्लास** और **सू-रतुत्तकासुर** पढ़ी फिर येह दुआ़ मांगी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुछ क़ुरआन पढ़ा उस का सवाब इस क़ब्रिस्तान के मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को पहुंचा। तो वोह सब के सब क़ियामत के रोज़ इस (या'नी ईसाले सवाब करने वाले) के **सिफ़ारिशी** होंगे।" **(شَرْحُ الصُّدُور ص۳۱۱)**

हर भले की भलाई का सदक़ा
इस बुरे को भी कर भला या रब

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सूरए इख़्लास के ईसाले सवाब की ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं एक रात **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के क़ब्रिस्तान में सो गया।

www.dawateislami.net

क्या देखता हूं कि क़ब्र वाले ह़ल्क़ा दर ह़ल्क़ा खड़े हैं, मैं ने उन से इस्तिफ़्सार किया (या'नी पूछा) : क्या क़ियामत क़ाइम हो गई ? उन्हों ने कहा : नहीं, बात दर अस्ल येह है कि एक मुसल्मान भाई ने **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ कर हम को **ईसाले सवाब** किया तो वोह सवाब हम एक साल से तक़्सीम कर रहे हैं। (شَرحُ الصُّدُوْر ص٣١٢)

सَبَقَتْ رَحْمَتِىْ عَلٰى غَضَبِىْ तूने जब से सुना दिया या रब !
आसरा हम गुनाहगारों का और मज़बूत़ हो गया या रब !

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उम्मे सा'द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के लिये कूंआं

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी मां इन्तिक़ाल कर गई हैं (मैं उन की त़रफ़ से स-दक़ा (या'नी ख़ैरात) करना चाहता हूं) कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल रहेगा ? सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "पानी।" चुनान्चे उन्हों ने एक कूंआं खुदवाया और कहा : **هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْد** या'नी **"येह उम्मे सा'द** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا **के लिये है।"**

(اَبوداؤد ج٢ ص١٨٠ حديث١٦٨١)

ग़ौस पाक का बकरा कहना कैसा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना सा'द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के इस इर्शाद : **"येह उम्मे सा'द** (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) **के लिये है"** के मा'ना येह हैं कि येह कूंआं सा'द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की मां के **ईसाले**

www.dawateislami.net

सवाब के लिये है। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों का गाय या बकरे वग़ैरा को बुज़ुर्गों की त़रफ़ मन्सूब करना म-सलन येह कहना कि "येह **सय्यिदुना ग़ौसे पाक** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **का बकरा है"** इस में कोई ह़रज नहीं कि इस से मुराद भी येही है कि येह बकरा ग़ौसे पाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّزَّاق के **ईसाले सवाब** के लिये है। क़ुरबानी के जानवर को भी तो लोग एक दूसरे ही की त़रफ़ मन्सूब करते हैं, म-सलन कोई अपनी क़ुरबानी का बकरा लिये चला आ रहा हो और अगर आप उस से पूछें कि किस का बकरा है ? तो उस ने कुछ इस त़रह़ जवाब देना है, "मेरा बकरा है" या "मेरे मामूं का बकरा है।" जब येह कहने वाले पर ए'तिराज़ नहीं तो "ग़ौसे पाक का बकरा" कहने वाले पर भी कोई ए'तिराज़ नहीं हो सकता। ह़क़ीक़त में हर शै का मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है और क़ुरबानी का बकरा हो या ग़ौसे पाक का बकरा, ज़ब्ह़ के वक़्त हर ज़बीह़ा पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ही नाम लिया जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वस्वसों से नजात बख़्शे। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"अल्लाह की रह़मत के क्या कहने !" के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के 19 म-दनी फूल

﴾1﴿ ईसाले सवाब के लफ़्ज़ी मा'ना हैं : "सवाब पहुंचाना" इस को "सवाब बख़्शना" भी कहते हैं मगर बुज़ुर्गों के लिये "सवाब बख़्शना" कहना मुनासिब नहीं, "सवाब नज़्र करना" कहना अदब के ज़ियादा क़रीब है। **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूरे

www.dawateislami.net

अक़्दस عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ख़्वाह और नबी या वली को "सवाब बख़्शना" कहना बे अ-दबी है बख़्शना बड़े की त़रफ़ से छोटे को होता है बल्कि नज़्र करना या हदिय्या करना कहे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 609)

《2》 **फ़र्ज़,** वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज, तिलावत, ना'त शरीफ़, **ज़िक्रुल्लाह**, दुरूद शरीफ़, बयान, दर्स, म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र, म-दनी इन्आ़मात, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुत़ा-लआ़, म-दनी कामों के लिये इन्फ़िरादी कोशिश वग़ैरा हर नेक काम का **ईसाले सवाब** कर सकते हैं।

《3》 **मय्यित** का तीजा, दसवां, चालीसवां और बरसी करना बहुत अच्छे काम हैं कि येह **ईसाले सवाब** के ही ज़राएअ़ हैं। शरीअ़त में तीजे वग़ैरा के अ़-दमे जवाज़ (या'नी ना जाइज़ होने) की दलील न होना ख़ुद दलीले जवाज़ है और मय्यित के लिये ज़िन्दों का दुआ़ करना क़ुरआने करीम से साबित है जो कि "ईसाले सवाब" की अस्ल है। चुनान्चे पारह 28 **सू-रतुल ह़श्र** आयत 10 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो उन के बा'द आए अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब (عَزَّوَجَلَّ) ! हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए।

《4》 **तीजे** वग़ैरा का खाना सिर्फ़ इसी सूरत में मय्यित के छोड़े हुए माल से कर सकते हैं जब कि सारे वु-रसा बालिग़ हों और सब के सब इजाज़त

www.dawateislami.net

भी दें अगर एक भी वारिस ना बालिग़ है तो **सख़्त ह़राम** है। हां बालिग़ अपने ह़िस्से से कर सकता है।

(मुलख़्ख़स़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 822)

﴾5﴿ तीजे का खाना चूंकि उ़मूमन दा'वत की सूरत में होता है इस लिये अग़्निया के लिये जाइज़ नहीं सिर्फ़ गु-रबा व मसाकीन खाएं, तीन दिन के बा'द भी मय्यित के खाने से अग़्निया (या'नी जो फ़क़ीर न हों उन) को बचना चाहिये। फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 9 सफ़ह़ा 667 से मय्यित के खाने से मु-तअ़ल्लिक़ एक मुफ़ीद सुवाल जवाब मुला-ह़ज़ा हों, **सुवाल :** मकूला طَعَامُ الْمَيِّتِ يُمِيْتُ الْقَلْبَ (मय्यित का खाना दिल को मुर्दा कर देता है।) मुस्तनद क़ौल है, अगर मुस्तनद है तो इस के क्या मा'ना हैं ? **जवाब :** येह तजरिबे की बात है और इस के मा'ना येह हैं कि जो त़आ़मे मय्यित के मु-तमन्नी रहते हैं उन का दिल मर जाता है, ज़िक्र व त़ाअ़ते इलाही के लिये ह़यात व चुस्ती उस में नहीं कि वोह अपने पेट के लुक़्मे के लिये मौते मुस्लिमीन के मुन्तज़िर रहते हैं और खाना खाते वक़्त मौत से ग़ाफ़िल और उस की लज़्ज़त में शाग़िल। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 667)

﴾6﴿ **मय्यित** के घर वाले अगर **तीजे** का खाना पकाएं तो (मालदार न खाएं) सिर्फ़ फ़ु-क़रा को खिलाएं जैसा कि मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 853 पर है : मय्यित के घर वाले **तीजे** वग़ैरा के दिन दा'वत करें तो ना जाइज़ व बिद्अ़ते **क़बीह़ा** है कि दा'वत तो ख़ुशी के वक़्त मशरूअ़ (या'नी शर-अ़ के मुवाफ़िक़) है न कि

www.dawateislami.net

ग़म के वक़्त और अगर फ़ु-क़रा को खिलाएं तो बेहतर है। (ऐज़न, स. 853)

﴾7﴿ आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "यूंही चेहलुम या बरसी या शश्माही पर खाना बे निय्यते ईसाले सवाब मह़ज़ एक रस्मी त़ौर पर पकाते और "शादियों की भाजी" की त़रह़ बरादरी में बांटते हैं, वोह भी बे अस्ल है, जिस से एह़तिराज़ (या'नी एह़तियात़ करनी) चाहिये।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 671) बल्कि येह खाना **ईसाले सवाब** और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ होना चाहिये और अगर कोई ईसाले सवाब के लिये खाने का एहतिमाम न भी करे तब भी कोई ह़रज नहीं।

﴾8﴿ **एक** दिन के बच्चे को भी **ईसाले सवाब** कर सकते हैं, उस का **तीजा** वग़ैरा भी करने में ह़रज नहीं। और **जो** ज़िन्दा हैं उन को भी **ईसाले सवाब** किया जा सकता है।

﴾9﴿ अम्बिया व मुर-सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْم और फ़िरिश्तों और मुसल्मान जिन्नात को भी **ईसाले सवाब** कर सकते हैं।

﴾10﴿ **ग्यारहवीं शरीफ़** और र-जबी शरीफ़ (या'नी 22 र-जबुल मुरज्जब को सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कूंडे करना) वग़ैरा जाइज़ है। कूंडे ही में खीर खिलाना ज़रूरी नहीं दूसरे बरतन में भी खिला सकते हैं, इस को घर से बाहर भी ले जा सकते हैं, इस मौक़अ़ पर जो "कहानी" पढ़ी जाती है वोह बे अस्ल है, **यासीन** शरीफ़ पढ़ कर **10 क़ुरआने करीम** ख़त्म करने का सवाब कमाइये और कूंडों के साथ साथ इस का भी ईसाले सवाब कर दीजिये।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

﴾11﴿ **दास्ताने** अ़जीब, शहज़ादे का सर, दस बीबियों की कहानी और जनाबे सय्यिदह की कहानी वग़ैरा सब मन घड़त क़िस्से हैं, इन्हें हरगिज़ न पढ़ा करें। इसी त़रह़ एक पेम्फ़लेट बनाम ''वसिय्यत नामा'' लोग तक़्सीम करते हैं जिस में किसी ''शैख़ अह़मद'' का ख़्वाब दर्ज है येह भी **जा'ली** (या'नी नक़्ली) है इस के नीचे मख़्सूस ता'दाद में छपवा कर बांटने की फ़ज़ीलत और न तक़्सीम करने के नुक़्सानात वग़ैरा लिखे हैं उन का भी ए'तिबार मत कीजिये।

﴾12﴿ औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की फ़ातिह़ा के खाने को ता'ज़ीमन ''नज़्रो नियाज़'' कहते हैं और येह **तबर्रुक** है, इसे अमीर व ग़रीब सब खा सकते हैं।

﴾13﴿ **नियाज़ और ईसाले सवाब** के खाने पर फ़ातिह़ा पढ़ाने के लिये किसी को बुलवाना या बाहर के मेहमान को खिलाना शर्त़ नहीं, घर के अफ़राद अगर ख़ुद ही फ़ातिह़ा पढ़ कर खा लें जब भी कोई ह़रज नहीं।

﴾14﴿ **रोज़ाना** जितनी बार भी खाना ह़स्बे ह़ाल अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ खाएं, उस में अगर किसी न किसी बुज़ुर्ग के **ईसाले सवाब** की निय्यत कर लें तो ख़ूब है। म-सलन नाश्ते में निय्यत कीजिये **:** आज के नाश्ते का सवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के ज़रीए तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام को पहुंचे। दो पहर को निय्यत कीजिये **:** अभी जो खाना खाएंगे (या खाया) उस का **सवाब सरकारे ग़ौसे आ'ज़म** और तमाम औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام को पहुंचे, रात को निय्यत कीजिये **:** अभी जो खाएंगे उस का सवाब इमामे अहले

www.dawateislami.net

सुन्नत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن और हर मुसल्मान मर्द व औ़रत को पहुंचे या हर बार सभी को ईसाले सवाब किया जाए और येही **अन्सब** (या'नी ज़ियादा मुनासिब) है। याद रहे ! ईसाले सवाब सिर्फ़ उसी सूरत में हो सकेगा जब कि वोह खाना किसी अच्छी निय्यत से खाया जाए म-सलन इ़बादत पर कुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से खाया तो येह खाना खाना कारे सवाब हुवा और उस का ईसाले सवाब हो सकता है। अगर एक भी अच्छी निय्यत न हो तो खाना खाना मुबाह़ कि इस पर न सवाब न गुनाह, तो जब सवाब ही न मिला तो ईसाले सवाब कैसा ! अलबत्ता दूसरों को ब निय्यते सवाब खिलाया हो तो उस खिलाने का सवाब ईसाल हो सकता है।

﴾15﴿ अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ खाए जाने वाले खाने से पहले **ईसाले सवाब** करें या खाने के बा'द, दोनों त़रह़ दुरुस्त है।

﴾16﴿ **हो** सके तो हर रोज़ (नफ़्अ़ पर नहीं बल्कि) अपनी बिक्री (Sale) का चौथाई फ़ीसद (या'नी चार सो रुपै पर एक रुपिया) और मुला-ज़मत करने वाले तन-ख़्वाह का माहाना कम अज़ कम एक फ़ीसद सरकारे **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की नियाज़ के लिये निकाल लिया करें, **ईसाले सवाब** की निय्यत से इस रक़म से दीनी किताबें तक़्सीम करें या किसी भी नेक काम में ख़र्च करें اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें ख़ुद ही देख लेंगे।

﴾17﴿ **मस्जिद** या मद्रसे का क़ियाम स-द-क़ए जारिय्या और **ईसाले सवाब** का बेहतरीन ज़रीआ़ है।

www.dawateislami.net

﴾18﴿ **जितनों** को भी ईसाले सवाब करें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि सब को पूरा मिलेगा, येह नहीं कि सवाब तक़्सीम हो कर टुकड़े टुकड़े मिले। **ईसाले सवाब** करने वाले के सवाब में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं होती बल्कि येह उम्मीद है कि उस ने जितनों को ईसाले सवाब किया उन सब के मज्मूए़ के बराबर इस (ईसाले सवाब करने वाले) को सवाब मिले। म-सलन कोई नेक काम किया जिस पर इस को दस नेकियां मिलीं अब इस ने दस मुर्दों को **ईसाले सवाब** किया तो हर एक को दस दस नेकियां पहुंचेंगी जब कि ईसाले सवाब करने वाले को एक सो दस और अगर एक हज़ार को ईसाले सवाब किया तो इस को दस हज़ार दस। وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس۔ (और इसी क़ियास पर)

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़स्सा : 4, स. 850)

﴾19﴿ **ईसाले सवाब** सिर्फ़ मुसल्मान को कर सकते हैं। काफ़िर या मुरतद को ईसाले सवाब करना या उस को "मर्हूम", जन्नती, ख़ुल्द आशियां, बेंकठ बासी, स्वर्ग बासी कहना **कुफ़्र** है।

ईसाले सवाब का त़रीक़ा

ईसाले सवाब (या'नी सवाब पहुंचाने) के लिये दिल में निय्यत कर लेना काफ़ी है, म-सलन आप ने किसी को एक रुपिया ख़ैरात दिया या एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा या किसी को एक सुन्नत बताई या किसी पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए नेकी की दा'वत दी या सुन्नतों भरा बयान किया। अल ग़रज़ कोई भी नेक काम किया आप दिल ही दिल में इस त़रह़ निय्यत कर लीजिये म-सलन : "अभी मैं ने जो **सुन्नत**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

बताई इस का सवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहुंचे।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब पहुंच जाएगा। मज़ीद जिन जिन की निय्यत करेंगे उन को भी पहुंचेगा। दिल में निय्यत होने के साथ साथ ज़बान से कह लेना भी अच्छा है कि येह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से साबित है जैसा कि ह़दीसे सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ में गुज़रा कि उन्हों ने कूंआं खुदवा कर फ़रमाया **هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعد** या'नी "**येह उम्मे सा'द के लिये है।**"

ईसाले सवाब का मुरव्वजा त़रीक़ा

आज कल मुसल्मानों में खुसूसन खाने पर जो **फ़ातिह़ा का त़रीक़ा** राइज है वोह भी बहुत अच्छा है। जिन खानों का **ईसाले सवाब** करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब कुछ सामने रख लीजिये।

अब :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥

पढ़ कर एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَلَاۤ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾
وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿۶﴾

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

तीन बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ۬ وَ لَمْ يُوْلَدْ ۙ ﴿۳﴾ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ ﴿۲﴾ وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ ﴿۳﴾ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ ﴿۴﴾ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ۬ الْخَنَّاسِ ۪ۙ ﴿۴﴾ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾

www.dawateislami.net

एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ
يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا
الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿۷﴾

एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۲﴾
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
يُنْفِقُوْنَ ۙ﴿۳﴾ وَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى
مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :

(1) وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾

(پ۲، البقرة:۱۶۳)

(2) اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾

(پ۸، الاعراف:۵۶)

(3) وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷ الانبياء:۱۰۷)

(4) مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ
اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۴۰)

(5) اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲ ،الاحزاب:۵۶)

अब दुरूद शरीफ़ पढ़िये :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلٰی)

इस के बा'द येह आयात पढ़िये :

سُبۡحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۸۲﴾

(پ۲۳،الصّٰفّٰت:۱۸۰۔۱۸۲)

अब फ़ातिहा पढ़ाने वाला हाथ उठा कर बुलन्द आवाज़ से "अल फ़ातिहा" कहे। सब लोग आहिस्ता से या'नी इतनी आवाज़ से कि सिर्फ़ ख़ुद सुनें **सू-रतुल फ़ातिहा** पढ़ें। अब फ़ातिहा पढ़ाने वाला इस त़रह़ ए'लान करे : "**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आप ने जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब मुझे दे दीजिये।" तमाम ह़ाज़िरीन कह दें : "आप को दिया।" अब फ़ातिहा पढ़ाने वाला **ईसाले सवाब** कर दे।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का फ़ातिहा का त़रीक़ा

ईसाले सवाब के अल्फ़ाज़ लिखने से क़ब्ल इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़ातिहा से क़ब्ल जो सूरतें वग़ैरा पढ़ते थे वोह भी तह़रीर की जाती हैं :

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ؕ﴿۴﴾ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ۬ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ﴿۷﴾

www.dawateislami.net

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۬ۚ لَا تَاۡخُذُہٗ سِنَۃٌ وَّ لَا نَوۡمٌ ؕ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یَشۡفَعُ عِنۡدَہٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِہٖ ؕ یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ اَیۡدِیۡہِمۡ وَ مَا خَلۡفَہُمۡ ۚ وَ لَا یُحِیۡطُوۡنَ بِشَیۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِہٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ کُرۡسِیُّہُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ ۚ وَ لَا یَـُٔوۡدُہٗ حِفۡظُہُمَا ۚ وَ ہُوَ الۡعَلِیُّ الۡعَظِیۡمُ ﴿۲۵۵﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۵۵)

तीन बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰہُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمۡ یَلِدۡ ۬ۙ وَ لَمۡ یُوۡلَدۡ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمۡ یَکُنۡ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

ईसाले सवाब के लिये दुआ का त़रीक़ा

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो कुछ पढ़ा गया (अगर खाना वग़ैरा है तो इस त़रह़ से भी कहिये) और जो कुछ खाना वग़ैरा पेश किया गया है उस का सवाब हमारे नाक़िस अ़मल के लाइक़ नहीं बल्कि अपने

www.dawateislami.net

करम के शायाने शान मर्ह़मत फ़रमा । और इसे हमारी जानिब से अपने प्यारे मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र पहुंचा । सरकारे मदीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम औलियाए इज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की जनाब में नज़्र पहुंचा । सरकारे मदीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात **मुसल्मान** हुए या क़ियामत तक होंगे सब को पहुंचा । इस दौरान बेहतर येह है कि जिन जिन बुज़ुर्गों को ख़ुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाइये । अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों और अपने पीरो मुर्शिद को भी नाम ब नाम **ईसाले सवाब** कीजिये । (फ़ौत शु-दगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को ख़ुशी ह़ासिल होती है अगर किसी का भी नाम न लें सिर्फ़ इतना ही कह लें कि **या अल्लाह !** इस का सवाब आज तक जितने भी अहले ईमान हुए उन सब को पहुंचा तब भी हर एक को पहुंच जाएगा । اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ)

अब ह़स्बे मा'मूल दुआ़ ख़त्म कर दीजिये । (अगर थोड़ा थोड़ा खाना और पानी निकाला था तो वोह दूसरे खानों और पानी में डाल दीजिये)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

खाने की दा'वत की अहम एह़तियात़

जब भी आप के यहां नियाज़ या किसी क़िस्म की तक़रीब हो, जमाअ़त का वक़्त होते ही कोई मानेए़ शर-ई न हो तो इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ तमाम मेहमानों समेत नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिद का रुख़ कीजिये। बल्कि ऐसे अवक़ात में दा'वत ही मत रखिये कि बीच में नमाज़ आए और सुस्ती के बाइ़स مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त फ़ौत हो जाए। दो पहर के खाने के लिये बा'द नमाज़े ज़ोह्‌र और शाम के खाने के लिये बा'द नमाज़े इ़शा मेहमानों को बुलाने में ग़ालिबन बा जमाअ़त नमाज़ों के लिये आसानी है। मेज़बान, बावर्ची, खाना तक़्सीम करने वाले वग़ैरा सभी को चाहिये कि जूं ही नमाज़ का वक़्त हो, सारा काम छोड़ कर बा जमाअ़त नमाज़ का एहतिमाम करें। बुज़ुर्गों की "नियाज़ की दा'वत" की मसरूफ़िय्यत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की "नमाज़े बा जमाअ़त" में कोताही बहुत बड़ी मा'सियत है।

मज़ार पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा

बुज़ुर्गों की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में भी क़दमों की त़रफ़ से या'नी चेहरे के सामने से ह़ाज़िर होना चाहिये, पीछे से आने की सूरत में उन्हें मुड़ कर देखने की ज़ह़मत होती है। लिहाज़ा बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर भी **पाइंती** (या'नी क़दमों) की त़रफ़ से ह़ाज़िर हो कर फिर क़िब्ले

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

को पीठ और साह़िबे मज़ार के चेहरे की त़रफ़ रुख़ कर के कम अज़ कम चार हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) दूर खड़ा हो और इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِىْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ۔

एक बार **सू-रतुल फ़ातिह़ा** और 11 बार **सू-रतुल इख़्लास** (अव्वल आख़िर एक या तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर हाथ उठा कर ऊपर दिये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ (साह़िबे मज़ार का नाम ले कर भी) ईसाले सवाब करे और दुआ़ मांगे। "**अह़्सनुल विआ़अ**" में है : वली के मज़ार के पास दुआ़ क़बूल होती है।

(माख़ूज़ अज़ अह़्सनुल विआ़अ, स. 140)

इलाही वासित़ा कुल औलिया का   मेरा हर एक पूरा मुद्दआ़ हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक चुप सो[100] सुख

गमे मदीना, बक़ीअ़, मग्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

28 रबीउ़ल आख़िर 1434 सि.हि.
11-03-2013

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

ज़्वान	सफ़्हा	ज़्वान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

फ़र्ज़ उ़लूम पर मुश्तमिल अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की अहम तरीन तसानीफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हि़फ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net